ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 241 म अंक 01 जनवरी 2018 (वर्ष 11 मास 121 अंक 241)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकें आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकें औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कें "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकें "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकें "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकें "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकें "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) **सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) **सुश्री अपर्णा कुमारी** सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

वि दे ह www.videha.co.inविदेहप्रथम मैथिलीपाक्षिक ई पत्रिकाwww.videha.com विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist
Maithili Fortnightly ejournal 'विदेह' 241 म अंक 01 जनवरी 2018 (वर्ष 11 मास 121 अंक 241) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

वि दे ह www.videha.co.inविदेहप्रथम मैथिलीपाक्षिक ई पत्रिकाwww.videha.com विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist
Maithili Fortnightly ejournal 'विदेह' 241 म अंक 01 जनवरी 2018 (वर्ष 11 मास 121 अंक 241) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

कॉंरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

वि दे ह www.videha.co.inविदेहप्रथम मैथिलीपाक्षिक ई पत्रिकाwww.videha.com विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist
Maithili Fortnightly ejournal 'विदेह' 241 म अंक 01 जनवरी 2018 (वर्ष 11 मास 121 अंक 241) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।
पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तान्पुरा सह भाव संगीत

(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढ़ियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।

श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नङेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषांक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from:

http://www.amazon.in/

For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-

http://www.amazon.com/

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह



मैथिलि साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै, आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैँ ऐ लेल कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। ऐ ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मीठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "विदेह"- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA



सिद्धिरस्तु

3rd Edition

पसेनाक धरम

जगदीश प्रसाद मण्डल



पसेनाक धरम

जगदीश प्रसाद मण्डल



समर्पण भाव

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि
दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...
तैठाम देखनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बनियेँ जाइ छै..!
⁝

ISBN : 978-93-87675-06-3

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

PASENAK DHARAM
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

नहरकन्हा/08
बटखौक/14
पसेनाक धरम/21
जेठुआ गरदा/27
हँसीएमे उड़ि गेलौं/33
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक/40
हमर बाइनिक विचार/46
नोकरिहारा/52
घसवाहि/58
तेतर भाइक कविता/64
छूआ/70
दोसराइत/77
लछनमान/84
हमर कोन दोख/90
मौसी/98
नटकिया गति/105
खाए चाहैए/112

◌

नहरकन्हा

कातिक मास। काल्हिये दीयावाती छी। रौदमे ने जेठुआ जलैन अछि आ ने माघक सिरसिरी। ने हथियाक झाँट अछि आ ने मघ-असरेसक गर्जन-तर्जन। मुदा बिनु बरखो-बुन्नीक सौनक सुहावन तँ अछिए। भलें सौनमे गरम-ठण्ढाक घोर किए ने बनैत हौउ, मुदा कातिकोमे तँ पानि-रौदक घोरमे ओसक मिश्रण बनिते अछि...।

बेरुका समए, गोसाँइ लहसैत दिन। चेतन काका हाथ-पएर मारि दरबज्जापर बैसल अपन बीर्तमान भविस दिस देख रहल छैथ। मनमे उठलैन, पनरह कातिक तीस अखाढ़ जे सूतल से गेल बजार! मुदा हम सूतल कहाँ छी, सुता देल गेल छी। तहूमे आइ चौदहम कातिक तँ छीहे। तही बीच रधिया काकी चाह नेने पहुँचलैन।

काकीक पैरक धमकसँ चेतन कक्काक भक् खुजलैन। भक् खुजिते तकलैन तँ आगूमे पत्नीकेँ चाह नेने ठाढ़ देखलैन। आँखिमे आँखि सटिते चेतन कक्काक मन अश्रु मिश्रित भऽ सिहैर गेलैन। सिहरलैन ऐ दुआरे जे पत्नीक पियासल आँखिमे पानिक तरास बुझि पड़लैन। मुदा भूख-पियास कोनो आइए भेल आ कि सभ दिनसँ रहल। जखने देहधारी जीव हएत तखने ओकरा जीबैत चलै-फिड़ैले अन्न-पानिक खगता हेबे करत। मुदा ओइ खगताक पूर्ति तँ अपने केने हएत। पत्नीक हाथमे चाहक गिलास देख चेतन काका हाथ बढ़ा

गिलास पकैड़ बजला-

“काल्हिए ने उका-वाती छी?”

ओना रधिया काकीकेँ सेहो बूझल रहैन। कोनो पाबैन परिवारमे पुरुख-पात्रसँ पहिने बाले-बोध आ जनिजातियेक कानमे पहुँचैए, आ ओ पहुँचैए आन परिवारसँ, समाजसँ। काल्हिए पाबैन छी सुनि रधिया काकीक मन थकमका गेलैन। थकमकाइते मनमे की उठलैन से तँ ओ जानैथ मुदा पतिक सोझासँ हटि, माने दरबज्जापर सँ आँगन दिस बढ़ि गेली। भऽ सकैए चुल्हि लग अपन छनाएल चाह ठण्ढाइ दुआरे बढ़ि गेल हेती चाहे पतिक सिनेहिल मन जगबै दुआरे सेहो। सिनेहिल मन ई जे जखन तबधल पेटमे चाह पड़तैन तखन पेटक ताप आ चाहक तापक संयोग होइते सिनेहिल विचार पनैपते सिनेहिल मन बनतैन। आकि अखनो पतिक सोझमे चाह नै पीबैत होथि, तहू दुआरे हटल हेती चाहे आने कारणे...।

चुपचाप पत्नीकेँ लगसँ हटैत देख चेतन कक्काक मनमे अनेको प्रश्न एक संग उठलैन, उठलैन ई जे अपनो तँ जनिते छी जे घरमे किछु ने अछि, जखन कि काल्हि ज्योतिक पाबैन- दीपावली-क संग काली पूजा सेहो छी। लगले परसू गोबरधनक संग गाए-महींसिक चुमौन माने पखेब-सुकराती-हुरियाहा सेहो छी, तेकर सटले तरसू भाए-बहिनीक पाबैन भरदुतियाक संग चित्रगुप्त-दवात पूजा सेहो छी। तैसंग सटले छठि पाबैनक बीजवपन सेहो भऽ जाएत...,

..भरिसक यएह सभ सुइख ने तँ मनकेँ सता रहल छैन जइसँ मुँह छिपबै दुआरे परोछ भऽ गेली। मुदा लगले मनमे उठलैन जे किछु छैथ तँ अर्द्धांगिनीए छैथ ने, किए ने हुनकर मनक तरसैत ताप तराइस दिऐन। जे समए बनि गेल अछि, जेकर भुक्तभोगी अपना संग परिवार सेहो बनि गेल अछि। एहेन स्थितिमे तँ यएह ने नीक हएत जे सभ

बात-विचार जी-खोलि दुनू गोरे जीसँ निकालि जीहक भिरानी करैत जिनगीक आगूक बाट हेरब...।

..मनमे अबिते चेतन कक्काक मन पानिमे बनैत पाथर जकाँ थीर भऽ गेलैन। मुदा लगले भेलैन जे ईहो तँ सम्भव ऐछे जे अपन पीबैले चाह चुल्हि लग रखने होथि जे पीबैले चलि गेल हेती। अनेरे मन वौआ रहल अछि, जेते समए अपने चाह पीबैमे लगत तइसँ कनीयेँ बेसी अँटैक सोर पाड़ि गपियाइए किए ने लेब। तैबीच चाहो सधलैन। गिलासकेँ चौकी तरमे रखि, तमाकुलक सूर-सार करए लगला। मुदा तैबीचमे पत्नी पहुँच गेलखिन। आने मिथिलांगना जकाँ रधिया काकी अपन बेथाकेँ बेवस्थित ढंगसँ साजि, मुँहक मुस्कान साजैत बजली-

“की पाबैन हएत! बच्चाकेँ जँ कितावे ने रहतै तँ ओ की पढ़त! आ की पौत! चाहे किसानेकेँ जँ बरद नइ रहत तँ ओ गोबरधन पूजा की करत!!”

बेथाएल मने रधिया काकी बजली, मुदा चेतन काका सुनि कऽ वौआ गेला। वौआ ई गेला जे एक दिस बच्चाक विद्याध्ययनक बात उठेलैन मुदा लगले किसानक गाए-बरदसँ जोड़ि देलैन। मर्र ई की भेल? गाइक नाँगैर घोड़ाकेँ आकि घोड़ेक नाँगैर गाएकेँ केना छजत। मुदा ईहो तँ सम्भव ऐछे जे बेथा-कथाक बखार भरल होइन, जे बहराइले मनमे उपरौंज केने होइन तँए गपक मुड़ीक ठेकाने ने रहल होइन। चेतन काका बजला-

“पाबैन छी काल्हि आ पीड़ाएल छी आइए? ऐ पीड़ेने नइ ने हएत। किए पीड़ाएल छी तेकर ने खोद-वेद करब।”

चेतन कक्काक बोल रधिया काकीकेँ नीक लगलैन। सहैट कऽ लगमे एली। लगमे अबिते चेतन काका बजला-

“आइ कातिकक चौदहम दिन छी, चौदहमी-चान सेहो उगत।

काल्हिए गणेश-लछमी पूजाक संग घर-आँगन, दुआर-दरबज्जा, इनार-पोखैर, मालक थैरक संग चर-चौमासमे दीप जरत। तैसंग निसभेर रातिमे कालीक पूजा हेतैन।”

पाबैनक पावन विचार सुनि रधिया काकी विहुँसैत बजली-

“हाइ रे कातिक! गिरहस्तक धरम-करम मास कातिक!”

कहि जेना मने-मन किछु विचारए लगली। विचारए लगली जे वृन्दावनक जमुना-कछेरक कदमक फूलक घुघरूक बीच फड़ केना छिपल रहैए...।

..मुदा दुनू गोरेक बीच चुपा-चुपी, धुपा-धुपी भऽ गेल। आँखिसँ नजैर धरि एक-दोसरपर चढ़ौने रहैथ, मुदा मुँहमे बोल नहि, भाव रहितो अभावे-अभाव। परिवार छी, पति-पत्नीक सहयोगसँ संचालित होइए। चेतन काका बजला-

“अपन गाम, अपन परिवार, अपन जिनगी कनाह भऽ गेल!”

‘कनाह’ सुनि रधिया काकी चौंकली। अछैते आँखिये कनाह! मुदा होइ तँ छैहे। आँखिक डेर-वार भेने सेहो लोक कनाह कहाइए। ओना एकटा आँखि नहियोँ रहने लोक कनाह कहैबते अछि, मुदा कनीयोँ ली-ओंच भेने तँ सेहो कनाहे कहबैए! खाएर जे होउ। बजली-

“की कनाह कहलिऐ?”

पत्नीक भाव पूर्ण प्रश्न सुनि चेतन काका बजला-

“जहिना कोसिकन्हा भेल तहिना अपनो सभ नहरकन्हाक बासी भऽ गेलौं।”

‘नहरकन्हा’ सुनि रधिया काकी मने-मन विचारए लगली जे ई की पाबैनक जगह कहि रहला अछि। मुदा जे कहि रहल छैथ तिनकेसँ किए ने खरियारि कऽ पुछि बुझि ली। पाबैन काल्हि छी। विचार तँ

हवाक गतिये चलैए। काज ने कटही गाड़ी जकाँ चर्र-चर्र करैत चलैए...। बजली-

“की नहरकन्हा कहलिऐ?”

पत्नीक प्रश्न सुनि चेतन काका अपन मनक बेथा पत्नीपर आ पत्नीक बेथा अपनापर लैत बजला-

“सम्पन्नता घटने विपन्नता अबै छइ। अपन सभ किछु देखते छी, तेहेन नहर गाममे बनि गेल, तैसंग सड़कसँ तेना घेरा गेल जे गामेक रूप कुरूप भऽ गेल। जहिना कोसीकातक सभ गाम कनाह नहि अछि मुदा ओहन गाम तँ कनाह ऐछे जेकर चास-बास उकन-विपन भऽ गेल छइ। तहिना देखबे करै छी जे धानक चास दहा गेल। पानिक जमाव रहने, गहुम, रब्बी-राइक संग वाड़ी-झाड़ीक तीमन-तरकारीक खेती छीना गेल, एहेन स्थितिमे..?”

‘एहेन स्थिति’ कहि चेतन काका बौक भऽ गेला! जेना दलदलमे फँसल हाथी बाहर निकलैले चीतकार करैत तहिना कक्काक चित्त चीत भऽ चीतकार करए लगलैन। बोल घौलाए लगलैन!

चेतन कक्काक विचार सुनिते रधिया काकीक भक् खुजलैन। बजली-

“यएह दिवाली पाबैन छी जइमे रंग-रंगक तीमनो-तरकारी आ अन्नो-पानि भरल रहै छेलए, अपनो खाइ छेलौं आ दोसरोकेँ पइत सम्हारै छेलिऐ। काल्हि पाबैन छी आ आइ सुन्न घरमे ठाढ़ छी! केना दीप जरत?”

दुनू परानीक मुँहक बोल, ओइ पोखैर जकाँ सुखा गेल जेकर जाठिक समुच्चा देह उघार भेल बालु-माटिपर ठाढ़ भेल फटोफनमे पड़ल रहैए। एक-दोसरपर दुनू परानी नजैर दथि, मुदा लगले नीचाँ खसि पड़ैन। ओना रधिया काकी अनभुआर जगहो आ अनभुआर

रस्तो देख सहैम कऽ सहैज गेली।

सहैज ई गेली जे जखन नारी असगरो ब्रह्मचारिणी बनि सकै छैथ तखन तँ हम पुरुखक संग छी। तहूमे ओहन पुरुख जे जीवन संगी छैथ! मन मचललैन, चल रे जीवन चलिते चल, सुख-दुखक संगे चल, जिनगी-मृत्युक सीमा धरि चल...।

..रधिया काकी विहुँसैत बजली-

“अनेरे मनकेँ मारि रहल छी, यएह ने जे आनबेर भाँटिनक चारिटा तड़ूआसँ थारीक पारस सजाइ छल, ऐबेर नइ हएत। घर-अँगनामे दीप नइ जरत, तँए आगूओ नइ जराएब?”

पत्नीक बात सुनि चेतन कक्काक चेतन चनचनेलैन, मुदा लगले ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे बिनु तेल-वातीक दीया केना बड़त! बिनु शक्तिए ज्योति केना अनहारमे छिटकत! अपन के कहए, खाइ-पीबै दुआरे गामेसँ माल-जालक हरण भऽ गेल। केना गोबरधन पूजा करब! परात भने बहिन ऐठाम नैहराक की सनेस लऽ कऽ जाएब? भाव रहितो अभावे अभावक बीच चेतन काका बजला-

“अपन मन हारि कहाँ कबूल करैए। मुदा फेर जिनगी हरण केना भेल?”

कहि पत्नीक ओइ नजैरमे चेतन कक्काक नजैर घुसि दीवालीक दीप जरबए लगल जे सुख-दुखकेँ ओते नै जेते संगे-संग चलैत रहबकेँ महत दैत।

❍

तिथि : 11 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1209

बटखौक

पनरह दिनसँ दौड़-बरहाक अन्त परसू भऽ गेल। अन्त ई भेल जे भीमपुरवासी-जीयालालक बेटाक बिआह कल्लापटीक रघुनीक बेटीसँ ठीक भऽ गेलैन।

ओना वंशगत तँ नहि मुदा समाजिक सम्बन्धे रघुनी ‘काका’ हेता, जिनका ऐठाम भीमपुरसँ चारि गोरे बिआहक गपो-सप करए औता आ बिआहक दिनो ठेकता। भिनसुरके उखड़ाहामे औता, खाइ-पीबैबेर सँ पहिने चलि जेता, मुदा तैयो चाह-पान-जलखै तँ चलबे करत।

ओना रघुनी काका किछु कहलैन हेन नै, मुदा समाजक बेटीक बिआह छी नइ किछु जँ एकटा बोलोसँ उपकार भऽ जेतैन तैयो तँ उपकारे भेल। जँ नहियेँ कहलैन तँ नइ कहलैन, बेटी समाजक बेटी होइते अछि तँए अपन छी, जँ नइ छी तँ किए आन गाम गेला पछाइत फल्लाँ गामवाली कहबैए...।

..भिनसुरका काज सम्हारि साढ़े सात बजे रघुनी काका ऐठाम विदा भेलौं। बूझल रहबे करए जे आठ बजे चारि गोरेसँ भीमपुरवला औता।

गमैया लोक जकाँ नै जे जँ औता तँ घन्टा-दू-घन्टा पहिने चलि औता, नइ तँ नहियेँ औता, पछाइत कहता जे बिसैर गेलौं। से नइ,

ठीक आठ बजे चारि गोरेक संग जीयालाल रघुनी काका ऐठाम पहुँच गेला। काजक[1] पहिल दिन तँ छी नहि जे पेनीए छनैमे देरी लागत, सभ काज सुढ़ियाएले छैन, मात्र बिआह दिनक बरियातीक बेवस्थाक विचार करब छैन।

ओना जातिक हिसाबसँ कल्लापटी घनगर अछि मुदा भीमपुर से नहि अछि। एके दियादीक दस परिवार अछि। तहूमे चारि-पाँच परिवार ओहन अछि, जइमे मात्र बुड़हे-बुड़हीटा गाममे, बाँकी सभ बाहरे रहै छैथ, जे एबे ने केला।

दरबज्जापर अबिते आव-भगत शुरू भेल। भिनसुरका समए तँए पहिने चाह-पान चलल। चारि गोरे हमहूँ सभ समाजक लोक रही आ चारू बापूत रघुनियाँ काका रहैथ। ओना अपन चारू समांग ओरियाने-बातमे लगल रहैन मुदा अपनो रघुनी काका आ हमहूँ सभ कुशल-छेम करैत काजक गपक जिज्ञासा करए लगलौं। पान परसाइते गप-सप्प शुरू भेल। पहिल गप उठल बरियातीक। ओना बरियातीक विचारक पाछू केते गप अछि जे तँइ करब छैन। जेना गिनतीमे केते बरियाती औता..., तइमे केते सियान-चफलगर आ केते धिया-पुता औत...। अबैक साधन की रहत..., इत्यादि।

ओना दुनू गामक दूरी बेसी नहियेँ अछि मुदा बिनु सवारीए जात-बरियात जाएबो तँ नीक नहियेँ हएत। खाइ-पीबै आ रहैक बेवस्था इत्यादिपर गप-सप्पकेँ अन्तिम रूप देब अछि। ओना रघुनी कक्काक अपन विचार रहैन जे गप-सप्प करैमे समैए केते लगत चलितो-चलितो, माने विदा होइतो फरिछा लेब। तैबीच जँ पहिने खा-पी लेता तँ ओकर दोसर प्रभाव हएत। मुदा से नइ भेलैन। चाह-पान होइते बिआहक गप उठि गेल। दू भैयारी आ दूटा भातीजक संग

[1] बिआहक

जीयालाल रहैथ, तहूमे भैयारीमे जेठ रहने, तीनू समांग माने दुनू भातिजो आ छोट भाइयो मुँहमे ताला लगौने। असगरे जीयालाल वक्ता, जेकर समर्थन तीनू गोरे केनिहार...।

..केते गोरे बरियाती औता मूल प्रश्न छल। मूल ऐ दुआरे जे खेनाइ-पीनाइ, रहनाइ आ गाड़ी-सवारी इत्यादि अहीपर निर्भर करैए। ओना भीमपुर नमहर गाम, सभ जातिक लोक गाममे। मुदा एक-दोसरमे तेना घेरा-घेरी जे आन जाति आन जातिक बरियाती किए जाएत आकि सराधेक भोज किए खाएत। जाति खेने श्राद्धक भोज भेल आ जातिक एने-गेने कुटुमैती-बरियाती भेल।

..ओना समाजोक बीच आ सम्बन्धी सबहक बीच एहेन सम्बन्ध सूत्र तँ रहबे कएल अछि जे दिनानुदिनक परिवारक काज जखने नमहर हुअ लगैत अछि तखने दोसराक खगता होइ छै, जइले गामो-समाज आ सरो-सम्बन्धीक सहयोग सेहो होइते आबि रहल अछि। ओना एक गाम रहितो, आने गाम जकाँ भीमपुरोक चालि-ढालि। चालि-ढालि ई जे जहिना आन गाममे स्कूलिया-कौलेजियाक जे बिआह होइए तइमे माता-पिताक सर-समाजक संग सर-सम्बन्धीक सम्बन्धक संग एकटा नव सम्बन्ध जरूर स्थापित भेल जा रहल छै, मुदा एकरा पाछू एकटा बिमारियो तँ बढ़िये रहल अछि, जे बिआह-दानक खर्च बढ़ि रहल अछि।

ओना बेटा-बेटीक बिआहक पाछू माता-पिताक ईहो मनसा रहैत जे जात-बरियातकेँ मनोनुकूल सुआगत करिऐन, मुदा मनोनुकूलताक सीमे समाप्त भेल जा रहल अछि। मूल प्रश्न अछि दू गामक दू परिवारक बीचक जे दूटा बेटा-बेटी अछि ओकर स्थायी सम्बन्ध स्थापित करब। ओना मनुख विचारशील अछि तँए विचारक रस्ता चलि विचारवान बनैक छै जइसँ मनुखक संग मनुखक घर

(परिवार) आ घरक (परिवारक) संग परिवारक समूह (समाज) सेहो विचारशील बनि चलत। मुदा आने गाम जकाँ जीयालाल असगरे सभ दियाद माने एक जातिक दसो परिवार बंगलोरमे रहैत, बाँकी गौंआँ मुम्बइ, कोलकाता, आसाम, दिल्ली इत्यादिमे रहैत, जइसँ समाजो हटले। तहूमे जीयेलाल कोन बंगलोरसँ आबि समाजक बेटा-बेटीक बिआहमे संग दैत जे भीमपुरबला जीयालालकेँ देत। मुदा तँए कि जीयालालक बेटाक बिआह नइ हएत, सेहो तँ नहियेँ अछि। जेकरा जुड़ै छै से पचासटा गाड़ी आ पान साए बरियातीक संग बेटाक बिआह करैए आ जेकरा कम छै ओ एकोटा गाड़ी आ पाँचोटा बरियातीक संग बिआह तँ करिते अछि। एकर माने तँ ईहो नइ ने हएत जे जेकर पचासटा गाड़ीमे बरियाती गेल, ओइ लड़का-लड़कीक (बर-कनियाँक) बिआही-सम्बन्ध अधिक सक्कत भेल आ एकटाबलाक कम सक्कत भेल...।

बरियातीक बात उठबैत जीयालालकेँ पुछलयैन-

"केते बरियाती आएब?"

जीयालाल अपन उदारता देखबैत बजला-

"जेते अहाँ सभ भार देब।"

जीयालालक बात सुनि गुम भऽ रघुनी काका दिस तकलौं। रघुनी काका मुड़ी ने नीक जकाँ उठौने आ ने नीक जकाँ खसौने, तिरछिया कऽ सभ दिस देखैत रहैथ।

रघुनी काकापर नजैर पड़िते बुझि पड़ल जे मने-मन विचारि रहल छैथ जे दू साए बरियातीक मांग करता तँ एक साए कहबैन जे डेढ़ सएपर तँइ हएत। अखुनका डेढ़ साए बेसी नइ भेल, सहरगंजा भेल। मुदा समाजक आशामे मुँह बन्न केने रहैथ। समाजक बुढ़ो-पुरान सभ बैसले रहैथ, तँए आगू बढ़ि किछु बाजब उचित नै बुझि सिंहेसर

बाबा दिस देखए लगलौं जे ऐठाम तँ वएह सिरजन छैथ, ओ जे बजता तेकरे समाज होइक नाते सुनब आ ओइ पक्षक विचार सुनि बीचमे ऊपर-नीचाँ, कम-बेसी करैत एक सीमापर काजकेँ ठाढ़ कऽ देब। मुदा जे प्रश्न सामनेमे आबि खसल छल ओकरा ढील-ढाल देख बिच्चेमे जीयालालकेँ कहलयैन-

"केते दिनसँ बंगलोरमे रहै छी।"

जहिना आन नोकरिहाराक मनमे उमकी रहैत तहिना जीयालालोक मनमे उमकी रहबे करैन। शहरमे रहै छी दरमाहाक संग उलफी आमदनी, नीक होटलक संग नीक सवारीक सुविधा सेहो। बजला-

"ओना अपने पचीस बर्खसँ मुदा परिवार बीस बर्खसँ संग रहए लगल अछि।"

पुछलयैन-

"केते परिवार गामक एकठाम रहै छी?"

जीयालाल-

"ओना अपना गामक अपन जे जातिक दसो परिवार अछि ओ सभ बंगलोरेमे रहैए। गामक दोसर जातिक नइ रहै छैथ जँ रहबो करैत हेता से जानकारीमे नइ अछि।"

पुछलयैन-

"दसो गोरे एकेठाम रहै छी?"

जीयालाल-

"नइ, बहुत हटि-हटि कऽ रहै छी।"

जीयालालक बात सुनि एक संग मनमे अनेको प्रश्न उठि गेल। उठि गेल ई जे जैठाम भाषाक दूरी एते अछि जे जिनगीक सभ

किरिया-कलापक रस्ता बन्न केने अछि, तैपर खाइ-पीबैक सेहो दूरी अछिए। जे रहबो सोभाविके अछि। सोभाविक ई जे मिथिलांचलक मौसम आ बंगलोरक सालो भरिक मौसम एक रंग नइ अछि। जे से ओइठाम जे खान-पान अछि, ओहने भेलापर ओइठाम जीब सकै छी, नइ तँ रंग-बिरंगक बर-बेमारी गरसित करत। तैसंग काजक पद्धति बदलने अंगक संग बुधियोक पद्धति बदैलते अछि, मुदा सभ किछु रहितो पहिल दिनक मुँह-भिरानीमे एहेन बोल उचित नइ, तँए चुप भऽ गेलौं। हमरा चुप होइते जीयालाल बजला-

"बरियातीमे मात्र नअ गोरे गामक आ बारह-तेरह गोरे कुटुम छैथ, माने कुल मिला एकैस गोरे बरियाती आएब।"

ओना रघुनी काकाकेँ बरियाती झुझुआन बुझि पड़लैन, किएक तँ पैछला बेटीक बिआहमे अढ़ाइ साए बरियाती आएल रहैन, मुदा बजला किछु ने। तइ बिच्चेमे सुन्दर काका बजला-

"बरियातीक खानो-पानक विषयमे किछु कहैक अछि?"

जीयालाल भातीजकेँ इशारा दैत बजला-

"बौआ, अखैन कोनो बात खोलि कऽ बाजह, बरियाती तँ तोहीं सभ ने रहबह।"

चालू-पुरजा इनदेसर अछिए। बाजल-

"हम सभ माछ-प्रिय छी तँए माछ खेबे करब! पीबैले बोतलक इंजाम काका अपने दिस रहए दियौ।"

शराब-माछ सुनि समाजक बीच गुन-गुनी शुरू भेल। गामक सभ वैष्णव। ने माछ खाइत आ ने शराबक नाओं सुनने। जीतन काका बजला-

"गामक बेसी गोरे वैष्णवे छैथ, हमहूँ वैष्णवे छी। ओना माछमे

बहुत बेसी पौष्टिक गुण छै मुदा ओ तँ छी देहा-देहीक। जहिना सब रंगक माछमे सब रंगक पौष्टिक तत्व छै, जेकर जरूरत लोकोकेँ सभ रंग छइ। मुदा भोज-काज तँ दस गोरेक बीचक होइए। तैसंग ईहो जे खरचो बहुत बेसी होइए। तँए माछ खाइले नइ देब। गामोमे अखन धरिक जे चलैन अछि तेकरा आगू भऽ कऽ तोड़बो उचित नइ हएत।"

आँगन दिससँ स्त्रीगण सेहो हल्ला करैत-

"दुनियाँमे जेते बेटी छै, तेते बेटो तँ छैहे। नइ करब एहेन कुटुमैती।"

सएह भेल। चारू गोरे जीयालाल बिनु जलखै केने ओतएसँ विदा भऽ गेला।

❍

तिथि : 14 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1272

पसेनाक धरम

जहिना अंग्रेजक जून मास काल्हि समाप्त भेल तहिना अपन जेठ मास सेहो ओरानीपर आबि गेल।

पैछला साल जे दुर्गापूजामे हथिया नक्षत्रक बर्खा भेल, तहियासँ एको बून पानि मेघसँ नै खसल। ओना मघाइर बर्खा भेने जाड़ो किछु बेसियाइए जाइए, मुदा सेहो नहियेँ बेसियाएल। तइसँ जाड़क दुख तँ कनी कमबे कएल मुदा रब्बी-राइकेँ लाही चाटि गेल!

हथियाक पछाइत आठ माससँ अकास धरतीकेँ सरकारी राशन जकाँ पानि बन्न कऽ देलक। जइसँ रंग-रंगक विचार धरतीपर उठऽ लगल। कियो बजैत जे रौदी हएत, तँ कियो कहैत आगूसँ रौदी भेने थोड़े रौदी हएत आ जँ पाछूसँ मेघ फाटि बर्खो हुअए आ बाढ़ियो आबए तखन रौदी कहबै आकि दाही? तहिना कियो ईहो कहैत जे कालियो दास अखाढ़सँ बर्खा-मेघक आगमन मानै छैथ तखन रौदी केना भेल?

मुदा तेतबे थोड़े अछि, केम्हरो कमला पूजा तँ केम्हरो पानिक यज्ञ[2] तँ केम्हरो रौदी भगबैले रामधुन-अष्टयाम-नवाह तँ केम्हरो मनुखदेवा गहवरमे पूजो अनधुन हुअ लगल।

[2] बर्खा होइबला यज्ञ

जे भेल कि नइ भेल मुदा एते तँ भेबे कएल जे हथियाक बरिसल, माघक गुजरल फागुनक मोजर[3] रौद आ पछिया हवामे तेना झड़कल जे आमे अलोपित भऽ गेल।

चारि बजे भोरेसँ शिवपूजन काका काजमे लगता तँए साढ़े तीनियेँ बजे नीन तोड़ि उठि, प्रभात कर्मसँ निवृत होइत चाह बना पीब घड़ीपर नजैर देलैन तँ चारि बजैत देखलैन। पत्नीकेँ सोर ऐ दुआरे पाड़लैन जे ओ जगि कऽ तैयार भेल छैथ कि नइ, मुदा सुगियो काकी पतिक कोठरीक खट-खुटक अवाज सुनि तैयार भऽ गेल छेली। तैयारो केना ने होइतैथ, काल्हि साँझूए पहर तीनू गोरे[4] एकठाम बैस विचारि नेने छला जे पराते बीघो भरि खेतक चास लगाएब।

गोरहा खेत छी ओतबो जँ सम्हरि कऽ उपैज जाइए तँ बुतातक साल-माल लगिए जाइए। तहूमे कि आब लोक पहिलुका जकाँ दुनू साँझ भात खाइए, एकसंझू भेने अदहे साल ने भेल। जेठ अखाढ़क सीमा परहक समए छी, माघ मास थोड़े छी जे लोक आठ बजेक पछाइत काज दिस ताकत। अखैन तँ चारि बजे भोरेमे फरीच हुअ लगै छइ। काजक अनुकूल समए तँ बनियेँ जाइ छइ। तहूमे काजो नमहर अछिए। बीघा भरिक चास। एक दिस पहिने खेत पटत, तखन कदबा हएत तहिना दोसर दिस बीआ उखाड़ल जाएत, तखन ने कदबाक पछाइत रोपल जाएत। जेरगर जनकेँ जोड़ियबैयोमे समए लगिते अछि।

तेतबे किए! दमकलसँ पटौल जाएत, ट्रेक्टरसँ जोतल जाएत, दुनू लोहे-लक्कठ भेल, जँ कोनो पाट-पुर्जा गड़बड़ेतै तँ काजे रूकि जाएत।

[3] आमक मोजर

[4] पिता- शिवपूजन, बेटा- सोनेलाल आ पत्नी सुगिया

ओना सुगिया काकीकेँ बूझल रहैन जे अँगनाक काज पुतोहुक हाथे अपने सम्हारऽ पड़त। तेतबे नइ जँ कहीं पुरुख-पातर खेतेक काजमे ओझरा जेता तँ पानि-जलखै सेहो खेत पहुँचबऽ पड़त। तँए भोरेसँ जलखै-खेनाइक ओरियानक पाछू जारैन-काठीक व्योंत-बाँत मने-मन सुगिया काकी करिते रहैथ तखने शिवपूजन काका पुछलखिन-

"बौआ उठल? चारि बजि गेल। घटही गाड़ी जकाँ जँ शुरूएमे लेट भेल तँ टीशने-टीशन लेट होइते जाएत।"

भिनसुरका समए तँए सुगिया काकीकेँ पतिक बोल नीक लगलैन। नीको केना ने लगितैन, कौआ जकाँ थोड़े पति बाजल रहैन, काग जकाँ कुचड़ल रहैन किने। मुदा काजक मोड़पर तेना सुगिया काकी पड़ि गेली जे किछु करैत किछु ने बनै छेलैन। मोड़ ई जे सोनेलाल खा-पी कऽ नबे बजे रातिमे पितासँ छिप कऽ ऑरकेस्ट्रा देखए चलि गेल छल जे पौने चारि बजे आपस आबि ओछाइनपर पड़ले छल कि उठबैक आदेश पतिक भेलैन। ओना सुगिया काकीक अपनो मन घिरनी जकाँ नचैत जे चारि बजेमे दमकल चलत तखन ने कदबा बेरमे कदबा हएत आ रोपै बेरमे खेत रोपाएत। कहुना-कहुना तँ सात-आठ घन्टा खेत पटैमे लगत। एक तँ गोलगर खेत तैपर जेठुआ जरल सेहो अछि। तहूमे कि फूलक छीच्चा छी, आ कि तीमन-तरकारीक जैड़पनियाँ छी, कदबाक पटौनी छी किने, जइमे कहुना तँ भरि घुट्ठी पानि लगौल जाएत। तँए ओहो समए खिंचबे करत।

पत्नीक उत्तर नहि पाबि शिवपूजन काका कनी कड़ैक कऽ दोहरबैत बजला-

"की कहलौं, नइ सुनलिऐ?"

पतिक दहकैत अवाज सुनि सुगिया काकीक नजैर नचलैन।

नचिते मनमे एलैन, एक दिस पति परिवारेक नीक-ले आफन तोड़ि रहला अछि, दोसर दिस ई छौड़बा किए भरि राति जागि कऽ गमा लेलक..!

..आब ओ सूतत आकि जगि कऽ काज सम्हारत। अखैन जे ओकरा उठबऽ जेबै तँ ढोंढ़ साँप जकाँ फुफकार छोड़त..! जँ नइ उठेबै तँ अपने आरो बेसी दहकता! ऐ परिस्थितिसँ निबटब केना..? परिस्थितिसँ वैचारिक दौड़मे निपटियो सकै छी मुदा काजक जे जाल पसैर गेल अछि, माने रोपनिहारकेँ कहि देने छिऐ, जे अपन समांगक गलतीसँ ओकर काज बाधित हेतै! कहुना छी तँ पेट-बोनियाँ छी, भरि दिन थाल-पानिमे लेटाएत तखन जा कऽ बाल-बच्चाक संग दुनू साँझ खाएत। अपनो परिवारमे जेते जोड़ि-बन्हन कऽ नेने छी, माने दमकल चलैक ओरियान, खेत जोतैक ओरियानक संग जलखै-चाहक ओरियान, ओहो तँ राइए-छीती भऽ जाएत..!

..मने-मन साहस बटोरि सुगिया काकी सोनेलालक कोठरीक मुँह लग जा ठाढ़ भेली। केबाड़ बन्न रहने बाहरेसँ बजली-

"बौआ, बौआ सोनेलाल?"

कनी पहिने सूतल सोनेलालक मोनमे ओहिना ऑरकेस्ट्राक सीनो सभ आ गीतो-नाद नचिते रहै जइसँ नीन गहराएलो नहियेँ छेलइ। मुदा माइक बोलकेँ अनसुन करैत सोनेलाल हँ-हूँ किछु बजबे ने कएल। जइसँ सुगिया काकी केबाड़ लग ठाढ़ छेली। ने आगू ससैर पति लग जाइक साहस होइ छेलैन आ ने बेटाकेँ जोरसँ दबारि उठबैक साहस होइन। एक तँ ओहुना भोरुका समए छी, शीताएलमे केतौ अगियाएल दौड़ै...।

..शिवपूजन काका पत्नीकेँ कहला पछाइत, पत्नीएपर नजैर रोपि लेलैन। रोपि ई लेलैन जे काजक दौड़मे जँ काजक सूत्र मनसँ ससैर

जाएत तखन तँ काजो ओही लाथे ससरऽ लगत। जइसँ काज या तँ भरियाएत या ओझराएत। पत्नीक क्रिया-कलाप देख शिवपूजन कक्काक मन ठमैक गेलैन। जैठाम ठमकलैन तहीठाम ठाढ़ सेहो भऽ गेलैन। तँए मिसियो भरि आगू-पाछू नइ डोललैन। असथिर भेल दरबज्जाक मुँह लग ठाढ़ भेल पत्नीपर आँखि गरौने रहलैथ। मुदा नजैर घूमि कऽ काजक बीच सीमानपर आबि अँटैक गेलैन। अँटैक गेलैन ई जे कियो पसेना चुबा श्रम करैए आ कियो श्रमसँ छिटैक श्रमचोर बनि जाइए जे मेहनतक पसेनाक धरम नै बुझि, श्रमहीन बनि जाइए। एना किए एक्के मनक दुनू क्रिया भऽ जाइए? क्रिया तँ कर्मक अनुकूल चलैत अछि, कर्म चलैत अछि विचारानुकूल, आ विचार चलैत अछि धर्म-धारणक अनुकूल। माने जे जेहेन जिनगीकेँ धरम बुझि धारण करैए...।

..मुदा लगले मन नाचि गेलैन जे पसेनाक धरम की? जहिना एक-बट्टी, दू-बट्टी, तीन-बट्टी, चरि-बट्टी, पँच-बट्टी लग पहुँच अपन जीवन यात्राक पथ जखन कियो देखए लगैए तखने ने देखैए जे पसेना तँ ओ शीतल बून छी जे कुवृत्तिकेँ धोइ जेते बढ़ैत जाइए से तेते धोइत-धुआइत अपन धरम धारण करैए। से कहाँ सोनेलालमे देख पाबि रहल छी? धिया-पुता जकाँ जेना कोनो धनियेँ-ढेकार ने छै, तहिना बुझि रहल अछि! जीबैले जीबैक उपाय सेहो तँ करए पड़ै छइ। से कहाँ देखैमे आबि रहल अछि..!

विचारैत-विचारैत शिवपूजन कक्काक मन अपन औझुका काजमे ओझरा गेलैन। ओझरा ई गेलैन जे जे गर्भे नाश भऽ जाएत ओकर जिनगीक आशा केते कएल जाए सकैए। फेर मन घुमलैन, जून मासक अन्त भऽ गेल, जइ बीआकेँ बीस-पचीस दिनक बीच रोपैक छल, ओ अदहा मइमे छीटने छेलौं, जेकरा आइ डेढ़ माससँ बेसी भऽ गेल, जे समए ओकर वृद्धिक छेलै, तइमे अदहा समए ओहिना चलि

गेल। जाइक कारण भेल बर्खाक आशा-आशी देखब।

जहिना शिवपूजन काका दरबज्जाक मुँहपर ठाढ़ भेल घड़ी दिस देख-देख निराश भऽ रहल छला, तहिना सुगिया काकी सूतल बेटाकेँ देख-देख उतरीत भऽ रहल छेली। मुदा दुनूक मनक प्रश्न अन-उतरीत छेलैन। उतरीत तँ केला पछाइत भेलापर होइ छइ। निराशमे आस भरैत शिवपूजन काका सुगिया काकीकेँ कहलखिन-

"सोनेलाल सुतले अछि! चारि बजि गेल! अखैन जँ ओकरा चरिया कऽ नइ उठाएब तँ ओ सुतले रहि जाएत।"

अपन मनक बात खोलैत सुगिया काकी बजली-

"भरि राति अरकेस्ट्रा देखै छेलै, अखैन जँ उठेबो करबै तँ काजमे भकुआएले रहत।"

'ऑरकेस्ट्रा'क नाओं सुनि शिवपूजन कक्काक मनमे उठलैन, अखन तँ खेती-बाड़ीक समए छी, कोनो उत्सवक समए तँ नहियेँ छी, अखुनका उत्सव तँ सभसँ पैघ खेती-बाड़ीक भेल। तहूमे काल्हि साँझूए पहर काजक सभ व्योँत लगा नेने छेलौं, तखन किए एना केलक। बजला-

"जखन औ काजक सभ व्योँत बूझल छेलै, तखन किए देखऽ गेल। जँ गेबो कएल तँ घन्टा-दू-घन्टा देखैत आ आबि कऽ सुति रहैत, जइसँ काजमे बिथुत नइ होइतै।"

मुदा सुगिया काकी चुपचाप पतिक बोल बेटा निविते सुनि रहल छेली। कोनो उत्तर नै छेलैन। छेलैन सिरिफ एतबे जे आँखिक ज्योति झूकल छेलैन।

❍

तिथि : 16 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1263

जेठुआ गरदा

लूरिपुरा गाम काजे जाएब रहए, जेठ मास भोरुए पहर गामसँ विदा भेलौं। कनी बेसी दूर रहने जेठुआ गरदाक धुरखेलमे पड़िए गेलौं।

जमुना धारक ओइ पार लूरिपुरा गाम अछि, जइ गाममे दुरवासा काका आ दुरदिनी काकीक घर सेहो छैन। हुनके ऐठाम जाएब रहए। ओना अखुनका हिसाबे हमरो गाम कोनो बेसी हटल नहियेँ अछि, किएक तँ देखबे-सुनबेटा नइ, घर बैसल पाँचो मिनटमे कोन-कोन देश आ केतए-केतक लोकोसँ गपो होइए आ सवारियो तेते फड़ि गेल अछि जे हजार कोसक कोनो महते ने अछि, चाह-पान पीबै-खाइले, गामक चौक-चौराहा जकाँ लोक आनो-आनो देश जाइते अछि। तैठाम साते-आठ कोस हटल गाम, जेतएसँ पाँच बजे भोरे पएरे विदा भेलौं। मुदा बरह-बजिया विर्डोओ आ जेठुआ गरदोमे पड़िए गेलौं। एक तँ ओहिना केतए-कहाँसँ आएल पछबा हवाक झोंकी जे ठाम-ठाम खेतोमे आ रस्तोपर मोइन फोड़ि रहल अछि माने जहिना पानि चकभौर लैत धारमे मोइन फोड़ैए तहिना हवाकेँ सेहो फोड़ि विर्डो-दानो भाइये जाइए।

एक तँ अहुना धारऽ-कातक गाम, तैपर बलुआहा रस्ता, केतौ धँसल, केतौ टुटल तँ केतौ बगलक खेतबलाक कोदारिक छाँटल, तँ केतौ अड़कन-मड़कनक ढेरीसँ घेराएल। ओना लूरिपुरासँ पाछूए, माने

दस बजेक करीबमे डेढ़-दू कोस पाछूएसँ ओहन रस्तासँ भेँट भऽ गेल मुदा रौदो आ हवोक ओहन तेज गति नहियेँ आएल छल तइसँ टपैमे बेसी बाधा होइत, मुदा जमुना धारक किनछेर लग पहुँचैत-पहुँचैत जेठुआ धुड़खेलसँ भेँट भाइये गेल। ओना केतबो धुड़खेलक हवा-विहाड़ि किए ने रहए, मुदा मनमे ईहो बिसवास तँ बनले रहए जे जैठाम काज अछि ओहो लगिचाइए गेल अछि। होइतो अहिना छै जे रस्ता केहनो गड़ूगर किए ने टपऽ पड़ए मुदा अपन गनतव्य स्थानपर पहुँचते मन खुशीसँ खुशीआइए जाइ छइ। से आशा मनमे रहबे करए। जमुना धार टपिते एकटा चौड़गर रस्ता जे लूरिपुरा होइत पछिम मुहेँ दूर तक गेल अछि। गामो तेहेन घनगर नहियेँ, मुदा धारक कातक जेहेन गाम होइ छै, तइमे कमियोँ नहियेँ रहइ। काठक पहियाक गाड़ी, बरद बहलमानक बले चलिते अछि। जइसँ गामक रस्ताक कोनो दशा बाँकी नहियेँ छइ। एक तँ बलुआहा माटि तैपर केतौ खाधि तँ केतौ रस्ता-कातक पानिक कल लग खच्चा, मुदा किछु छी तँ गामक सार्वजनिक सम्पैत कहियौ आकि सरकारी सड़क, छी तँ वएह। मुख्य सड़कसँ एकपेरिया फुटल रस्ता, ओना टोले-टोल सेहो एकपेरिया फुटले अछि, ओही रस्ता कातमे दुरवासा कक्काक घर। बारह बीतैत-बीतैत दुरवासा काका ऐठाम पहुँच गेलौं।

आने गाम जकाँ लूरिपुरोबला सभ रंगक काज अपना-अपना विचारे अपना-अपना लूरिए-बुधिये अपन-अपन करिते अछि। अपन-अपन सबहक काज तँए केकरोसँ केकरो मतलब बेसी किए रहतै। मतलब तँ बेसी ओइठाँ होइ छै जइठाँ एक रंगक काज वा दसगरदा काज होइ छइ। दुरवासा काका दुरदिनी काकीक किसान परिवार, तीन-चारि बीघा खेत, पाँच गोरेक परिवार, शहर-बजारक तँ जिनगी नहि, जे काजो समटल रहतैन। किसानी जिनगी तँए काजो घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेत-खरिहाँन धरि पसरल छनिहेँ। ओना देखा-देखी

लूरिपुरोबला आने गामबला जकाँ गाइयो-महींस पोसैत, खेतियो-पथारी करैत आ धारेकातक गाम जकाँ कारोबार आ सवारियो तँ रखनहि अछि। रस्ता-पेरा दुआरे- माने धार-धूरक इलाका रहने-इंजिनक गाड़ियो आ इंजिनक कारोबार नहियेँ तेना भऽ कऽ पकड़ने अछि मुदा थोड़-थाड़ पकड़ने तँ अछिए।

एक गाममे रहितो दुरवासा कक्काक विचारो अपन आ काजो अपना ढंगक छैन। अपना ढंगक काज ई जे दुनू परानीक बीच पँचनामा बँटवारा तँ परिवारक काजक नहि, मुदा परम्परासँ चलि अबैत बेवहारक अनुकूल काजक सीमांकन छनिहेँ। एकर माने ई नइ जे, एक-दोसराक सहयोगी संगी नइ छैथ। रहबो किए ने करता, काज चाहे जिनका सिरे होइ मुदा छी तँ परिवारेक काज, जे दुनू परानी नीक जकाँ बुझितो आ करितो। मुदा एते तँ मने-मन रहबे करैन जे जे-जे काज जिनका सिरे अछि ओ ओइ-ओइ काजक जवाबदेह भेला, आ परिवारक दोसर-तेसर ओइ काजक सहयोगी भेलौं, तँए वैचारिक मतभेदक प्रश्नक जड़िए ने केतौ अछि।

आन जकाँ परिवारमे केतौ गुमा-गुमी नहि जे, कियो केकरो काज बुझबे ने करत। पोखेरक पानि जकाँ जेहने घाट परक तेहने जाइठ लगक...।

..अपना ढंगक जिनगी तँए दुरवासा काका गाममे रहितो गौआँक संग केतौ हटि, केतौ सटि आ केतौ-केतौ हटि-सटि कऽ अपनो चलि रहला अछि आ परिवारो चलि रहल छैन। हटल केर माने भेल जे जैठाम नोकरियो आ बहरवैयो[5] अपन खेतमे ओहन-ओहन बोन-झाड़ लगौने छैथ, जेकर (लकड़ीक) पाइक मोल तँ अछि मुदा फल-फलहरीक मोल नहि अछि। मुदा से नै दुरवासा काकाकेँ

[5] बाहर जा कऽ नोकरी केनिहार

बिसवास बनल छैन जे बच्चाकेँ माने विद्यार्थीकेँ कागज-कलम किताबक खगता तँ ऐछे, मुदा केहेन लिखनिहार-पढ़निहारकेँ केहेन कलम कागज आ केहेन किताबक खगता अछि, ओइ अनुकूल ओकरा हेबा चाही। ई नइ जे बचकानी बच्चाकेँ हजार रूपैआबला कलम आ आन-आन देशक डिजेनगर किताब दऽ दिऐ। एहने सोच रहने गाममे शीशो-सखुआ-सागवानक बोन सेहो अछि, आम, कटहर, लताम, बेल, धात्रीक बोन सेहो आ दारीम, नेबो इत्यादिक झाड़ो अछिए।

दुरवासा काकाकेँ दूटा बेटा, विलास आ विकास। ओना विलास जेठ, विकास छोट अछि मुदा दुनू नबालिके। जहिना सभ परिवारमे बालिक भेने बेटा पिताक विचारमे अबैत आ नबालिक रहने माइक विचारमे रहैत तहिना दुरवसो कक्काक रहलैन।

ओना ऐ-बेरक भोँटर लिस्टमे नाओं आबि गेने विलास बालिक भऽ गेल मुदा पिताक बात-विचारमे नइ ऐने पिताक नजैरमे विलास नबालिके छल, तँए कोनो काजक भार दुरवासा काका विलासकेँ नइ देने। ओना लाजक पच्छे बुझू आकि लूरिक पच्छे, कनी-मनी विलास पितोक संग काजमे पुरिते अछि, मुदा बात विचारमे माइयेक संग बेसी रहैए। प्रश्न तँ परिवारमे जटिल ऐछे जे जैठाम पिताक मन दूर देशमे बसव छेलैन तैठाम माइक मन दूर-दिन बीताएब छेलैन।

हवाक झोंकमे किसान परिवार सभकेँ खेती करैले बैंक-कर्जक घोषणा केलक। घोषणा ईहो केलक जे जेकर नाओं भोँटर लिस्टमे आबि गेल, ओकरा कर्ज भेट सकै छइ। ओना ऐ बातक घोषणाक भनक दुरवसो काकाकेँ लगलैन, मुदा अपन समटल खेती, समटल लूरिक संग समटल श्रमक संग चलिए रहल छैन तँए बैंकक लौनक खगता नहियेँ बुझि पड़लैन। संगे मनमे ईहो रहबे करैन जे माता-

पिताकेँ पार-घाट लगा कर्ज चुकाइए चुकल छी, पत्नी कोनो करजे ने भेली, तखन बँचल बेटा-बेटीक कर्ज। सेहो तँ ओकाइत भरि काइए रहल छी, किछु दिनक पछाइत ओहो सधिये जाएत। तखन अनेरे जे देश-विदेशक कर्जा लऽ कऽ अपनो आ अपन लूरियोकेँ जे कर्जखौंक बना देब से उचित नहि। पसिन्न लोककेँ अपन-अपन होइ छै आ विचार अपन-अपन चलै छै...।

मुदा परिवारमे भीतरिया रोग पैसि गेलैन। भोँटर लिस्टमे नाओं ऐने अपनाकेँ बालिक बुझि विलास खेतीक नाओंपर लौन उठा टी.वी. कीनि लेलक..!

..बैंकसँ लौन उठा विलास बजारेसँ टी.वी. कीनने दोसर-तेसैर साँझ घर आएल। घरपर आबि माएकेँ कहलक-

"माए, टी.वी. कीनिलौं हेन।"

जहिना सभ माए, बेटा-बेटीकेँ नीक खेनाइ, नीक कपड़ा-लत्ता, साज-श्रृंगार देख खुशी होइत तहिना दुरदिनी काकी सेहो भेली। अपना संग पड़ोसियो-पड़ोसनीकेँ टी.वी. देखैक हकार बिलैह एली। एके-दुइए देखनिहार अबऽ लगल जइसँ रातिक दस बजि गेल। दुरवासा काका अपन दिनचर्यानुसार अपनेमे घुरियाइत सुति रहला, जइसँ बुझबे ने केलैन।

भोरे-भोर दुरदिनी काकी टी.वी. नेने दुरवासा काकाकेँ देखबऽ गेली। टी.वी. देखते जेना दुरवासा कक्काक नरसिंह ऍँड़ीसँ टिकासन चढ़ि गेलैन। मुदा प्रभातवेला दुआरे मुँहमे ताला लगौने रहला।

ओना आँखिक रंग दुरवासा कक्काक कारीसँ ललौन हुअ लगलैन, मुदा जहिना लोक अपन लहूक घोँट अपने पीब लइए तहिना दुरवसो काका पीबैत बजला-

"ऐसँ नीक रेडी होइतै, जइमे बात तँ सब ऐबतै मुदा अनकर रंग-

रूप नइ देखने अपन रंग-रूपमे समटल रहैत।"

पतिक विचार सुनि दुरदिनी काकी बजली किछु ने मुदा मन कलहैन्त गेलैन।



तिथि : 18 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1103

हँसीएमे उड़ि गेलौं

जहिया साते बर्खक रही तहियेक बात छी। फागुन मास रहै, धुमसाही लग्न चलैत रहइ। एक तँ ओहिना लोकक संख्या बढ़ने काजमे बढ़ोतरी भेल तइसँ जे काज बेसियाएल से धुमसाही, मुदा तेतबे नइ रहै बाढ़िक आगम सुनि जहिना लोक नून आ दिया-सलाइ कीनि-कीनि अपन काज अगुआ कऽ रखैए, तहिना बैशखाक लग्न मलेमासमे पड़ि गेने लग्नोक काज अगुअबऽ लगल जे काजक धुमसाहीकेँ आरो बढ़ा देने रहै, तैपर बिआहक संग दुरागमनोक दिन आ अगता उपनैनो आ मूड़नोक लग्न धुरझाड़ पछिया हवा जकाँ चलैत रहइ।

लग्न देख जेना हमरो लगन जागि गेल हुअए तहिना भेल। सभकेँ बिआह करैत देखिऐ तँ हमरो मनमे भेल जे जँ कहीं ऐ साल बिआह नइ भेल आ लड़की सधि जाएत तखन तँ हमर बिआह...। आम-मौह जँ पुजबे करब तँ की ओ घरवालीक भाँज पुरौत?

ओना अपना गाए नइ रहए, मुदा गइवरबा सबहक संगमे बुधना बाबाक खिस्सो आ महराइयो सुनऽ बेरूपहरमे चलि जाइ।

तीनटा गाए बुधना बाबाकेँ रहैन, ओकरे चरबऽ ओहो जाइ छला। खसल बाध, उपजा वाड़ीक दरस नहि, बाधमे सभ चरबाह अपना-अपना गाएकेँ चरैत छोड़ि दइ आ साहोरक गाछ लग सभ

बुधना बाबाकेँ चारू भरसँ घेरि बैस खिस्सा सुनै छेलौं।

जहिएसँ लाटमे गेलौं तहिएसँ बुधना बाबापर बिसवास बनले रहए। खिस्सा कहला पछाइत बुधना बाबा सभकेँ पुछैत रहथिन जे केकरा केहेन लगलौ। जेकरा जेहेन लगै से तेहेन बजै। सरंगाक खिस्सा सुना आइयो पुछि देलखिन-

“की रे, तोरा सभकेँ खिस्सा नीक लगलौं?”

मुदा हमरा जेना फौगनहैट हवा लगि गेल रहए तहिना चारू दुनियाँ हरियरीए देखिऐ। तही समए, कनी हटि कऽ रस्ते-रस्ते शहनाइबला एकटा बरियाती जाइत रहै, ओकर अवाजसँ कान सेहो भरैत रहए, तखने हमरो पुछलैन-

“की रे बेलबा, तोरा नीक लगलौ?”

हमरा तँ तेहेन मन घुमैत-घुमैत भऽ गेल जे बकारे ने फुटए। मुदा बाबाक प्रश्नक उत्तर नै देबैन सेहो केहेन हएत, मुड़ी डोलबैत उत्तर देलिऐन। बाबा हमरा उत्तरसँ पिनैक गेला। बजला-

“रे धीमरा, तोरा मुँहमे बोल नइ छौ।”

जे सोचि बाबा बाजल होथि मुदा हमरा माने लगल जे ओ धिक्कारि रहला अछि। हुकनर खिस्सा नजैरसँ हटि अपन अगुआ गेल। कहलयैन-

“बाबा, सबहक बिआह भेल जाइ छै, हमर कहिया हएत?”

आन बुढ़ जकाँ बाबाकेँ मिसियो भरि तामस नइ उठलैन, तामसो केना उठितैन तीन सोरेसँ बेसी बिआह करौने छैथ। मनमे भेलैन जे आनक देखा-देखी ईहो परिवार बना परिवारमे रहए चाहैए। कहलैन-

“देख बेलबा, जुग-जमाना उनटल जाइ छै, लोक सभ

हिप्पीबला बर आ कोठाबला घर ताकि-ताकि बिआह करैए, तहूँ परदेश चलि जो, हिप्पी बना कऽ आ गऽ, तखन तोरो बिआह हेतौ।”

बाबाक विचारकेँ गीरह बान्हि आँगन आबि बाबूकेँ कहलयैन-

“तूँ दुनू गोरे तेतबे कमाइ छह जे कहुना-कहुना दिन-राति कटि जाइ छह। तइसँ कोठाबला घर हेतह? इन्दिरा अवास जे भेटबो करै छै सरकारी, सेहो घराड़ी दुआरे देतह? हमरा एते-एते केते गोरे परदेशमे कमाइए, हमहूँ जाएब।”

बाबू किछु ने बजला मुदा आश्वासन दैत माए बजली-

“परदेशक कोनो ठेकान नइ छै, कियो करखन्नाबला हाथे बिका जाइए तँ कियो ठिकेदारक हाथे बन्हकी लगि जाइए। तँए आँखिक परोछपर हमरा बिसवास नइए, तूँ नै जो।”

ओना माइक बातकेँ काटि नै सकलौं मुदा मनक लगन तेते जोर मारि देने रहए जे केतौ नजैर टिकबे ने करए। किछुए दिनक पछाइत पिसियौत भाए संगे पंजाब चलि गेलौं।

मुदा एकोरती पंजाबमे अनचिन्हार जकाँ नइ बुझि पड़ल। जहिना अपना ऐठाम लोक सभ देखिऐ तहिना ओतौ देखिऐ, मनमे एते बिसवास तँ बनले रहए जे अपन गाए नइ ने चरबै छेलौं, मुदा अनको के तँ हाँकिए दइ छेलिऐ। संगे-संग गाइक पाछू जाइतो छेलौं आ ऐबतो छेलौं, ई लूरि तँ अछिए। बड़का करखन्नामे जेकरा एकटा नट-बोल्ट लगबैक लूरि छै ओ बड़का इंजीनियरो भेल मोटका दरमाहा सेहो लइए, आ हमरा तँ गाएकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइक सभ लूरि अछि। जेतए चाहब तेतए नोकरी हएत। से गर लागल। एकटा महिला मलिकाइन ऐठाम नोकरी भेल। मुदा ओहो ला-जवाब महिला, कहलैन-

“बेल बन्दा, मन लगा कऽ काज कर, जइसँ हमरो मुँह मिठाएत

आ कहैले तोरा साए रूपैआ दरमाहा गछलियौ, मुदा जहिना हमर मुँह मिठेमेँ तहिना तोरो मिठा देबौ।”

पराते भने कहलैन-

“ऐठामक लोक केश-दाढ़ीक बड़ शौकीन होइ छैथ, तोहूँ केशकेँ नीकसँ बना ले।”

अपनो मन पड़ल बाबाक कहल ‘हिप्पी’। कहलयैन-

“चाची, अहाँ अपने चलि कऽ हजामत करबा दिअ।”

मुदा से वेचारी केलैन। बेटे जकाँ मानऽ लगली। अपने लग बैसा जे अपने खाइ छेली, से हमरो पुछि-पुछि खुअबै छेली। हमरापर एकदम दहिन छेली। जखन जे चीज कहै छेलिऐन, दासो-दास भऽ पुरा दइ छेली।

पंजाबमे देखिऐ बरहमसिया लग्न चलि रहए अछि। हमरो मन उधैक गेल, कहलयैन-

“चाची, हमरो बिआह करा दिअ।”

जेना हुनको मनमे रहबे करैन तहिना करबैक भार उठा लेलैन। मुदा हम तँ रही कनीयेँटा, ओइठीन तँ नमहरमे बिआह होइ छै, तँए कोनो गरे ने लगलैन।

तीन सालक पछाइत, जहिना छाहमे दाबल कोनो खिदखिदाइत गाछ, छाह हटिते फुड़फुड़ा कऽ तेजीसँ बढ़ैए तहिना अन्नक मारल हमरो खिदखिदाएल देह फुड़फुड़ा कऽ जागल। एगारहम-बारहम बर्खमे मोछ-दाढ़ीक पम्ह आबि गेल। पम्ह देख चाची कहली-

“ऐबेर बेल तोहर बिआह काइए देबो। आब तूँ पुरुख जकाँ जवान भऽ गेलैं।”

हमर बिआह पंजाबेमे भऽ गेल। कमासुत महिलाक संग। छह

मास बीतैत-बीतैत एक दिन सुगन्धा कहलक-

“ऐठाम रहने अहूँ घिनाएब आ हमहूँ घिनाएब तइसँ नीक अप्पन देश-कोस चलू।”

पत्नीक बात हम नइ बुझि पेलौं, मनमे ई रहबे करए जे पत्नीसँ तँ लोक कोनो बात पुछिते अछि। हमरे पुछैमे कोन जमा जिगर चलि जाएत। पुछलिऐ-

“की घिनाएब?”

जेना सुगन्धाक ठोरेपर रहै तहिना बाजल-

“ऐठाम हमरा लोक सभ दिन गामक बेटीए बूझत, जइसँ मातृत्वक बोध नइ हुअ देत, तहिना अहूँकेँ लोक सासुरवासीए बुझता।”

आगूक बात सुनैक धैर्य टुटि गेल। बिच्चेमे बजा गेल-

“जँ महिला रहि अहाँ अगुअबै छी तँ हमहूँ पुरुख बनि अगुआइले तैयार छी, मुदा आगू बुझब सझिया रहल?”

पंजाबसँ अबैक विचार केलौं। मन पड़ल जे जहिना गामसँ पंजाब गाड़ीमे चढ़ल एलौं आ भोरे-भोर उतरलौं तँ एकेरंग बुझि पड़ल, तहिना पंजाबसँ गामो गेलापर बुझि पड़त। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे जखन पत्नी रौद-वसातक चिन्ता छोड़ि गाम चलैले कहै छैथ तँ गामे जाएब। मुदा जे मलिकाइन मुँह मिठबैक बात कहने रहैथ हुनका किए ने मन पाड़ि देबनि। ऐठाम दुनू परानीक विचारसँ ने रहब, से मलिकाइनो किए ने बुझती। मुदा सुतरल, सुतरल ई जे दस हजार रूपैआ अपना दिससँ दैत मलिकाइन असिरवाद देलैन-

“बेल, जेतऽ रही हँसी-खुशीसँ रही।”

गाम आबि हिया कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे गुड़क बजार

खाली अछि। एकटा तरपीन मशीन कीनिलौं। दस कट्ठा कुशियारक खेत मनखप लेलौं...।

अपना गुड़ बनबै छी। गामो आ हाटो जा-जा गुड़ बेचै छी। तहूमे जखन माथपर गुड़क चेकी रहैए आ बाल-बोध सभ कियो गुड़बला काका, तँ कियो गरूबला काका, तँ कियो गुरूबला काका कहैए...। तखन तँ होइए जे दुनियाँमे सभसँ नीक हमहीं छी।

बाजपती हाट। बीचक एक पतियानी तरकारीवाली सबहक, आगूक पतियानीमे गुड़बला, तमाकुलबला, हँसुआ-खुरपीबला सबहक पतियानी। एक-दोसरमे उतरा-चौड़ी सबहक बीच होइते, किएक ने, जखन दस गोरे कोनो रेलबे गाटरकेँ उनटबैकाल एक गोरे आगू-आगू कहलक-

“जोर लगौने...।”

तँ दस गोरे पाछू-पाछू कहिते अछि-

“हइसा...।”

रविकान्त गामेक अधवयसू, जे बड़ाबाबूसँ सेवा निवृत भऽ गामे रहै छैथ। सभ हाट तीमन-तरकारी-ले अबिते छैथ। तरकारीवाली सबहक बीच, केकरो भौजी, तँ केरो काकी, केकरो सढ़ुआइन, तँ केकरो गामवाली, तँ केकरो सासुरवाली बना सभ बात करै छैथ। तरकारीवाली सबहक मुहेँ सुनि लेने छेलौं जे एहेन लोके छैथ जे सभ कहै छैन मखानक पातसँ मुँह पोछने आउ, तखन समान लेब।

आइ हमरा लग रविकान्त आबि पुछलैन-

“कए अने सेर गुड़ बेचै छह?”

खिस्सा तँ सुनने छी जे चारि अने सेर गुड़ बिकाइ छेलै, जे अखैन चालीस रूपैए किलो अछि। अही धोखामे बजा गेल-

“मखानक पातसँ पहिने मुँह पोछने आउ तखन गुड़ लेब।”

हमर बात जेना कबौछ जकाँ रविकान्तकेँ लगलैन, बजला-

“तूँ ई कहितह जे अहाँक दर पुरान भऽ गेल, नवका दर चालीस रूपैए अछि। से नै कहि, तूँ किए मखानक पातक नाओं लेलह?”

निरूत्तर भऽ गेलौं। मनमे अपने ग्लानि हुअ लगल, जे ऐ आदमी आकि हाटेपर आँखि उठा देख पाएब? की हम हँसीएमे उड़ि गेलौं?

❍

तिथि : 20 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1243

बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

बच्चेसँ पढ़ै-लिखैक प्रतिभा सुरेन्द्रक जगि गेल। जगिते बागर गहुम वा बागर धान वा बागर तीमन-तरकारीक गाछ वा फल-फलहरीक गाछक रंग-रूप जहिना छिटकैत बढ़ऽ लगैए तहिना सुरेन्द्रोकेँ लिखै-पढ़ैक रंग-रूप छिटकऽ लगल।

ओना पढ़ैक सुपुट बोलो आ लिखैक सोझ लिखाबटो आनसँ दब सुरेन्द्रक रहै मुदा तैयो बजैक मति (फ्लो) आ लिखैक गति आनसँ अगुआइक परियास करए लगलै। करइये नइ लगलै सीमाक अतिक्रमण करैत आगूओ डेग बढ़बऽ लगलै। अतिक्रमण ई जे जहिना बच्चाकेँ एक दिनक पाठ भेल अक्षरक साँठ आकि अङ्कक खाँत होइए, तइमे समैसँ पहिने अगुआ दोसर सीमामे पैसऽ लगलै।

आने जीव-जन्तुक प्रतिभाक कीड़ा जहिना निम्नसँ निम्नतर होइत आगू मुहेँ ससरैत उठैत-बैसैत अगुआइत उच्चसँ उच्चतर बनैए तहिना मनुखोक तँ अछिए। सुरेन्द्रोमे तहिना प्रतिभा उठैत-बैसैत आगू मुहेँ ससरऽ लगल।

ओना प्रतिभो उठैक सीमा नहियेँ अछि। मुदा जे बच्चेसँ उठैक गुण रखैए ओकर तँ बचपन सीमा भाइये गेल, माने वाल्यकाल। जे वस्तु बाले-कालसँ उठैत, फलकैत, फलैतक शक्तिसँ सकबेधल अछि ओकर सीमो केना बनौल जाएत। मुदा एहनो तँ ऐछे जे वएह प्रतिभा

केकरो ढेरपन आ केकरो चेतपनमे सेहो फुड़फुड़ा कऽ जगै छइ। जेकरा ढेरपनमे जगै छै ओ ढेरबेसँ कुद-फान करैए आ जेकरा सिअनपनमे जगै छै ओ चेतपनमे करैत अपसोच करैए जे गेल उमेरिया बीति फुसिये मायामे दाग लगल बड़ भारी कंचन कायामे...।

मुदा तहूमे तँ एहनो लोक छैथे जे बड़ भाड़ीक माने सौंसे जिनगीक हूसलकेँ बुझि शेष बँचल जिनगीकेँ ओइ दाग छोड़बैमे लगा छोड़बैत-छोड़बैत शेष बीतल जिनगीक दाग सेहो छोड़ा सफाइक उपरा उपारजित काइए लइ छैथ। मुदा सुरेन्द्रोमे मिडिल स्कूल अबैत-अबैत एते तँ आबिये गेल रहै जे माए गे माए, चलल नइ जाए। सांकरी गलीमे कंकरी गरत हइ...।

कौलेजमे पढ़ैत सुरेन्द्र बी.ए.क विद्यार्थी। एक दिन हरलै-ने-फुड़लै अपन बक्सा-बक्सी नेने गाम पहुँच गेल। बी.ए.क परीक्षा छह मास आगू हएत। ओना परिवारक सभ बुझने जे बक्सा-बक्सी लऽ कऽ सुरेन्द्र आएल अछि, भरिसक किछु भेल छै, मुदा पहिने बुड़हा-पिता- किछु पुछथिन। पछाइत ने हम सभ पुछबै। मुदा पिता-रामलोचन-केँ बक्सा-बक्सीक बात बुझले ने रहैन, जखन सुरेन्द्र घरपर पहुँचल तखन रामलोचन लत्तीक फुलवाड़ीमे मचानक बत्ती सेरियबैत रहैथ तँए आँखि कोनाह भऽ कखनो बत्तीक मिलानी करैत, तँ कखनो कोरो-बल्लाक, कखनो साबेक जौड़केँ हँसुआपर, तँ कखनो खाँचक मिलानीक बान्हपर। चौदिस आँखि नइ खिड़ैत रहैन तँए नइ देखलैन। ओना रहैथ दरबज्जेक आगूक फुलवाड़ीमे। मुदा तइमे ईहो रहैन जे दहिना भाग रहैथ, दरबज्जा-अँगनाक रस्ता वामा भाग देने अछि। साँझू पहर जखन सुरेन्द्र दरबज्जापर गोड़ लगिते भेटलैन तखन असिरवादमे रामलोचन पुछलखिन-

“बाउ, नीक छी किने?”

मुदा सुरेन्द्रो तँ सुरेन्द्रे, संक्षेपण तक व्याकरण पढ़ि नेने छल, तँए पिताक प्रश्नकेँ पोखेरक वंशीक बोर जकाँ टोनियबैत उत्तर देलकैन-

“हूँ।”

ने आगू किछु पिता पुछलखिन आ ने सुरेन्द्रे किछु बाजल। एकेठाम दुनू गोरे चौकीपर बैसल, मुदा मुहसँ कियो ने किछु बजैत। सुरेन्द्र अपन दुनियाँमे वौआइत जे भने कौलेजसँ पिण्ड छुटल, जे पढ़ौनी जिनगीसँ हटि कऽ पढ़ौल जाइए तइसँ हटबे नीक। अपन जिनगी अपने हाथे बनाएब। जखन मुसोकेँ अपन घर बनबैक लूरि छै तखन तँ मनुख रचने नइ रचनाकारो भऽ सकैए। तइले अनेरे जालमे ओझराएल छेलौं।

रामलोचन मने-मन ऐ ताकमे जे अखन ब्रह्मचारीक जिनगीक बीच बेटा अछि। ब्रह्मचारिणी स्वरूपा ढेरो नव खाधि सभ जिनगीमे अबैत हेतै, ई बात तँ हमरो ने सुनऽ पड़त, से वएह बाजत। अही बीच दुनू बापूतमे गुमा-गुमी, चुपा-चुपी। मुदा से रहल नइ, सुरेन्द्रक छोट बहिन आबि बाजल-

“बाबू, भैया रूसि कऽ कौलेजसँ एला अछि।”

जहिना चुल्हिपर धीपल रोटिपकामे चुरुकक पानि पड़िते छन दऽ लऽ उड़ैत तहिना रामलोचनक मन, रूक्मिणी बात सुनिते उड़ि गेलैन। मनमे भेलैन जे ले-बलैया ई की भेल। ‘हँ’ केना ‘नइ’ भऽ गेल..?

..फेर मनमे भेलैन जे रूक्मिणीक बात सुरेन्द्रो सुनलक। कहलक ने हमरा बेटी मुदा अपन बातक पूर्वासय तँ सुरेन्दे ने करत। बेटीक नालिसमे ऐछे जे भैया रूसि कऽ एला। केकरासँ रूसि कऽ आएल, जँ पढ़ैसँ रूसि कऽ आएल तखन हम तँ ओकर साती नहियेँ पढ़ि देबै। जँ कोनो संगी-साथीसँ झगैड़ कऽ आएल हएत तँ ओकर

निमरजना भऽ सकै छइ। मुदा बाजत तँ सुरेन्द्रे ने...।

..मुदा सुरेन्द्र-ले धनिसन। बजबे ने किछु कएल। ओना माए-योगमाया- आँगनमे ठाढ़ भऽ दुनू बापूतक बीचक गप-सप्प सुनऽ चाहै छेली, मुदा चुपा-चुपी रहने किछु सुनि नै पबै छेली। से बात योगमायाक मन नइ कबुल केलकैन। शंका भऽ गेलैन जे कोनो फुसराहट दुनू बापूत कऽ रहला अछि जे सुनि नहि पाबि रहल छी। अपन आँट-पेट दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे ओइ बीच जुड़ैक अधिकारी तँ हमहूँ छीहे। माने पिता-पुत्रक बीचक कड़ी माए होइते छैथ। आगू बढ़ि दरबज्जापर जखने योगमाया पहुँचली तँ अपन शंका निरमूल बुझि पड़लैन। समूल तँ तखन ने होइत जखन दुनू गोरे एक-दोसरक कान-मे-मुँह सटा गप करैत रहितैथ। मुदा से तँ नहि! चौकीक एक सिरापर पति आ दोसर सिरापर पुत्रकेँ बैसल अपनेमे दुनूकेँ मगन देखलैन। चौकी लग पहुँचते योगमायाकेँ दुनूक नजैरक तीर दुनू दिससँ बेध देलकैन। तैबीच अपन नजैर दुनूक मुँहक सेखी आँकऽ लगलैन। मुदा जे सोचि ठमकली से हाथ नइ लगलैन। बिवस्ता व्यक्त करैत पति दिस देख बजली-

“बक्सा-बक्सी नेने बेटा घर आएल अछि!”

ओना जी खोलि जँ बजिती तँ आरो बजिती मुदा से नइ जी दाबि कऽ बाजल छेली तँए अदहे-छिदहे बजली। माइक बात सुनि सुरेन्द्र बाजल-

“अपन घरक बक्सा-बक्सी छल, लऽ कऽ चलि एलौं।”

ओना आगू पुछैले योगमायाक मुँह लुसफुसाइत रहैन मुदा अपन सीमाक उल्लंधन करब उचित नहि बुझि चुपे रहली। रामलोचन सुरेन्द्रकेँ पुछलखिन-

“बौआ, नीक जाँहित तोहर बात नहि बुझि पेलौं?”

जहिना न्यायालयमे धाराप्रवाह लोक अपन विचार रखैए तहिना सुरेन्द्रो अपन पक्ष रखैत बाजल-

“लोक डिग्री हाँसिल कऽ नोकरी-ले पढ़ैए, हमरा ने नोकरी करैक अछि आ ने तइले डिग्री उपार्जन करैक अछि, तँए चलि एलौं।”

रामलोचनक मन सुरेन्द्रक विचार सुनि ओझरा गेलैन। सुरेन्द्रोक विचारकेँ नकारल नइ जा सकैए, मुदा सोलहन्नी मानलो तँ नहियेँ जा सकैए। ज्ञानभूमि तँ विद्यालय, विश्व विद्यालये छी किने। तखन जँ सुरेन्द्र छोड़ि कऽ पड़ाएल तँ ओ अपन विचारक अनुकूल पड़ाएल। मुदा हमरा तँ ओइ भूमिकेँ योगदान करैक अछि। जँ बेटाकेँ सुहरदे मुहेँ फेर घूमि कऽ जाइले कहबै आ जँ कहि दिअए जे हम सप्पत खा कऽ आबि गेल छी, तखन बातक मोले की रहत...। मुदा लगले अपन जिनगीक कर्तव्यकेँ पाशापर रखैत पिता बजला-

“बौआ, बड़ लीलसा छेलए जे बी.ए. पास परिवारमे उपारजन होइतए से..?”

जहिना चिल्होरि उड़िते-उड़िते कोनो चीज धरतीपर सँ लूझि उड़ा लइए, तहिना सुरेन्द्रोकेँ भेल। दावपर चढ़ल पिताक पाशकेँ नचबैत बाजल-

“बाबू, अहाँकेँ बी.ए. पास परिवारमे चाही, से अहाँक केबाड़क चौकैठमे आठ मासक भीतरे टाँगि देब।”

सरस-समरस बहैत धारमे योगमाया आगू बढ़ैत आँगन गेली। मुदा आँगनमे सबहक कान ठाढ़ रहबे करै, एके-दुइए सभ योगमायाक मुँह नोचऽ लगलैन-

“माए, भैया वौसेला किने?”

कुंभ जहिना कुंभकार सिरजैए, तहिना ने कुंभकारो कुंभ सिरजैए। सुरेन्द्रो ओहने रूप बना अपन जिनगी अपन दुनियाँ बसा

बास करए लगल। अपन दुनियाँक बाट पकैड़ गाम-समाज देस-कोस, देश-विदेशक बाट धेने सुरेन्द्र अपन जनम धरतीक ओइ माटिकेँ ओइ रूपे रचि लेलक जेकर चानन सिरधर शिरोधार्य हुअ लगल। विदेशी मूलक विदेशी भाषाक अन्वेषी सुरेन्द्रक अन्वेषण करए, गाम पहुँचल। दूधी गोराइ, गाम देखलक। गामक बेवहार देखलक, मुदा भाषाक दूरी दुनूकेँ भागेश्वर ऐठाम पहुँचा देलकैन।

भागेश्वर गामक बीच अंग्रेजी जननिहार। दुनू गोटे (विदेशी आ भागेश्वर) मनुखक रूपमे सोझा-सोझी रहैथ, मुदा एक-दोसरमे प्रेमक किछु कमी रहबे कएल। प्रेमक केतेको कारण बीचमे ठाढ़ ऐछे, मुदा से नइ अपना आगू दोसरकेँ कम आंकब, यएह दुनूक मनक दोख। भागेश्वरकेँ विदेशी पुछलकैन-

"सुरेन्द्रक घर?"

'सुरेन्द्र' सुनि भागेश्वरक पथरी चमैक गेलैन जे जेकरा बुड़िबकक टाड़ी बुझै छेलौं से केते भारी अछि। जेकरा बताह बुझै छेलौं से केते बुद्धिमान अछि जे तेकरा दुनियाँ देखए लगल। मुदा सभ तरहेँ सम्पन्न रहितो हमरा के जनैए? जँ जनितो अछि तँ कोन रूपमे जनैए? अपने मन धिक्कारैत भागेश्वरकेँ कहलकैन-

"बुड़िबकहा कहै छेलौं आइ ओकरा आगू तँ अपने बुड़िबक छी!"

मुदा लगले जेना चानि चनैक कऽ चमैक गेलैन तहिना मनमे विचार उठलैन। जेकरा बताह बुझै छेलौं, ओकरा कहियो अपना आँखिये गूँह-गोबर घोड़ैत कहाँ देखलिऐ, जहिया देखलिऐ तहिया गोबर माटि घोरि आँगन-घर निपैत देखलिऐ...।

❍

तिथि : 23 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1234

हमर बाइनिक विचार

मास दिनसँ गाममे घोल-फचक्का होइत आबि रहल अछि। कियो बाइसम बर्खक बिआहक उमेरपर टिप्पणी करैत, तँ कियो एक सुशिक्षित महिलाक भविसक वृतान्त सुनबैत। इनार-पोखैरक घाट, कल-बोरिंगक घाट, दुआर-दरबज्जा, चौक-चौराहा इत्यादि सगतैर लालमणिक बिआहक चर्च चलैत। केतौ शास्त्रार्थ बजड़ैत जे जहिना बारह बर्खमे ताड़क गाछक जड़ि बन्हाइ छै तहिना ने मनुखोमे हएत..?

मुदा मनुखो तँ मनुखे छी, केतौ कौआ छी तँ केतौ कुकुड़, केतौ हीरामन हंस छी तँ केतौ धोवि-घाटक गदहा। मुदा पोखैरक घाटपर ईहो तँ विचार चलिए रहल अछि जे महिलाकेँ जेते दिनक जनन शक्ति अछि ओइमे सुधार भेने सेहो लोकक बाढ़ि बन्हाएत। संगे ओकर शरीरो सभ दिन शरीर बनल रहत। माने जनन पीड़ा पड़ा निरोग शरीर बनल रहत। मुदा तहूमे तँ बिहंगड़ा भाइये जाइए। बिहंगड़ा ई जे कोनो महिलाक समए स्कूल-कौलेजमे बीतैत आ कोनो महिलाक अभावक चलैत विद्यालयसँ बाहर बीतैत...।

प्रश्न अछि जे ओहन जिनगीक सन्तान जे विधवा माए, चाहे विधुर पिता, चाहे खगल परिवारमे पलित-पोषित हएत, आ जे भरल-पूरल परिवारमे, भरल-पूरल केर माने परिवारसँ लऽ कऽ समाजक बीच जे अपन बेवहारक पहचान बनौने अछि, तइमे पलित-पोषित हएत,

की दुनू एक्के रंग खिलत-फलत..?

मास दिन बीतैत-बीतैत काल्हि धरिक सभ व्याख्यान माला तर पड़ि गेल, आ लालमणिक बिआह लगलगाउ भेने आइ दोसर पन्ना उनटि गेल। उनटि ई गेल जे लालमणिक पिता- गिरिधर- लालमणिक बिआह तीन लाख नगदपर तँइ केलैन। मास्टरक बेटा एम.ए.मे पढ़ै छैथ, जत्थो-पात नीके छैन, अपना जीविते मास्टर साहैब बेटाकेँ तेहेन घर बना देलखिन जे पोता-पोती धरिक पार-घाट लगि जेतैन। तेते जमा-जिगर छैन जे वएह ने सठतै। आ तैपर अदहा दरमाहा सेहो जीबैत भरि भेटबे करतैन। लालमणिकेँ कोनो अभाव सासुरमे नइ रहतै, तहूमे अपनो तेते हूनरमन्द अछि जे दस गोरेक परिवारक भार कन्हापर उठा चलैत रहत। नगदक लेन-देन लालमणिकेँ मिसियो भरि देह नहि सिहरौलक। ओना बातक क्रममे गिरधर अपन हूनरक बात बुझैथ मुदा किछु विचारैथ नहि।

नगद-नारायणसँ दुनू परिवारक बीच बन्धन बन्हाएत। तइ बिच्चेमे लालमणि अपन विचारक अड़ंगा ठाढ़ केलक। अड़ंगा ई जे दू परिवारक सम्बन्ध बनि रहल अछि ओइमे हमरे ने पिताक घरसँ ससुरक घर बुझियौ आकि अपन पतिक घर बुझियौ आकि अपन घर, जाए पड़त...।

मुदा लगले लालमणिक मन ठमकलै। ठमकलै ई जे अखन धरिक जे जन्मदाता-पालनकर्ता हमर छैथ, हुनका समक्ष हम अपन बात राखब। हमरा प्रति पिताक विचारक धारणा की छैन सेहो स्पष्ट हएत?

मुदा लगले लालमणिक मन घूमि 'स्पष्ट हएब'पर पहुँचलै। पहुँचते पिताकेँ पुछलक-

"बाबूजी, रूपैआ अहाँ गनब, लेता बर पक्ष, हम तँ बीचमे छी।

अखुनका- माने बिआहसँ पहिलुका- परिवारक पाइ सासुरक हमरे ने भेल। मुदा, जे जिनगी अखन धरिक हमर रहल ओइ जिनगीक समावेश ओइ परिवारमे केना हएत, से तँ अहींकेँ ने कहब?"

लालमणिक विचारपर अपन पितृ-बलक शक्तिक उपयोग करब गिरिधर अनुचित बुझलैन। मन मन्हुआ गेलैन। मन्हुआएले मनमे विचार उठलैन जे लालमणिक जन्मदते नहि, पिता सेहो छिऐ, तैसंग अपन जे बेवस्थित परिवार बनल अछि तही बीच रहि ने ओहो बी.ए. औनर्स कला-संगीत शास्त्रक बेवहारिक अध्ययन केलक अछि। जइसँ नीक गबितो अछि आ लिखितो अछि। कौलेजमे कोनो साहित्यिक कार्यक्रम होइ छै तइमे साहित्यक दुनू धाराक बीच बहैत जश-सुजश सेहो बनौने अछि। यएह ने भेलै ओकर अपन अर्जित सम्पैत। जँ ऐ सम्पैतक दुरूपयोग होइ आकि दाबि कऽ राखल जाइ, तखन एकरा नष्ट हएब छोड़ि दोसर रस्ते की छै!

मनमे ग्लानि उझकलैन, अपसोचक विचार उठलैन जे जखन पाइए गनि बेटीक बिआह करब, तखन बेटीक अनुकूल परिवार किए ने करी। हूसल काज देख गिरिधर लालमणिकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, उमेरक दोखे नइ, बेवहारक दोखे हम भँसिया गेलौं, मुदा आइ अपना परिवारेमे आँखि फुटल, तँए मन मन्हुआएल अछि।"

पिताकेँ अनुकूल होइत देख लालमणि मुस्कान भरल मुस्की दैत बाजल-

"बाबूजी, परिवारक सभ मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। जखने आँखि खुजए तखने दिन। अखैन बिआहक बन्धन-सूते तैयार भऽ रहल अछि, समाजमे एहेन-एहेन बरदात केते होइए।"

लालमणिक विचार सुनि गिरिधरक टुटल साँस पुन: प्रवाहित भऽ गेलैन। बजला-

"बुच्ची, बेस कहलह जे परिवारक सभ मिलि विचार करैत चललासँ परिवार नीके नइ नीकोत्तर सेहो होइ छइ। माएकेँ सोर पाड़हुन, अखैन काजक सूत्र बहुत आगूओ नहियेँ बढ़ल अछि। ओना ईहो तँ देखते छी जे केते बिआहक मण्डपसँ उठि लड़का बिआहक सूत्र भंग करैत रहल अछि।"

पिताक बहैत धारमे लालमणि पानिक पलारमे हेलैत माए लग पहुँच बाजल-

"माए, बाबूजीकेँ किछु चिन्ता पछाड़ि रहल छैन, तेकर चिन्ता ओ अनेरे करै छैथ। होशियारसँ होशियार आ बेकूफसँ बेकूफ लोक जखन अपन घर बनबऽ लगैए तखन जेते ओकरा डाँड़मे ढौआ रहल ओइ हिसाबे बनबैए। जेकरा जेहेन सकरता रहलै, से तेहेन बनबैए से कनी जा कऽ कहुन चिन्ता नइ करैथ।"

ओना लालमणिक विचार कानसँ कामिनी सुनै छेली मुदा जहिना कानक ठेकी अवाजकेँ घेरि लैत अछि तहिना कामिनीक कानकेँ पतिक चिन्ता सुनिते घेरि नेने रहैन। लालमणिक संग कामिनी पति लग पहुँचते चनिआएल चाइन देखए लगली। की चिन्ता छैन से तँ वएह ने बजता, अनेरे बीचमे चुल्हि-चिनमारक बात उठा आरो माथकेँ किए भारी करबनि...।

मुदा जहिना माएकेँ बजबऽ गिरिधर लालमणिकेँ कहने रहथिन तहिना दुनू गोरेकेँ आगूमे ठाढ़ होइते बजला-

"परसूका दिन मास्टर साहैबकेँ नगद दइक विचार केने छी, भने बीचमे जे विचारैक अछि से विचारि लिअ।"

चिन्तित पतिक स्वरूप जेना कामिनीक मनसँ कमि कऽ विचारैक बातपर गेलैन। अपन बेथा बेथैत बजली-

"अखन धरि बेटीकेँ सभ किछु केलौं, ओहो केलक आ दुनू संग

मिलि सेहो करैत एलौं, मुदा बिआहक पछाइत ओ ओते दूर हमरासँ चलि जाएत जे ओकर सीमामे हम पएर नइ देबै। मुदा तँए कि मनमे कोनो कुवाथ अछि? नै! आब तँ सहजे लालमणि लोकक बीच मंचपर ठाढ़ भऽ अपन नीक-बेजए बातो सुनबै-जोकर भाइये गेल अछि।"

माइक सह पैबते जेना फूलक कोनो पिआसल लत्ती पानि पीबते हरैस जाइए तहिना लालमणिक मन हरैस गेल, बाजल-

"बाबूजी, अविवाहित कन्या कु-मारि[6] कन्या कहबैए तँए हमरा सभठाम एबा-जेबाक अधिकार अछि। अहाँ हुनका पाइ गनैक जे समए देने छिऐन, से अखने फोनसँ कहि दिअनु जे अपना समैपर ओ निसचित आबैथ, हम तैयार छी। ओना से जँ नइ कहबैन तँ ओ अपना हिसाबे दिन घुसका-फुसका लेता! अपन हिसाब ई जे बैंकक छुट्टी-तुट्टीक मिलानी कऽ लेता किने।"

जहिना कोनो समांगकेँ काज दिस आगू बढ़ैत देख आनो समांगक मनमे काजक ललक ललकै छै, तहिना बेटीक विचार सुनि गिरिधरक मन ललकलैन। लगले मोबाइल उठा अपना समैपर एबाक आग्रह करैत अपन तैयारीक बात मास्टर साहैबकेँ कहि देलखिन।

तेसरा दिन अपन समैपर मास्टर साहैब एकटा ड्राइवर- भातीज-केँ संग केने मोटर साइकिलसँ तीन बजे बेरूपहर गिरिधर ऐठाम पहुँचला। चीलमक सूर सारमे ड्राइवर भातीज लगसँ ससैर गेलैन, जइसँ अपनो जान हल्लुक भेलैन। जान हल्लुक ई जे भातिजे छी, चीलम पीबैए आ जँ कहीं निशाँमे छीनियेँ-तीनियेँ लेत तेकर कोन बिसवास। ओना पच्चीस-पचास तँ दइते रहै छिऐ।

चाहक तस्तरी नेने कुमारि लालमणि दरबज्जापर पहुँच मास्टरो साहैबक हाथमे आ पितोक हाथमे चाह धड़ौलक। पिजुआएल मन

[6] अधलाकेँ मारि

मास्टर साहैबक रहबे करैन, चाह मुँहमे लइसँ पहिने बोकरए लगला-

"अखनो धरि स्त्रीगणकेँ सोलहो-अना उत्पादित काजसँ...।"

'काजसँ' कहि कनी रूकि गेला। रूकिते लालमणिक डेग सेहो रूकि गेल। पाशा बदलैत मास्टर साहैब फेर बजला-

"नोकरी-चाकरीक भीर परिवारक स्त्रीगण जँ गेल तँ घरक इज्जते की रहल!"

हाइ स्कूलमे संस्कृत-मैथिली विषयक शिक्षक मास्टर साहैब सभ दिन रहला, ओना होइयो स्कूलक शिक्षक विषयगत आचरण बनबै छैथ, तँए संस्कृत शिक्षक आ साइंसक शिक्षकक जिनगीमे, एक दरमाहा रहितो, दूरी बनि जाइए। गिरिधर चुपचाप बैसल सुनैत रहैथ। हँ-हूँ किछु ने बजथि। ऐ दुआरे जे लालमणि आगूमे अछि, बाजह।

लालमणि बाजल-

"मास्टर साहैब, नोकरी करैक अपनो विचार नइ अछि, तैपर जँ गारजनक रूपमे बजै छी तँ उत्तम विचार। मुदा हमर अपन जे अरजित सम्पैत अछि, ओकर रक्षाक की उपाय हेतइ?"

मास्टर साहैब-

"हँ हेतइ। मुदा कोन रूपमे चाहै छी से तँ खुलाशा करए पड़त?"

लालमणि-

"तइले ई[7] जगह नहि ओ[8] जगह हएत।"



तिथि : 26 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1207

[7] नैहर
[8] सासुर

नोकरिहारा

मनुलाल कक्काक जौंआँ बेटाक चर्च समाजमे सदिकाल चलैत रहैए। कहियो दुनू बेटा- टोपीलाल आ पगड़ीलाल-क मुँह-कानक चर्च पोखैरक घाटपर होइत जे एकोरत्ती दुनू भाँइक मुँह-कानमे तल-बितल नइ छै! भगवानोक कारीगिरी अजीव छैन। तहिना गामक चौको-चोकरीपर चर्च होइत जे दुनू भाँइ- टोपीलाल आ पगड़ीलाल- जहिना पढ़ैमे भूत अछि तहिना दुनू ऊपरा-ऊपरी सेहो अछि!

लोअरे प्राइमरी स्कूलसँ दुनू भाँइक बीच पटका-पटकी शुरू भेल। पटका-पटकी ई जे गोटे दिन टोपीलाल गोटे खाँत कि अक्षर विन्यास बेसी सीखि लिअए तँ गोटे दिन पगड़ीलाल। तहिना साल भरिक परीक्षामे सेहो होइत, गोटे साल टोपीलाल पहिल स्थान लऽ लिअए तँ गोटे साल पगड़ीलाल। मुदा तइले माता-पिताक मनमे कनियोँ कुवाथ नै रहैन। कुवाथो किए रहतैन, दुनू अपने छी। तखन तँ दुनियाँमे आएल अछि जे जेते करत से तेते पौत। तइसँ मिसियो भरि मनमे चिन्ता ऊपर नइ उठैन आ ने चिन्तनक क्षण निच्चाँ उतरैन जइसँ सदिकाल दुनू परानी मनुलाल काका अपन दुनू बेटासँ मुदित-प्रमुदित रहिते छैथ।

दुनू परानी मनुलाल कक्काक मनक सदैत खुशीक दोसरो कारण छैन ओ ई जे सोझहामे टोपीलाल रहऽ आकि पगड़ीलाल, मुदा छी तँ

दुनू एक्के। अनका-ले जे होउ मुदा माए-बापकें तँ मानले नहि जानल सेहो छनिहें। मुदा एकटा अन्तर दुनू भाँइक बीचक दुनू परानी मनुलाल काका आ मोलही काकी सेहो देख-परेख रहला अछि। देख-परेख ई रहला अछि जे जेना पगड़ीलाल अढ़ेनौं आ बिनु अढ़ेनौं, माने अपने फुड़ने सेहो, किछु-ने-किछु करिते रहैए। सेहो कि कोनो अपने घर-परिवारटा-ले नइ, टोलो आ आनो टोलक लोकक संग ओहिना हिहिआइए, खिखिआइए जहिना परिवारक संग। मनुलाल काका पत्नीकें पुछलखिन-

"जहिना दुनू भाँइक बीच मुहों-कानक एकरूपता छै, पढ़ै-लिखैक सेहो एकरूपता रहने नगीची छै, तहिना तँ दूरियो ओहिना छैहे ने।"

अपन विचारकें परिवारक पर्दाक झलफलीक बीच रखैत मनुलाल काका बाजल छला, मुदा मोलही काकी बिच्चेमे वौआ गेली। वौआ ई गेली जे पिताक विचार तँ सदैत पितृत्वक दिशामे बढ़ै छै, जखन कि रोग-सोग-पीड़ाक अधिक मारि मातृत्वपर पड़ैत अछि। तँए दुनूक धुरीक मिलानी ओइ मजगूतीक संग होइ, जे सदैत चलैत रहए...।

मने-मन मोलही काकीकें विचारक विचरणमे चुप होइत देख मनुलाल काका बजला-

"चुप होइक कोनो एहेन बेर नइ देख रहलौं अछि जे चुप होइ, जइसँ मुँह बन्न करी। मुदा माता-पिताक गुरुत्व शक्ति जँ समतूल्य नहि रहत तँ ओहो केहेन हएत?"

जइ सीमापर मनुलाल काका बजै छला तइसँ हटि दोसर घाटपर मोलही काकीक मन घुमैत रहैन। जे मनुलाल काका सेहो झाँकि लेला। मनक विचारकें मोड़ैत बजला-

"दुनू परानी दुनू भाँइक जन्मदतेटा नहि मतो-पितो तुल्य तँ भाइये गेलिऐ।"

पतिक बात सुनि मने-मन मोलही काकी चौंकली। ओना चौंकली जन्मदाता सुनि। मुदा अपनाकें संयमित करैत मोलही काकी हुँहकारी भरलैन-

"हँ! तेकरा के बाँटि लेत। ओ तँ अप्पन ओहन धरोहर छी जे कियो ने बाँटि सकैए आ ने लाइए सकैए।"

पत्नीकें अनुकूल होइत देख मनुलाल काका बजला-

"आब ते दुनू भाँइ कौलेजसँ पढ़ि कऽ निकलबे करत। बी.ए. फाइनल भऽ रहल छइ। तैसंग भोँटर लिस्टमे सेहो नाम आबिये गेलइ। भेल तँ गोटे साल आउर टपैमे लगतै सएह ने। तइले अनेरे किए चिन्ताक फकीर बनि वौआएब। जानए लूटिनिहार आ जानए कूटनिहार।"

छीक भेला पछाइत जहिना केकरो मन हल्लुको होइए तँ केकरो मन जबदाहो तँ होइते अछि, तइले अनेरे लोक छीकक पाछूकिए वौआएत, जे सर्दीसँ भेलै, कि कफसँ भेलै, नाकमे सुरसुरी लगने भेलै आकि नाकमे खढ़ घोंसियेने, आकि मनमे गुदगुदी लगने गुदगुदाइत छीक भेलै...।

बी.ए. पास करिते दुनू भाँइक दू दिशा स्पष्ट भेल। जहिना टोपीलाल प्रशासनिक परीक्षा दिस बढ़ल तहिना पगड़ीलाल अपन विचारानुकूल आगूक जिनगीमे पग पाग-पगड़ी बनि डेग उठौलक।

ओना जहिए दुनू भाँइक प्रवेश राजनीति शास्त्रक औनर्समे भेल तहिए जेना दुनूक मनमे धक्का लागि धकियबैक विचार उठि गेल। टोपीलालक मनमे उठल जे प्रशासनिक पदाधिकारीक जिनगी बनाएब। नीक विद्यार्थी रहबे करए, तँए बड़ पैघ आराधनो नहियेँ

भेल। अनुकूल भेल। सङ्कल्पित भऽ पुरौल जा सकै छइ।

पगड़ीलालक मनमे रहै जे प्रशासनिक पदाधिकारी बनैक जे शिक्षा पद्धति छै, माने अधिकसँ अधिक विषयक जानकारी, तइसँ कोनो विषयक जड़ि नहि पकड़ा पबैत। मुदा राजनीति शास्त्रक औनर्सक विद्यार्थी रहितो पगड़ीलालक विशेष झूकाउ राजनीति शास्त्रपर। नोकरीक प्रति धारणा बनि गेलै जे नोकरीक लेल एकेटा जगह अछि, ओ छी, जेतए हमरा सन नोकरक जरूरत छै, जे केकरो केने थोड़े भेटै छै, ओ तँ भेटै छै नोकरीक ट्रेनिंग केने। राजनीति शास्त्रसँ पगड़ीलालकें बेसी सिनेह।

सिनेह ऐ दुआरे नइ जे कोर्सक कितावमे सभसँ मोटगर किताव राजनीते शास्त्रक अछि, सिनेह ऐ दुआरे जे राजनीति विषय ओहन सरोवर छी जइमे रंग-रंगक घाटो बनल अछि आ तीर्थयात्री सभ स्नानो करिते छैथ। आ एकठाम माने एक विषयक अन्तर्गत अरस्तू-प्लेटो लगसँ जखन इतिहास भेटिये जाइए, तैसंग प्रागैतिहास सेहो भेटिये जाइए तखन फुटा कऽ अनेरे इतिहास पढ़ब। जखन राजा विक्रमादितक शासन बेवस्थासँ रामराज तकक, जैठाम दैहिक-दैविक-भौतिक ताप मुक्त छल तैठाम तकक।

तहिना दुनियाँक सभ देशक संविधान सेहो कोर्समे ऐछे, जखन शासन बेवस्था पढ़ब तखन ने बुझबै ओइ देशक आमद-खर्च केहेन छै आ लोक सभ केहेन छै आ ओकरा सबहक जिनगी केहेन छइ।

ओना जहिना टोपीलालकें अपनापर बिसवास रहै जे प्रशासनिक अफसर जरूर बनब तहिना पगड़ियो लालक मनमे नचिते रहै जे जखन अनकर नोकरी नइ करब अछि तखन अनेरे ओइ दिस तकबे किए करब। जखन सभ दिन ई धरती नव जीवनक संचार करैए, तखन अनेरे अनका जिनगीकें खोइध-खोइध खोभ बनाएब

ठीक नहि।

...अपन जिनगीक अपन नोकरी अपने हाथमे रखि चलब पगड़ीलाल शुरूहेसँ अङैजैत आबि रहल अछि। हाइए स्कूलक अवस्थासँ पगड़ीलाल, माता-पिताक जे आदेश होइ छेलैन तेकरा पुरबैत दरबज्जापर दस रंगक फुलेक गाछ रोपि वाड़ीमे लत्ती-फत्ती लगा फुलवाड़ी पसारैक लूरि पगड़ीलालकें भऽ गेल। तँए अपन धान-गहुम लगसँ हिसाब बैसबैत फल-फलहरी, तीमन-तरकारी, दूध-दहीक हिसाब अपना हाथमे आबि गेने जिनगी फ्री भऽ जाइ छइ। जे पगड़ीलाल खेलते-धुपिते सीखि नेने छल। खेलैक-धुपैक माने भेल विद्यार्थीक पहिल काज पढ़ब भेल। तैबीच जे अपन जिनगीक बाट खोधिया कऽ खोजि लइए वएह ने खोजी भेल। दुनियाँमे ऐसँ बेसी बुझबे की करब। दुनियाँ सभ दिनसँ रहलै आ सभ दिन रहतै, मुदा के की खुनलक आ खुनि कऽ तकलक आकि नै तकलक से तँ ओ जानए मुदा पगड़ीलाल, करवनो नमहर पगड़ी तँ करवनो छोट मुरेठा बान्हि हाथ-पैरकें तना-उतार बना जिनगी आ जिनगीक बाट खुनैक पाछू वौआए लगल।

पगड़ीलाल सेहो प्रशासनिक अफसर बनए, जइसँ भैयारीमे सेहो समरूपता रहत, तइले टोपीलाल अपन बुझाएबसँ हारि मानि माता-पितासँ सेहो कहबैक परियास केलक। मुदा माए-बाप अपन पूर्ति होइत अभिलाषा, जे दुनू बेटाकें स्नातक बना, अपने दुनू परानी काशी बास करब। अनेरे कोन मायाजालमे लटकल रहब। मुदा तैसंग ईहो प्रश्न तँ मनमे रहबे करैन जे समतुल्य बेटा अपनो विचार किए ने करत।

टोपीलाल नोकरीक जिनगी शुरू केलक आ पगड़ीलाल अपन नोकरी अपने करैत अपन जिनगीकें खुनि-खुनि खोजै पाछू लगि गेल।

समए बीतल। आइ पाँचम पीढ़ीक सीढ़ीपर जहिना टोपीलाल

अस्सी बर्खक जिनगीमे झूलि रहल छैथ तहिना पगड़ियो लाल अस्सी बर्खक जिनगीक सीढ़ीपर झूलि रहल छैथ।

मुदा की ओइ झूलाक आश एके रंग अछि? जैठाम पगड़ीलालक पचासो समांगक बीच मिलल-जुलल जिनगी आ मिलल-जुलल कारोबार छैन। जैठाम जे रहैए तहीठाम ने भैयारीक विचार आगू दिस बढ़बैत अपनाकेँ बढ़बैए। मुदा टोपीलालक परिवार छेहा नोकरिहारा परिवार बनि यत्र-तत्र छिड़ियाएल छैन। जइसँ दुनू भाँइक बीच केतेको बर्खसँ बोला-चाली, आवा-जाही सभ बन्न भऽ गेलैन। मुदा अस्सी बरख पुरला पछाइत जेना दुनूकेँ जिनगीसँ निचेनी एलैन तहिना टोपीलाल अस्सीअम साल-गिरहपर बधाइ दैत पगड़ीलालकेँ कहलखिन-

"भाय साहैब, दुनियाँमे केतौ रही जीबैत रही।"

टोपीलालक शुभकामनाक धैनवाद पगड़ीलाल दिअ चाहै छल कि मोबाइलक नेटवर्क कटि गेल, टाबर हटि गेल।

❍

तिथि : 26 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1146

घसवाहि

जुड़शीतल पाबैनसँ तीन दिन पहिने मटिखोबहामे ऊपरसँ दरारि फाटि धसना खसनेसँ गामक चारि गोरे कुमारि ढेरवासँ लऽ कऽ अधवेसू बुढ़िया धरि तरमे पड़ल, जइसँ चारू गोरे मरि गेल।

माटिक तरमे जाबे जीवित छल ताबे अपन जिनगीक केलहा काज सभ मन पड़ल छेलइ। लगमे रहबे के करै, जे अपनो बात कहितै आ ओकरो बात सुनितै। मटिखोबहाक घटना ने कोनो एक गामक छी आ ने एकबेरक छी, एकरो नमहर इतिहास, मिथिलांचलमे रहल अछि।

सभ गामक अपन जीबैक साधन छै आ जीबै-मरैक इतिहास छै, मुदा जैठाम लोककेँ थूक फेकैक फुरसति नहि छै, तैठाम अनेरे पान खाएब बुड़िबकीए हएत किने। घटना सुनि सौंसे गाम गम-गमा गेल। बाट-घाट, रस्ता-पेरामे लोकक दौड़-बरहा बढ़ि गेल आ रस्ता-बाटपर घटनाक समीक्षो हुअ लगल। कियो कहैत-

"भुतनी काकीकेँ ऐ उमेरमे कोन भूत चढ़ि गेलैन जे बुढ़ाड़ीमे मटिखोबहा गेली!"

कियो बजैत-

"पाबैनक मिरगी चढ़ि गेलैन जे आगि-पानिक भीर तँ नहि, मुदा

चिक्कनि माटिक मटिखोबहामे तँ गेबे केली किने।"

अनुकूल समए पाबि सोनमा काका मने-मन अपन तामस घोंटऽ लगला तँ सात-आठ माससँ पत्नीपर जे दाँत पीसैत आबि रहल छला सएह अगुआ कऽ ऊपर एलैन। समैक अनुकूलतामे अनुकूल मौसम बनिते चीनियाँ काकीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"सात-आठ माससँ मनाही करैत आबि रहल छी जे घसवाहि छोड़ू, से अहाँ थोड़े मानै छी। जँ अदहो-अदही पनचैती करब तैयो अहाँ सालक छओ मास हमर बात सुनलौं कि मानलौं?"

एक तँ ओहिना गामक अनुकूल मौसम, अनुकूल ई जे गामक बच्चा बच्चा मटिखोबहाक घटना पाछू लागल। कियो मिडिया बनि परचार करैमे तँ कियो ऊपरमे दाबल माटिक चखानकेँ छोट-छोट गोला बना गुड़का-गुड़का कात करैमे। कियो अस्पताल तँ कियो बजार दौड़-धुप करैमे। एकमुहरी गामक लोक समाज-सेवामे लागल, तँए केकरा एते पलखति छै जे सोनमा काका आ चीनियाँ काकीक बीचक कहा-कहीक पाछू समए लगौत। जे बात सोनमा काका बुझै छला जे गामक लोक या तँ घर-अँगना छोड़ि सड़कपर चलि गेल अछि या घटना स्थलपर, तँए लगमे कियो सुननिहारो तँ नहियेँ रहल जे सुनबो करत। पति-पत्नीक बीचक बात छी किए कियो आन सुनत। मुदा लगले फेर भेलैन जे हमरे बुझने कि सभ बुझैए। अँगना-घरक टाटमे भूर करि कऽ लोक दुनू परानीक गपक कनसोह लैत बात बुझिये जाइए किने।

एक तँ ओहिना गामक घटना सुनि चिनियाँ काकी मन्हुआएल छेली तैपर पतिक सेवाक चूक आरो मनकेँ घोर-मट्ठा कऽ देलकैन। घोर-मट्ठा होइते चीनियाँ काकीकेँ ओ दिन मन पड़लैन जइ दिन गाममे बाढ़ि एने छाती भरि पानिसँ घास आनि खुटापर लछमीक सेवा करैत

एलौं। माने गाइक सेवा केलौं आ करैत आबि रहल छी। कोन अधला काज करै छी जे मनाहियोँ करै छैथ दोखो लगबै छैथ। मुदा फेर गामक घटना दिस मन बढ़लैन, चारि गोरे माटिक तरमे दबि मरल अछि। ओ तँ चारू महिले छी, पुरुख तँ एकोटा ने छैथ। मन थकमकेलैन, हो-न-हो एहने चालि-प्रकृति तँ हमरो ने अछि...।

..अपन मनक खोदमे चीनियाँ काकीक विचार लगले रहैन आकि जहिना विषनाशक हरदीक हत्थामे, विषैला फड़ सेहो बनियेँ जाइए तहिना अपन धँसैत विचारक सीढ़ीपर एकटा पौना भेटलैन। ओ भेटलैन जे जखन पतिक सभटा विचार आकि गप आकि आदेश मानि चलिये रहल छी, तइमे भऽ सकैए गोटे जानि कऽ आकि अनजानमे अवहेलना भाइये गेलैन, तइले एहेन बात किए कहलैन जे सालक अदहो साल हमर बात नइ सुनै छी, नइ मानै छी...।

साहस बटोरिते चीनियाँ काकीक मनमे दोसर बात धब-दे खसलैन। खसलैन ई जे एकबेर जना देलौं आकि एकोबेर नइ जनेलौं। से तँ नइ भेल। तँ ई की भेल? मन जेना कबुल करए लगलैन जे भरिसक बदमासी लोक एकरे कहै छइ। मुदा लगले फेर हवा पीअल साँप जकाँ आकि गोबर संुघौल मुसरी जकाँ चीनियाँ काकीक मन फुड़फुड़ेलैन। फुड़फुड़ाइते फुलाएल फूल जकाँ हँसी फुटलैन। बजली-

"एक तँ ओहुना पति-पत्नीक बीच अदहा-अदहीक सम्बन्ध अछि तैपर जँ अहाँ कहै छी जे अदहो साल हमर विचार नइ मानै छी, तँ लिअ मानि गेलौं, हमरासँ चूक भेल। मुदा अहीं कहू जे अहाँक अदहा सालमे हमरो हिस्सा हएत किने, अपन हिस्सामे अपना मने केलौं, तइमे अहाँक की विगैड़ गेल आकि बिगाड़ि देलौं, जे दोखी बनबै छी?"

अपन तर्कक साहस चीनियाँ काकीक मनमे रहबे करैन, जे अनुमान सोनमा काकाकेँ सेहो भेलैन। होइते अपन जिनगीक नमहर

इतिहास मनमे नाचि गेलैन...।

आइसँ बीस बरख पूर्ब सोनमा कक्काक बिआह चीनियाँ काकीक संग भेल छेलैन। ओना कट्ठा दसेक जोतसीम जमीन आ कट्ठा डेढ़ेक घराड़ी रहैन। चीनियाँ काकी साते-आठ बर्खक छेली तहिएसँ घसवाहि करैत आबि रहल छैथ। बिआह तँ बच्चेमे भेल रहैन, मुदा दुरागमन सोलह-सतरह बर्खक अवस्थामे भेलैन। दुरागमनक विदाइकाल एक संग दुनू गोरे- समैध आ जमाए-कें चीनियाँ काकीक पिता दुनू हाथ जोड़ि कहने रहथिन-

“एकटा नाँगैर, माने बाछी तरे बिआएल गाए, आ ओकरा सेवा करैले एकटा घसवाहिनी दइ छी। घसवाहीक लूरि चीनियाकेँ अछि तइसँ अपन दिन-दुनियाँ खेप लेत।”

वएह गाए सोनमा कक्काक परिवारमे नारियल आ ताड़क गाछ जकाँ थैर बान्हलक। समए बीतल, सोनमा कक्काक माइयो आ पितो दुनियाँ छोड़लैन। पीढ़ी बदलल, सीढ़ी बदलल। बोनिहार परिवार ओहन किसान परिवार, माने दस कट्ठा जोतबला, सेहो बनल रहल जे बोनिहारो आ किसानो छल।

देखो-देखी तँ दुनियाँ चलिते अछि। अपनो गाममे आ आनो गाममे किछु दुधारू गाइयक आगमन भेल। माने किछु गोटे पोसलैन। जे दुनू परानी सोनमो कक्काक नजैरमे ढूकलैन। ढूकलैन ई जे जखन डेढ़ कट्ठा घराड़ी अछि तइमे किए ने आरो बास चाकर बनाबी। बाधमे जे दस कट्ठा खेत अछि, ओइमे सँ जँ दू कट्ठा बेच लेब आ बँचल आठो कट्ठामे जँ घासक खेती करब, तँ तीन-चारिटा गाए किए ने पोसि लेब। विचार बढ़ने मनमे बल जगलैन।

ओना दुनू परानी मिलि कऽ विचारो केलैन आ साल भरि पहिने दूटा दुधारू गाए कीनि, सेवामे सेहो लगल छैथ, जइसँ जिनगी अपना

भरे चलि रहल छैन।

आठो कट्ठा खेतमे खल लगा मौसमक अनुकूल, घासक खेती अपने करै छैथ। अपन घासक खेती केने आइ धरिक, माने पैछला खाँढ़क गाइक सेवा धरिक, काजक जे परम्परा चीनियाँ काकी अपनौने छेली, तेकरे मनाही सोनमा काका सात-आठ माससँ करैत आबि रहल छेलखिन।

घसवाहिनी जेरक संग, गामक एक बाध, दू बाधक संग चारूबाध घूमि-घूमि घासो छीलैक, खिस्सो-पीहानी सुनैक आ गपो-सप्प करैक जे अभ्यास चीनियाँ काकीकेँ लगि गेल छेलैन, ओ आदत अपना खेतमे घास रहितो छूटि नहि पाबि रहल छैन। मुदा दालि दू फाँक रहितो एकठाम केना सटल रहैए। ऊपरसँ देखलापर कियो ओकरा एक छोड़ि दू कहत...। जे से मनकेँ मोड़ैत, समटैत सोनमा काका कहलखिन-

“हमरा गपक कोनो बेसी आइन-पीड़ा नइ करू, के पति पत्नीसँ प्रेम नइ करऽ चाहैत अछि आकि पत्नीए पतिसँ प्रेम नइ करऽ चाहैए, मुदा दुनूक बीच दुनूक मन ने करामाती करैए।”

पतिक बात सुनिते जेना चीनियाँ काकीक मन अलिसए लगलैन। मुदा तैयो हफुआइत बजली-

“घसवाहि छोड़ैले कहै छी ते बड़बढ़ियाँ..?”

‘बड़बढ़ियाँ’क पछाइत जेना चीनियाँ काकी ऐगला बात बिसैर गेली तहिना अदहेपर चुप भऽ गेली। सुढ़िआइत पत्नीक विचारमे अपन विचार घोड़ैत सोनमा काका मनक घोड़ापर चढ़ि दौड़-बरहा करए लगला। गम्भीर होइत चीनियाँ काकीकेँ कहलखिन-

“आँखि मूनि ओंघेने नइ हएत, निरारि-निरारि देखऽ पड़त।”

जहिना भकुआएलकेँ जगौलापर फुफकार छुटै छै तहिना

चीनियाँ काकी बमछैत सोनमा काकापर छुटली-

“अहींक आँखिटा निरारि-निरारि देखैए आकि सबहक? बदाम, केराउक छीमी जकाँ सबहक पटे निपटैए!”

ओना चीनियाँ काकीक मन कड़ुआएल जकाँ सोनमा काकाकेँ बुझि पड़लैन मुदा सक्कत बदाम आकि सक्कत केराउ जकाँ नहि बुझैमे एलैन। बुझैमे एलैन जे एक तँ ओहुना खिच्चा छीमी हुअए आकि खिच्चा बात-विचार, दुनूमे कनी-मनी मिठाँस रहिते छै...; बजला-

“देखियौ, कोनो फसलमे घसवाहि कमठौन भेल, जे खेतीक प्रक्रियाक एक अंग छी, मुदा वएह आनठाम घसवाहियेटा भेल। जखन अपना गाएले अपन घासक खेती अछि, तखन किए घसवाहि करैत घसवाहिनी बनल बाधे-बाध वौआइत रहब। जखन अपने अछि तखन किए ने गृह बान्हि गृहवासिनी बनब?”

पतिक विचार सुनि चीनियाँ काकीकेँ नूनोमे चीनी भेटऽ लगलैन। भेटबो केना ने करितैन, मीठ नोन दालि, मीठ नोन तीनम-तरकारी आदि सभसँ तँ भेँट-घाँट होइते रहै छैन। बजली किछु ने मुदा जहिना आँखि, तहिना मुँह आ तहिना मुँहक संग सौंसे देह पुलकि उठलैन।

❍

तिथि : 28 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1213

तेतर भाइक कविता

विष्णुपुरमे पुनाह जकाँ पहिल बेर काव्य गोष्ठी हएत। आइ धरिक इतिहासमे केतेको बेर ब्रहमोस्थान, शिवालैयो आ खास-खास दुआरो-दरबज्जापर भागवत कथा होइत आबि रहल अछि। केतौ सात दिनक केतौ नअ दिनक तँ केतौ एक पनरहियाक, माने एक पखक। तहिना उत्तमचन नाटकसँ लऽ कऽ लोरिक-सलहेस, अल्हा-रूदल, शीत-बसन्त, मजदूर-किसान नाच सेहो होइत आबि रहल अछि। ओना अल्हा-रूदलक नाचो होइत आबि रहल अछि, आ महराइक रूपमे ढोलकक संग गवाइत सेहो आबिये रहल अछि। तेतबे नइ पन्नालालक संग भौर-बेलाहीक नौटंकीसँ लऽ कऽ उमाकान्त–नाटकक संग गमैयो कलाकारक नाटक सेहो होइते आबि रहल अछि। तहिना वृन्दावनक रासक संग रामलीला सेहो होइत आबि रहल अछि।

ओना गामक विद्यालय नहि, गामेमे पहिल बेर काव्य गोष्ठी हएत। किछु कवि बाहरसँ औता, बाँकी दर्जनोसँ ऊपर गामसँ लऽ कऽ अड़ोस-पड़ोस गामक सेहो रहता। अड़ोस-पड़ोस गामक खाली कवियेटा नहि गीतकारो आ संगीतकारो सभ रहबे करता। तेतबे किए, गामो आ आनो गामक तुकबन्दी फकड़ा-फुकड़ी गढ़निहारसँ लऽ कऽ दृष्टिकूट गढ़निहारक संग सुननिहारोक संख्या जमगर रहबे करत। बहरबैया कवि सबहक कविता-पाठ पछाइत हएत, पहिने गौंआँ-

घरूआसँ शुरू हएत। ओना गौआँ-घरूआ आ अड़ोसिया-पड़ोसियाक बीच ई तालमेल बैसबऽ पड़त जे एकबेर गौआँ तँ दोसर बेर अनगौआँ फेर गौआँ फेर अनगौआँक पाठ हएब नीक रहत। जे से सबहक बीच सामंजस बनबए पड़त।

समैसँ पहिने सुननिहारसँ मंच सजि गेल। जे से कविता पाठ होइसँ पहिनहि हँसियो-ठट्ठा आ पीहकारियो शुरू भेल। पीहकारियो तँ पीहकारीए छी, कखनो पीपहीक स्वरमे मन मोहैत तँ कखनो पपीहाक स्वरमे कण्ठ फाड़ैत तँ कखनो टिटही जकाँ टिटकारी भरैत अछि। तहूमे सबरंगा सुननिहारोक संख्या बेसी रहने आरो एके संग सभ चलैत। ओना गामक काव्य गोष्ठी छी तँए पुनाहोत्सवक रूपमे नइ पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ आराधना नइ करब तँ अपनो पाप-पुन केना कटत। तँए कविता लिखब शुरू केलौं।

कोनो-कोनो लड़ी तुकबन्दी आ कोनो बिनु तुकबन्दीए बारह पाँतिक एकटा कविता तैयार केलौं।

समाजक बीचक कार्यक्रम छी। ओना जँ समाजक बीच बसल समाजमे जँ फुटा-फुटा, अपना-अपना अनुकूल गोष्ठीक आयोजन होएत तँ ओ बेसी नीक। बेसी नीक ई जे किसानक बात किसानकेँ नहि कहि वेपारीकेँ आ वेपारीक बात नोकरिहाराकेँ कहबैन तँ ओ छुछे दालि पीअब हएत। वृन्दावनक नाओंपर कोन बोन-झाड़ लगि जाएत तेकर ठेकान नइ। अमबोनी लगत कि जमबोनी तेकरो बुझब कठिन भऽ जाएत। यएह सभ सोचि-विचारि बारह पाँतिक कविता लिखने रही। बरहमासाक धुन दैत छहमासा, चौमासा होइत चैतीपर उतैरते मन सिरसिरा गेल। सिरसिरा ई गेल जे ने नोनछराह भेल आ ने नोनगरे, नोनगरे किए कहू जे मधनोनो ने भेल। मुदा मन गवाही दैत रहए जे नोनगर नइ भेल तँ नइ भेल, मीठनोन नइ कहबै सेहो तँ नहियेँ

भेल। वएह मीठनोन कविता लऽ कऽ गोष्ठीमे पहुँचलौं।

काव्य गोष्ठी शुरू होइते तेसर नम्बरमे तेतर भाइक कविता हेतैन आ चारिम नम्बरमे हमरो हएत। ओहन कवि तँ बनि नहि सकलौं जे मंचेपर गढ़ब आ सस्वर पाठो करब आ सबालो-जवाब करब। केते दिने दइवे-सइवे तँ बारह पाँतिक कविता लिखलौं। सेहो केहेन हएत केहेन नइ। ओना गोष्ठीक पहिल दुनू कविता स्कूलक बच्चा सभ पढ़लैन तँए अनुशासित ढंगक कविताक भाव रहैन। तेसर नम्बर तेतर भाइक रहैन। तेतर भायकेँ ठाढ़ होइते, जहिना रमलीलाक विदूषकेँ, चाहे नाटक-नौटंकीक जोकरकेँ आकि नाचक बिपटाकेँ मंचपर पहुँचते दर्शक दीर्घामे हँसीक संग ठहाका ठहकऽ लगैए, तहिना तेतर भायकेँ देखते मंचक वातावरण बदैल कऽ हँसी-ठट्ठाक मंच बनि गेल। एना किए भेल? कविता पाठ भेला पछातिक फल पहिने केना आबि गेल? अही गुनधुनमे पड़ल रही कि तेतर भाइक खटमिट्ठी कविताक सस्वर पाठ हुअ लगल। अजीव महमही गोष्ठीमे पसैर गेल। बुझि पड़ल जेना भाँटक भँटियाएल कविता दान-दछिना-ले लिखल गेल होइ वा बुड़िबकीक संग सुननिहारोकेँ बुड़िबक बनाएब होइ। मुदा एते तँ मनमे खुशी उपकिये गेल छल जे हरल-भरल मंचक ऐगला नम्बर हमरे अछि।

कविता सुनबैक मौका भेटल। मंचपर ठाढ़ होइते बुझि पड़ल जे कविता सुनैले गोटि-पङ्गराक टक छैन, बाँकी बेसी तेतरे भाइक कविताक समीक्षा अपन-अपन पड़ोसी सुननिहारक संग कऽ रहल छैथ। मुदा तइसँ की, सुरेब रही, टेढ़ रही, बौना रही आकि लुल्हा रही, दुनियाँक मंच तँ सबहक छी। तेसर पाँतिमे मन कनैत घरसँ निकलैत हिया कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे तेतर भाइक कविता अखनो दर्शकक बीच चनचना रहल अछि। तँए मुस्की भरि-भरि सभ कियो चनचना रहला अछि। उठैत, खसैत, लटैत-लटकैत, फटैत-फटकैत

विचार रखैत मंचसँ उतरलौं। मुदा अखनो मन कहैए जे अपन मनक बात तँ सुनेबे केलिऐन, सुनलैन नइ सुनलैन, ई तँ ओ जानैथ। मुदा एना भेल किए? ई प्रश्न अखनो मनमे ओहिना तजगर अछि जहिना गोष्ठी-दिन छल। खाएर...।

बहरबैया कवि सबहक मंच थोपड़ीक बीच सजल। गामक जेहेन पहिल गोष्ठी भेल, तेहन पहिल नहि सएम गुना गुनगरो आ पुष्टगरो तँ भेबे कएल।

विष्णुपुरमे काव्य गोष्ठीक विचार लोकक मनमे किए आ केना जनम लेलक? जहिना दुइभ घास आगू मुहेँ ससरैत जोभ होइत राड़ी-डबहारीक रूपमे फुल फुला अकासमे उड़ैत तहिना विष्णुपुरमे चालीस बरख पूर्व निरमौल गेल बाल विद्यालयसँ भेल। आन गामक देखा-देखी गामक किछु गोरेक मनमे जगलैन जे बच्चा सभ निरमौल जाए। गौआँ-जमीनदारक बीच मलगुजारीक झगड़ा भेल, झगड़ाक कारण छल तीन सालक रौदी। जइसँ तेसर साल जमीन नीलामपर चढ़ि गेल, जे खेतबला नइ मानलक। नइ मानैक कारण भेल जे किसान सबहक कहब रहैन जे खेतक संग लागत लगल, लाभक कोनो उपज नइ भेटल, तैपर टैक्स कथीक? दस कट्ठा ऊँचरस जमीनक कोला, विवादमे परती बनि गेल, ओही परतीपर विद्यालय बनबैक विचार भेल, गाम तँ गामे छी, लोकक समूह समाज छी। एकमुहरी किछु नीक विचार जगलै जइसँ समाजिकताक निर्माण भेल। बाँसक बीटसँ बाँस कटल, कोरो-बाती बनल। सभ कथुक जोगार बैसबैत बिऔहिती मण्डप जकाँ तीनियेँ दिनमे विद्यालयक भवन ठाढ़ भऽ गेल।

ओना कातिक मासमे विद्यालयक भवन बना ठाढ़ कएल गेल, भवन ठाढ़ होइते विद्यार्थीक आगमन भेल, गामेक एकटा पढ़ल-लिखल अधवेसू, रमाचरण शिक्षक बनला। ओना रमाचरण मात्रिकमे

मिडिल धरि पढ़ि सात-आठ कोस हटि शिक्षणे वृतिमे लगल छला, मुदा गाममे ठाढ़ होइत विद्यालय देख गाममे रहब विचार केलैन। विचार उठैक पाछू कारण छेलैन जे हमरो मिला कऽ ने गाम-समाज बनल अछि, बाहर तँ सोलहो आना अपनेटा-ले कमाइ छी, मुदा गाममे तँ दुनू हएत, अपनो बेटाकेँ पढ़ाएब आ दोसराइतोक बच्चा पढ़त। गौआँ शनिचराक रूपमे एकटा पाइयो आ पाभरि चाउरो देब शुरू केलकैन।

माघ मासमे विद्यालयक पहिल बर्खक सरस्वती पूजा सेहो शुरू भेल। रमाचरण पूजाक संग-संग बच्चाक कला प्रदर्शनक कार्यक्रम सेहो बनौलैन। वएह प्रदर्शन साले-साल नाटकक रूपमे रंग-मंच सजबैत रहल। पनरह बर्खक पछाइत रमाचरण सेवा-निवृति भेला, दोसर शिक्षक एला। पूजासँ लऽ कऽ रंग-मंचक बीच तेहेन नटकिया षड्यंत्र चलल जे विद्यालयसँ पूजो हटैक गेल आ मनोरंजनक मंचो।

एक तँ अहुना मशीनी शक्ति शारिरीक शक्तिक विकासकेँ एक दिस रोधक बनल अछि तँ दोसर दिस अवरोधक सेहो बनि गेल अछि जे से लोकक मनक विचार केतौ उठैत तँ केतौ खसबो करैत अछि। कहाँ लोकक मनमे ई उठैत जे बुद्धदेव महावीर, जगत गुरु शंकराचार्यक समकक्ष होइ। वौद्धिक विकास भेनौं हजारो बर्खक अन्तरालक बीच कियो दोसराइतो कहाँ ओहन होइ छैथ। तुलसीदासक रामायण हुअ आकि विद्यापतिक पदावली, जैठाम निरक्षर पितासँ डाक्टर इंजीनियर, प्रोफेसर, ओकील पैदा लेलैन, तैठाम डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर आ ओकीलक बेटासँ की पैदा लऽ रहल अछि, ईहो तँ देखए पड़त। जैठाम कमसँ कम उपारजन करैबला लोकक जेबीमे मोबाइलक गीत आ घरमे रेडियो-टी.वी.क धुन, दिन-राति चलि रहल अछि, तैठाम आमजनक बीच एहेन विचारोक उपजा उपैज सकैए, जे नाटक लिखी, नाटकक मंचन करी वा नाटकक

मनोरंजन करी। ई ओहने हएत जे बिनु पान खेनिहारक मुहसँ मिथिलाक धरोहर पानक पवनौट बाँटल जाएत। भाय, पानक जोगारमे, माने खाइ-जोकर पान उपजबैमे, केते लोइट पानि पान बनबैमे लगैए आ खएरक गाछसँ खएर बनबैमे केते...। की ओ एके दिने भेल? खाएर जे भेल मुदा एकटा प्रश्न तँ ऐछे जे पानक फूल केहेन आ फूलक सुआद आकि महक केहेन होइए? गामक विद्यालयक पहिल शिक्षक रमाचरण बाबा आइ अस्सी बर्खसँ ऊपर टपि गेला, मुदा मनक लीलसा हुनकर अखनो ओहिना छैन जेना शुरूमे, गामक बच्चा सभकेँ सिखा-पढ़ा विद्यालयक मंचपर देखै छला। अहूबेर वएह अस्सी बर्खक बुढ़हा अपनो पढ़ाएल आ गामसँ बाहरो पढ़ि कऽ आएल युवक सभकेँ एकत्रित कऽ अपन विचार रखलैन-

"साहित्य समाजक ऐना छी से नइ तँ गाममे साहित्यक कार्यक्रम काव्य गोष्ठी रूपमे हुअए।"

एक तँ अहुना जइ गाममे भोज नइ भेल रहल, तइ गामक लोकक मनमे जहिना भोजक नव जिज्ञासा जगबैत अछि, तहिना गामक युवक सबहक बीच जगल। एक तँ कवि कवित्व कविताक गोष्ठी तहूमे ओहन वस्तु जे दुनियाँमे केकरा हँसऽ-कानऽ नइ अबै छै, एकमुहरी सभ कला प्रेमी गोष्ठीक सूहकार दैत रमाचरण बाबाकेँ कहलकैन-

"बाबा, जँ अपनेक मनमे समाज सजबैक एहेन सरधा अछि, तँ हमहूँ सभ संग छी।"

वएह, सबहक सहमैतसँ काव्य गोष्ठीक आयोजन गाममे भऽ रहल अछि।

❍

तिथि : 1 अप्रैल 2015, शब्द संख्या : 1319

छूआ

जेठ मास, बेरुका उखड़ाहा, मधुबनी कोर्टसँ गाम अबैत रही। मधुबनीसँ पूब लवहद कोठीक रस्तासँ किछु आगू बढ़लौं तँ कनी-कनी पियास जगऽ लगल।

गर्मी समए, हवाक दरस नहि तैपर साइकिलक सवारी। भूख लगलापर जहिना खेबाक छुधा जगैत, तहिना पियास लगलापर पीबैक मन होइत। ओना पीबो केते रंगक अछि। पानि, दूध, चाह, शरबतक संग प्रेम, सिनेह इत्यादि।

ओना बड़ बेसी पियासो तेज नहियेँ भेल रहए जे रस्ता रोकैत, तँए पटे-पट पेटमे टहलऽ लगल जे से मनमे उठल। खाएब-पीब? की खाएब-पीब? केते खेबाक-पीबाक चाही? केना खेबाक-पीबाक चाही? इत्यादि-इत्यादि अनेक प्रश्न मनकेँ घेरि लेलक। महजालमे अपनाकेँ ओझराइत देख कतवाहि पकड़लौं। कतवाहिक माने खेबाकेँ दोसर कतवाहिमे ठेल धारमे बहा देलिऐ आ पीबाक नाँगैर पबैक विचार करए लगलौं। रस्तापर नजैर गेल, लवहद कोठीक रस्ता धेने अबैत रही से मन पड़ि गेल। महाभारतक चौदहम दिनक लड़ाइमे जहिना सेना-सिपाहीक समए होइत अपनो तेहने छल।

मासक पनरह दिन गामसँ मधुबनी केश-फौदारीक दौरमे अबै-जाइ छेलौं। साइकिलक सवारी, तँए दस-पनरह किलो-मीटर चलि

कऽ बढ़लो जा सकैए, यएह सोचि गामसँ मधुबनी अबै-जाइक जेते रस्ता अछि, टेढ़ो-टुँढ़ लगा सभ रस्ताकेँ जंघिया नेने रही। माने झंझारपुरसँ सकरी होइत रस्तासँ लऽ कऽ बाबूबरही धरिक रस्ताकेँ सदिकाल धङैत आएल छी।

लवहद कोठीसँ कनी पाछूए रही कि पीबैक वस्तुक विचारमे 'छूआ' आबि गेल। छूओ तँ शरबते जकाँ मीठो होइ छै आ गाढ़ो होइ छै, खाली रंगेटा ने कारी होइ छइ। तोहूमे कि कोनो जहर-माहूरक गाछक रस छी जे मरैक डर रहत, ओ तँ मीठक-जड़ि[9]क रस छी। मुदा फेर मनमे भेल छूआ तँ छुए छी, ओ पीब नीक हएत? लगले हुअए जे परम्पराकेँ मानि ली। जखन कियो ने छूआ पीबैए तँ हमहीं किए पीब। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे पानि जकाँ छूआकेँ लोक नइ पीबैए मुदा पीनीमे मिला कऽ तँ पीबते अछि। ओकरा पीनाइ कहबै की नइ? आफन तोड़ि घोड़ा जहिना बमैछ जाइए तहिना मन बमैछ गेल। बमैछते मन मानि गेल जे छूआ पीब। फेर भेल जे जेकरा पीबै ओहो तँ एक पक्ष भेल। दू पक्षक जखन बात अछि तखन किए ने ओहू पक्षसँ पुछि लेब। जखने ओइ पक्षसँ पुछि लेबक विचार मनमे उठल आकि मनमे कनी ठहराव भेल। आँखि उठा आगू तकलौं तँ अकास-धरती दुनू एकेबेर आगूमे देखलौं। जइ इलाकामे बैशाख-जेठमे कुशियारक फूल अकास उड़ैत रहै छल ओइ इलाकाक लोक छठियो पाबैनमे कुशियारक टोनीक जगह बजारेक खाजा-लडूसँ डाली सजबऽ लगल छैथ! नगदी खेतीक रूपमे जानल जाइबला कुशियार इलाका छोड़ि देलक! खेतक ओ रूप नहि जे बरखा आधारित धानक खेती हएत। हँ, बोरिंग-नहरक सुविधासँ धानोक खेती कएल जा सकैए, मुदा से नगण्ये छल। तँए पानिक राजा मिथिलांचलकेँ रहितो सालक-साल, मासक-

[9] कुशियार

मास रौदी राजगद्दी छीनि लइए। प्रश्न अछि खेतीक लेल पानिक की खगता? मुदा पानिक खगतासँ पहिनेक प्रश्न अछि, खेतक फल उपजा छी, फल केहेन उपजाबऽ चाहै छी। जँ कनैल फूलक जड़िमे सभ दिन पानि नहियोँ पड़त तैयो फुलाएत, मुदा रजनीगंधा से मानत? ओ कमल जकाँ तँ नहियेँ रंग बदलत जे पानिमे पनिकमल आ माटिपर थलकमल हएत।

कुशियार बरहमसिया खेती छी, बरहमसिये नहि पाने जकाँ तीन-सलिया-पन-सलिया उपज छी। जे तीनू मौसम- जाड़, गर्मी, बरसात-केँ अङेज फसल तैयार करैत अछि। ओइ खेतीमे नमहर वज्रपात भेल। की भेल, केना भेल, किए भेल, ई अलग बात अछि।

रस्तो टपैत रही आ इलाकाक दरसनो करैत रही। कोस भरि फड़िके रही, माने पछिमे रही कि लवहद कोठी मीलक चिमनीपर नजैर गेल। आँखिक सोझमे चिमनी देखते अपनो चिमनी जगल। पीयास जेना तेज बुझि पड़ए लगल, मुदा महाभारतक यक्ष-प्रश्न जकाँ केतए पीब से गरे ने पकड़ै छल। मुदा चिमनी देखैत अपनो गर पकड़लक।

गर ई पकड़लक जे पहिनहि विचारि नेने रही जे कुशियारक रस छूआ छी, कोनो जहर-माहूरक रस छी नइ, जँ पोश्ता दाना रहैत तँ कनी विचारो करितौं, सेहो नहियेँ अछि। मुदा लगले मन पाछू घुसैक गेल। घुसैक ई गेल जे शुरूएमे विचारि नेने छेलौं जे अपन पियास छुए पीब मुझाएब, मुदा जेकरा पीबै से तँ अपन दुनू पक्ष कहबे करत किने। किए लोक नइ पीबैए आ किए कियो पीनीमे पीबैए, तँ कियो सिनेमा होइ कि थियेटर आकि नाटक होइ कि नौटंकी चाहे लोड़िके-सलहेस किए ने होइ, सेवा निवृत भेला पछाइत पीनी बेचबो करैए आ पीबो करैए।

मुदा लगले मन फेर मनाही केलक जे जखन अप्पन पियासक

प्रश्न अछि तखन अनेरे मन सौंसे दुनियाँ वौआएब ठीक नहि। जइसँ मन समटाएल।

लवहद मील लग पहुँचते रस्ते कातक गाछ लग ठाढ़ भऽ विचारए लगलौं जे पानि पीबैले चापाकल सेहो अछि, चाह पीबैले दोकानो अछि, खाइ-पीबैले सेहो दोकान अछि। तखन अनेरे किए छूआ पीब, एते तँ हेबे करत ने जे परम्परानुकूल हमहूँ केलौं। धार जकाँ छूआक नहर रस्ते कातमे पसरल। यमुना धारक पानि जकाँ कजरारी रंग-रूपमे छूआ सजल-धजल। पियासल मने जखन तकलिऐ तँ छूआक नहैर देखते कहलक-

"अहाँ मनक बात हम बुझै छी, अपना विवेके अपन निर्णए करब, मुदा अपन छुआ-छूत जँ नइ कहि देने रहब तखन हमरा नरकोमे बास हएत। हूरार जकाँ ओतौ ओहिना हुलुक-बुलुक करैत रहब।"

'छूआ'क रंग-रूप देख अपनो मन छुए जकाँ कजरा गेल। पुछलिऐ-

"भाय, तोहर एहेन गति किए बनल छह? तोहूँ ते कुशियारेक रस छहक किने।"

हमर बात सुनि छूआ बाजल-

"भाय, कि अपन दुखनामा कहबह। धकियबैत-धकियबैत पहिने छूआ बनौलक आब हमर वंशे उपटबैपर लागल अछि।"

'वंश'क नाओं सुनि पुछलिऐ-

"भाय, तोहर वंश केहेन छह?"

जहिना रौतुका रटल-पढ़ल विद्यार्थीकेँ दिनमे वएह प्रश्न जखन पुछल जाइ छै तखन जहिना धाराप्रवाह उत्तर दिअ लगैए तहिना छूआ

बाजल-

"भाय, जहिना गङ्गासँ यमुना धरिक पानि एकठाम मीलि त्रिवेणी घाट बनौने अछि, तहिना हमरो वंश ओही पानिकेँ समेटि पेटमे रखने अछि। जे मीठो आ गढ़गरो बनैक पौष्टिक शक्ति रखने अछि। जे मिथिलांचलक अपन धरोहर सम्पैत छी। मुदा तेहेन छह-फिटिया लोक सभ भऽ गेल जे वंशे मेटबैपर लागल अछि!"

छूआक बात सुनि जेना अपनो पियास कमऽ लगल। जेना-जेना पियास कमैत गेल तेना-तेना छूआक संग सिनेह सेहो बढ़ैत गेल। छूआक दुर्दशा देख मन सिहरऽ लगल। सिहरैत मने कहलिऐ-

"भाय, जखन तोहर वंशे मेटबैपर छह-फिटिया लोक छह, तखन जे तूँ गबदी मारि कऽ बैसल रहबह, से तोरा सन भेल?"

हमर बात जेना छूआकेँ चहटगर लगलै, तहिना जीहसँ ठोर चाटि मुस्की दैत बाजल-

"जहिना हमरा वंशकेँ मेटबैपर लगल अछि तहिना कि ओकरो शुभ छोड़बै।"

छूआक मुहसँ 'शुभ' सुनि मन सहमल। सहमल ई जे खाधिमे फेकल अछि ओहो 'शुभ-अशुभ'क विचार करैए! पुछलिऐ-

"भाय, चाणक्यक धर्म-सूत्र बूझल छह?"

जेना बेवहारमे छूआ चाणक्य-सूत्र गुनने हुअए तहिना धाँइ दऽ बाजल-

"शैतानकेँ शैतानी ताबैए चलै छै जाबे शैतानसँ भेँट भऽ शेतनपन्नी झाड़ल नइ गेल रहै छइ।"

ऐगला बात छूआकेँ पेटेमे रहै तइ बिच्चेमे पुछलिऐ-

"की शेतनपनी?"

गुर-घा बहबैकाल जहिना सुआस पड़ै छै तहिना जेना छूआकेँ भेलै। अह्लादित होइत बाजल-

"भाय, देखै नइ छहक, केकरो मुहमे लगल रहै छिऐ, तँ केकरो ढेकामे! मुदा...।"

छूआक बात सुनि हँसियो लगै छल, मुदा केकरो कुल-खनदानक बातमे हँसबो तँ उचित नहियेँ हएत। समए छल, नीक कि बेजए, जे भेल से भेल। मुदा आइ जेतए छी तेतएसँ ने डेग उठाएब।

समए ससरल। देखते-देखते तीस बरख बीति गेल। एक पीढ़ीसँ ऊपर समए निकलि गेल। जेकर जनमो ने भेल छल ओहो जवान भऽ गेल, जे जवान छला ओ या तँ चौथापनमे पहुँच गेल छैथ, वा दुनियेँसँ डेरा-डण्टा तोड़ि लेलैन...।

आइ गामसँ मधुबनी जा रहल छी, ओही लवहद कोठीक रस्तासँ। ढहल-ढनमनाएल कोठी, सुखाएल छूआक नहैर। मीलक चिमनीबला बम्मा खसल, देवाल सभ चहकल, झड़ल। छूआक सुखाएल खाधिपर नजैर पड़िते मृत्युसज्जापर पड़ल छूआकेँ कुहरैत देखलिऐ। लगमे पहुँच अपन परिचय दैत तीस बरख पहिलुका दोस्तीक भावे पुछलिऐ-

"भाय, कि हाल-चाल अछि?"

देहसँ दुर्वल रहितो छूआ बाजल-

"भाय, कि हाल-चाल रहत, अपने हाथे अपने मुँहमे लगबै छी।"

छूआक बात नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं तँए दोहरबैत पुछलिऐ-

"की अपने मुँहमे..?"

जेना छूआक छाती चहैक गेल होइ, तहिना बाजल-

"हमरेटा वंश थोड़े मेटौलक, दुनियाँक जेते कल-कारखाना अछि ओइमे अदहासँ बेसी किसानी वस्तुसँ चलैत अछि, जइ सभटाक मुँहमे लागि गेल छिऐ।"

❍

तिथि : 6 अप्रैल 2015, शब्द संख्या : 1223

दोसराइत

पचास बर्खक पछाइत सुखेन जगेनकेँ भेँट भेल। दुनू गौआँ, दुनू संगे-संग बीस बरख बालपनक जिनगी काटि नेने छल।

गौआँ रहितो, गाममे रहितो दुनू संगीक भेँट पचास बर्खक पछाइत भेल। ओना दुनू संगे गामक स्कूलसँ कौलेज धरि पढ़ने रहए।

दुनू गोरे संगे कौलेजक मुहथरिपर सङ्कल्प केने छल- ‘अपन पेट तँ कुत्तो-बिलाइ पोसि, धिया-पुता जनमा अप्पन बिनु बनौल घरमे घरवास करैत सौंसे जिनगी काटि लइए। मुदा अपना सभ तँ मनुख छी तँए आगू बढ़ि दोसराइतोक सेवा करैत रहब। ओना कहब जे मिठाइ दोकानक जे कुत्ता घी पीब अपन चाइन परहक केश उड़ा नेने अछि, तखन सौंसे जिनगी केना भेल? ओकरा तँ देहमे एकोटा रूइयेँ ने छइ। भाय, तइले अनेरे छाती किए चहकत जखन लोमस बाबा छैथे...।

बीसे बर्खक जिनगी दुनू गोरे- सुखेन-जगेनकेँ चारू दुनियाँ देखा चुकल छल। जेहेन उदाहरण समाजिक पुराणमे साइयो अछिए।

सुखेन-जगेनक भेँट ओहिना भेल जहिना नर-सिंह आ वन-सिंहक भेँट होइते, दुनू ठमैक जाइए। केकरो आगू डेग उठबैक साहस नइ होइ छै, मुदा नजैरक नीचाँ-ऊपर भेने एक-दोसरपर टुटैए। मुदा से सुखेन-जगेनक बीच नइ भेल। भाय, किछु छी तँ मनुख छी किने, जेकरा अमरीतक उफनाइत समुद्रो छै, बहैत धारो छै, आ असथिर

पोखैरोयो-इनार छै, से किए ने चपेकलसँ अमरीत निकालि दरबज्जाक महमही पसारत। मुदा जहिना केकरो परिवर्जनक बिछोहक विरोग मनकेँ दलमलित करैत, तहिना दुनूकेँ भेल।

सुखेनकेँ जगेनक वैचारिक दूरी बनैत-बनैत एते-दूर हटका देलक जे एकठाम रहनिहार, एक गाममे रहनिहार, एक रस्ता-पेरासँ चलनिहार पचास बर्खक पछाइत एक-दोसराकेँ लग अनलक। दुनूक झहरैत-हहरैत देहक रंग किए ने होइन, आइक परिवेशमे सत्तरि बरख कम नइ भेल। एक दोसरपर नजैर पड़िते, बीचक पचास बर्ख उधिया गेल। बालपनक बीसो बरख एक-दोसरक चेहरासँ छिटकऽ लगल। जइसँ एक दोसरक जिनगीमे चेन्ह मारैत ओइ सीमापर अँटैकगेल जेतए दुनू सङ्कल्पित छल- ‘अपनासँ आगू बढ़ि दोसराइतोक सेवा...।’

दुनूक मनक विचार बेसीकाल अँटकल नहि। दुनू विचड़ऽ लगल। दुनूक दू-दिसिया बाट, जइसँ एक गाममे रहितो दूरी बनऽ लगल। एक दोसरसँ हटकैत हटऽ लगल। अपनाकेँ एक-दोसरसँ हटैत वौआइत सुखेन पाछू उनटि तकलक तँ बुझि पड़लै शुरूमे अनारक रूपमे रहलौं मुदा बाँझी जनमने बँझिया गेलौं। छातीसँ छाती सटबैत अपन छाती दइत आ जगेनक छाती लैत आलिंगन करैत बाजल-

“जगेन भाय, कि कौलेजक जिनगी छल!”

जेना रस्ता चलैत कोनो राहीकेँ पाछूसँ कियो जोरसँ हाकक स्वरमे सोर पाड़ैत, जइसँ कोनो गरूगर विचार अबैत होइ। तहिना जगेन पाछू उनटि आबि दुनू बाँहिसँ सुखेनकेँ पँजिया बाजल-

“भाय सुखेन, ओ दिन अहिना आगूमे ठाढ़ अछि, जइ दिन संगी सबहक संग नियमित पढ़ाइ नइ होइक कारणे कौलेजक गेँटपर तीन दिन तक अनशन केला पछाइत पुलिसक लाठी खाइत, मुरदा जकाँ उठा-उठा कौलेजक गेँटसँ कात कएल गेल रही।”

जगेनक बात सुनिते सुखेन छड़पि उठल। जगेनसँ आगू बढ़ि सुखेन ओइ घटनामे अपन रणकलाक प्रदर्शन केने छल। मुदा लगले एक मन ठमैक गेल। दोसर मन जगेनक विचारक बीच बाजल-

“भाय, एहेन नौवत किए बनल जे विद्या भवनमे बेइमानीक रणक्षेत्र बनल?”

सुखेनक प्रश्न सुनि जगेन गम्भीर होइत बाजल-

“भाय, दुनियाँमे केकरो विवेक ई नइ कहै छै जे पापी-अधरमी बनी, मुदा जिनगी जीबैक एहेन प्रक्रिया बनि गेल अछि, जइमे बाध्यता छै, मजबूरी छइ। पोखैरक माछ जकाँ बिनु किछु केनौं जालमे फँसि जाइए।”

जगेनक बातसँ सुखेनकेँ जेना किछु नव विचार मनमे उठऽ लगलै मुदा लगले एक मनकेँ दोसर मन दाबि विचार देलकै- किए ने जिनगीक ओही इतिहासक[10] पन्ना उनटा किछु गप-सप्प करी। बाजल-

“भाय, ई बात हम अखनो नइ बुझि पाबि रहल छी जे शिक्षकक सेवा पढ़ाएब भेलैन, विद्यार्थीक सेवा अध्ययन भेल, अहिना परिवारसँ समाज धरिक सीमा बनले अछि, तखन बीचमे एहेन परिस्थिति किए बनल जे जीबैत जिनगीकेँ जीबैले जहलो जए पड़ै छै आ मारि खा मुरदोक ढेरीमे फेकल जाइ छइ।”

अपनो ढलैत देहक शक्ति आ सुखेनोक देहक ढलैत शक्ति देख जगेन मने-मन विचारए लगल, केना महाभारतक अभिमन्यु अखनो ओहने रणक्षत्री बनि आगूमे ठाढ़ छैथ। हजारो बर्खक अन्तराल रहितो नवयुवके छैथ। देह-दैहिक बीच ठाढ़ होइत जगेन बाजल-

[10] कौलेजक गेंट परहक अनशन

“भाय, अनेरे कोन फेड़मे पड़ऽ चाहै छह, छोड़ऽ दुनियाँ-दारी, अपने बनौलहा जे माला छह ओकरे साँझ-भोर जप करह।”

जगेनक बात सुनि सुखेनक मन हल्लुक भेल। हल्लुक होइते बाजल-

“भाय, ओही साल ने सिनेमा टिकट-ले सेहो हौलक आगू अनशन केने रही?”

जेना जगेनोक जीहेपर रहै तहिना बाजल-

“ओ ते चारिए घन्टाक अनशनमे फड़िया गेल रहए। मन छह किने, शनि दिनक मैटिनी शो आ सोम दिनक सौंझुका शो-मे विद्यार्थीकेँ सिनेमा टैक्ससँ मुक्ति भेटल।”

कोनो बाल-बोधकेँ टटका किछु भेटलासँ जहिना खुशी होइ छै तहिना सुखेनोकेँ भेल। मुदा केहनो सुन्नर चाह पाँच सितारा होटलमे किए ने बना कऽ पीने होइ मुदा आइ तँ अपने घरक चाहक सुआद ने नीक अछि। मन ठमकल। ठमैकते अपन कौलेजक गेँटपर लेल सङ्कल्प जगलै। जगिते बाजल-

“भाय जगेन, मन मानि रहल अछि जे तूँ हजार कच्छे नीक छह, मुदा एकटा बात साफ नइ भऽ रहल अछि जे सङ्कल्पक सूत्र तँ दुनू गोरेक एके ने छल।”

जेना कोनो भारी वस्तु अभरलासँ माथ झनकि उठैए तहिना जगेनक चानि झनकल। मनमे उठलै, दोसराइतिक सेवा...। अपन निसचित जगहमे कौल्हुक बरद जकाँ दिन-राति घुमैत रहै छी, मुदा से सुखेनक कहाँ अछि, ने जिनगीक ठेकान छै आ ने दिन-रातिक आ ने अपन-दोसराइतिक। अखनो दिन-राति कोट-कचहरीक चक्करमे चकराइत रहैए। मुदा कोन चकराइ भऽ रहल छै, भरिसक सुखेन सएह ने बुझि पाबि रहल अछि। अनुमानित बात बजलो तँ नहियेँ जा

सकैए। मुदा बिनु सुनने नीक-बेजाइक आँकड़ो तँ नहियेँ निकालल जा सकैए। बाजल-

"भाय सुखेन, अपन सबहक अन्तिम भेँट कहिया भेल, तैठाम चलह।"

जगेनक बात सुनि सुखेनक मनमे सुखक संचार भेल। सोभाविको छै जे हाल-सालक आमदनी किछु दिनक आशा बढ़ाइए दइ छइ। बाजल-

"जगेन भाय, हमरा मने जइ दिन कोटक अन्तिम केसक फैसलाक लफड़ा छुटल, से अन्तिम भेँट छी।"

सुखेनक बात सुनि जगेनक जगैत मन मुस्की दैत बाजल-

"दुनू गोरेकेँ कोटक लफड़ा एके दिन छुटल। मुदा हमरा सोलहन्नी छुटि गेल आ तोरा कुशियारक छूआ जकाँ बैसैकाल ढेकामे लगि गेलह।"

ओना सुखेनक मन मानि गेल छल जे जगेनक विचारमे सक्कतपन बेसी छइ। तँए सटले प्रतिवादो करब उचित नहि। किए ने जगेनेसँ पुछि लिऐ। बाजल-

"भाय जगेन, की छूआ लागल?"

'छूआ' सुनिते जगेनकेँ हँसी लगल, मुदा गम्भीर होइत अपन बचकानी दोस्तीक आगू हँसब उचित नइ, तँए मुस्की मारैत बाजल-

"भाय, कुशियारक छूआ ओ भेल जेकर रंग बहुत कारी छइ। मीठाँस रहितो पीनी वा अन्य कोनो दोसर काजमे उपयोग होइ छइ।"

बिच्चेमे जगेनकेँ रोकैत सुखेन दोसर प्रश्न पटकलक-

"अपना दुनू गोरे संगी छी आ कुशियारक छूआ?"

अपन प्रश्नपर सुखेन भार देने रहै, तँए भारकेँ तँ गुड़कबऽ पड़त

नइ तँ रस्ते रोकि देत। बाजल-

"भाय सुखेन, जेना बुझि पड़ैए जे दुनू गोरे कौलेजक ओहन क्लासमे पढ़ै छी जेकरा पास केने शिक्षक, नइ तँ विद्यार्थी।"

प्रश्नक समुचित उत्तर पबैले सुखेनक मन कछमछाइत। सुखेनक कछमछी देख जगेन बाजल-

"भाय, ऐठाम कबछुआ केना चलि आएल जे तोरा लगिते कछमछबै छह!"

चारूकात सुखेन हुलैक-बुलैक तकलक तँ केम्हरो किछु ने देखलक, देह-हाथक कुड़यैनी छोड़ि सुखेन बाजल-

"भाय जगेन, अपना मने हम कहियो ने कोनो गलती केलौं, मुदा अखनो, अहू उमेरमे ओही चक्करमे दिन-राति वौआइत रहै छी! चैन किए ने अछि?"

सुखेनक प्रश्नकेँ टारैत जगेन बाजल-

"भाय सुखेन, अपने सिंगार ने अनको नीक लगै छै, तँए ने ओ ओकर पञ्जो भेल।"

बहैत धारक किनछरिक पानि जकाँ सुखेन कतवाहि धरैत बाजल-

"हँ।"

'हँ' सुनि जगेन बाजल-

"भाय सुखेन, तोहूँ दोसराइतेक पाछू माने जाति-कुटुम, हित-अपेक्षित लेल समए गमेलह आ हमहूँ ओही पाछू गमेलौं। मुदा... ।"

'मुदा' सुनि सुखेनक मनमे उठल भरिसक अहीठाम, घाट-बाट छइ। जिज्ञासु हंसिनी जकाँ बाजल-

"भाय, की मुदा?"

अपन अन्तिम विचार दैत जगेन बाजल-

"भाय सुखेन, हम अपन आँट-पेट बुझि चलि रहल छी आ तूँ कचहरिया लोक बनि गेलह। दोसराइत भेल, दोसर-रातिक अन्हारमे जे टप्पा-टोइया दइए, से।"

जगेनक विचार नीक जकाँ सुखेन नइ बुझि पेलक, जे सोभाविको छइ। हजारो रंगक सुखो छै आ दुखो छै, अही दुनूक बीच सभ चलैत आबि रहल अछि। मुदा प्रश्नक उत्तर नुकाएल अछि। जेकरा ताकि निकालब बाल-बोधक चिक्का-दड़बड़ खेल नइ छी। जिनगी छी जिनगी। जेकर बाट-घाट बिनु बुझने...। सभ धारक घाट, पोखैरक घाट, सागरक घाट, गङ्गा सागरक घाट तँ घाट भेल, तँए कि धोविघट्टा नइए सेहो तँ नहियेँ कहल जेतइ।

❍

तिथि : 9 अप्रैल 2015, शब्द संख्या : 1270

लछनमान

झंझारपुर जाइले तैयार भऽ दरबज्जापर सँ निकललौं कि शुभधी काकीक जोरसँ बाजब सुनलयैन। ओना आँगन आकि कोनो आनेठाम जँ पाँच-दस गोटे एकठाम रहि गप करत तँ हल्ला जकाँ भाइये जाइ छै, तहिना बुझि पड़ल। तीन बर्खक पोता- रमुआँ-क संग शुभधी काकी खुरपी नेने घास-ले विदा भेल छेली, तही बीच चाह पीबैले सभ कियो- शुभधी काकीक दुनू बेटो, दुनू पुतोहुओ आ चारू-पाँचू पोतो-पोती ओसारपर थहाथही करैत रहैथ।

छोटकी पुतोहु चाहक केतलियो आ कपोकेँ बीचमे रखि घर जा एटैचीसँ एकटा पेस्तौल आ एकटा बएट-बाउल नेने रमुआँक आगूमे रखली। ओ दुनू रमुएँ-ले मुम्बइसँ अनने छेली। चाह पीब शुभधी काकी विदा भेली, आगू-आगू रमुओं ठुठियेलहा खुरपी नेने आगू बढ़ल। भातीजकेँ खेलौना छोड़ि खुरपी नेने आगू बढ़ैत देख रूपलालकेँ छगुन्ता लगलै। एहेन रंगर खेलौना बच्चा-ले अनलौं मुदा ओ तँ एम्हर तकितो ने अछि! अपना दिस आकर्षित करैले पेस्तौलक बटन दाबि एकबेर जोरसँ अवाजो केलक। तहिना गेनकेँ पटैक सेहो देखौलक। पेस्तौलक अवाज आ गेनक भीतर जे लाल-हरिअर बिजली जकाँ चमकै, ओ दुनू रमुआँकेँ डर पैसा देलक। तैबीच कि सभ गप भेलैन से तँ हल्लामे नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं, मुदा शुभधी काकीक मुहेँ बाजब

सुनलौं-

"जेकरा कोठी जेहेन धान से तेते तेहेन लछनमान।"

कहि शुभधी रमुआँकेँ अगुएने डेढ़ियासँ आगू बढ़ली। हमहूँ बीचमे टोकबसँ परहेज केलौं। परहेजो केना ने करितौं, एकहरियो काजमे लोक गप-सप्पसँ परहेज करैए, ऐठाम तँ दोहरी काज अछि। हमहूँ झंझारपुर ब्लौकपर काजे विदा भेल छी आ काकियो घासले विदा भेल छैथ।

साइकिलपर चढ़ि झंझारपुर विदा भेलौं। मनमे उठल शुभधी काकीक विचार। मुदा तइ बिच्चेमे पाछूसँ रूपलाल कहलक-

"भैया, पान खा लिअ, जेबे करब।"

अपने ठेकना कऽ विदा भेल रही जे चौकपर पान खाएब, मुदा से दरबज्जेपर भेट गेल। तँए मनमे कनी खुशी जगिये गेल। ओही खुशीमे रूपलालकेँ कहलिऐ-

"बौआ, कमाइ-खटाइ नीक छह किने?"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि रूपलाल अपन बात अनठौलक। मुदा उपराग जकाँ दैत कहलक-

"भैया, रमुआँ-ले एकटा पेस्तौल आ बएट-बाउल नेने आएल छी, देलिऐ से कथीले ओम्हर घुरियो कऽ ताकत। ठुठियेलहा खुरपी नेने दादी सेने विदा भऽ गेल!"

एक संग रूपलालक केतेको प्रश्न मनमे उठि गेल। मुदा सभटा प्रश्नकेँ तहियबैत कहलिऐ-

"बौआ, अखन हमहूँ धड़फड़ीमे छी, गप-सप्प करैक छुट्टी नइ अछि, घूमि कऽ अबै छी, दुपहरमे आरो कुशल-समाचार बुझैक

अछि।"

आन पड़ोसी जकाँ शुभधी काकीक परिवार नइ जे एक-दोसरसँ देहक कोन बात जे छाँहोसँ लोक परहेज करैत कात रहैए, से नइ अछि। तँए अपनो खेबोकाल जँ धड़फड़ीमे रहलौं आ भातेटा भेल रहल तँ शुभधीए काकीक दालि होउ कि तीमन लऽ खेबो करै छी। ने अपने बुझै छी जे शुभधी काकी कियो आन छैथ आ ने वएह बीरान बुझै छैथ।

शुभधी काकीक भरल-पुरल परिवार, दूटा बेटा- सोनेलाल आ रूपलाल, तहिना दुनू पुतोहु आ सहरगंजा पोता-पोती परिवारमे। सहरगंजाक माने भेल पोतो आ पोतियो। करीब तीस बर्खक शुभधी काकी रहैथ, तहिए पति- देवीलाल- मुइल रहथिन। तइ दिनमे हमहूँ चेष्टगर नइ रही, तँए अपन देखल तँ नहि मुदा शुभधी काकीक अपनो मुहेँ आ माइयोक मुहेँ सुनने छी जे जइ समए देवीलाल मुइलखिन, ओइ समए शुभधी काकी कड़कड़ाएल जुआन रहैथ, ओना सात बर्खक सोनेलाल आ चारि बर्खक रूपलाल बेटा रहैन। मुदा पतिक मृत्युसँ आन जकाँ नइ जे पति मुइने पत्नी धिया-पुताकेँ छोड़ि डेरा-डण्टा तोड़ि ससैर जाइए। पति-पत्नीक बीचक अपन अर्जित सम्पैत छी, जइमे तेसरकेँ ने दखल देबाक अधिकार छै आ ने दखल लेबाक। ऐ विचारक शुभधी काकी। तँए आन जकाँ ने मृत्युए लगसँ कननाइक कतार लगौलैन आ ने मनेसँ विचलित भेली। कननाइक कतार भेल जे मरबसँ पहिनहि ओछाइनेपर सँ जे कानब शुरू केलौं, आ मृत्यु, असमसान घाट, पोखैर वा धारक घाट होइत लोह-पाथर छुबैत तेराइत करैत नह-केशसँ लऽ कऽ सराध, समपिण्डण होइत कनैत रहलौं, कनैत रहलौं। मुदा शुभधी काकी से नइ केलैन, केलैन ई जे कुसमैक पतिक मृत्यु दुखद ऐछे, शरीरोसँ आ मनोसँ। शरीरक ई भेल जे तीस बर्खक अवस्थामे जइ महिलाकेँ समाज विधवा कहि अशुभ मानि

समाजसँ वहिष्कार करैए, ओहन समाजमे केना जीब। तँए आँखिसँ नोरो खसबे केलैन, आ सौंस छाती सेहो छहोँछीत भेबे केलैन। मुदा तेकरा ओ बिपैत नहि बुझि अपन उपैत शुरू केलैन।

शुभधी काकी अपन जिनगी दिस तकै छैथ तँ देखै छैथ जे जेठ बेटा- सोनेलाल अपन गाम-घर, माटि-पानिक बीच हँसैत-खेलैत जिनगी बीता रहल अछि, तहिना छोटको बेटा मुम्बइमे जीबिये रहल अछि। कम पढ़ल-लिखल रहनौं रूपलालक तेहेन वगै-बानि छै जे एक संग सत-सतटा कम्पनीक एजेन्सीक काज करैए। सात दिसक अम्बोह आमदनी, तँए मुम्बइ सन शहरमे नीक बास करिते अछि। ऐ बेर रूपलाल सात बर्खपर गाम आएल छल, जे तीन साल पहिने रमुआँक जनम दिनक शुभ अवसरपर संगी सबहक बीच मुम्बइएमे नमहर पार्टी देने छल। सभसँ छोट भातीज- रमुआँ- अछि तँए ओकरा-ले लत्ता-कपड़ाक संग खेलौनामे पेस्तौल आ बएट-बाउल नेने आएल छल।

दिन उगिते आगू-आगू तीन बर्खक रमुआँ ठुठी खुरपी नेने आ पाछू-पाछू शुभधी काकी घास छीलऽ अपने बाड़ी दिस बढ़ली। जाड़क मास नै जे घास शीताएल रहत। आगू-आगू मुँह घुमौने रमुआँ बाजल-

"दादी।"

बिच्चेमे सजग सिपाही जकाँ शुभधी काकी बजली-

"हँ! की भेलौ?"

आगू-आगू बढ़ैत रमुआँ, दादीक हाजरी नोट केलक आ अपना धुनिमे दौगैत आगू बढ़ल। कोन जरूरी वेचाराकेँ छै जे खुरपीसँ कोबी कमाएत, आकि धान कमाएत आकि कोनो गाछक जड़ि कोरत। हाथमे ओजार छै दुनियाँ दिस जाइए रहल अछि, जेतए दादी अँटकत तेतए अँटैक कऽ जे मनलग्गु काज देखत, करत। मुदा तँए कि शुभधी

दादीक नजैर रमुआँपर नइ छैन, जे केते दूर हटि ओ ओजार चलबैए। मुदा तइले शुभधी काकीक मनमे मिसियो भरि चिन्ता नइ होइक कारण अछि अप्पन सोच-विचार। अपना सोचकेँ विचार मानि विवेकाधीन रूपमे जिनगीक दिसा दी। तँए शुभधी काकी सौंसे दुनियाँ खेले-खेल देखैथ। पोतापर नजैर जानि कऽ कनडेरीए आँखिये देने रहथिन जे ई छौड़ा हमरा काजकेँ खेल बुझि करैए आकि...। मुदा लगले मन घुसैक गेलैन, घुसैक ई गेलैन जे हमहीं कोन गोवरधन-पहाड़ उनटबै छी, अपनो तँ घासे ने छीलै छी। फेर नजैर बढ़लैन-घासेटा किए छीलै छी पोताकेँ खेलेबो करै छी किने। आब अपन उमेर काज करैबला अछि आकि बाल-बोधक संग खेलाइत-धुपाइत दिन बीताएब, सएह ने अछि।

झंझारपुरसँ गरमाएल एलौं। नहा-खा दू घन्टा सुतलौं तखन मन थीर भेल। एकेठाम दुनू भैयारीक घरो अछिए। मुदा दुनू परिवारक बीच एते सम्बन्ध तँ बनले अछि जे हमरे कोनो ओहन बात जे बजैबला नइ अछि से ने शुभधी काकीक परिवारक कियो बजैए आ ने हमहीं हुनका परिवारक ओहन बात बजै छी। मुदा तँए कि दुनू परिवारमे कोनो बात-विचारक कमी अछि से बात नै।

...सुति कऽ उठलापर मन हल्लुक भेल। कलेपर सँ रूपलालकेँ कहलिऐ-

"बौआ, चाह तैयार करह, अबै छिअ।"

जहिना पहुँचलौं, तहिना चाहो पहुँच गेल। जेना बुझि पड़ल जे ई तँ दरबारी ढाठी भेल, खाइ-पीबैकाल मुड़ीए डोला कऽ गप करी। मुदा लगले भेल जे ऐठाम कोन राज-काजक गपे हएत। घरैया गप हएत। तइ बिच्चेमे रूपलाल बाजल-

"भैया, अपना जनैत मुम्बइसँ हम नीक खेलौना भातीज-ले

अनने छी मुदा ओ ओइ दिस तकबो किए ने करैए?”

रूपलालक प्रश्न मनकेँ ठर्ढ़ा देलक। मुदा अन्हार घर साँपे-साँप, केना कहबै जे बौआ दुनू समाज- माने गामक समाज आ मुम्बइक समाज- परिवारक ऐगला पीढ़ीकेँ ओते कात हटा देतह, जे चिन्ह-पहचिन्ह मेटा जेतह। मुदा दुनू भैयारी अपन-अपन जिनगीमे मस्त। मस्तीए ने जिनगी भेल, मुदा मस्ती की? अपनाकेँ ओझराइत देख बजलौं-

“बौआ, जिनगी ते तोरा सबहक छह। बाल-बच्चा हवाइ-जहाजक पायलट हेबे करतह।”

हमर गप जेना रूपलालकेँ नीक लगलै, मुदा तैयो बाजल-

“भाय साहैब, भातीजक बात नइ बुझि पेलिऐ?”

की कहितिऐ। बजलौं-

“बाल-बोध राजा होइए, ओकर पनचैती हमरा बुते कएल हएत। तोहूँ तँ भातीजे छह अपनेसँ बुझि लएह।”

❍

तिथि : 13 अप्रैल 2015, शब्द संख्या : 1173

हमर कोन दोख

नोकरी करैबला जहिना रवि दिनक छुट्टीकेँ दिनक छुट्टी बुझि रवियेकेँ छुट्टी कऽ दइए तहिना हमहूँ बिनु नोकरी करैबला लोक तँए शनि दिनकेँ छुट्टी मनबै छी। से कोनो अदी-गुदी नै मनबै छी, मनसँ मनबै छी, हृदैसँ मनबै छी, तहेदिलसँ मनबै छी। ओही उखाहीमे ओछाइनेपर पड़ल रही। भाय, दिनकेँ ने छुट्टी करब अछि कनी-कनी सभ चीज बढ़ौने, दिनक छुट्टी भाइये जाएत। कोनो कि गणितक बड़का फर्मूला थोड़े छी जे फर्मूले ने बुझब तँ हिसाब केना फड़ियाएब। सोझ-साझ फर्मूला अछि जेतेकाल सुतै छी तइमे कनी समए बढ़ा देबइ, तहिना नहाइ-खाइमे कनी बढ़ा देबै, बस भऽ गेल दिनक छुट्टी।

मुदा से भेल नहि। जगैओक तँ केते कारण अछि, कियो अपने विचारे समैपर जगि जाइ छैथ, तँ कियो माता-पिताक जगौने जगै छैथ तँ कियो परिवारक आन-आनक जगौने जगै छैथ तँ कियो समाजक जगौने जगै छैथ। समाजक जगौनाइ ई भेल जे किनको काजक भार लऽ कहि दिऐन जे चारि बजे भोरे आबि जाएब नइ तँ काज पाछू पड़ि जाएत, काजक चाँइक रहने ओ आबि कऽ जगेबे करता। सुर्ज उगैमे घन्टासँ बेसी समए बाँकी रहै, अनहरिया राति रहने अन्हारक झलफली रहबे करइ। भोरुका कौआ जकाँ रस्ते-रस्ते चलैत मनोहर भाय बजला-

“आइ तँ गामक नाक कटि जाइत, प्रतिष्ठा डुमि जाइत।”

ओना नीन रही, मुदा बरहबजिया रौतुका कड़कड़ाएल नीन नइ रही, भोरुका पतरेलहा रही, मनोहर भाइक बात सुनलौं। मनमे भेल जे पुछिऐन जे की प्रतिष्ठा डुमि जइतए, मुदा फेर भेल जे भोरे-भोर रामक नाओं लऽ ओछाइन छोड़ब आकि अनेरे प्रतिष्ठेक उगै-डुमैक दर्शन करब। मनोहरो भाय रस्ते-रस्ते बजैत आगू बढ़ि गेला, जेना सौंसे गाममे हकार बाँटैक भार हुनके भेट गेल होइन। ओछाइन छोड़ि कोठरीसँ निकलि रस्तापर एलौं कि स्त्रीगणक गुरमिटनी केतेठाम, माने थोड़े-थोड़े हटि कऽ होइत देखलिऐ। मने-मन विचारलौं जे जे बात केकरो पुछबै तेकर जवाब जँ अपने केम्हरोसँ आबि जाए तँ अपन मुहोँ ने खोलऽ पड़त, आ जवाबो भेट जाएत, यएह सोचि दुनू कानकेँ चिड़नीबला वंशी जकाँ घाटपर पाथि देलिऐ। पाथिते एकटा डेढ़बा फँसल, माने ई जे एक गोटे बजली-

“एहेन लोककेँ अहिना हुअए।”

सुनिते मन चकरा गेल। चकरा ई गेल जे लोककेँ पनचैती करौ ने पड़लै आ उचित न्यायो भऽ गेल। मनमे कनी खुशी जगल। फेर दोसर दिससँ एकटा जनाना बाजल-

“मनुखो कि आब मनुख रहल, हाथी भऽ गेल।”

मनुख हाथी भऽ गेल? कोनो अर्थे ने लगल। मनुखक वंशसँ बहुत पहिने हाथी भेल, तखन फेर इतिहास केना उनटल? मुदा लगले भेल जे केकरो कहने किछु होइ छै, लोकेकेँ की लोक कम गंजन करैए, केकरो हाथी कहै छै तँ केकरो घोड़ा, केकरो गाए कहै छै तँ केकरो बरद, केकरो गदहा कहै छै तँ केकरो कुत्ता। कियो अपन मुँह दुइर करैए। मुदा फेर भेल जे ओहिना थोड़े कियो केकरो कहै छै, जाबे किछु लछन-करम नइ देखैए। तइ बिच्चेमे तेसर दिसक अवाज

टकराएल। एकटा नवतुरिया कनियाँ बजली-

“एहने-एहने लोककेँ अपटी खेतमे परान जाइ छै, ई तँ गुन रहलैन जे माइयक खरदुतिया पाबैन कएल छेलैन तँए दोहरा कऽ समाजक मुँह देखलैन, नइ तँ तेहेन खत्तामे खसल छला जे लोककेँ हाड़ बीछि-बीछि अछियापर आनए पड़ितैन।”

सुनिते मन थकमका गेल। केना नवकी कनियाँसँ पुछब नीक हएत। फेर हुअए जे जे बात ओ बजली ओ तँ दमगर अछिए। मुदा जइ नजरिये ओ बजली ओ नजैर जँ दोसरोक होइन तखन ने, जँ से नइ हेतैन तखन प्रश्नक उत्तर नीक जकाँ दऽ केना पेती। कोनो रस्ते ने सुझए जे की करी की नइ करी। तैबीच मनोहर भाय आपस घुमल अबैत रहैथ। हुनका देखते मनमे सवुर भेल जे आब सभ बात जड़िसँ बुझि लेब। लग औता तइ आशामे अपन मुँह बन्न रखने रही, मुदा चारि लग्गा हटलेसँ मनोहर भाय बजला-

“सिंहेश्वर भाय, आइ तँ गाममे अन्याय-अन्याय भऽ जाइत?”

मनोहर भाय तेहेन टोनमे बजला जे आगूक बात पुछब जरूरी भऽ गेल। पुछलयैन-

“की अन्याय भऽ जाइत भाय?”

जे बात बुझऽ चाहै छेलौं तेकरा आरो तर कऽ झँपैत मनोहर भाय बजला-

“गामक प्रतिष्ठा आगू बँचब कठिन भऽ जाइत।”

मनोहर भाइक बात सुनि आरो मन घुरिया गेल। घुरिया ई गेल जे एक तँ प्रतिष्ठा बनब कठिन होइए तैपर बनल प्रतिष्ठा बँचा कऽ राखब तँ आरो कठिन, तैपर मनोहर भाय बाजि रहल छैथ जे ‘प्रतिष्ठा बँचब कठिन भऽ जाएत।’ मुदा मनमे सवुर भेल जे एते तँ बाजिए रहल छैथ जे प्रतिष्ठा बँचब कठिन भऽ जाएत माने ई जे बँचल अछि,

गेल नइ। जखन मुसरीकेँ हुकहुकियो रहने तँ बाल-बोध गोबर सुङ्घा पुन: प्राण-प्रतिष्ठा दैत अछि, तखन ई तँ मनुखक बात भेल। हूबा जगल, पुछलयैन-

“भाय, अहूँ सभ दिन कौल्हेक तेल रहलौं, घानी लेब अढ़िया भरिक आ चुबब ठोपे-ठोप।”

हमर गप मनोहर भायकेँ नीक लगलैन, नीक ई लगलैन जे जेते बेसी वौस रहत ओते बेसी ने ओइमे आँकड़ो-पाथर पचत। अपन कारोबारमे लछमीकेँ अबैत देखलैन, करेज खोलि टोकरा दैत बजऽ लगला-

“बौआ, ओ.. हो... हो...., गाममे एकेटा बेटा अखन बाँचल छैथ, जे गामक प्रतिष्ठाक टेक धेने छैथ नइ तँ केकर माए एहेन बेटा जनमौलक जे..?”

मनोहर भाइक बात सुनि हदाश उड़ि गेल, जे एहेन कोन अनहोनी भऽ गेल जे माता-पिता पाशापर आबि बैसला। मुदा तेहेन आभूषणसँ आभूषित करैत मनोहर भाय रूप बनौलैन जे वीर तर कान, मङ्गटीका तर माङ्ग आ चश्मा तर आँखि झँपा गेल, तँए नीक जकाँ किछु बुझबे ने केलौं। मुदा होश करैत कहलयैन-

“भाय, हमरो सबहक जरूरत अछि?”

जेना हुनको हँसेरीक खगता रहबे करैन तहिना बजला-

“यएह ने भेल समाजक उपकार। घन्टा भरि पहिने जोगी काका पहुँचबे केला अछि, अखन जे अगुआ-अगुआ खोज-पुछाड़ि करतैन वएह ने हुनकर हितैषी भेलैन।”

जोगी काकासँ हमरा कोनो बेसी नजदीकी नहि, मुदा घटना छी, जँ समाजमे केतौ आगि लगै आकि कोनो दैहीके घटना होइ, तैठाम जेबाले लोक आगू-पाछू नइ तकैए। तँए जेबामे कोनो हर्ज नहियेँ

अछि। कहलयैन-

“भाय, चलू अहीं कलपर मुहौं-कानमे पानि लेब, चाहो पीब आ जोगी काकाकेँ जिगेसो कऽ लेबैन।”

जेना भरि रस्ताक खोराकी भेट गेल होइन तहिना मनोहर भाय हलसैत बजला-

“समाजमे दस कप चाह जँ सभ दिन लोककेँ नइ पिआएब तँ समाजिकता रहत।”

मनोहर भाइक बात सुनि मनमे उठल जे अनेरे कोन बतंगरमे पड़ल छी, तइसँ नीक जे मनकेँ किए ने जोगीए काका दिस तका दिऐन आ हुँहकारी भरैत चली। सएह केलौं, आगूए-आगूए की-कहाँ मनोहर भाय बजैत रहला आ हम हुँहकारी भरैत रहलौं।

जोगी काका जिला कार्यालयक वित्त विभागक बड़ाबाबू पदसँ सेवा निवृत भेल छला। ऑफिसो-ऑफिस आ किरानीओं-किरानीमे अन्तर होइते छइ। कोनो सहरगंजा नइ छै जे जहिना वित्त विभागक ऑफिसक चुहचुही रहैत अछि तहिना टोल-टपरामे बसल लोकोक रहत। तँए शुरूहेसँ नीक आमदनी जोगी कक्काक रहलैन। बच्चेसँ खाधुर रहबे करैथ, तैपर नीक उपाय भेटने आरो खखड़ भऽ गेला। हजारटा रसगुल्ला आकि पाँच-दस किलो माछ जँ चौबीस घन्टामे भेटैत रहैन तँ कहियो हारि मानैबला नहि। सेवा निवृत भेला पछाइत गाम आबि बिआहक बरियातियो आ गामक भोजो-काजमे अपनाकेँ उसरैग देलैन। बजारक मांग छैहे जे जेते भोजमे खर्च, तेते जश। जइसँ जोगी कक्काक चलती सभ दिन रहबे केलैन। ओना पैंसैठ बरख पार भऽ गेल छैथ।

जोगी काका दरबज्जेपर बैसल अपन खेरहा पसारने, दस गोटे आगूमे मुड़ी गोंतने बैसल सुनैत। दरबज्जापर पहुँचते कहलयैन-

“काका, आब अहाँ घुमि कऽ आबि गेलौं, कहियो ने जाएब?”

मुदा हमर बात काकाकेँ नीक नइ लगलैन। जेना भक्त सभ मृत्युकेँ आगूमे रखि साधनारत् रहैए तहिना जोगी काका बजला-

“बौआ, आब हमरा सभकेँ जात-बरियातमे नइ जेबा चाही।”

टुटल मन देख कहलयैन-

“काका, एहेन रोग जहिया धेलक तहिया नइ बुझलिऐ?”

बजला-

“बौआ, जुआनीक धाहे एहेन होइ छै जइमे अकसरहाँ सभ झड़ैक जाइए। बिरले कियो बाँचि पबैए। आब बुझै छी जे जहिना छबे-छबे खेत काटि लोक खेत बढ़ा लइए तहिना कौरे-कौरे खोराक बढ़बैत लोक पेट बढ़ा लइए।”

जोगी कक्काक मनक विषादकेँ रोकैत कहलयैन-

“काका, जेते अन्न-पानिमे अहाँक नाओं लिखा गेल अछि ओ तँ अहींक भागमे ने भेल।”

हमर बात सुनि जोगी कक्काक मनपर आरो बेसी विषाद चढ़ि गेलैन। बजला-

“हमर कोन दोख।”

जोगी कक्काक बात सुनि मनमे भेल जे बतीस आनासँ चौंसैठ आना अपन दोख भेल, मुदा पाशा बदलैत बाजि केना रहल छैथ जे- हमर कोन दोख! केकरो अपन केलहा भोगऽ पड़ै छै, मुदा एक तँ ओहिना डरे छाती थरथराइ छैन तैपर आरो थरथराएब उचित नहि तँए पाशा बदलैत कहलयैन-

“काका, अहिना दिनक दोख होइ छइ। अपन कोन दोख। मुदा जड़ि बात अखैन तक नइ बुझि पेलौं, से कनी जड़िएसँ एकबेर दोहरा

दियौ।”

जहिना केकरो मनक पीड़ा कियो जेते सुनैए तेते ओकर मनो हल्लुक होइ छै आ पीड़ो पीरौंछ हुअ लगै छै, तहिना जोगियो काकाकेँ भेलैन। चैनिक साँस छोड़ैत बजला-

“बौआ, एक तँ अखुनका बरियाती जनमारा भऽ गेल अछि, जे कण्ठ तक नाको-नाक खुआ दइए आ अरामक ओछाइनिक जगह बस गाड़ी धड़ा दइए।”

जोगी कक्काक बात सुनि, ओना गपक झलकीसँ घटना बुझि गेल रही, मुदा अपन बीतल अपना मुहेँ सुनऽ चाहै छेलौं, भेल जे भरिसक फेर जोगी काका बहैक रहला अछि। पाछूएसँ विचारक छोर खींचैत पुछलयैन-

“काका, आहे-माहे छोड़ू की भेल से कहियौ।”

हमर बात सुनि जोगी कक्काक छातीक धड़कन फेर जेना तेज हुअ लगलैन। मुदा छाती असथिर करैत कहऽ लगला-

“बौआ, गुण भेल जे छोटकी गाड़ी रहै, चारिये गोरे ओइमे रही। चारूकातसँ खिड़की सभ बन्न रहै, ने तँ तेते तेजीमे सड़कपर सँ पलटी मारलक जे मिनटो ने लागल, तीन पलटी मारि निच्चाँ खाधिमे खसि पड़ल।”

खाधिमे खसैक नाओं सुनि मनमे भेल जे किए ने लगले-हाथ मुँह मीठा कऽ तीतहा गप सुनि ली। सएह केलौं, पुछलयैन-

“बेसी ने तँ खेने रहिऐ?”

जहिना कम खर्चक जिनगी सुखद होइत तहिना कम खोराकियो खाधुरक लेल सुखद होइ छइ। बजला-

“जैठाम एक हजार रसगुल्ला खाइ छी तैठाम आठे साए खेने

छेलिऐ, कलेजीक गमक लगि गेल रहए, ओइपर मन दौग गेल।"

मने-मन हँसी लगि गेल। पुछलयैन-

"रसगुलाक पछाइत मौसेटा रहए आ माछ नइ!"

खुश होइत बजला-

"एह, रहबे करै! किलो पाँचेक करीब ओहो खेनहि हएब।"

❍

तिथि : 17 अप्रैल 2015, शब्द संख्या : 1527

मौसी

मुम्बइ शहरक एकटा भाड़ाक कोठरीमे असगरे बैसल गीता अपन दिन-दुनियाँक बात सोचि रहल अछि। घिरनी जकाँ रंग-बिरंगक विचार मनमे नाचि रहल छइ। आइ सात तारीख छी, पनरह तारीख तक जँ बेटाक नाओं नइ लिखा सकब तँ जिनगीक सभ मनोरथ पानिमे दहा जाएत। मुदा बँचाएबो तँ असान नहियेँ अछि। समस्याक समाधान नइ होइत देख गीताक मनमे खौंझ उठल। बुदबुदाएल-

"बलुआहा खेतक आड़ि आ गरीबक मनोरथ, ओतबेकाल तक रहै छै जेतेकाल मनमे रहै छै, सहर-जमीनपर अबिते टुटि कऽ उड़िया जाइ छै आ फेर ओहिना-क-ओहिना सहीट भऽ जाइ छइ।"

मुहसँ निकैलते गीता अपना दिस तकलक। आइ सात तारीख बीतिये रहल अछि, शेष रहल आठ दिन। मुदा काजक ओरियानो तँ असान नहियेँ अछि। तीन लाख रूपैआक ओरियान हमरा सन-सन लोक-ले असान थोड़े अछि। गीताक मन जेना सिकुड़ऽ लगलै। सिकुड़िते बकार फुटलै-

"बेटा की कहत! केते जतनसँ पढ़ि वेचारा मेडिकलमे प्रवेश करै-जोकर अपनाकेँ बनेलक, अपन कर्तव्य पूरा केलक, मुदा..?"

'मुदा' कहि वेचारी ठमैक गेलि। ठमैक ई गेलि जे ने माइये-बापक विचार भेने बेटा-बेटी डाक्टर बनि सकैए, आ ने बेटे-बेटी

अपना विचारे बनि सकैए। दुनूक संयोग भेने सम्भव अछि। माए-बाप जँ चाहबे करत आ बेटा-बेटी अपनाकेँ ओइ-जोकर नइ बना पौत, तखन सम्भवे केना भऽ सकै छै तहिना जँ बेटा-बेटी अपनाकेँ ओइ-जोकर बनाइए लेत आ माए-बापकेँ ओते सकड़ते ने हेतै, तैयो सम्भव नहियेँ अछि। फेर गीताक मन बेटापर सँ ससरैत अपन बालपनपर गेलै, मन पड़लै मौसी। मौसी मनमे अबिते हलैस गेलि। अखन मौसी पाइ-कौड़ीबाली भऽ गेल अछि, जरूर ओ मदैत करत। मनमे 'मदैत' अबिते बैशाखक दुपहरियाक टुटल गुलाब जहिना जलासिक्त होइते कनकना जाइए, तहिना मौसीक मदैतक बिसवास मनमे अबिते गीताकेँ भेल। मन पड़लै परसा धामक लक्ष्मी नारायण भगवानक दर्शन। नानियों मौसियो आ हमहूँ रहौं। तीनू गोरे मात्रिकेसँ भगवानक दर्शन करए गेल रही। आगू भऽ नानी बाजल रहए-

"रीता, जेहने बेटी तूँ, तेहने ने गीतो भेल?"

माइक बातक जवाब रीता-मौसी बिना कोनो लागि-लपटक देने रहै-

"माए, लक्ष्मी नारायण भगवानक दर्शन करैक रस्तामे छी, तोहर विचार असिरवाद भेल, जहिना तोरा-ले दुनू बेटी तहिना हमहूँ दुनू बहिना भेलौं।"

रस्ता चलनिहारकेँ केतौ पीच भेटै छै तँ केतौ सिमटीक पुल, केतौ बँसपुल्ला आकि कठपुल्ला भेटै छै तँ केतौ पजेबा उखड़ल-पसरल खरंजा, केतौ खच्चा-खुच्ची तँ केतौ ढलैयाबला नवका सड़क जहिना भेटै छै तहिना गीताक मनमे भेलै जे जे मौसी छह माससँ मोबाइलक पाइ दुआरे फोन नइ करैए, से लाख-दू लाख सम्हारि केना..? मनमे अबिते गीताक हृदए दड़ैक गेलै। दड़ैकते उठलै, माइयो आ नानियों कहने अछि जे जहिना रीताक हिस्सा- नानीक दूध- गीतो

पीने अछि तहिना गीताक हिस्सा- बहिनक दूध- रीतो पीने अछि।

रीता अपन पाँचो भाए-बहिनमे माए-बापक सभसँ छोट संन्तान आ गीता जेठ बहिनक जेठ बेटी। दुनूक बीच मात्र छह मासक दूरी। माने रीतासँ छह मास छोट गीता। रीताक संगपनाक संग-संग नाना-नानीक सिनेह सेहो गीताकेँ दस बरख धरि माए-बापसँ अलग मात्रिकेमे भेटैत रहल। दुनूकेँ संगे गामेक स्कूलमे नाउओं लिखौल गेल। गीताक नाना कहियौ आकि रीताक पिता, रीता-गीताक संग समान बेवहार करैत रहलखिन। तेतबे नइ, रीतो-गीता अपनाकेँ सखीए-बहिनपा जकाँ रहल। जहिना एक-उमेरिया पित्ती, पित्ती नै संगी भऽ जाइत तहिना ने मौसियो होइत अछि। तहूमे बच्चेसँ नाना-नानीक मुँहक असिरवाद 'नूनू-बच्चा' सभ दिन किए जे दिनमे पच्चीसो-पचास बेर जपल जाइत।

समए आगू ससरल। दस बर्खक पछाइत गीता अपन माए-बाप ऐठाम, माने अपन मूल बासपर चलि आएल।

रीताक बिआह मैट्रिक पास लड़काक संग भेल। गाम-गामक दुर्भाग्य भेल जे गौंआँ गाम छोड़लक, ओना किछु एहेन गाम जेकर भाग्य सचमुच अभाग्य भेल जइसँ दुर्दिन आएल, जइसँ गौंआँकेँ गाम छोड़ब अनिवार्य भऽ भेल, मुदा किछु एहनो गाम तँ ऐछे जइ गामक लोक बजारू देखौंसमे पड़ि, गाम छोड़ि पड़ाएल। रीताक सासुरक गाम दोसर कोटिक। गामसँ पड़ाइक नौबत नइ रहै, मुदा तैयो ममियौत भाइक संग रीताक पति- सुधीर- मुम्बइ गेल। नीक वेपारीक ड्राइवर ममियौत भाय। सुधीरोकेँ अपने वेपारी ऐठाम एजेन्टक रूपमे नोकरी लगा देलक। एक तँ ओहुना लोक बडी-गार्डक सहायतासँ चलैए, तैपर सभसँ नमहर बडी गार्ड गाड़ीक ड्राइवरे होइए, जेकरा हाथेमे विधाता जकाँ जीवन-मृत्यु रहै छै, तँए सोभाविके छै जे ओ सभसँ बेसी

बिसवासू भेल। मौकाक अवसर सुधीरकेँ भेटल। कपड़ा दोकान होउ चाहे लटखेना आकि मनिहाराक, रंग-रंगक साइयो-हजारो रंगक सौदा रहिते अछि। जहिना एक कम्पनीमे एके डिजाइनिक गाड़ी जकाँ एकेटा सौदा नइ रहैए तहिना सुधीरोकेँ भेल। फील्ड वर्क रहने एक संग अनेक रंगक कारोबार करैक मौका हाथ लगलै। जइसँ नीक आमदनी हुअ लगलै। कनीयेँ दिनक पछाइत मुम्बइएमे नीक मकान कीनि लेलक।

गीताक बिआह सेहो मैट्रिक पास लड़का-संग भेल। मुदा गाममे उजार लगल। माने गीताक सासुरक गाम धारक कटाउमे आबि गेल। जइसँ समुच्चा गामक लोककेँ पड़ाइन लगि गेल। गीताक पति-सुनील- गामसँ पड़ा कऽ मुम्बइए गेल। संयोज नीक बैसलै, प्राइवेट स्कूलमे नोकरी भेलइ। स्कूलक एहेन बेवस्था जे चौबीस घन्टाक नियमानुसार आठ घन्टा पढ़ौनीक ड्यूटी बान्हल रहइ। बान्हल दरमाहा, बान्हल जिनगी। संगमे परिवारो। भाड़ाक घरमे सुनील जीवन-निर्वाह करए लगल। एक तँ ओहुना एक राज्यमे रहने मोबाइल सस्ता रहैए, तैपर अनधुन आमदनी रीताकेँ, तँए अगुरवारे- माने अपना खर्चे- घन्टा भरि-भरि गप-सप्प करैक आदत रीता गीताकेँ लगा देलक। गपोक कमी दुनूक बीच नहियेँ। तैपर आन-राज्यक आन समाजमे गपो-सप्प केकरासँ करत। बचपनक दस बर्खक जिनगी एक संगे रीता-गीताकेँ बीतल छल तँए कृष्णा-मुट्ठीक उपासक संग नरक निवारण चतुर्दशीक उपास, दुर्गा पूजा-ले भोरमे सिंगहारक फूल बीछैक संग-संग संगे स्कूल जाएब-आएब इत्यादि-इत्यादि दुनूकेँ संगे बीतल छल। तँए गप-सप्पक क्रममे दुनूक नजैरसँ मोबाइलक खर्च उड़िया जाइ। उड़िया ई जाइ जे मोबाइलक गप-सप्प पाइयक हाथे होइए से बिसैर जाइत रहए।

एक राज्यमे दुनू रहैत। तहूमे गाड़ी-सवारीक सुविधा सेहो

अछिए। ओना आइ बीस बर्खसँ रहैत आबि रहल जिनगीमे कनी-मनी खटास तँ अबैत रहल, मुदा दालिमे देल काँच आम जकाँ घुलि-मिलि जाए।

जहिना दूटा बेटा आ एकटा बेटी रीतोकेँ, तहिना एकटा बेटा आ दूटा बेटी गीतोकेँ। ओना दुनूक सन्तानक बीच पढ़ाइ-लिखाइसँ लऽ कऽ खेनाइ-पीनाइ, कपड़ा-लत्तामे दूरी बनियेँ गेल अछि। जे नजैरपर ऐ दुआरे नै चढ़ैत रहै जे कहियो-काल एकठाम सभ बच्चा हुअए- माने काजे-उदेममे एकठाम होइ छेलए। जहिना गीताक मन बच्चाक खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ पढ़बै-लिखबैमे ओझराएल बीतैत, तहिना रीतोक बीतैत छल। ओना रहै-सहैसँ लऽ कऽ पढ़ै-लिखैक जे सुविधा रीताक बेटा-बेटीकेँ भेटैत रहै से सुविधा गीताक बेटा-बेटीकेँ नै भेटैत। मुदा विद्यालयमे सुनीलकेँ कार्यरत रहने, जहिना आन-आन बच्चाकेँ बुझै-गमैक- माने अनुभव करैक- अवसर भेटने तीनू बच्चाकेँ अपना जिनगीसँ ऊपर उठबैक दिसामे रहबे करइ।

ओना दोसरो कारण भेल, दोसर कारण ई भेल जे जरूरतसँ बेसी कमाइ सुधिरकेँ रहने रंग-बिरंगक वस्तु-जात कीनि घर सजौने रहए। एके वस्तु रंगसँ रंगर सेहो होइए आ रंगसँ बेदरंगो होइए। रंगसँ रंगर जिनगीक चढ़ाइक दिशामे होइए, मुदा रंगसँ बेदरंग लुढ़कैत जिनगीक ढलानक दिशामे होइए। सुविधा भोगी मनुखक एहेन सोभाव होइते छै जे बिनु किछु केनौं आगू बढ़ैत चली, माने जहिना ढलानपर साइकिल-गाड़ी आकि गेने अपने गुड़कैत चलैए तहिना अपनो गुड़कैत चली।

समए आगू बढ़ल। परिवारक काज बढ़ने, जेते दुनूक बीच विचार विनिमयमे मोबाइलपर बात-विचार होइ छल तइमे कमी आबिये गेल छल। जे गीताक बेटाक नामांकन समए आरो बातकेँ पतरा देलक। एक तँ गीताक बान्हल आमदनी तँए खरचो रहै, जइसँ

निसचित खर्च मोबाइलपर रहइ। तैपर सँ रीताक दूर होइत गप-सप्पक बेवहार आरो बन्न केलक। बन्न होइक एकटा सोभाविक कारण सेहो भेल। ओ ई जे ने दुनू परिवारकेँ एक रंग काज आ ने एकरंग जिनगी, तखन विचार-विनिमय हएत की? ओना आएबो-जाएब दुनूकेँ तीन सालसँ नहियेँ भेल अछि। तँए पैछला जिनगी बसियाइत-बसियाइत साढ़े बाइसे जकाँ भऽ गेल।

आइ विद्यालयसँ डेरा अबिते सुनील गीताक मन खसल देखलक। मनमे एलै अखन अपनो विद्यालयसँ एबे केलौं हेन, जाबे परिवारिक नइ बनब, माने कपड़ा-लत्ता बदैल, हाथ-पएर धोइ चाह-जलखै नइ करब, तैबीच परिवारिक चर्च नीक नहि। जँ पत्नीकेँ मन खसले छैन तँ ओकर उपाय हेतइ। जे होइ-जोकर हएत, से हएत आ जे नइ होइ-जोकर रहत से नइ हएत। अपन मनक बेथाकेँ दबैत गीता पतिकेँ चाह-पानि करा आगूमे उदास चेहरा नेने बैसल। सुनील बाजल-

“मन खसल देखै छी?”

अपन मनोरथ व्यक्त करैत गीता बाजल-

“बौआक नामांकन..?”

‘नामांकन’क पछाइत गीताक कण्ठ घेरा गेल। जे सुनील बुझि गेल। मुस्की दैत सुनील बाजल-

“पनरह तारीक तक बौआक नाओं लिखबैक समए अछि। बारह तारीककेँ लिखा देबइ।”

बदरीहन मेघ फटिते सुर्जक रोशनी जहिना चमैक उठैए तहिना गीता चमकैत बाजल-

“खर्चक ओरियान केना केलिऐ!”

सुनील-

“जे काज अनिवार्य करब अछि, ओकरा तँ करै पड़त। अखन संगी सभसँ तीन मासक करारपर लेलौं, तैबीच गामक जमीन बेच ओरियार कऽ लेब।”

पतिक बात सुनि गीता मुड़ी डोलबए लागलि। पत्नीक स्वीकृत देख सुनील बाजल-

“देखियौ, ने आब ओइ खेतकेँ जोतै-कौरैले जाएब आ ने ओते सहज रहल। एक तँ अपन अदहासँ बेसी खेत कटि कऽ धारमे चलि गेल अछि, बाँकी जे अछि ओ सुभ्यस्त जगहसँ भारी खेती भऽ गेल अछि। तँए ओकरा जँ बेचियो लइ छी ते ऐगला पीढ़ीकेँ कोनो दिक्कत नइ हएत। दिक्कत नइ होइक कारण अछि ओकर बदलैत जिनगी। आब ओ जमीन ऐ बदलैत जिनगीकेँ ठाढ़ करैक पूजी भेल। तँए एकरा जँ बदैल दोसर उपाय करै छी तँ से पूजीक नाश नै बल्कि विनिमय भेल।”

❍

तिथि : 21 अप्रैल 2015, शब्द संख्या : 1393

नटकिया गति

बेरुका समए। दरबज्जापर बैसल सुबल काका श्यामलालक बाटा-बाटी बाट दिस तकैत रहैथ। काल्हि साँझुए पहर दुनू गोरेक विचार भऽ गेल रहैन जे काल्हि बेरूपहर विचार करब जे 'गाममे हाइ स्कूल केना बनत?'

छोट-छोट सातटा गाम मिला एकटा पंचायत अछि। साए घरक वस्ती अपनो गाम अछि। ओना लोकोक विचार आ गामक शकलो-सूरत पंचायतिक आन गामसँ बेसी नीक अपन- लछमीपुर-क तँ अछिए। बेसी नीक ई जे आन-आन गाममे ने कियो स्कूल-अस्पताल बनबैले जमीन दइए आ ने बनैक तनदेहीए करैए। ओना सातो गाम घौदियाएले अछि जइसँ एके गाम जकाँ बुझि पड़ैए, मुदा वित्तीय सीमा रहने सातो सात गामक नाओंसँ सेहो जानले जाइए। एकर माने ई नइ भेल जे एहेन गाम दोसर नइए, जइमे दू-तीन-चारियो पंचायत तँ अछिए। ओना सातो गामक बीचमे लछमीपुर अछि, मुदा लछमीपुर जकाँ शकलो-सूरत तँ गामक छैहे। शकल-सूरत ई जे आन छबो गामसँ ऊँचगर जमीन रहने बारहो मास ठनकगर बुझि पड़ैए, जे आन-आन गाममे नइ छइ। तीनटा गाम ओहन अछि जइमे पोखरिये बेसी छै, आ तीनटा ओहन अछि जइमे नीचरस- माने चौरीए- जमीन बेसी छै, जइसँ दुआर-दरबज्जापर मालो-जाल कम छइ। एकर माने ई नइ

जे ओइ छबो गाममे लछमीपुरसँ बेसी किछु ने छै, डेङ्गी नाह, जाल आ टौहकी-पहटा इत्यादि तँ बेसी छैहे।

ठनकगर गाम लछमीपुर रहने बान्हो-सड़क, गाछियो-कलम आ बैसै-उठैक जगहो तँ बेसी अछिए। जहिना जगह गुने उपजा, तहिना ने उपजा गुने लोको! गाममे समाजिक किरिया-कलाप आ समाजिक संस्था समाजमे बनइ, एहेन विचारक लोक गाममे बेसी अछिए। आन-आन गाममे तेहेन-तेहेन ओझरौठ अछि जे कोनो गाम जातिक उन्मादमे फँसल अछि तँ कोनो साम्प्रदायिक ओझरौठमे। साठि बर्खक जिनगीक अपन सीमा तँइ करैत सुबल काका लंगोटिया संगी- श्यामलाल-क संग गाममे हाइ स्कूल बनै से विचार करता।

कोनो समाजिक काज दस गोरेक लाभक रहितो दस गोरेक विचारक बीच रहितो, खास विचारसँ उठैत अछि, आ विचार रूपमे बढ़बैत काज दिस बढ़बैए, जइसँ समाजिक काज होइ छइ।

ओना विचारक बान्हल सोभाव श्यामोलाल कक्काक छैन मुदा ओ बहन्तू लोक छैथ। जेम्हरे काजक गर देखलैन तेम्हरे बहैक जाइ छैथ, जइसँ समए बेठेकान भऽ जाइ छैन। जे बेठेकान बेसियो होइ छैन आ कमो होइ छैन। मुदा आइ कमे भेलैन, दसे मिनट बिलमसँ सुबल काका लग पहुँचला। देरो-सबेर काज लग पहुँचते आशा जगिते अछि। श्यामलाल काका किछु बिलमसँ पहुँचला मुदा तइले सुबल काकाकेँ कोनो मथहानि नहियेँ बुझि पड़लैन। बुझले छैन जे श्यामलालकेँ काजक ठेकान नइ रहै छैन, सभ काजकेँ लोकक जरूरी बुझि काजे बुझै छैथ, तँए रिंच-हथौरीसँ लऽ कऽ बड़का-बड़का इंजीनक गप सेहो करिते छैथ। चाह चलल। चाह पीब सुबल काका श्यामलाल काकाकेँ कहलखिन-

"श्याम, गाममे हाइ स्कूल बनत, ई तँ तँइ भऽ गेल, मुदा एकर

रूपरेखा की हएत?"

एक तँ ओहुना श्यामलाल काका बजैमे फरकोर, तैपर एकटा नव काजक रूपरेखा खिंचैक भार पैबते आरो उत्साहित होइत बजला-

"भाय साहैब, समाजिक काज छी, सबहक बाल-बच्चा पढ़त, तैसंग अपनो सबहक बच्चा तँ पढ़बे करत। तँए नीक हएत जे पहिने सातो गामक लोकक कान तक ई विचार पहुँचा दिऐ। विचार पहुँचले पछाइत ने कियो अपन विचारक संग सहजोगो करता।"

श्यामलाल कक्काक बात सुनि सुबल काका बजला-

"ई तँ बड़ बेस जे सबहक काज छी तँए सबहक सहयोगसँ सही दिशोमे आ सही ढंगोसँ चलत। तहूमे अपनो सबहक बाल-बच्चा पढ़बे करत, जइसँ अपनो काज ओहने भेल जेहेन सबहक।"

सुबल कक्काक बात सुनिते श्यामलाल काकाकेँ मन उधकलैन, रूपरेखा बनबैक विचार करैले बैसलौं अछि, जँ दोसर दिसक गप पसैर जाएत तँ काजेक गप पछुआ जाएत। जखने काज पछुआएत तखने समए ससैर गेने काज ठमैक जाएत...। बजला-

"भाय साहैब, स्कूल-ले जगह चाही, तइले पंचायतमे अपना गामसँ नीको आ असानो आन गाममे नइ हएत, तहूमे पंचायितक लोअर प्राइमरी स्कूलसँ लऽ कऽ मिडिल स्कूलो तक अछि। छोट-मोट अस्पतालो ऐछे, पंचायतो भवन ऐछे, तैसंग दसटा दोकानो-दौरी सेहो अछिए।"

मुड़ी डोलबैत सुबल काका बजला-

"हँ! से तँ अछिए।"

सुबल कक्काक सह पाबि श्यामलाल काका बजला-

"सभसँ पैघ गुण अपना गाममे ई अछि जे भदवारियोमे थाल-

खीच कम होइए, आन गामक रस्ते सभ बन्न भऽ जाइए जइसँ धिया-पुताकेँ एबो-जेबोमे दिक्कत हेतइ। जमीनक कोनो झंझटो ने अछि। बड़की पोखैरक महार ऐछे, जेहने रमणगर स्कूल हएत तेहने खेलाइले फील्डो हेतइ।"

जहिना कुशल मिस्त्रीक बनौल बक्सा खाँच-मे-खाँच मिलि सटि जाइए तहिना दुनू गोरेक विचार खाँच-मे-खाँच बैसैत गेलैन। बिच्चेमे मंगला पहुँचल। मंगलाकेँ देखते सुबल काका बैसैले कहलखिन। मुदा मंगला ठाढ़े रहल। बिच्चेमे श्यामलाल काका टोनैत पुछलखिन-

"की हाल-चाल मंगल?"

'हाल-चाल' सुनिते मंगल श्यामलाल कक्काक लगमे बैस बाजल-

"काका, अहाँकेँ नइ कहब तँ केकरा कहबै, सब दिन बाप-पित्ती जकाँ मानैत एलौं हेन आ अखनो मानै छी।"

मंगलाक भूमिका सुनि श्यामलाल काका बोहिया गेला। स्कूलबला काजक रूप-रेखा बिसैर गेला। सुबल काका बीचमे किछु बाजऽ नइ चाहैथ। केम्हरोसँ बजने एक गोरेक मनमे सोग हेबे करत। तहूमे अपना ऐठाम छी। आनठाम रहितौं तँ रस्ते-पेरेक बात कहि टारलो जा सकै छल। मुदा भोजक नव विन्यास पातपर पड़िते जहिना मन चटपटाए लगैत तहिना श्यामलाल कक्काक मन चटपटेलैन। मंगलाकेँ कहलखिन-

"पहिने एक जूम तमाकुल खुआबऽ मंगल। आ हे! तमाकुल जे बनबिहऽ से खूब रगैड़ कऽ रंगर बनबिहऽ।"

श्यामलाल कक्काक बात सुनि मंगलाक मनमे खुशी उपकल। चुनौटी निकालैत बाजल-

"काका, किछु छी तँ समरथाइक हाथ छी किने। चुटकीएसँ तेना तरहत्थीपर चुन-तमाकुलकेँ रगड़बै जे अपने रंग पकैड़ लेत।"

मने मन सुबल काका छुब्ध होइत रहैथ। की करए बैसलौं आ की भऽ रहल अछि!

तमाकुल मुहमे लइते श्यामलाल काका बजला-

“मंगल, समए-साल ठीक-ठाक चलै छह किने?”

बजला तँ ऐ खियालसँ जे सोझमतिया मंगला ऐछे, जखने कानमे पड़तै आकि ‘हँ’ कहि देत। मुदा से भेल नहि। कहलकैन-

“काका, समए-साल की ठीक-ठाक चलत। तीन मासक करारीपर बाबूसँ घर लेलौं हेन!”

ओना सुबलो कक्काक मनमे मंगलाक बात घुरियेलैन मुदा श्यामलाल कक्काक मनमे तँ घुड़छीए लगि गेलैन। घुड़छी ई लगलैन जे ओहुना देखै छी जे पिताक सम्पैत बेटाकेँ होइ छै, तैठाम ई कहैए जे तीन मासक करारीपर घर लेलौं हेन! बजला-

“की करारीपर लेलह?”

मनक पीड़ा मनसँ निकलि जखन सुननिहारक कानमे पहुँचैए तखन जे खुशी बजनिहारकेँ होइ छै, वएह खुशी मंगलाक मनमे जगल। चौअनियाँ मुस्की दैत बाजल-

“काका! दस दिन पहिने अही फागुनमे बिआह भेल। तीन बापूत[11]मे दूटा घर इन्दिरा अवासबला अछि। एकटा भैया नाओंसँ, दोसर बाबू नाओंसँ। हमर बाँकीए अछि।”

मुस्की दैत श्यामलाल काका बजला-

“आब तँ तोरो हेबे करतह?”

‘तोरो हेबे करतह’ सुनि मंगलाक मनमे खुशी तँ भेल, मुदा जहिना आशापर पानि हरेने होइए तहिना मंगलाकेँ भेल। बाजल-

[11] दुनू भाँइ आ पिता

“काका, बड़का लकड़पेँचमे पड़ि गेल छी। पुश्तैनी रहैत तँ बाबूएबला घरमे टाट लगा दूटा घर बना लैतौं, से तँ छी नइ। इन्दिरा अवासक छी, हमरा केना हएत?”

मंगलाक बात श्यामलाल काकाकेँ जँचलैन। मुड़ी डोलबैत बजला-

“अच्छा तोहूँ चिन्ता नइ करह। ब्लौक जाएब तँ तोरो भाँज लगा देबह।”

‘भाँज’ सुनि मंगला बाजल-

“काका, घरक भाँज की लगाएब, एके कट्ठाक घराड़ी तीनू बापूत मिला कऽ अछि। तइमे दू-दू डिसमिल बाँटि कऽ दुनू बापूत घर बना लेलक, आब घराड़ी कहाँ अछि जे इन्दिरा अवास भेटत!”

मंगलाक बात सुनि श्यामलाल काका तेना ओझरा गेला जे कोनो जवाबे ने फुड़लैन। समैक मांग करैत बजला-

“अखन स्कूलक काजमे लगल छी, निचेनसँ तोहर विचार करब। जखन गामक लोक छह तखन गाममे घराड़ी नइ हएत।”

श्यामलाल कक्काक भरोस देख मंगला बाजल-

“काका, अन्तिम जेठ तकक करारीपर बाबूसँ घर मंगनी केने छी से बिथुत ने होइ।”

कहि उठि कऽ विदा भेल। मंगलाक बात सुबलो कक्काक मनकेँ मथऽ लगलैन। मथऽ ई लगलैन जे तीस बरख पहिने गाममे जेकरा घराड़ी नइ छल तेकरा जमीन्दारो सबहक आ सरकारियो जमीन कट्ठा भरि-भरि बाँटि समस्याक समाधान भऽ चुकल छल। आइ खेती-पथारी, पढ़ै-लिखै आदि विभिन्न दिशामे समाज आगू बढ़ल। समाजक संग-संग समाजक काजो बढ़ल। गाममे सड़क बनल, मिडिल स्कूल

तक पढ़ाइक सुविधा भेल, पंचायत भवन बनल। अस्पतालक शाखा बनल। पानि पीबैले साइयो चापाकल, अपनो केने आ सरकारियो सुविधा भेटने गड़ल। मुदा घराड़ीक समस्या पुन: आबि गेल! नजैर उठा सुबल काका श्यामलाल काकापर देलैन। श्यामोलाल कक्काक नजैर उछटगर नै बुझि पड़लैन। बजला-

“श्याम! नटकिया गति होइले करैए।”

श्यामलाल काका पुछलखिन-

“से की?”

सुबल काका-

“जैठाम आइ स्कूलकेँ आगू बढ़बैले, अस्पतालकेँ आगू बढ़बैले आ खेती-पथारीकेँ आगू बढ़बैले शक्ति आ श्रमक जरूरत अछि, तैठाम जँ तीस बरख पहिलुके समस्या दिस बढ़ब तँ आगू की बढ़ब जे आगू बाधिते हएब किने?”

मुड़ी डोलबैत श्यामलाल काका कहलखिन-

“हँ! से तँ हएत।”

सुबल काका-

“तखन?”



तिथि : 24 अप्रैल 2015, शब्द संख्या : 1313

खाए चाहैए

आसिन मास, भिनसुरका पहर, मेघौन समए। झिहिर-झिहिर पुर्बा हवा चलैत। सुर्ज उगैक समए भेलो पछाइत रंग-रोशनक कोनो दरस नहि, मुदा करिखाएल अन्हारो नहियेँ अछि। ओस-बर्खाक सीमा परहक मास आसीन, तँए जहिना ओस कनकनाइत तहिना बर्खोक मन कनकनाइते अछि। मुदा दुनूक कनकनाएब दू रंगक अछि। एक अछि- ओसक अपन उठैत जिनगीक कनकनी, तँ दोसर अछि बर्खाक खसैत जिनगीक कानब। जइसँ जहिना दुभिक लोल चमकैत अछि तहिना गुलाबक बोल[12] चुमैक-चुमैक चकभौर लगैबते अछि।

एक तँ भरि रातिक कनैत-खिजैत बितौल समए, जइसँ जगरनासँ भकुआएल आँखि आ मिरमिराइत मन, मुदा तैयो भाषा दाय जिद्द पकैड़ घरक चौकठि लग बैस, डेढ़िया दिस देख रहल छैथ।

भिनसुरका अखबार जकाँ गामो-घरमे गामोक आ आनो गामक समाद-समाचार पसैरते अछि। ने समदियाक कमी, ने घटनाक कमी गाम-घरमे अछि।

बरतन-बासन मॉजब छोड़ि सोनमी दीदी भुलिया दादी लग जा बजली-

[12] सुगंध

"काकी, अतहतह होइए!"

भावुक कलाकार जकाँ तेहेन भावमे सोनमी दीदी बजली जे भुलिया दादी तुलसी चौरा नीपब छोड़ि दुनू कानो आ दुनू आँखियो ठाढ़ केलैन। अपरिचित-अनभुआर जकाँ भुलिया दादी पुछलखिन-

"की अतहतह होइए, सोनू?"

छोट वस्तुकेँ जहिना कलाकार नीक मुँह-कान बना पैघ कलामे बदलैत अछि तहिना सोनमी दीदी बजली-

"काकी, की कहब! ओ तँ तेना..?"

'ओ तँ तेना' कहि सोनमी दीदी मुँह बन्न करैत जेना मने-मन किछु सोचए लगली। भुलिया दादीकेँ ने गपक छीप भेटलैन आ ने जड़ि। मुदा भावक जिज्ञासा मनकेँ तेना सिहरा कऽ डोला देलकैन जे ने किछु पुछैत बनैन आ ने चुप रहल होइन। सोनमी दीदीक मन तरे-तर, भदवरिया कोसीक बाढ़िक पानि जकाँ तेना घोर-मट्ठा होइत रहैन जे ने मुहसँ बकार फुटैन आ ने...। तइ बिच्चेमे भुलिया दादी पुछलखिन-

"एना किए सोनू, जेठुआ बरखा जकाँ अदहेपर सँ बकार हरण भऽ गेलह?"

तैबीच सोनमी दीदीक मनमे सेहो, नीक जकाँ तँ नहि मुदा कनी-मनी फड़िछा गेल छेलैन। बजली-

"भाषा दाय अपन गाम-घर, देस-कोस छोड़ि जाए नइ चाहै छैथ, मुदा बड़की बहिन तेना ने चलैले जोर करै छथिन जे वेचारी भारी सङ्कटमे पड़ि गेल छैथ!"

न्यायालयमे ओकील जहिना अपन पक्षधरक विचारकेँ कसि कऽ पकैड़ न्यायालयमे वक्तव्य दैत तहिना भुलिया दादी बजली-

"बड़की बहिन तँ अपने दोसर मुलुक चलि गेल अछि किने?"

भुलिया दादीक विचारमे सोनमी दीदीकेँ जेना पुरैनिक सिरक संग बिसाँढ़ो भेटल होइन तहिना भेलैन। सह दैत बजली-

"काकी, भषो दाय अपन विचारपर अड़ल छैथ, ओ कहै छथिन जे साग-पात तोड़ि खाएब, भीख माङ्गब मुदा अपन नगरीकेँ डगरीक भाँटा नइ बनाएब।"

सोनमी दीदीक विचारसँ भुलिया दादीकेँ मनमे आरो भड़ भेटलैन। अपन टुटल जिनगीक कथा बुझिते मनमे जहिना सक्कतपन अबै छै तहिना अपन विचारकेँ आरो सक्कत बनबैत बजली-

"बुच्ची, हमरा सबहक दिन घटल, जइसँ दुरदिनक मुँह देखऽ पड़ि रहल अछि, मुदा..?"

सुदिन-कुदिनसँ ऊपर उठि भुलिया दादी बाजल छेली, मुदा सोनमी दीदी नीक जकाँ भुलिया दादीक विचारकेँ नइ बुझि पेली। चहरा-ले जहिना चिड़ैक गेल्ह अपन लोल उठबैत अछि तहिना मुँह बॉबि सोनमी दीदी भुलिया दादीकेँ पुछलखिन-

"काकी, हम तँ अहाँ आगूमे जनमल छी तँए अहाँ जकाँ सभ बात थोड़े बूझल अछि। कनी विलगा-विलगा कहियौ जे नीक जकाँ बुझि पाएब।"

अपन गुरुत्व देखैत भुलिया दादी बजली-

"बुच्ची, एक बाते नइ बुझबहक, तँए जे कहऽ चाहै छेलियऽ से तर पड़ि जाइ छह आ ऊपरसँ तोहीं एकटा आरो सबाल उठा दइ छहक।"

कहि भुलिया दादी चुप भऽ गेली। मुदा सोनमी दीदीक पियासल आँखि आँखिपर पड़िते भुलिया दादीक आँखि नीर-पानिसँ छल-छला गेलैन। बजली-

"बुच्ची, दूटा गप बुझलापर सभ बात बुझि जेबहक। तँए..?"

आगूक विचार सुनैक प्रवल जिज्ञासु- सोनमी दीदीक मन बाजि उठलि-

"काकी, बुझबैमे जे गर अहाँकेँ नीक लगए तही गरे बाजू। मुदा कहियौ सब बात।"

भुलिया दादी बजली-

"बुच्ची, कोनो भाषा-साहित्यक उदय-प्रलय केना होइ छै, ओ निर्भर करै छै ओइठामक लोकपर आ लोकक विचारक परिपक्वतापर। जेहेन जैठामक लोक रहल तैठामक वस्तु-जात, खान-पान, बात-विचार तेहेन बनल। तँए एकरा अहीठाम रहऽ दहक।"

अपना विचारे भुलिया दादी विरामक खुट्टा ठाढ़ केलैन, मुदा दुनू दिससँ सोनमी दीदी तेना डोलौलखिन जे भुलिया दादीकेँ अपन पैछले विचारपर आबऽ पड़लैन। बजली-

"बुच्ची, जे शासन जेहेन जनप्रिय रहल ओ ओहेन अपन शासनक बेवस्था बनबैए, जेहेन बेवस्था बनि शासन चलैए तेहेन ओइठामक मनुखक निर्माण होइए। जखने मनुखक निर्माण हेतै तखने ओकरामे निरमबैक शक्ति औतै। जखने निरमबैक शक्ति ओकरामे आबि जाइ छै तखने ओ अपन विचारानुसार निर्माणक प्रक्रिया शुरू करैए।"

भुलिया दादीक विचार सोनमी दीदीक मनमे अँटबे ने केलैन, जइसँ अकछाइत बजली-

"काकी, ओते खिस्सा-पिहानी नइ पसारू। मुड़कुटिये मे कहियौ।"

सोनमी दीदीक विचार सुनि भुलिया दादीकेँ मिसियो भरि ई

तामस नइ उठलैन जे हमर पेटक सभ बात सोनमी नइ बुझऽ चाहैए। उल्टे मनमे खुशीए उपैक गेलैन। बजली-

"बुच्ची, जहिना पाली भाषा राजसत्ता तक पहुँच फड़ल-फुलाएल मुदा ओ रसे-रसे केना विलीन भेल जाइए! जखन कि पाली भाषाक साहित्य, कला, संस्कृति समयानुकूल सुसम्पन्न छल! जे मृत्युक कगारपर अछि।"

भुलिया दादीक बात सुनि सोनमी दादीक मन आरो अकैछ गेलैन। बजली-

"अपन विचार करू काकी, दुनियाँ बड़ीटा छै तँए ओकर गरदैनक ढोलो आ घेघो ओहने नमहर छइ।"

सोनमी दीदीक अकछाइत मन देख भुलिया दादी मने-मन विचारली जे कोनो बात-विचार जँ सुननिहारकेँ अकछबऽ लगै तँ पाशा बदलबे नीक। तहूमे दुनियाँ छोड़ि अपन बात सोनमी बुझऽ चाहैए। बजली-

"बुच्ची, कहऽ लागल छेलियऽ जे अपना सबहक दिन घटल।"

सोनमी दीदी-

"की दिन घटल?"

भुलिया दादी-

"दिन घटब भेल, काज घटब। लोककेँ जीबैले समैक अनुकूल बनऽ पड़ै छै, अनुकूलता पबैले जिनगीक अवस्थानुकूल आवश्यकता होइ छै, जे भेला पछाइते सही दिशामे चलि पबैए।"

भुलिया दादीक बात सोनमी दीदी नीक जकाँ नहि बुझि पाबि रहल छेली, जइसँ फेर अकछा बजली-

"काकी, तेना अहाँ झाँपि-तोपि बजै छी जे नीक जकाँ बुझिये ने

पबै छी। कनी फड़िछा कऽ बजियौ।"

सोनमी दीदीक बात सुनि भुलिया दादीकेँ मनमे भेलैन जे जे बात सोनमीकेँ बुझैक मन छै भरिसक से बात छुटि गेल अछि। जँ से बात बजितौं तँ अकछाइत किए। बजली-

"बुच्ची, अपना सबहक दिन खेती-पथारीपर चलैए। खेती-पथारी जड़ि भेल। अही उपज-उपार्जनपर पेटसँ लऽ कऽ परिवारिक-समाजिक किरिया-कलाप चलैए।"

बिच्चेमे सोनमी दीदी मुड़ी डोलबैत बजली-

"हँ से तँ चलिते अछि।"

सह पैबते भुलिया दादी बजली-

"पेट-परिवारसँ समाज धरिक जे किरिया-कलाप अछि तही बीच जिनगी चलैए। आइक युगमे मशीन सभसँ बेसी उत्पादित वस्तु बनि गेल अछि, जइसँ अपना सभ बहुत दूर भऽ गेल छी। जेतबो पहिने छल- माने अन्न आ दलहन-तेलहनसँ लऽ कऽ पटुआ, रूइया, कुशियार इत्यादिक मशीन, सेहो नष्ट भऽ गेल। बढ़ैक जगह कमि गेल। जइसँ किसानी जिनगीपर भारी चोट पड़ि गेल!"

भुलिया दादीक बात सोनमी दीदीकेँ नीक लगलैन। मुदा गामक औझुका घटना- माने भाषा दायकेँ जे बड़की बहिन अपना संगे चलैले कहै छथिन- ओइपर नजैर पड़िते सोनमी दीदी बाजली-

"काकी, समाजक बीचक बात छी, नीक हएत जे दुनू गोरे संगे चलू आ भाषा दायकेँ हुनकर अपन विचार पुछि लियनु।"

सोनमी दीदीक विचार भुलिया दादीकेँ जँचलैन। बजली-

"हाथमे माटि लगल अछि, देखबे केने छेलह जे तुलसी-चौरा नीपै छेलौं, से पहिने धोइ लइ छी।"

हाथ-पएर धोइ कऽ भुलिया दादी सोनमी दीदीक संग भाषा दाय ऐठाम विदा भेली।

घरक मुहथरिपर बैस जेना भाषा दाय बहिनक बात सुनि कनिते रहली, तहिना ललौन आँखि। नोरक टघारक दाग ओहिना आँखिसँ गाल तक सुखाएल। आँगन लग पहुँचते भुलिया दादी भाषा दायकेँ पुछलखिन-

"बहिन, एना आँखि किए ललियाएल अछि?"

'ललियाएल' सुनि भाषा दाय बुझि गेली जे भरिसक राति भरिक जे कानब अछि ओ आँखि शिकाइत कऽ रहल अछि। अपनाकेँ संयमित करैत भाषा दाय बजली-

"बहीन अपना सेने चलैले कहैए से जेनाइ नीक हएत? तेहेन-तेहेन एकरा सबहक लीला छै जे उलाइए-पका कऽ खा जाएत!"

भाषा दाइक मनक बेथा सुनि सोनमी दीदी बजली-

"दीदी, अहाँ माए तुल्य छी, हम सभ बच्चा भेलौं। जहाँ धरि पार-घाट लागत तहाँ धरि सेवा तँ करबे करब, तइले केकरो बातमे किए पड़ब।"

सोनमी दीदीक बात सुनि भाषा दाय मुस्कुराइत बजली-

"अपन पूर्वजक लगौल सभ किछु छी, एकरा छोड़ि केतऽ जाएब। सबहक जीवन-मरण संगे रहत।"

❍

तिथि : 27 अप्रैल 2015, शब्द संख्या : 1223

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○


पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-06-3

3rd Edition

फलहार

जगदीश प्रसाद मण्डल



फलहार

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-07-0

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

PHALHAR
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण भाव

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ
बालुक ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
सादर समर्पित...



कथाक सत्तैर

जाम/10
गण्डा/27
हाथी आ मूस/39
मुसरी आ घोड़ा/55
फलहार/72
भोरक झगड़ा/85
कथा लेखन क्रम/95

जाम

छह मास पूर्व गुणेसर काका महाविद्यालसँ सेवा-निवृत्ति भेला पछाइत थैली नेने आबि जेठ बेटाकेँ फोनसँ कहलखिन-

“बौआ, महाविद्यालयसँ छुट्टी पाबि गेलौं, जे धएल-धरल छल सभ आनि लेलौं। अपना-ले पेंशन राखब बाँकी दुनू भाँइ आबि कऽ अपन लऽ लिअ।”

पिताक विचार सुनि सुधीर बाजल-

“बाबू, अहाँ हमरा इंजीनियर बनेलौं, तइ कर्जक अदायगी अहाँकेँ तखन ने हएत जखन हमहूँ इंजीनियर पोता सोझहामे ठाढ़ कऽ देब। एक तँ ओहिना अहाँक कर्ज ऊपरमे लादल अछि तैपर सँ धएल-उसारल सेहो हमहीं लेब, ई मन नइ मानैए। अहाँक कमाइ छी जे मन फुरए से अपन करू।”

जेठ बेटाक उत्तर सुनि गुणेसर काका अवाक् भऽ गेला। फेर मनमे भेलैन जे छोटको बेटासँ किए ने पुछि लिऐ। नम्बर लगा मोबाइलसँ कहलखिन-

“बौआ, जिनगी भरिक जे धएल-उसारल छल से थैली आनि लेलौं। अहाँ दुनू भाँइ अपन लऽ लिअ।”

इंजीनियर रणधीर जवाब देलकैन-

“बाबू, हमरा लिए जहिना अहाँ तहिना भैया छैथ, तँए दुनू गोरे पहिने विचारि लिअ। हम मानि लेब।”

रणधीरक उत्तर सुनि गुणेसर कक्काक मनमे पिनपिनी जगलैन। पिनपिनाइत बुदबुदेला-

“सभ देह छीपैए। हमरा बुते एते रूपैआ राखल हएत। घरमे राखब, चोर चोरा लेत। बैंकमे हिसाबे-बारी गड़बड़ाइत रहत। के अनेरे भरि बुढ़ाड़ी पाइयेक मगजमारीमे लागल रहत।”

मन दुनू बेटापर गेलैन। अपन कएल कृत्य आगूमे अबिते मन कलैश गेलैन। कलैश ई गेलैन जे अपने जे कमेलौं, तहीसँ परिवारकेँ ने ठाढ़ रखलौं। दूटा बेटा दुनू इंजीनियर। अपने सभ दिन समाजक बीच गाममे रहलौं, अखनो छी। कहियो केकरोसँ मुहाँ-ठुठी नइ भेल। यएह ने जे बुढ़ाड़ी केना खेपब। बुढ़ाड़ी तँ मन रोग छी। जिनगी जहिना खेपैत एलौं हेन, तहिना खेपैक ओरियान बात करैत रहब, बुढ़ाड़ीकेँ ठेलैत रहब...।

गुणेसर काका संस्कृत महाविद्यालयसँ आचार्य केला पछाइत गामसँ तीन कोस हटल संस्कृत महाविद्यालयक नोकरीसँ जिनगी शुरू केलैन। ताधैर माइयो-बाबू जीविते रहैन। पनरह-बीस बर्खक पछाइत मुइलैन।

चारि बीघा अपन जोतक संग चारि बीघा बटाइयो खेती पिता करैत आबि रहल छेलखिन। जे हुनका परोछ भेला पछाइत गुणेसर काका ओइ खेतकेँ आपस करैत अपनो खेत बटाइ लगा लेलैन। पढ़ै-लिखै दिस रूचि बेसी रहने दुनू बेटाकेँ इंजीनियरिंग तकक शिक्षा दियौलखिन।

आइ दुनू बेटा एकटा सरकारी दोसर प्राइवेट नोकरी पाबि जीवन-बसर कऽ रहल छैन। दुनू बेटाकेँ जहिना दरमाहा तहिना

उलफियो आमदनी आ जहिना नियमित ड्यूटी तहिना उलफी ड्यूटियो। काजक बोझक संग आमदनियोँक बोझ तर दुनू दबले। तँए विचारमे फुहरपन।

जही महाविद्यालयमे गुणेसर काका पढ़लैन तही महाविद्यालयमे नोकरियो भेलैन। ओना जखन गुणेसर काका गामेक स्कूलमे पढ़ैत रहैथ तखन गाछक पात जकाँ पढ़ैयो-लिखै दिस विचार डोलबे करैत रहैन। जहिना पात डोलबो बुझैत आ असथिरो रहब बुझैए, मुदा जइ गाछक छी ओइ गाछोकेँ ई बात बुझैमे थोड़े अबै छइ। एबो केना करतै, पात जकाँ गाछ थोड़े असथिरो रहैए आ डोलबो करैए। ओ तँ शील-गुणसँ भरल अछि, तँए पात जकाँ डोलबे किए करत।

आने बाल-बोध जकाँ गुणेसरो कक्काक मन उमैड़ जाइन, हमहूँ डॉक्टर बनब। तँ कहियो नाटक मण्डलीक कलाकारकेँ देख कलाकार बनैले। तहिना आनो-आन चढ़ल-बढ़ल-ले। मुदा से सभ गुणेसर काकाकेँ हाथ नै लगलैन। साधारण जिनगी जीनिहार पिता गामक स्कूल पास केला पछाइत मुँह फोड़ि गुणेसर काकाकेँ कहलकैन-

“जेतए तूँ पढ़ऽ चाहह, स्वेच्छासँ पढ़ि सकै छह मुदा अपन परिवारोक आँट-पेट देख लहक। पाँच बर्खक बीच एक-दूटा रौदी आ नइ तँ एक-दूटा दाही होइते अछि, तेकरे पुरबैत-पुरबैत बेदम रहै छी। गामपर सँ जँ आबि-जा कऽ पढ़बह, तेते सम्हैर सकै छह।”

मिडिल स्कूलसँ निकलल गुणेसर कक्काक मनमे यएह उजैहिया उठल जे आगूओ नाओं लिखा कऽ पढ़ब। गामसँ तीन कोस हटल संस्कृत विद्यालय, महाविद्यालय। संयोग बैस गेलैन। गुणेसर काका संस्कृत विद्यालयमे दाखिल भऽ गेला।

परिवारसँ लऽ कऽ विद्यालय, महाविद्यालय तक सात्विकतासँ भरल। जेहने किसान परिवार तेहने शिक्षण संस्थान। लिखै-पढ़ैक

सामग्रीक अतिरिक्त मात्र देहक वस्त्र आ पेटक भोजन दैत गुणेसर काका एके गतिये शिष्य-गुरु होइत गुरु-शिष्य बनि जिनगी जीबए लगला। ताधैर कोनो व्यसन औझुका पढ़ुआ जकाँ नहि। मुदा विद्यालयो-महाविद्यालयमे तमाकुल आ भाँगक चलैन देखैथ। परिवारोमे पिता साँझे-साँझ देहक थकान भगबैले भाँगक गोली खाइ छेलैन। संगे तमाकुलो खाइत रहथिन। ओना दुनू बाड़ी-झाड़ीक उपजा छी, तँए समस्यो नहियेँ।

मास दिन तक गुणेसर काका गुन-धुनमे पड़ल रहि गेला मुदा ई नइ सोचि पेला जे ऐ थैलीकेँ की करब। अपना बेटी नै तँए बेटी बिआहक खर्च नइ बुझल रहैन। समाजोक बेटी बिआहक काजमे कहियो अगुआइ नै केने जे तहूसँ बुझल रहितैन। घर बेटे बना नेने छेलैन। खेतोक उपजा ओते भाइये जाइ छेलैन जइसँ अन-पानिक कहियो असुविधा नै भेलैन। कपड़ा-लत्ताक खर्च सेहो नापल-जोखल रहैन। माने एकदम समटल।

स्पष्ट सोच रहैन जे जैठाम एको वस्त्रसँ काज चलि सकैए तैठाम गाहीक-गाही आकि दर्जनक-दर्जन वस्त्रक कोन खगता। अनेरे पाइकेँ दुरुपयोग करब भेल। देखा-देखी पत्नियोँ तहिना रहैन। तैपर सँ दुनू बेटो आ दुनू पुतोहुओ अपना-अपनी हथियबैले सेहो सभ मौसमक सभ कपड़ा ओते दाइए दइ छैन जे देख-देख दुनू परानीक मनमे सवुर बनले रहै छैन। ऐ जनमसँ ओइ जनम धरि केतबो धाङ्गि कऽ पहिरब तैयो ने फटत-सठत।

अखन धरि पाइक जानकारी तेना भऽ कऽ गुणेसर काका पत्नीकेँ नै कहलखिन जे अढ़ाइ लाख टाका पैछला धएल-धरल भेटल। एतबे कहने रहथिन जे नोकरी छुटि गेल मुदा जाबे जीब ताबे दरमाहा भेटैत रहत। जइपर पत्नी अह्लादित होइत कहलखिन-

“भरि दिन बोनाएल रहै छी, कखनो एतबो सोचै छिऐ जे जेकर हाथ पकैड़ घरमे रखने छी, तेकरा की भेल।”

फुलतीक बात गुणेसर काका बुझि गेला मुदा मन तँ थैलीमे घुरियाएल रहैन। उतारा देलखिन-

“अहींले भरि दिन रने-बने वौआइ छी आ तैपर सँ अहीं उपरागो दइ छी।”

पतिक बात सुनि फुलतीक मन फुला गेलैन। भकरार फूलक पत्ती जकाँ आँखि निराड़ि सूरमाक सुगंधसँ अरियातैत आँखि पतिक पावन वनमे अँटैक गेलैन जइसँ मुँहक बोलीए ठमैक गेलैन। जेकर लाभ गुणेसर काका उठौलैन। लाभ ई उठौलैन जे भने बक्-झकसँ नीक जे अपन काजक बात विचारब। मुदा से भेलैन नहि। आगूसँ पत्नीक नजैर तेना नजैरमे गड़ल रहैन जे अजगर साँप जकाँ नजैर काते ने हुअए देलकैन। मनमे उठलैन- पत्नियोँ केँ किए ने पुछि लिऐन जे पाइकेँ की करब। अखन तँ नजैरक सोझ वएह छैथ।

फेर भेलैन जे पाइक काज अपना हाथे ओ कहियो केलैन कहाँ। दोकानक काज, बजारक काज, तीर्थो-बर्थक काज, सभ दिन तँ सभठाम अपने हाथे केलौं। कहियो एको पाइ छुलैन कहाँ, तखन हुनका केना कहबैन जे पाइकेँ की करब? संयोग भेल ओही रस्ते हमहूँ जाइत रही, जखन हुनका घरक सोझे गेलौं कि मन पड़ल जे गुणेसर काका सेवा निवृत्ति भऽ गेला, तँए भेँट कऽ लिऐन।

रस्ता छोड़ि दरबज्जा दिस बढ़लौं कि देखलयैन जे दुनू बेकती आँगनमे किछु विचारि रहल छैथ। मनमे भेल से नइ तँ कनी विलैम जाइ।

मुदा से भेल नहि। डराएल खढ़िया जकाँ गुणेसर काका चारू दिस सेहो चौकन्ना होइत रहैथ। ओना हम आँखिक सूत निच्चाँ उतारि

नेने रही, तैयो अँगनेसँ देख लेलैन। बजला-

“आबह-आबह बौआ जोगू आब ते तोरा सबहक बीच एलौं, तोहीं सभ ने खोजो-खबैर लेबह आ जेना रखबह तेना रहब।”

एक-हरफी गुणेसर काकाकेँ बजैत देख बिच्चेमे रोकि कहलयैन-

“काका गोड़ लगै छी।”

अपन मनक विचार रोकि गुणेसर काका असीरवाद दैत पुछलैन-

“बौआ, सभ आनन्द छह किने?”

कहि पत्नीकेँ कहलखिन-

“जुग बदैल गेल, आब जे तकै छिऐ बदामक पनिसल्ला, गुड़क गोली आ पानिसँ अभ्यागत आकि गौंउए-घरूआक सुआगत करब, से आदैत छोड़ि दियौ। जाबे जुआन छेलौं ताबे जे मन फुरल से केलौं। आब एक उमेरपर आबि गेलौं, तँए समए देख संग चलू। पहिने चाह बनाउ। चुल्हिये लग सभ बैस गपो-सप्प करब आ चाहो पीब।”

सएह भेल। ओसारेक चुल्हिपर फुलती काकी चाहो बनबए लगली आ दुनू गोरे माने हमहूँ आ गुणेसरो काका पीढ़ियापर बैस गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलयैन-

“काका, सोल्होअना चलि एलौं आकि नाँगैर-ताँगैर लसकले अछि।”

अकचका कऽ गुणेसर काका बजला-

“से की कहलह, बौआ?”

कहलयैन-

“सेवा-निवृत्तिक पछाइत जे किछु जमा-जिगिर भेटैए, तेकर कागजे ऑफिसमे तेना ओझरा जाइ छै जे जेते भेटैए तइसँ बेसी चैले

जाइए। दौड़-बरहा तेते होइए जे सभ ठेही मेटा जाइए। यएह भेल लसकब। जेकरा ऑफिसबला सभ लुक्खीक नाँगैर जकाँ तेना सुरैर लइए जे पछाइत बुझिये ने पड़ैए जे लुक्खीक नाँगैर छी आकि...।"

नमहर साँस छोड़ैत गुणेसर काका बजला-

"से सभ सगुन नीक रहल। कौलेजक एकटा किरानी सभ काज कऽ देलैन। सेवा-निवृत्तिक तेसरे दिन सोलहन्नी फारकती पाबि चलि एलौं।"

पुछलयैन-

"केते जमा भेटल?"

'केते' सुनि गुणेसर काका सकपकेला। सकपकेला ई जे पाइ-कौड़ीक बात छी। केते राजा-महराजा माटिमे गड़ल मुदा चोरी-चपाती होइते आबि रहल अछि। तँए पाइ-कौड़ीक बात अनका लग बाजब खतरासँ खाली नइ अछि।

परिवारमे अखन धरि जे पाइक मोल, बेटासँ लऽ कऽ पत्नी धरिक रहलैन ओ गुणेसर कक्काक मनमे लगल जामकेँ किछु कम केलकैन। संग-संग अपन वृत्ति जे रहलैन ओ कहियो झूठ-फूस, लाथ-कुलाथक नै रहलैन तँए मनमे शक्ति-शिरोमणिक अंकुर रहबे करैन। बजला-

"बौआ, अढ़ाइ लाख जमा भेटल।"

कहलयैन-

"बहुत रास भेटल, भगवान बेटो तेहेन देलैन जे पाइक धार फोरबे करता।"

हमर बात सुनि जेना गुणेसर कक्काक आँखिक धारमे शुभ्रता एलैन। ओना अखन धरि अशुभ्रतो नहियेँ आएल छेलैन, मुदा ओहन

शुभ्रता एलैन जइमे फरिचपन बेसी रहैन। तहूमे पाइक धार सुनि गुणेसर काका पाइयेक धारमे भँसि गेला। भँसैत-भँसैत बजला-

"बौआ, पाइकेँ की करब से किछु फुरबे ने करैए।"

गुणेसर कक्काक बात सुनि अचम्भामे पड़ि गेलौं जे ई की कहि देलैन। पाइयेक पाछू लोक पागल भेल अछि। एको बीत जगह आकि एकोटा एहेन काज बाँकी नइ अछि, जैठाम पाइक झीका-झीकी नइ भऽ रहल अछि। तैठाम गुणेसर काका एहेन बात कहलैन जे पाइकेँ की करब!

जँ एहेन प्रश्न उठैए तेकर माने तँ यएह ने हएत जे कोनो समाजिक काजमे खर्च करए चाहै छैथ, जँ अपन बेकतीगत काज रहतैन तँ की अनका देहक नापसँ कुरता आकि पैरक नापसँ जूता कीनैक विचार करितैथ?

ओना गुणेसर कक्काक जीवन पठने-पाठनक रहलैन, जइसँ जिनगीमे मीठास आबि गेल छेलैन। मीठास ई जे कटु शब्दक जगहपर मधुआएल ओहन शब्दक प्रयोग करै छैथ जे कटुओ मधुर जकाँ बुझि पड़ैए। तैठाम हमरा सन छौड़ा-माड़ए विचारक होइन, ई केते उचित हएत? मुदा जँ पुछलैन तखन जँ किछु नहियोँ कहबैन तैयो तँ मनमे शंका हेबे करतैन। तेतबे नइ, पाइ-कौड़ीमे चुप्पी लाधब षडयंत्रो भऽ सकैए, जे खतरनाक भेल तँए...।

मुदा किछु फुरबे ने करए जे की कहिऐन। फेर मनमे भेल जे दूटा बेटो छैन, दूटा पुतोहुओ भेलैन, तैपर सँ पत्नियोँ छैन, हमरा-हिनका बीच समाजी-परिवारी सम्बन्धो अछि, तैबीच हमरो परिवारजन छैथ आ हिनको छैन। कहलयैन-

"काका, जे पाइ सेवा-निवृत्तिक पछाइत भेटल ओ तँ परिवारक भेल, तैबीच काकियो छैथ, तँए हुनकेसँ पहिने विचार किए ने लेल

जाए।"

परिवार सुनि गुणेसर कक्काक मन विचलित भऽ गेलैन, बजला-

"विचार ते अपनो सएह छल मुदा दुनू बेटा ऐ पाइसँ देह छीप लेलक।"

'बेटा देह छीप लेलकैन' सुनि छगुन्तामे पड़ि गेलौं। छगुन्ता ई जे अही पाइ दुआरे बाप-बेटामे कपर-फोरौवैलसँ लऽ कऽ केस-मोकदमाक संग अनुकम्पाक नोकरी दुआरे जहर-माहूर तक बेटा-पुतोहु दइले तैयार भऽ जाइए, आ तैठाम एहेन बात! छुब्द भऽ गेलौं।

लगले मनमे उठल जे ई तँ परोछा-परोछीक बात भेल किने। मुदा पत्नी तँ लगमे छथिन किए ने अपने मुहेँ पुछिऐन। पुछलयैन-

"काकी, काका थैली लऽ कऽ एला से की करब?"

जिनगी भरि ओहन संगी जकाँ फुलती काकी रहली जे पतिसँ कहियो परिवारक आमद-खर्चक बात नै पुछने रहैन, तैठाम थैली सुनि...।

बजली-

"थैली थैलीबलाक छिऐन आकि हमर छी। अपन थैली धरममे लगबैथ आकि कुधरममे, ई तँ ओ जानैथ जे पूजामे लगाएब आकि रण्डी नचाएब। हुनका पाछू हम वौआइले जाएब। जहिना सभ दिन पदमिनी भेल घरमे रहलौं, तहिना रहब।"

काकी बाजि कऽ चुप भऽ गेली। मुदा 'पदमिनी' सुनि हमरो मन बिहुँसल आ गुणेसरो काका ठोर पटपटबए लगला-

"भवति कमल नेत्रा...।"

जेना अपन विचारकेँ प्रश्न बना गुणेसर काकाकेँ पुछने होथि। तेहने स्थिति बनि गेल।

एक तँ ओहिना गुणेसर काका अपने बेथे बेथाएल रहैथ तैपर एकटा बेथा आरो चढ़ने मन झूकि गेलैन। एक बेर हमरा दिस तकैथ आ दोसर बेर पत्नी दिस। चकोना होइत देख कहलयैन-

"काका, अपना जीविते दुनू परानी अपन श्राद्ध ऐ पाइसँ कऽ लिअ।"

जहिना धारक मुहकेँ नवका पेट वा नवका मुँह भेटने ओम्हरे धारा तेज भऽ जाइए तहिना गुणेसर काकाकेँ भेलैन। बजला-

"बौआ, जिनगीक अन्तिम चरणमे आबि गेलौं, बहुत लोकक श्राद्ध देखलिऐ। केकरो जशो भेल, केकरो अजशो भेल, मुदा दुनूक फल की भेल से अखनो धरि नइ बुझि पेलौं हेन। तैपर तूँ तेहेन विकट बात कहि देलह जे...।"

कहि गुणेसर काका चुप भऽ गेला मुदा 'तूँ विकट बात कहि देलह' सुनि हमरो गर भेटल। पुछलयैन-

"की विकट बात, काका?"

गुणेसर काका बजला-

"बौआ, जिनगी भरि व्याकरणे आ साहिते पढ़बो केलौं आ पढ़ेबो केलौं, मुदा...।"

प्रश्नसँ हटैत गुणेसर काकाकेँ देख पुछलयैन-

"एकरा के काटत, काका?"

हमरा बातसँ गुणेसर काकाकेँ जेना सह भेटलैन तहिना आगू बढ़ैत बजला-

"बौआ, अपन श्राद्ध अपने केना करब?"

कहलयैन-

"जहिना आन-आन जे जीवितेमे भोज कऽ लइ छैथ तहिना अहूँ

अपन करब।”

वामी-दहिनी मुड़ी डोलबैत गुणेसर काका बजला-

“देखहक, जेकरा श्राद्ध बुझै छहक, ओइमे दूटा काज अछि। एकटा अछि भोज आ दोसर अछि कर्म। जे कर्म मुइला पछातिक अछि ओ जीवितमे केना हएत?”

गुणेसर कक्काक विचार बुझिये ने पाबि रहल छेलौं। गाममे केतेको गोरे अपना जीविते श्राद्धक भोज कऽ नेने छला, जे बुझल छल, तइ हिसाबसँ कहने छेलिऐन। बजलौं-

“कनी अपना बातकेँ सोझरा कऽ कहियौ।”

कहलैन-

“देखहक, श्राद्धक कर्म प्राण छुटला पछाइतसँ शुरू होइए। कियो-कियो श्रद्धा-पूर्वक नत-मस्तको होइ छैथ। मुदा प्राण निकलला पछाइत कन्ना-रोहटसँ प्रकिया प्रारम्भ भऽ जाइए। बाँस काटल जाइए, कपड़ा बजारसँ आनल जाइए, बाँसक चचरी बनौल जाइए इत्यादि...; चचरीपर उठा असमसान घाट गेला पछाइत लहास जरबैक प्रक्रिया शुरू होइए। से केना जीवितेमे हएत?”

गुणेसरे कक्काक विचारक धारमे हमहूँ बोहि गेलौं। कहलयैन-

“से केना हएत।”

गुणेसर कक्काक मन अपन विचारक सफलता देख उत्साहित होइत रहैन। कनी अँटैक बजला-

“आब लए भोजक।”

कहि फेर चुप भऽ गेला। मने-मन जेना किछु विचारए लगला तहिना बुझि पड़ल। मुदा कनियेँकाल जखन आँखि-पर-आँखि देलिऐन कि जेना किछु मन पड़लैन। बजला-

“बौआ, साहितक विद्यार्थियो रहलौं आ विद्यार्थीकेँ पढ़ेबो केलौं। से कोनो साल-दू-सालक समाजक साहित्य नै, हजारो-हजार बर्खक। सभ दिन समाजकेँ एक नजैरसँ देखैत एलौंहें, मुदा...।”

‘मुदा’ कहि गुणेसर काका चुप भऽ गेला। जेना बीचक कोनो बात बिसैर गेल होथि। टोकारा दैत कहलयैन-

“काका, एना जे मुड़ी छोपि कऽ तम्मासँ सिदहा लगाएब तखन तँ भेल।”

हमर बात गुणेसर कक्काक मनक विचारकेँ जेना खोंचारि देलकैन तहिना खोंरनी नेनहि विचार जगलैन। बजला-

“बौआ, समाजकेँ जे भोजो खुएबैन, से समाजो की समाज रहल। रंग-रंगक समाज बनि गेल अछि। ई जाति, उ जाति! ई दियाद, उ दियाद! ई टोल, उ टोल! ई गाम, उ गाम...! केते कहबह।”

जेना हमरो भक् खुजल। कहलयैन-

“हँ, से ते ठीके।”

‘ठीके’ सुनि जेना गुणेसर कक्काक विचारमे सकताहट एलैन तहिना बुझि पड़ल। बजला-

“बौआ, नाँगैर-बिनु-नाँगैरक, पूछ-बिनु-पूछक, पुछड़ी-बिनु-पुछड़ीक.., तेते रंगक ने लोक भऽ गेल अछि जेकरा समटब असाध अछि। जेकर पुछड़ी छोट तेकर दैछना नमहर! आब तोहीं कहह जे एक तँ भोज खाइमे बिहंगरा ठाढ़ करत, जे कियो कहत भत-भोज करू, तँ कियो कहत भाते ने खाएब। तैपर सँ ई कहत जे खेबो करब आ दैछनो लेब। एक गोरेकेँ दैछना देबै आ दोसर गोरेकेँ नइ देबै से मन मानत?”

कहलयैन-

“बड़ ओझरी बुझि पड़ैए, काका। तखन अपने मुहेँ बाजू जे अपन अभ्यंतर की कहैए?”

‘अपन अभ्यंतर’ सुनि गुणेसर काका ओहिना जिनगीक पोखैरमे डुमकी मारलैन जहिना कियो पोखैरक जाठि लग डुमकी लगा माटि उखारि ऊपर उठि जाठिक टोइयापर लगा अपनाकेँ धन्य बुझैए। अभ्यंतरक आत्माराम रूपमे बजला-

“बौआ, ऐ दुनियाँमे मनुखक जँ कोनो सम्पैत अछि तँ ओ छी साहित, मुदा एतबे बुझल अछि।”

कहि गुणेसर काका दुनियाँक बोनमे हेरा गेला। जहिना हजारो-लाखो रंगक नीक-सँ-नीक फल दइबला बोनक गाछ जे फलसँ लदल किए ने रहौ, मुदा अनाड़ीले ओ बोनफड़ भेल जे लोक नइ खाइए, तहिना दुनियाँक सघन बोनमे गुणेसर काका मात्र एकटा साहित्यिक बात बुझै छैथ। सेहो किताबक। समाजमे माने मनुखक बीच साहित्य कोन रूपे जोड़ल अछि वा जोड़ल जा सकैए, ई बात काका नइ बुझि पाबि रहल छैथ।

ओना व्याकरणक सन्धि-विच्छेद आ समास सेहो मनमे नचैत रहैन जे एकटा टुकड़ी करैबला आ दोसर टुकड़ीकेँ जोड़ैबला छी, मुदा तेकरा ओ व्याकरणक मात्र अंग बुझि-मानि बुझैत एला अछि। मुदा ओ तँ अक्षरक विन्यास भेल, मनुखक विन्यास तँ ओइसँ भिन्न छै, तैठाम गुणेसर काका हेरा जाइ छला।

लूटमे चरखा नफा। विचारक दुनियाँमे जँ कियो बानर जकाँ चढ़ल होथि तखन जे गाछपर चढ़ल बानर जकाँ निच्चासँ खोंचार देबै तँ नइ मनुख जकाँ तँ बानरो जकाँ तँ खबखबेबे करता...।

कहलयैन-

“काका, अहाँ कनारि असुल रहल छी?”

‘कनारि’ सुनि चकोना होइत गुणेसर काका बजला-

“से की, से किए उपराग दइ छह- बौआ?”

कहलयैन-

“काका, अहाँक विद्यालयमे हम नइ पढ़लौं तँए अहाँ अपन विद्यार्थी नै बुझि छिपबै छी।”

गुणेसर काका ठमैक गेला। आँखि उठा हमरोपर दैथ आ निच्चो खसा लथि। मने-मन सोचए लगला जे जइ विद्यार्थीकेँ पढ़ेलिऐन ओतबे ने हमर गुण लेबो केलैन आ पेबो केलैन, मुदा जे ऐसँ बाहर रहला, हुनका हम की देलिऐन आ ओ हमरा किए चिन्हता? पढ़ल-लिखल रहितो हम कोन काजमे हुनकर सहयोगी भेलिऐन? जखन सहयोगी बनबे ने केलौं, तखन सहयोगक केते आसा कएल जाए..?

...आखिर एना भेल किए? साहित्य तँ सबहक छी, सभ-ले अछि। हम साहित्यक उपदेश करैबलाक जिम्मामे छी, तखन किए ने बुझि पाबि रहल छी जे जेतबे लोक विद्यालय-महाविद्यालय देखलक तेतबे लोकक छी आ बाँकी लोकक नइ छी। तखन? जरूर केतौ साहित्य आ समाजमे खाधि अछि जइमे ई दूरी बनि गेल अछि। मुदा आब काइए की सकै छी। आब तँ ने ओ देवी रहल आ ने ओ कराह!

हारल सिपाही जकाँ गुणेसर काका बजला-

“बौआ, लोक उमेरे नइ जेठ होइए, बुधिये जेठ होइए। एकटा विचार पुछै छिअ।”

‘पुछै छिअ’ कहि गुणेसर काका चुप भऽ गेला। हमरो कोनो गरे ने लगए जे किछु पुछितिऐन। की पुछता की नइ पुछता से पेटक बात केना बुझब? जँ बाते ने बुझब तखन कहबैन की! नजैर उठा आँखिपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे मनमे किछु खुर-खुरा रहलैन हेन। नजैर निच्चाँ करिते रही कि बिच्चेमे गुणेसर काका बजला-

"बौआ, पाछू उनैट तकै छी ते बुझि पड़ैए, दुनियाँमे केतौ कियो ने अछि। पत्नीकेँ देखै छिऐन तँ बुझि पड़ैए जे सोल्होअना देह ऊपरमे खसौने छैथ। बेटा सभ सहजे देह छिप फुह खेलाइए। समाजमे केकरो कोनो एकटा बोलोसँ, उपकार नइ केलिऐ तँ किए ऐ बुढ़ाड़ीक भार अपना कपार लेत।"

गुणेसर कक्काक विचार सुनि बुझि पड़ल जे संयासीक अवस्थामे पहुँच रहला अछि। कहलयैन-

"काका, अहाँ तँ संयासीक ओइ सीढ़ीपर पहुँच गेल छी जेतए लोक दुनियाँ-ले जानो-परान दइए आ दुनियाँकेँ गरियेबो करैए जे दुनियाँ झूठ छी।"

हमर बात गुणेसर काकाकेँ नीक लगलैन। जिज्ञासु बनि बजला-

"बौआ, आब आगू की करी से कनी तोहीं कहह?"

पानिक धार निच्चाँ मुहेँ ने तेज गतिये चलैए, हवा तँ नइ छी जे जेमहर मन फुरतै तेम्हरे दौड़ो जाएत आ असथिरोसँ चलत। मनमे उठल, सभ दिन गुणेसर काका शिक्षकक रूपमे रहला, आइ अपने शिक्षकक खगता भऽ गेलैन! चेतन अवस्थामे नइ छैथ सेहो बात ने अछि। मनक आगूमे विचारक पट बन्न छैन जे खुलि नै रहलैन हेन, तँए खटखटबै तँ छैथ मुदा...!

कहलयैन-

"काका, अपने साहित्यसँ तँ जिनगी भरि सटल रहलौं, मुदा समाजसँ हटि गेल छी, यएह बीचमे...।"

हमर बात सुनि गुणेसर काका चौंकैत बजला-

"ठीके कहै छह, बौआ। सभ दिन किताबकेँ साहित्य बुझैत एलिऐ मुदा समाजे साहित्य छी।"

हलसैत-कलशैत गुणेसर काकाकेँ देख कहलयैन-

"काका, पाइकेँ अही काजमे लगा दियौ।"

विचारक धारमे गुणेसर काका बोहिते रहैथ, बजला-

"बेस कहलह, बौआ।"

पाँचम मास। गुणेसर कक्काक मन असथिरसँ मानि गेलैन जे अपन जिनगी भरिक जे धएल-धरल अछि ओ समाजक हितमे लगा देब। जइसँ पाइयोक कल्याण हएत। जँ नीक काजमे नइ लगत तँ अनेरे गलि-पचि कऽ नष्ट हएत।

पाँच मास पूर्वक गुणेसर काका आब ओ नइ रहला जे छला। खोज करैत-करैत एला, हमहूँ हुनके ऐठाम जाइले तैयार होइत रही। कहलैन-

"बौआ, आइ सभ काजक अन्तिम विचार कऽ लइक अछि।"

कहलयैन-

"लिखा-पढ़ीक काज अछि, ऐठाम असुविधा हएत।"

दुनू गोरे विदा भेलौं।

फुलती काकी पहिनेसँ चाहक ओरियान केने रहैथ। पहुँचते तीनू गोरे चाह पीलौं। चाह पीला पछाइत कहलयैन-

"काका, अपने ते सब दिन समाजकेँ एक नजरिये देखलिऐ।"

कहलैन-

"हँ।"

कहलयैन-

"गामक जन-जनक मन-मनक विचार मंचपर आबए, ऐ ढंगसँ कार्यक्रमक तैयारी हेबा चाही। बेटा सभ की कहलैन?"

हँसैत गुणेसर काका बजला-

"दुनू भाँइ कहलक हेन जे अहाँ नीक कार्यक्रमक योजना बनाउ। सात दिन पहिने हम सभ आबि जाएब।"

सोचैत-विचारैत सात दिनक कार्यक्रम बनल। गामक एक-एक जनकेँ सुनबो-ले आ बजबो-ले सभकेँ समए भेटैन। जइमे छह दिनक बारह बैसार हएत। अड़ोस-पड़ोसक जे साहित्य प्रेमी छैथ, हुनको आमंत्रित कएल जाइन। आ अन्तमे दिल्लीक डॉक्टर त्रिलोकी चरणक साहित्य पाठसँ सातम दिन समापन कएल जाए। सएह भेल।

काल्हि छह दिनक बारहो बैसार समाप्त भऽ गेल। आइ अन्तिम सातम दिन त्रिलोकी चरणक कार्यक्रम छैन। दिल्लीसँ पटना हवाइ जहाजसँ औता आ पटनासँ चरिचकिया गाड़ीसँ दू बजेक कार्यक्रममे पहुँचता।

कार्यक्रम शुरू भेल। गामसँ अड़ोस-पड़ोसक सभ साहित्य प्रेमीक जुटान रहबे करए। मंच गनगनाइत। डॉक्टर त्रिलोकी चरण पटनासँ गामक रस्ताक जाममे फँसि गेला। मोबाइलसँ बेर-बेर खबैर होइत रहए जे जाममे त्रिलोकी बाबू फँसल छैथ।

जाममे फँसल त्रिलोकी बाबू मने-मन सोचैत रहैथ जे केतौ भाषाक जाम, केतौ विचारक जाम, केतौ बेवहारक जाम अछि। समाज तँ जाममे फँसि गेल अछि। कथीक जाम छी, मनमे उठिते त्रिलोकी बाबू एक गोरेकेँ पुछलखिन-

"कथीक जाम छी?"

ओ कहलकैन-

"एकटा पाथरक मुरती उखरल जे दूधो पीबैए आ बजबो करैए। तेकरे देखैले परोपट्टाक लोक उनैट कऽ जा रहल अछि। तेकरे जाम छी।"

जहिना थोपड़ीक गड़गड़ीसँ मंच सजल तहिना थोपड़ीक गड़गड़ीसँ उसैरो गेल।

आठ बजे रातिमे डॉक्टर त्रिलोकी चरण पहुँचला। पहुँच तँ गेला मुदा एलहो बाधित भऽ गेलैन आ आपसीक सभ कार्यक्रम सेहो बाधित भऽ गेलैन।

❍

शब्द संख्या- 3355, 29 जुलाई 2015

गण्डा

तीन सालक पछाइत करिया भायसँ भेँट भेल। ओना सालमे मास दिनक खातिर एक बेर साले-साल गाम अबिते छैथ मुदा संजोग एहेन भेल जे पैछला दुनू बेर भेँट नै भऽ सकला। तेकर कारण भेल जे एक बेर रामेश्वरम् चलि गेल रही। जइमे डेढ़ मास लगल, तइ बिच्चेमे एला आ गेला, तँए नै भेँट भेल छला आ दोसर बेर सासुक ऑपरेशनमे लहेरियासरायक अस्पतालमे बझि गेल रही, तँए नै भेँट भऽ सकल छला। मुदा ऐ बेर से सभ नै भेल, गामेमे रही।

भेँट होइते करिया भायकेँ पुछलयैन-

“भाय साहैब, अण्डा सबहक की हाल-चाल अछि?”

जेना मनमे विचारले रहैन कि की, तहिना मुहसँ खसिते करिया भाय जवाब देलैन-

“की हाल-चाल रहत, सभ गण्डा भेल जाइए!”

‘सभ गण्डा भेल जाइए’ सुनि मनमे ठहकल- एना किए करिया भाय जवाब देलैन? मुदा प्रश्नोत्तर तँ संगी-साथीक बीचमे ने चलैए, ऐठाम तँ से नइ अछि। उमेरोमे करिया भाय दस साल जेठ छैथ आ सभ दिन आदरक नजैरसँ सेहो देखैत एलिऐन अछि तँए धाँइ-दे प्रश्न दोहराएब उचित नै बुझलौं। मुदा अण्डा गण्डा भेल जाइए, उत्तरो तँ

साधारण नहियेँ अछि। साधारण ई जे सोझा-सोझी विपरीत उत्तर भेल।

कियो कोनो प्रश्न ओहिना तँ नइ उठबैए। कियो गपक सहमे पड़ि सहे-सह सन्हिया उठबैए, आ कियो मन-मरदनसँ उठबैए। हमर कारण दोसर नम्बरक अछि। मनमे उठल दिल्ली सन शहरमे, जैठाम सभ कथूक सुविधा छइ। नीक स्कूल, नीक कौलेज, नीक समाज। नीक बेवस्थाक बीच लोक बास करै छैथ, जइसँ बच्चा सभकेँ नीक सुविधा भेटने नीक पढ़ाइ-लिखाइ होइते हेतैन।

अपनो नीक आमदनीबला नोकरी छैन्हे। तेहेन कम्पनीमे काज करै छैथ, माने कम्पनी मालिकक गाड़ीक ड्राइवर छैथ, जे सभ सुविधा छैन्हे। तखन एना किए उटपटाँग बात कहलैन?

पुछलयैन-

“की गण्डा कहलिऐ, भाय?”

प्रश्न सुनि करिया भाय ठमैक गेला। ठमैक ई गेला जे गारजन तँ परिवारक अपने छी। तखन बाल-बच्चा जँ बिगैड़ो गेल आकि बिगड़लो जा रहल अछि, आ अपने मुँह तकै छी, तैठाम सोल्होअना दोख पत्नीए आ बाले-बच्चाकेँ लगा अपने पल्ला झाड़ि निकैल जाएब सेहो तँ उचित नहियेँ भेल। तहूमे बाल-बच्चा बाले-बोध भेल, ओ कियाँ-ने गेल जे नीक केना हएत आकि अधले केना भेल?

ओना करिया भाय सेठक बिसवासू ड्राइवर। ड्राइवरे नै, बिसवासू समाङ्ग जकाँ सेहो। परिवारक खेबा-पीबाक वस्तु-जात सेहो करिये भाइक हथौटी होइ छैन।

ओना कारखानासँ डेराक ऑफिस धरि अनेको नोकर अछि मुदा जुग-जमाना सेहो ने किछु छी।

जेतए-केतौ सेठ वा सेठानी जाइ छैथ, ओ करिये भाइक

ड्राइवरीमे जाइ छैथ। ओना चेहरा-मोहरा एहेन छैन जे जँ ओहन गाड़ी-ड्राइवर रहए तँ बड्डी-गार्डक जरूरत नहि। दुनू काज एके गोरेसँ चलि जाइए तँए जँ एहेन नोकर डेढ़ियो दरमाहापर भेटए तैयो नफ्फे भेल।

करियो भायकेँ मनलग्गु नोकरी भाइये गेल छैन, तँए बीस-बर्खक नोकरीक जीवनमे कहियो मुहाँ-ठुठी मालिक संग नै भेलैन। बरहमसिया फल कहियौ आकि बरहमसिया तीमन-तरकारी जकाँ करियो भायकेँ बरहमसिया आमदनी छैन्हे। दरमाहाक संग-संग हाट-बजारक कारोबार केने सदिकाल किछु-ने-किछु आमदनी होइते रहै छैन।

करिया भाइक हिसाबे भौजी नइ छथिन, मुदा परिवारिक जिनगीमे कहियो कोनो बाधा उपस्थित नहियेँ होइ छैन। सुगन्ध महिला। छह-पाँच किछु ने बुझैत, मुदा भानसो-भात आ घर-अँगनाक काज करैमे जेहने सचरगर तेहने बोली-चालीमे मनकनियाँ तँ छैथे।

करिया भाय बजला-

“बौआ, चिड़ैक अण्डा जहिना गण्डा भऽ सड़ि जाइए तहिना भेल।”

जहिना पहिने करिया भाय बाजल छला जे अण्डा गण्डा भेलो जाइए आ भेलो अछि, तहिना फेर छछारीए कटैत बजला। माने जहिना जाड़क मासमे पैखाना केला पछाइत पैनछू नै कऽ पानिक डरे छछारीए काटि लइए, तहिना करिया भाय बजला। घर-परिवारक बात छी, केना अँकराएल-पथराएल कोनो बात बीचमे बाजब। जखने एकोरती करिया भाय दिस टगि कऽ बाजब तँ धिया-पुता बुझत जे पिताकेँ कानमे पाथर घोंसिया बाप-बेटाक सम्बन्ध घटबै छैथ। तहिना जँ धिये-पुते दिस टगि कऽ बाजब तँ करिया भाइक मनमे हेतैन जे

लोक अनका धिया-पुताकेँ अहिना चढ़ा-बढ़ा अनकर पानि उतारि बेइज्जत करैए।

की बाजी की नइ बाजी से किछु फुरबे ने करए। मुदा बातक जँ नइ नाँगैर पकड़ाएल तँ नइ पकड़ाएल मुदा चिड़ैक पाँखि जकाँ तँ पकड़ेबे कएल। किएक तँ अण्डासँ बच्चा होइत लोक चिड़ैयेटा कैँ देखैए। भलैँ जानवरो आकि मनुखोकेँ किएक ने होइत हौउ। फेर लगले मनमे भेल जे करियो भाय दिल्लीक चौकपर बैस कऽ चाह पीबैबला लोक छैथ, जैठाम रंग-रंगक उड़ाँत लोक सभ बैसबे करैए। हो-न-हो कहीं नल-नील जकाँ ने कोनो मंत्र बुझि गेल होथि जे पानिमे पाथर नइ डुमै छइ। फेर मनमे उठल शरीरोमे तँ चिड़ै जकाँ किछु ऐछे, जे आँखिक इशारापर उड़ि जाइए। आन जेते अंग अछि शरीरक, ओ सभ तँ अथवले अछि। अनका मुहेँ सुनत आ अनका पएरे चलत मुदा मन-चिड़ै तँ से नै अछि। ओ तँ ओइसँ हटलो अछि आ सटलो अछि। मुदा अछि तेहेन पीच्छर जे शरीरकेँ पकड़ैए ने दइ छइ। तखन करिया भायकेँ पकड़ब असानो तँ नहियेँ अछि।

फेर युक्ति फुरल। फुरल ई जे केकरो प्रतिकूल बात पुछला आकि कहलासँ ने मनमे खोंच-खरोंच लगत, जँ अनुकूल बात पुछबैन तखन किए खोंच-खरोंच लगतैन।

पुछलयैन-

“भाय, बच्चा सभकेँ नीक स्कूलमे देने छिऐन किने?”

‘नीक स्कूल’ सुनि करिया भाय ठमैक गेला। ठमैक ई गेला जे ओहन स्कूलमे दुनू भाए-बहिनकेँ देनहि छी जइमे सेठजीक धिया-पुता पढ़ै छइ। खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ पढ़ै-लिखै, रहै-सहैले सेहो। संगे टी.भी., कम्प्यूटर आ मोबाइलो देनहि छिऐ, तखन बाँकीए कथी रहल।

जेना खुशी मने कियो अधला बात बजैए तहिना करिया भाय बजला-

“बौआ सुशील, तोरासँ लाथ की, मुदा...!”

‘मुदा’ कहि आरो अस्सी मन भार मनमे लादि लेलैन। अपना घरक बात आकि धिया-पुताक बात बजैसँ किए कतिया रहल छैथ? ओना कतियाइक अवस्था तँ दुनू होइए। किछु एहनो होइए जइमे अपन भूलकेँ सुधारैक समए भेटै छै, आ किछु एहनो होइए जइमे मनक क्रोध सेहो जगै छइ। मुदा फेर भेल जे अनेरे फुलबाँस जकाँ आकि बेंत जकाँ खोंइचा केते सोहैत रहब, किए ने बातक पुछरीए पकैड़ पुछि ली। कहलयैन-

“भाय, एना जे पथराएल केरौउक फुटहा जकाँ मने-मन फुटैत रहब तइसँ हम थोड़े बुझब। गमैया लोक छी, चिक्कारी-तिक्कारी थोड़े बुझै छी।”

करिया भाइक छाती दहैल रहल छेलैन। जइसँ बकार फुटिये ने रहल छेलैन। तैपर सँ पिताक अपन दायित्वसँ खसल देख रहल छला। मुदा प्रश्नक उत्तर किछु कहि देब नै होइए। ओ तँ कोनो शिकारपर फेकल वाण जकाँ होइए। तैसंग मनमे ईहो होइत रहैन, जे धैनवाद सुशीलेकेँ दी जे वेचारा परिवारक बात बुझए चाहि रहल अछि। गामक लोक तँ चाह-बिस्कुट-पान खेलक आ कुशल-वर्ता केलक...।

पाछू घुसकैत हारल नटुआ जकाँ करिया भाय बजला-

“बौआ सुशील, अपने किरदानीक फल आइ...।”

मुड़ी छोपल तम्माक चाउर जकाँ करिया भाइक विचार सोझड़ेबे ने करैन जे केते घटबी अछि, से बुझब। मुदा किरदानी तँ बाजि गेल छला। पुछलयैन-

“की अपन किरदानी कहलिऐ, भाय?”

बेवस होइत करिया भाय मुँह खोललैन-

“सुशील, अपना जनैत कोनो अभाव दुनू बच्चाकेँ आइ धरि कहियो ने हुअ देलिऐ, मुदा...।”

फेर करिया भाय मनक बात दाबि लेलैन। मनमे भेल- की अभाव दुनू भाए-बहिनकेँ कहियो ने हुअ देलखिन आकि पुड़ेबे केलखिन, से तँ बजबे ने केला। सोझहे कहि देलैन जे कोनो अभाव दुनू भाए-बहिनकेँ कहियो ने हुअ देलिऐ। जँ अभावक पुरती करैत रहितैथ तँ भाव ने जनैमतैन, से किए ने जनमलैन, जे अभावे-अभाव भऽ गेलैन?

कहलयैन-

“भाय साहैब, परिवार कहियौ आकि मनुखकेँ कहियौ, जिनगीमे जँ कोनो काजक महत अछि तँ ओ अछि बाल-बच्चाकेँ बाल-सुर्ज जकाँ बाल-भव देब।”

हमर बात जेना करिया भायकेँ ठिकिया कऽ छातीमे लगलैन, तहिना छिलमिलाइत बजला-

“बौआ, बड़ इच्छा छल जे बाल-बच्चा पाबि जिनगीक यात्रा नीक जकाँ दुनू परानी कऽ लेब, मुदा से बुझि पड़ैए जे मनक अण्डा मनेमे गण्डा भऽ जाएत।”

करिया भाइक बात सुनि अनेको रंगक विचार मनमे उठए लगल। किए करिया भाइक आसा अखने टुटि रहल छैन, तहूमे अखन तँ जुआन-जहान सेहो छैथ आ जीबैक बाट सेहो पकड़नहि छैथ?

मुदा प्रश्न तँ जिनगीक छी जे एक धारामे बहैत आबि रहल अछि। मुदा तैयो करिया भाइक बोली तँ ओहन पीच्छराह बुझिये पड़ैए, जे अपन बात खोइले ने रहल छैथ आ हमरे अगुआबए चाहि रहला अछि।

निष्पक्ष जकाँ जखन परिवारक बात पुछबैन तखन केतबो पीच्छराह किए ने होथि, पेटक सभ विकार, बकार बनि निकलबे करतैन।

पुछलयैन-

“भाय, गामोमे रहै छी आ दिल्लीयोमे?”

आगूक बात मुहेँमे रहए कि बिच्चेमे करिया भाय धड़फड़ा कऽ बजला-

“हँ से तँ रहिते छी।”

मुदा उत्तर भरि देलैन, ने आगूक मुँह जोड़लैन आ ने पाछूक नाँगैर।

पुछलयैन-

“जखन गाममे रहै छी, तखन गाम केहेन बुझि पड़ैए?”

करिया भाय ठमैक गेला। आइ धरि कहियो करिया भाय ऐ प्रश्न दिस तकबे ने केने छला। कुच्ची चलबै काल रंगकर्मी रंगक अभावमे जँ रंग जोड़ियबए लगत तँ कुच्ची केना चलतै। तहिना करियो भायकेँ भेलैन। कोनो उत्तरे ने फुरलैन।

हमरो गर बैसल। गर ई बैसल जे भुतलग्गुकेँ जहिना भगत झोंट पकैड़ बकबैए, तेहने अनुकूल समए बुझि पड़ल।

पुछलयैन-

“भाय, जेकरा जेरक-जेर धिया-पुता रहल तेकरा कनी-मनी एनी-ओनी हएब सोभाविक छइ। जेकर कारणो केते छै, मुदा अहाँकेँ तँ दुइयेटा अछि, तखन एना किए बजै छी?”

जेना मनक बात पुछने होइयैन तहिना करिया भाय पतालक पानि जकाँ शान्त-शीतल होइत मिठौंस बोलीमे बजला-

“बौआ सुशील, अट्ठारह बर्खक बेटा जहिना अछि, कौलेजमे पढ़ैए, तहिना सोलह बर्खक बेटियो अछि, ओहो कौलेजमे पढ़ैए, मुदा...!”

कहि करिया भाइक बोल बन्न भऽ गेलैन। बोली बन्न देख मनमे भेल, यएह छी जिनगी। डारि चूकल बानरक जे गति होइए सएह तँ विचार चूकने भऽ गेलैन अछि। मुदा उपाइए की? जखन धरतीपर ठाढ़ छी, अन-पानि खाइ-पीबै छी, देखैले आँखि सुनैले कान आ भोगैले दुनियाँ ऐछे तखन कोनो-ने-कोनो रूपे तँ जिनगी चलबे करत किने। चाहे हँसैत चलए आकि कनैत चलए...।

अपन बेथाक कथा दोसर सुनि सकैए आ सुधरैक विचारो दऽ सकैए मुदा चलऽ तँ लोककेँ अपने पड़ै छइ। केकरो साती कियो खा लेत, आकि पीब लेत तइसँ दोसराक भूख-पियास थोड़े मेटेतै...।

पुछलयैन-

“भाय, दुनू बेटा-बेटीकेँ कौलेजमे पढ़बै छी, ई तँ माइए-बाप आकि परिवारे नै, ई तँ समाजो आ देशोक पैघ उपलब्धि भेल, तखन एना मिड़मिड़ा कऽ किए बजै छी?”

सीकपर राखल दहीक मटकूरमे जहिना कोनो धिया-पुता निच्चाँसँ गोला मारि फोरि दइए, जइसँ फुटल मटकूरक दही धरतीपर खसए लगैए, तहिना करिया भायकेँ भेलैन। बजला-

“बौआ, शहर-बजारक पढ़ाइक की खर्च अछि, खान-पान आ रहै-सहैमे की खर्च अछि, ओ तँ अपन बात अपने बुझै छी, तों तँ नइ बुझैत हेबह।”

गर देख कहलयैन-

“से केना बुझब?”

अपन गुरुत्वक बोध करिया भायकेँ भेलैन। मुदा छाती तँ छहोँ-छित रहैन, मुदा तैयो समैट-समैट बजला-

“बौआ, एते दिन बच्चा जानि, ओकर काज अपन दैनंदिनक काज बुझि सम्हारि दइ छेलिऐ, आब ओ नोकर जकाँ अढ़ा-अढ़ा करबए चाहैए!”

करिया भाइक बात नीक जकाँ नै बुझि पाबि रहल छेलौं, मुदा बेथाक जे धार बहि रहल छेलैन, ओकरा रोकबो उचित नै बुझि बीचमे बजैसँ परहेज केने रही। दोहरबैत बजला-

“बौआ, आब बिआह-दान करै-जोकर दुनू भेल जाइए, अपन घर-परिवार हेतइ, केना आगू चलतै, से सभ किछु ने बुझि रहल अछि आ खर्चाक अम्बोह लगा रहल अछि। एते दिनक नोकरीमे ने अपन आगूक जिनगी जीबैक विचार केलौं हेन आ ने धिये-पुते जीबैक ठौर पकैड़ रहल अछि।”

पुछलयैन-

“से केना बुझै छिऐ?”

अकासमे उड़ैत चिड़ै जकाँ करिया भाइक मनक चिड़ै छहोँ-छित भऽ गेल छेलैन।

अकासमे उड़ैत लाखो-करोड़ो-अरबो चिड़ै-चुनमुनी अपन-अपन जगह बना हँसैत-खेलैत-गबैत उड़ैत रहैए, मुदा अकासो तँ अकास छी, बिनु ओर-छोरक तँ अछिए। तैठाम सोझे अकास कहने तँ नइ हएत। जेते दूर आँखिक इजोत जाइए तइमे सभसँ ऊपर गीध स्वछन्द रूपे उड़ैत कोठली जकाँ सिरौर काटि-काटि देखबो करैए आ धरतीपर अपन चहरो भँजियबैत रहैए। हवा ओकर संवाहक रहै छै आ धरतीक गंध पत्र...।

तइसँ निच्चाँ चिल्होरि रहैए, जे गीध जकाँ ऊपर तँ नै मुदा आन

चिड़ैसँ ऊपर गीधे जकाँ अकासमे सिरौर काटि-काटि जोतबो करैए आ धरतियो देखैत रहैए।

ओना जोतैए गीधो मुदा चिल्होरिमे एते तँ गुण छइहे जे ठहकबो तँ करिते अछि। तेतबे किए गीध जकाँ थोड़े सड़ल-पाकल खाइए। ओ तँ जलभक्षी, फलभक्षी छी। सेहो ओहन जलभक्षी, जे जीवित पबैए मुइल नहि। मुदा तँए की कहबै जे एतबेटा अकास अछि। कौआ, मेना, सुग्गा, बगड़ा, चुनियाँ-मुनियाँकेँ की छोड़ि देबै? भलेँ ओ ऐ घरसँ ओइ घरक चारोपर उड़ि-उड़ि बैसबो करैए आ घर-अँगना, बाड़ी-फुलवाड़ीसँ अपन गुजरो-बसर करैत रहैए...।

करिया भाय तहिना अकाससँ धरती देख रहल छैथ। अकाससँ धरती देखते चौन्ह अबै छैन। देहमे जेना मिसियो भरि शक्ति नै बुझि पड़ै छैन। होइ छैन जेना निरबल निसहाय भऽ रहल छी। निसहाय होइत करिया भायकेँ देख हमर मन बरैस गेल। कहलयैन-

“भाय, जाबे नीक जकाँ कोनो बातकेँ नै बाजब, ताबे अनठेकानीए जँ किछु उतारा देबो करब से ठेकनगर थोड़े हएत, ओना भैयो सकैए। तँए कनी फरिछा कऽ तहे-तह जखन बजबै तखने ने किछु अँटकारो लगौल जा सकैए?”

फरिछा कऽ बाजब सुनि आकि की, करिया भाइकेँ जेना मनमे आस लगलैन। आस पैबते आस मारि मचकी झूलैत करिया भाय बजला-

“बौआ, केतबो धिया-पुता वौरु जाएत ते वौरु जाह, मुदा जाबे ऐ हाथ-मुट्ठीमे दम अछि ताबे तँ कहुना चैले लेब।”

करिया भाइक आस भरल बात सुनि अपनो मनक बिसवास बढ़ल जे भरिसक करिया भाइक जिनगी कोनो मोड़पर मुरिया कऽ घुरिया गेल छैन, तँए किछु आगू नै देख पाबि रहल छैथ। मुदा मोड़ो तँ

मोड़ छी, सोझ-मोड़ सेहो होइए आ भक-मोड़ सेहो। सोझ मोड़पर तँ पैछले रस्तासँ आगूक दिशा-बोध भऽ जाइए, मुदा भक-मोड़ तँ से नइ छी, ऐमे ऐगला रस्ता अन्हराएल रहै छइ। मुदा जिनगीक मोड़क तँ दोसरो कारण अछि, जे छिपल अछि जिनगीक उठैत आ खसैत शक्तिमे। जँ ऊपर दिस उठि रहल अछि तैयो, आ जँ निच्चाँ दिस खसि रहल अछि तैयो। मुदा अन्हारो तँ अन्हार छी, गामो-घर आ गाम-घरक खेतो-पथार, पोखैरो-झाँखैर आ नदियो-नालामे पसरल रहैए आ शहरो-बजारक गली-कुच्चीमे पसरल रहैए। एहने मोड़पर ने बुधि-विवेकक अग्नि-परीक्षा कहियौ आकि शक्ति-परीक्षा, होइए...।

अहीठाम करिया भाय वौआ रहल छैथ। आगू दिस दुनियाँक एक छोरसँ दोसर छोर तक अन्हारो-अन्हार देखै छैथ आ इजोतो-इजोत...।

अन्हार-इजोतक झल-फलीमे झलफली आबि रहल छैन, जइसँ ऐगला झलफलाइत झलफला रहल छैन।

पुछलयैन-

“भाय, हाथ-मुट्ठी की कहलिऐ?”

धारमे बहैत, जेना कोनो फुलवाड़ीक फूल टुटि-टुटि दहलाइत बढ़ैत रहैए, जे एकपर नजैर पड़िते दोसर चलि अबैए आ जैपर पहिल नजैर पड़ल छल ओ भँसि कऽ आगू बढ़ि लहैरमे झलफलए लगैए तहिना करियो भायकेँ भेलैन।

हमरा बातकेँ भँसिया करिया भाय अपन मनक बात बजैत कहलैन-

“बौआ सुशील, जिनगीक पाशा दुनू संग चलैए, एक बाजी लगबैए आ दोसर पाजी होइए।”

करिया भाइक बात सुनि मने मन्हुआ गेल। की पुछलयैन आ

की उत्तर देलैन! अपने मनमे शङ्का उठल, करिया भायकेँ बजैमे धोखा भेलैन आकि हमरा सुनैमे धोखा भेल? किछु फुरबे ने करए। मुदा पुछबो की करबैन।

जँ दोहरा कऽ पुछबैन आ कहीं जँ अपन परिवारक तामस हमरेपर झाड़ि दैथ, तखन तँ अनेरे दूध-घीक बनल दही खटाएत! खटाइत अपन जिनगीए बदैल लेत। कखनो नूनक संग चलि जाएत तँ कखनो चीनीक संग! से नहि, तँ नीक हएत जे मुहसँ किछु ने कहिऐन, खाली आँखिक इशारासँ कनी टुसकी मारि उसका दिऐन। अनेरे तँ बोमियए लगता। सएह केलौं।

..आँखि-मे-आँखि आ नजैर-मे-नजैर मिलते करिया भाय बजला-

“बौआ सुशील, बाजीए पाजी भेल आ पाजीए बाजी अही आसापर ठाढ़ छी।”

❍

शब्द संख्या- 2304, 5 अगस्त 2015

हाथी आ मूस

फागुन उतारपर आबि गेल, मुदा फगुआ अखन आठ दिन आगू अछि। कनी-मनी फगुआक लहकी लहैक रहल छै मुदा जोर नइ पकड़ने अछि। ओना आठ दिन पहिनहि शिवराति भऽ गेल, थालो-पानि छुब चलैनमे आबि गेल, मुदा जाड़क रंग अखनो सघने अछि। कहैले तँ मास दिन पहिनहि वसन्तक आगमन भऽ गेल मुदा ओ तँ वैचारिक मन-मनतरक धारे-धार बहाएल अछि ने, प्रत्यक्षमे तँ धरती ओहिना जाड़-पालासँ कँपैए, गाछ-बिरीछ ओहिना जाड़-ठाढ़सँ ठिठुरल अछि। जइसँ ने कलशेक आगमन भेल आ ने कोढ़ीए-बातीक। मुदा हवो आ रौदोमे तीखपन एने रंग बदलैक सूर-सार तँ भाइये रहल अछि। जइसँ आमोक मोजर फलैके रहल अछि आ आनो-आन लत्ता-बिरीछमे बदलैक सम्भावना सेहो भाइये रहल छइ।

रवि दिन, बारह बैज गेल छल। खेतक अपन घरमे खा-पी कऽ मूस अपन कोठी-भरली, ढक-ठेक, बखारी-मुनहैर देख चैनसँ रस्ता परहक पीपरक गाछ लग अराम करैले आबि कऽ बैसल। गाछक दोसर भागमे एकटा बोनैया हाथी सेहो बोनसँ चरौर कऽ पहिनेसँ आबि बैसल छल। एक दिस हाथी दोसर दिस मूस बैसल। ओना दुनू एक-दोसरकेँ देखबो करैत आ मने-मन गौरो रहए।

बोनैया हाथीकेँ देख मूसकेँ दया अबैत रहइ। दया ई अबैत रहै

जे वेचाराकेँ सौंसे देहे फलेरिया पकैड़ नेने छै, गाम-घरमे जँ रहैत तँ पोसिन्दा दवाइयो-दारू दइतै, मुदा रहै तँ अछि बोनमे, तखन दवाइयो के करौतै! कहू जे जँ वेचाराकेँ माथे आकि देहे-हाथ टटेतै, तँ केना कऽ माथे ससारत आकि देहे-हाथ, पटपटेबे करत किने...।

मुदा लगले मूसक मन बदैल गेलइ। बदैल ई गेलै जे सभकेँ अपन केलहा भेटै छइ। कोइ करैए आपले माएले ने बापले...।

जहिना दुनियाँमे अरबक-अरब लोक अछि तहिना कण-कणमे विरजैत अरबो-खरबो भगवानो तँ छैथे। अपना कणे आ अपना मने ने कियो भगवानक कण पकैड़ कन्हेठ-कन्हेठ जिनगीक भार उठा चलैए। आकि ओकर साती कियो आन चलतै?

सोच-विचार करैमे मूसक ब्लडपेसर तेज भऽ जाइ आकि खींझ उठि जाइ। मुदा जखने हाथीक देहक दशा देखै तँ दया आबि जाइ।

अही सोच-विचारमे मूस कखनो सिरमापर मुड़ी दऽ पड़ि रहए तँ कखनो उठि कऽ मुड़ी अलगा-अलगा हाथियो दिस देखए।

दोसर दिस हाथियो मूसेटा केँ देखए, दोसर-तेसर गाछ तर रहबे ने करइ। मुदा दृष्टि-दोष भेने हाथी अपन देह देखबे ने करए आ मूसकेँ देखै तँ बिलाइयोसँ छोट बुझि पड़इ, जइसँ होइ जे एकरासँ नमहर बिलाइ होइए से तँ आँखिक मटक-मे बिला जाइए आ ई तँ सहजे ओकरोसँ छोट अछि, बिलाएले अछि। तँए झुझुआइत रहए। झुझुएबो केना ने करैत, फल गुण गाछ आ गाछ गुण फल होइते छै किने। मनुखक फल तँ मुहेँमे ने फड़ै छइ। अही धोखामे कहियौ आकि दृष्टि-दोषे हाथी कखनो काल मूसो दिस देख लिअए आ लगले नजैरो खसा लिअए। मुदा मूसक उठी-बैसी देख हाथीक मनमे ईहो छगुन्ता लगै जे लगले सिरमापर मुड़ी रखि अरामो करए लगैए आ लगले उठि-बैस कऽ हमरो दिस देख लइए आ बजैए किछु ने! एना किए...?

ओना मूसक मन लुसफुसाइ जे जखन दुइए गोरे गाछ तर छी, तखन तेसरकेँ गप-सप्प करए बजबए जाएब आकि जे लगमे अछि तेकरेसँ ने गप-सप्प करब। जाबे गप-सप्प नइ हएत ताबे केना हाल-चाल बुझब जे हम केना जीबै छी आ ओ केना जीबैए। ने हम कोनो खुट्टा गाड़ि कऽ जीबैले एलौं हेन आ ने ओ आएल अछि, भेल तँ दू दिनक जिनगी आ ई दुनियाँ अछि, तखन जँ बुधि-विवेकी गणेश जीक वाहन रहैत एतबो नइ बुझि पएब तखन गणेशजीकेँ समाचार की सुनेबैन। हुनकर संवाहक तँ हमहीं ने छिऐन, अपन तँ तेहेन सीक-लीख छैन जे सौंसे दुनियाँकेँ पेटेमे समैट कऽ रखने छैथ, तखन कोन दोसर दुनियाँ टहलैयो-बुलैले जेता।

मुदा लगले मूसक मन आगू बढ़लै। जखन भगवान मुँह देलैन, तखन जँ ओकरा सीब कऽ राखब, सेहो केहेन हएत। हुनके गलतीसँ ने सौंसे देह बन्न रहल आ मुहकेँ खोलि कऽ रखि देलैन। तइसँ नीक ओकरो सीबिये दितैथ, किए लोक खेबे-पीबे करत आकि ओकर गुणे-सुआद बुझत।

मुदा लगले मूसक मन फेर आगू बढ़ि गेलइ। आगू बैढ़ते मन संयासी जकाँ दुनियाँपर थूक फेकैत विचारए लगल। अनेरे गप-सप्पक कोन लपौड़ीमे पड़ब, तइसँ नीक जे एक तँ ओहन गाछ-तर छीहे जेकर चिक्कन पात कमलोसँ पातर डण्टीमे सुशोभित भऽ सदिकाल बिनु हवोक पवित्र हवा पसाइर रहल अछि, तैपर गाछक छाहैर सेहो ऐछे, तखन चैनसँ अराम करैत गढ़गर नीन किए ने पीब जे अनेरे बोनैया हाथीक फेरिमे पड़ब...।

मुदा हाथीक दशा देख मूसक प्रेम तेते बढ़ि गेल रहै जे मनसँ हटबे ने करइ। उठि कऽ बैस मूस पहिने हाथीकेँ हिया कऽ देखलक, तँ बुझि पड़लै जे वेचाराकेँ कोनो ठौरे-ठेकान ने छइ। तेहेन बोनमे रहैए जे

जँ कहियो धोप-चटमे आगि लगतै, तखन आन-आन तँ देह झाड़ि पड़ा जाएत, मुदा एहेन रोगी-टट्टी केतऽ भागत। अछैते औरुदे मरत की नइ!

फेर मूसक मनक विचार बदललै। बदैलते उठलै। किछु छी तँ छी, मुदा जीबै तँ छी किने, आखिर जीबैयेले ने कियो आएल अछि। तखन किए ने अपन मोनक बात हाथीसँ बुझि ली।

ओना हाथीक नजैर सेहो मूसेपर रहइ। मूसक मन-मनतर तँ नै बुझि पबैत रहए, मुदा अनुमानसँ ई बुझि पड़ैत रहै जे हमरे देख-देख हमरे विचार करैए। नीक करैए आकि अधला करैए से तँ ओ जानए, मुदा हमहीं किए शंका करबै जे मने-मने गाइरे पढ़ैए...।

मूसकेँ सोर पाड़ि हाथी बाजल-

“हौ मूस बौआ, जखन दुइए गोरे गाछ तर छी, तहूमे पीपरक गाछ-तर, दुपहरियाक समए अछि। तेतबे नइ, जखन माघोक दुपहरिया नाच करैत रहैए, तखन ई तँ सहजे फागुनक छी, तहूमे फगुआ सिरचढ़ अछि। तँए जँ दुनू गोरे एकठाम रहितो मुँह बन्न केने चुप-चाप भेल सकदम रहब से नीक नहियेँ अछि, तोरा केहेन लगै छह?”

हाथीक बात सुनि, मूस बाजल-

“अँइ यौ बौआ भाय, अहाँसँ जेहने देह-दशा हमर छोट अछि, हाथ-पएर छोट अछि, तेहने बुइधो-अकील छोट अछि किने, तखन तँ अहाँ ने अपन विचार हमरो कहब, जइसँ अहीं जकाँ किए, अहूँसँ नमहर किए ने जे अहूँकेँ चाङुरमे लऽ उड़ैबला शदूल जकाँ अपन सीख-लीख बना लेब।”

कहि मूस सहटैत हाथीक सूढ़ लग आबि बैसल। लगमे अबिते-हाथी अपन दरबज्जा देख- मूसकेँ कहलक-

"बौआ, नीकसँ रहै छह किने?"

'नीक' सुनि मूसकेँ सुरसुरी जकाँ लागल। सुरसुरी ई लागल जे नीके नइ छी, अधला छी, से ई केना बुझलक?

मूसक मनमे जेना उड़ी-बीड़ी लागऽ लगलै। कहू जे मुनहर-बखारी, ढक-ठेक, कोठी-भरली धन-धानसँ भरल-सजल पोखरा-पाटन घर हमरा अछि, ने खाइक-कमी अछि आ ने पीबैक...। तेतबे किए, जहिना खाइले एतेटा दुनियाँ भरिक धरती अछि, तहिना ने पीबैले अहूसँ नमहर पतालक पानि अछि, घुमै-फीड़ैले तहूसँ नमहर अकास अछि। आ जेकरा एते भारी देह छै, गाछक-गाछ दिनमे खाइए, ने अपना घर बनबैक लूरि छै आ ने राशन-पानी जोड़ियबैक। तखन एना किए बाजल? मुदा लगले मूसक मन विचारसँ समझौता केलक।

बाजल-

"बौआ भाय, अखन केना दिन-राति चलैए?"

मूसक प्रश्न सुनि हाथीक मन ठमकल। ठमकल ई जे केना एकरा कहबै जे भाय, जमीन्दारी गेने बड़का मुनहरो चलि गेल। किछु छी तँ हथिसारमे रहैबला छी किने। 'टुटलो अछि तैयो नअ घरकेँ बसौत', तहूमे अखन अपना दरबज्जापर अछि, किए अपन रोब-रूआब कम करब।

बाजल-

"भाय, घीओसँ चिक्कन दिन-राति चलैए। आ अपना दिसक कहह?"

हाथीक बात सुनि मूसक जी जरऽ लगल, मने-मन सोचलक-कहू जे सौंसे देह टेटरे जकाँ बुझि पड़ै छै आ केहेन रूआब झाड़ैए!! जखन कि अपना बुते ने अपन रहैक घर बनौल हेतै आ ने खाइक

ओरियान अपना बुते कएल हेतइ। भलेँ बोनमे रहैए, कोन गाछ तर सुतैत हएत, आ बोन-झाड़क डारि तोड़ि-तोड़ि खाइत हएत, से ते ओ जानए। मुदा बीत भरिक नढ़िया जँ बैसले-बैसलमे पाछूसँ नाँगैर काटि-काटि खाए लगै तँ एकरा बुते की कएल हेतइ। फेर मनमे एलै जे दुनियाँमे कियो अपन भगवान मालिक अछि।

बाजल-

"बौआ भाय, भगवान सभकेँ नीक रखथुन। सभकेँ एके नजैरसँ देखैत रहथुन। अच्छा! भाय साहैब, ई कहू जे परिवारो अछि की असगरे छी?"

'परिवार' सुनि हाथीक मनमे भेल, ई की पुछि देलक? परिवार केकरा कहै छै..? हाथीकेँ किछु फुरबे ने करइ। फेर मनमे एलै जे पुछिनिहारेसँ ने किए पुछि लिऐ। बाजल-

"बौआ, परिवार केकरा कहै छहक?"

हाथीक बात सुनि मूसक मनमे भेल जे आइ तेहेन अकलहूथ मरदसँ पल्ला पड़ल जे के मरद हएत जे एकरा बुझाएत, 'मुरख हृदए न चेत, जँ गुरु मिलहि विरंचि सन...।'

मुदा लगले मनमे एलै, जखन दू गोरेमे बातक विवाद हएत तखन तँ यएह ने हएत जे ने अहाँक बात हम मानब आ ने हमर बात अहाँ मानू। यएह ने भेल अदहा-अदही पनचैती। यएह सोचि मूस बाजल-

"वाह! बौआ भाय, तखन ते अहाँक वंश संयासीक वंश भेल किने? मुदा हम सभ ते सभ दिन परिवारी रहलौं, बिनु परिवारे एको क्षण रहि हएत...।"

अपन विचारकेँ तर पड़ैत देख हाथी बाजल-

"बौआ, तूँ ते जुइतिक ने छोट छह मुदा जथाक मोट छह। तँए हिसाब-बारी जोड़ैमे वौआ जाइ छहक।"

अपन गुरुत्व देख मूस सहैम गेल। बाजल-

"बौआ भाय, जखन घरसँ विदा भेलौं, तखन घरनी तेहेन ने करैलाक तड़ुआ खुऔने छेली जे ओहिना ढेकार होइए।"

एक तँ हाथीकेँ 'परिवार' सुनि मन ओझराएले रहइ, तैपर दोहरौआ गीरह जकाँ 'घरनी' आबि गेने, मने घुरिया गेलइ! घुरिया ई गेलै जे दुनूमे- माने परिवार आ घरनीमे- कोन बात दोहरा कऽ बाजी। जँ से नइ बाजब तँ ई- मूस- अनेरे अपनो वौआ रहल अछि आ हमरो वौआएत। बाजल-

"बौआ! पहिलुका बात- 'परिवारक' बात बिसैर गेलहक?"

हाथीक बात सुनि मूस साकांच भेल। साकांच होइत बाजल-

"बौआ भाय, कोनो ने बिसरै छिऐ, मुदा तेना ने मनमे लट्टा-पट्टी होइत रहैए जे कखनो तरका-ऊपर चलि अबैए आ ऊपरका तर पड़ि जाइए। आगूसँ अहीं कनी मन पाड़ैत चलू।"

सह पाबि सहटैत हाथी बाजल-

"परिवार की भेल?"

मूस कहलकै-

"परिवारे ने जिनगीक सम्पैत भेल। जिनगीक सच्चाइ छी, जे एक जगहपर बसैत, एक पीढ़ीक विदाइ करैए तँ दोसर पीढ़ीकेँ सृजन करैत ठाढ़ अछि। तैसंग परिवारेमे मनुख ठाढ़ो होइए आ दुनियोँ अही परिवारक समूहो छी आ ठाढ़ो अछि।"

मूसक जवाब सुनि हाथी नमहर साँस छोड़लक। साँस छोड़िते जेना मन हल्लुक भेलइ। हल्लुक होइते मनमे उठलै- चरि-टङ्गा रहितो

मूस अपन परिवारक संग जीबैए आ...।

हाथी बाजल-

"बौआ, परिवार बनै केना छै?"

हाथीक प्रश्न सुनि मूसक मनमे भेल, कहू जे देह-दशा एहेन रखने अछि आ परिवार केना बनै छै से बुझले ने छै!

मनकेँ थीर करैत मूस बाजल-

"बौआ भाय, अहाँकेँ अपन जिराते ने बुझल अछि तँए बोनमे वौआइ छी। एकरा अहाँ अधला नइ मानबै, हमर दुनियाँ नमहर अछि, आ अहाँक दुनियाँ छोट। हम परिवारबला वंशक सभ दिन रहलौं, अखनो छी। अपने घर बनबैयो, बसबैयोक लूरि अछि आ परिवारक संग दुनियोँ देखै-सुनैक लूरि अछि।"

मूसक बात सुनि हाथी सकपका कऽ सकदम भऽ गेल। सकदम होइते दम सधाए लगलै। किछु समैक पछाइत नमहर साँस छोड़ैत बाजल-

"बौआ, परिवार केना बनै छै?"

हाथीक बात सुनि मूसक मनमे उठलै, भरिसक ई वेचारा हाथी स्कूल नइ देखने अछि, से जँ देखने रहितए तँ शुरूहेक व्याकरणमे ने पढ़ने रहैत जे घरनीए घर आ घरे परिवार। जखन से बुझनहि ने अछि तखन किए ने भूमिकामे 'घरनी' आ व्याख्यामे 'परिवार' बुझा दिऐ। तैबीच हाथियो तगेदा करैत बाजल-

"बौआ, जखन एकठाम दुनू गोरे गप-सप्प करैले बैसल छी, तैबीच जँ मुहेँ चुप कऽ लेब तखन आगूक गप-सप्प केना हएत?"

हाथीक बात सुनि मूसक मनमे भेल, जे भरिसक एकरो परिवारमे रहैक मन होइ छइ। मुदा रहत केना? छौड़ा-माड़ेक खेती

परिवार थोड़े छी। रहत बोनमे जेतए सदिकाल अपनो जाति-वेरादर आ आनो-सभसँ लड़ाइए-झगड़ा करैत रहत आ जखन केकरो ऐठाम सवारी बनि रहत तँ या तँ मरदा-मरदी दू-चारिटा रहत, नइ तँ असगरे रहत! तखन परिवार केना बनतै आ अपना परिवारमे रहत केना..?

मूसकेँ किछु फुरबे ने करइ। मुदा लगले मनक जुगतीनाथ मुकतीनाथक बाट-बिटिया सुझा देलकै। सुझिते मनमे एलै- एकर बात हमरा नइ बुझल अछि। बुझलो केना रहत। ने एक जाति आ ने एक बास, आ ने एक भोजन अछि। तहूमे तेहेन ओझराएल-पोझराएल छै जे सुढ़ियाएबो-सोझराएब भारी अछि। मुदा अपन जिनगीक तँ अनुभव अछिए। अपने जिनगीक बात किए ने कहबै। जिनगी केकरो हौउ मुदा ओहो तँ जिनगीए छी। नीक लगतै, सम्भव हेतै तँ मानि लेत, नइ हेतै तँ अपने भोगि-भोगि सीखत। मूस बाजल-

"बौआ भाय, हम सभ दू रंगक घरनीसँ घर बनबै छी जे 'परिवार' कहबैए। एकटा अछि कटबी आ दोसर अछि सौंस।"

'कटबी' आ 'सौंस' सुनि हाथी वौआ गेल। वौआएल ई जे सौंसक माने भेल पूर्ण, मासक पूरनिमा जकाँ। आ कटबीक माने भेल काटल। माने पनरह दिनक पखमे परीवसँ चतुरदसी तक। मुदा इजोरियाक परीव अन्हारे भेल आ चतुरदसी पूरनिमे।

बाजल-

"बौआ मुसाइ, कटबी आ सौंस एक केना भेल?"

हाथीक जिज्ञासा देख मूसकेँ भेल, सतो तँ सत छी। एकर माने ई नइ ने जे सतो एके छी आ एके रंगक अछि। सभ जगहपर सभ-रंग अछि। अपन सत बातसँ केना हाथीक सूढ़ि सुढ़ियाएत, तेना जँ नइ कहबै तँ बोनैया छीहे, जे अनेरे बमछल घुरैए आ जँ अधकटुआ भऽ जाएत तखन तँ आरो अनेरे बमछत!

बाजल-

"बौआ भाय, हमर वंश सभ दिन ऐ धरतीकेँ जनमभूमि मातृभमि बुझैए, ओना हमरा जातिक मातृभूमि सौंसे दुनियाँ छी, सभठाम बास अछि। मुदा अपनामे सभ कर्मभूमि बना-बना अपन कर्ममे दिन-राति लगल रहै छी।"

'सभठाम बास' सुनि हाथीक मन विचलित भऽ गेल। मनमे एलै- शहर-बजार दिससँ गाड़ी-सवारी भगा देलक, बोन-झाड़ रहै-जोकर नइ अछि, तखन आगू दिन जीब केना?

आगूक बात सुनैले हाथी कान ठाढ़ केलक। जखने कान ठाढ़ केलक आकि आँखि उठलै। आँखि उठिते बाजल-

"बौआ, तोरो ऐ दुनियाँमे हिस्सा छह?"

हाथीक बात सुनि मूसक मनमे भेल जे वेचारा कहियो अपन जनम-भूमि, मतर-भूमि आ करम-भूमि बुझबे ने केने अछि। बुझबो केना करत, करम-भूमि तँ धरम-भूमिक आगू अछि, मुदा तहूसँ पाछूक सीढ़ीपर मरम-भूमि बैसल अछि जेकरा टपने बिना केना पहुँच सकैए। मुदा मरमो-भूमि तँ मरमभूमि छी, बिना नजर-भूमि सोझ-साझ भेने केना हएत..? तँए पहिने परिवार केना बनै छै, से बुझा देब जरूरी अछि।

बाजल-

"बौआ भाय, दुनियाँ बड़ीटा छै अनेरे कोन मगजमारीक भाँजमे पड़ि डायविटीज आ ब्लडपेसर बढ़ाएब, अपन देश-दुनियाँ राज-काजसँ मतलब राखू।"

मूसक विचार हाथीकेँ नीक लगलै। बाजल-

"बौआ, पहिने कटबी आ सौंस घरनीक बात बुझा दाए। जखन

घरनीक बात बुझि जाएब तखन परिवारक बुझल जेतइ।"

मूस बाजल-

"बौआ भाय, सौंस घरनी ओ भेल जे साए बर्ख संगबे बनल, ओ भेल शती। आ कटबी ओ भेल, जे सालक कहा-बधी कऽ रहैए, धिया-पुता बाँटि लइए आ चलि जाइए। अहिना जिनगी भरि दुनू- मूस-मूसनी- अपन जिनगी बीतबैत हँसैत-खेलैत मौज-मस्तीमे जिनगी बिता लइए।"

मूसक बात सुनिते मातर हाथीक दम फुलऽ लगलै। साँस असथिर करैत बाजल-

"बौआ, जखन अपन सभ किछु छह तखन हिसारस्ती केते छह?"

मूस बाजल-

"छहअना ते रेडियो-अखबार बजैए मुदा तइसँ बेसी अछि। ई किए ने बुझै छिऐ जे खेतसँ खरिहाँन, खरिहाँनसँ आँगन, आँगनसँ कोठी-भरली, ढक-बखारी, मुनहरसँ लऽ कऽ सरकारी गोदाम धरिक बासो अछि आ हिस्सो अछि।"

मूसक बात सुनि हाथीक मन पीघैल गेलै। पिघैलते मनक पिघलैत विचार व्यक्त केलक-

"बौआ, हमरो सभकेँ केना हएत?"

हाथीक असिआस देख मूसोक मन पीघैल गेल। पिघलल विचार दैत बाजल-

"बौआ भाय, जाबे अपनेसँ जीबैक लूरि नइ सीख लेब, ताबे अहिना केतौ सवारी बनि सवार हएब तँ केतौ बोनैया कहाएब। तँए...।"

मूसक बात सुनि हाथीक मनमे उठल, लूरि केना सीखब। लूरि सीखैले तँ पहिने बुधि चाही। तइले सिखौनिहारो चाही, सीखैक जगहो चाही, तैसंग लूरिले बासो आ वस्तुओ-जातक बेगरता पड़बे करत। बुधि ने केकरो तरे-तर घोंसिया जाइ छै मुदा लूरि केना तरेतर घोंसियाएत। ओकरा घोंसियबैले तँ हाथ-पैरसँ लऽ कऽ आँखि-कान सभ साकांच रखऽ पड़त। तहूमे मूस माटि तरमे रहैए, ओना ऊपरोमे नुका कऽ रहैए। एकरा पतालक पानि तक देखल छै, मुदा हम तँ माटिपर रहैबला छी, हम केना शत बनि सतबर्खा भऽ सकै छी?

बाजल-

"बौआ, बिनु लुरिये-बुधिये साए बर्ख जे जीब से एतेटा पेट केना भरत?"

हाथीक बात सुनि मूस मने-मन हँसल। मुदा हँसीकेँ नै खोलि मसी[1]केँ खोलैत मूस बाजल-

"बौआ भाय, अहाँ चिन्ता किए करै छी, जे विधाता एहेन देह-दशा रचलैन ओ खेनाइ-पीनाइ रचब छोड़ि थोड़े देने हेता। तहूमे एक हाथक जे मुँह चीरलैन से ओहने भोजनो ने रचने हेता।"

हूँहकारी दैत हाथी सुनैत रहल मुदा मन मन्हुआ गेलै। मन्हुआ ई गेलै जे एक बीतक मूस अछि, गणेशजीक संग रहैए! शास्त्र-पुराणक सभ पेंच-पाँच जनैए! मुदा हमर वंश तँ सभ दिन राजा-रजबारसँ महंथाना धरि सवारी बनि राजो-दरबारक आ महंथानोक सिंगार बनल रहल। आब ने ओ समए रहल आ ने ओ रूतबा, तखन तँ वंशो कहुना बँचल रहए...।

मने-मन हाथी बेथासँ बेथित होइत बेथा व्यक्त करैत बाजल-

[1] रोशनाइ

"मूस बौआ, हमरा वंशसँ तोहर वंश बेसी लूरिगरो छह आ बुधिगरो, तँए साए बर्ख शतीक सेहन्ता देखै छह। मुदा हम ते लड़ाइयो-झगड़ाक मैदानमे जाइ छी ते सहीसे[2] लड़ाइ करैए आ हम दुनू दिससँ खतरामे पड़ल रहै छी। तैठाम साए बर्ख जीबैक विचार मनमे केना रोपब।"

लड़ाइ सुनि मूसकेँ जना मने-मन खींज उठलै, मुदा खिसियाएल विचारकेँ दबैत बाजल-

"बौआ भाय, जेना अहाँ रणभूमिक बात कहलौं, तइसँ की कम दुर्गम भूमि हमरो अछि। बाधो-बोन जे एकान्त रहैए, तहूठाम कोदारिसँ खुनि-खुनि जानो लइए आ धनो लुटैए।"

मूसक बात सुनि हाथी वामी-दहिनी मुड़ी डोलबैत रहए, जइसँ मूसकेँ होइ जे भरिसक हमर जिनगीक बात हाथियोक मनमे गड़ि रहल अछि। तँए धारक पुलक खुट्टा जकाँ जेते ऊपरसँ धुमसुर चलेबै तेते मजगुती औतै।

बाजल-

"बौआ भाय, जीबैले बड़ गंजन सहऽ पड़ै छै, ई तँ चर-चाँचरक बात कहलौं। घरमे, बाँसक पोरमे तारक कमानी लगा फुसला-फुसला मुसकारीमे तेना फँसा लाठीक हूरसँ कुटि-कुटि फेकैए जे जँ ओकरा फेकेने फेकैतिऐ ते फेका कऽ केतए-कहाँ चलि गेल रहितौं।"

कनीकाल चुप भऽ फेर मूस बाजल-

"भाय साहैब, हम ते पतालसँ धरती आ धरतीसँ अकास धरि रहैबला छी, मुदा अहाँ ते ऊपरमे रहैबला भेलौं, तँए अहाँकेँ अपनो ने विचारए पड़त जे शती-साधवी बनि केना जीब?"

[2] हाथी सवार

मूसक बात सुनि हाथीक मन घुमल। घुमिते बाजल-

"बौआ, एहेन देहमे शती केना बनि हएत?"

मूसकेँ जेना ठोरेपर रहै तहिना बाजल-

"बौआ भाय, जिनगीक लोक आसा करैए, भरोसे थोड़े रहैए, तँए जेतबे भरोस तेतबे...।"

मूसक बात हाथी नै बुझि पौलक। मुदा अखन धरि जेते गप-सप्प केने छल से नीक जकाँ बुझि गेल रहए। तँए मन उधुक्का मारि विचारकेँ जगौलकै। जैगते विचारसँ हाथी बाजल-

"बौआ, आसा भरोस आ आसा बिसवासकेँ कनी दोहरा कऽ बुझा दाए।"

हाथीक बात सुनि मूसकेँ हँसी लागल। मने-मन भेलै जे सोझे एतेटा देहे रखने अछि, मुदा चुट्टियो सन विचार बुझिते ने अछि। जाबे चुट्टी ओकरा मगजमे पैसि नइ कटतै ताबे ई नइ बुझत।

लगेमे चुट्टी सेहो टहलैत रहइ। ओकरा शोर पाड़ि हाथीकेँ देखबैत कहलक-

"बौआ भाय, देखियौ ऐ चुट्टीकेँ। कखनो केतौ सन्यासी जकाँ अँटकैए। जेते संगी भेटै छै सभसँ मुँह-मिलानी करैत आगू बढ़ैत अपन दुख-धंधाकेँ अपना संगे नेने चलैत, चलैत रहैए, चलैत रहैए। आ दोसर दिस अहाँ छी, जे अनके भरोसे सोल्होअना रहै छी। चुट्टियोकेँ देखै छिऐ जे अपन घर बना हमरोसँ जेरगर परिवारमे शती बनि-बनि जीबैत चलैत रहैए। आ अहाँकेँ अबूह लगैए।"

हाथीकेँ मने-मन होइत रहै जे मूस जान दइक विचार दइए आकि लइक, से केना दुइए गोरेमे बुझब? शंका जगलै।

बाजल-

"बौआ, तूँ जे कहै छह तैपर ते भरोसो कएल जा सकैए आ ना-भरोसो ने कएल जा सकैए।"

हाथीक विचार सुनि मूस महसूस केलक जे हाथियोक शंका-निर्मूल नहियेँ छै, मुदा जेते असो अछि तेतबे ने नीअसो अछि। तखन तँ जेकरा निआसकेँ आस बनबैक लूरि छै ओ आसावान भेल, जे आसावान भेल सएह ने अपन आसक-बिसवासक संग बढ़ैए। बाजल-

"भाय, दुनियाँमे केतौ किछु ने छै आ सभ किछु छइ। देह गुण आँखि जखन हेतह तखन अपनो बुझह लगबहक। मुदा तइमे तोहर दोख थोड़े छह, ओ ते गढ़निहारक भेल।"

मुस्की दैत हाथी बाजल-

"बौआ, अहिना सभ दिन एकठाम बैस दुनू गोरे गप-सप्प करैत रहब। अखन तहूँ जा आ हमहूँ जाइ छी।"

❍

शब्द संख्या- 3016, 11 अगस्त 2015

मुसरी आ घोड़ा

गिरिजानाथक पुरान घोड़सार। जहिना केहनो ईंटा, सीमटी, लोहा किए ने पड़ौ मुदा बनला पछाइत घर दिनो-दिन पुराने होइत जाइए, तेहने पुरान घोड़सार। ओइ गिरिजानाथक पुरबजक समए छेलैन जे नीक हथिसार, नीक घोड़सारक संग गाइयो-महींसिक नीक बथान छेलैन। समैयो छल, घोड़ा पोसब घरेलू पशुपलित उद्योग सेहो छल जे पोसबेटा नै, लेनो-देन चलै छल। मुदा आब तँ घोड़ा पोसबेक समए नइ रहल। गाए जकाँ ने भोजन-ले दूध दइए आ ने इंजिन गाड़ीक दौड़मे सकैए, तँए बिसरजनक बेर घोड़-जातिक जिनगीकेँ भाइये गेल अछि।

ओना ओहन पुरान गिरिजानाथक घोड़सार नहियेँ छैन जे हथिया झटकमे आकि समुद्रक हूद-हूदीमे खसि पड़त। मुदा ओहनो तँ नहियेँ छैन जेहेन पिताक चढ़ैबला घोड़ाक घोड़सार छेलैन। मालो-जाल आ घरो-घोड़सार केहनो हएत तँ नीके हएत। किछु छी तँ पशुएधन छी, चाहे दूध दिअए आकि सवारी बनए।

तीन नम्बर ईंटाक देवाल सुरखी-चूनपर जोड़ल, ऊपरसँ खढ़-बाँसक ठाठपर लोहाक चदरा, फलिगर मुँह, पूब मुहेँक रूखि जइसँ पुबरिया रौद अबैक रस्ता बनल। मुदा पछबरिया रौद पैछला खिड़कियेटा सँ अबैत। अढ़ाइ ईंटाक देवालक बीचमे जे जोड़क

सुरखी-चून रहै ओकरा काटि-काटि फेकि, मुसरी सेहो अपन घर-परिवार ओही घोड़सारक उत्तरवरिया देवालमे बना, गाम-घर छोड़ि शहरमे रहए लगल छल। माने ई जे खेत-पथार भेल गाम जइमे सेहो मूस-मुसरीक चास-बास छइहे, मुदा से नइ पहिलुका जमीन्दार परिवारक आ अखुनका रईस परिवारक घोड़सार छी। किछु छी तँ घोड़सार छी। जेहने घर तेहने भोजन।

घोड़ाकेँ खाइले जे भारक भरल अँकुरीक चँगेरा जकाँ भरल चँगेरामे दिनो दइ आ रातियो दइ, तइमे सँ घोड़ाक तेजगर साँससँ जे बदाम उड़ि-उड़ि निच्चाँमे खसै ओ घोड़ा थोड़े ओकरा बीछि-बीछि खाइ आकि ओ ओहिना रहि जाइ।

दयालु मुसरीक परिवारकेँ सहीसपर दया लगै जे वेचाराकेँ अहू झाड़ैले झाड़ू चलबए पड़तै। ओना दुनू साँझ सभ दिन चलबए पड़िते छै, मुदा अदहा-अदही उपकार भाइये जेतइ। तेते बदाम निच्चाँमे खसै-छिड़िआइ जे पाँचो तूर मुसरी परिवारकेँ भरि पोख भऽ जाइ, जइसँ किए गमैया जिनगी पसिन करत। पानिक बरतनमे सदिकाल पानि रहिते छै, खाइले बदाम भेटे जाइ छै, रहैले पक्का-मकान छइहे, तखन किए ने भरि पेट खेबो-पीबो करत आ संतोखी माइक पूजो करत, गीतो गौत आ अपन नचारी-विचारी सेहो सुनौतैन।

ओना ओ मुसरी केतेको सालसँ ऐ घरमे रहैत आबि रहल अछि मुदा कहियो पान-सातटा सँ बेसी नै रहैत। मुसरीक जिनगी छी सालमे बीसो-पचीस जँ परिवार नइ बढ़ौत तखन एतेटा दुनियाँमे जे एते जोड़-घटाउ करैक मशीन सभ कमा रहल अछि ओ के खाएत। ओइले तँ मुसरीए वंशक बेगरता अछि किने। लोहाक घर हौउ, आकि ईंटा-सिमटीक, अनका जे हौउ मुदा मुसरीक तँ बसोबास छीहे। कागजक घर हौउ आकि अन-पानिक, रहैक अनुकूल परिस्थिति तँ अछिए। तँए

जखन एतेटा दुनियाँ अछि तखन जिनगीमे दुखे कथीक? तहूमे कोनो कि हाथी-घोड़ाक वंशक छी जे सालमे गोटे वंश बढ़त कि नइ बढ़त।

जखने मुसरीक बाल-बच्चा टेल्हुक भऽ जाइ कि माए-बापकेँ ई कहि घर छोड़ि बहरा जाए-

“आगू दिन अहाँक बुढ़ाड़ीक अछि तइले जे हाथ-मुट्ठी गरमा कऽ नै राखब, तखन बुढ़ाड़ी कटत केना। तँए दुनियाँ कमाइले जाइ छी, मासे-मास ए.टी.एम.मे पाइ पठबैत रहब, जे अहाँ दुनू गोरेक-माइयो आ अहूँक- खातामे जमा होइत जाएत।”

टेल्हुक बेटा-बेटीक बात सुनि असीरवाद दैत दुनू परानी-मुसरी संगे कहैत-

“दुनियाँमे केतौ रही, हँसैत-खेलैत रही। यएह छी माता-पिताक असीरवाद।”

ई असीरवाद तँ दऽ दइ मुदा पछाइत दुनू परानी-मुसरीकेँ मन पड़ै जे अबै-जाइक असीरवाद तँ देबे ने केलिऐ। अधखड़ुआ असीरवाद पाबि टेल्हुक मुसरी घरसँ बहराए। जेतए रहए तेतइ बिआह-दान करैत बसि जाइ। बिसैर जाइ माइयो-बापकेँ आ माए-बापक देल असीरवादोकेँ।

पैछला साल गिरिजानाथ हरिहर क्षेत्रक मेलासँ घोड़ा कीनि अनने छला। डाकपर खरीद केलैन, तँए दू लाख लगलैन। ओना ओइसँ जे पहिलुका घोड़ा रहैन ओहो तेहने तड़गर रहैन। मुदा पाइबलाक सवारी साल-दू-सालपर बदलेबे करैए, तँए बदलने छला। इंजनबला सवारीक जहिना तेल-मोबिलक टंकी भरल रहैत तहिना गिरिजानाथ घोड़ोक खेनाइ-पीनाइक जोगाड़ केनहि रहैथ। एकटा नोकर- सहीस-केँ घोड़ेक सेवा-ले रखने छैथ।

दुनू साँझ सहीस घरसँ थैर धरि बहारबो करैए आ घोड़ाकेँ घरो-

बहार करैत आ खुएला-पीएला पछाइत सवारी सेहो कसैत।

घोड़ाक घर- माने घोड़सार- दिन भरि खालीए रहैत, आ रातिके घोड़ा रहने भरल रहैत। भरि दिन खाली रहने पाँचो तूर मुसरी घोड़सारमे मन भरि खेलबो-धुपबो करैत आ गीतो-नाद गबैत। ओना घरक जे मुँह-पुरुख गारजन- मुसरी- अछि ओ धिया-पुताक खेलमे शामिल नइ होइत कातमे बैस परिवारक संग माने पत्नीक संग धिया-पुताक खेल देख मने-मन खुशियो होइत आ खुशी रहैले विचारबो करैत। अपन आ अपना परिवारक तँ खुशीए-खुशी मुसरी देखैत मुदा जेकर घर छिऐ, माने घोड़ाक; ओकरा खुशी नै देख दुनू परानी मुसरीक छाती छँहों-छीत होइत रहइ। छँहों-छीत ई होइ जे एक तँ वेचारा घोड़ा भरि दिन रौद-वसात किछु नै बुझि लफरैत रहैए, दौगैत रहैए। तइपर मुहोँ सीअल रहै छै आ पएरो बान्हल। जखन खुट्टापर सँ निकलैए, तखन पैरक बान्ह खुजै छै आ मुँहक लगै छै आ घुमि कऽ जखन अबैए तखन मुँहक लगाम खुजि पैरक बान्ह लैग जाइ छइ।

जेठ मास, सुर्ज अपन सोल्होअना हिस्साक उपयोग कऽ रहला अछि। जइ डरसँ हवो गरमाएल रहैए आ पानियोँ पतलमुहाँ भेल रहैए। बर्खाक तँ बाते की, गर्भेमे रहैए। आ जाड़ तँ सहजे अमेरिकाक हिस्सामे पड़ि जाइए।

चारि बजे भोरे गिरिजानाथकेँ केतौ काजे जेबाक छेलैन। तँए सहीसकेँ रातिये खाइबेर कहि देने रहथिन जे चारि बजे भोरे जेबाक अछि।

गिरिजानाथक बात सहीस बुझि गेल जे अहिना समैक चर्च आनो दिन करिते छैथ। तँए हँ-हूँ किछु ने बाजल। हँओं-हूँ तँ तखन ने बजाएत जखन कोनो नाकर-नुकर रहत, जे परिवारोमे आकि गामोमे रहिते अछि। मुदा जइ गाममे नाकर-नुकर रहैए तहीठाम ने कोनो

काज पहाड़ बनि आगूमे अवरोध ठाढ़ करैए, जैठाम नइ रहैए वा कम रहैए तैठाम ओही हिसाबे ने किछु हेबो करैए आकि नहियोँ होइए। मुदा ऐठाम तँ जेहने बिसबासु नोकर तेहने बिसबासू घोड़ाक सवारी आ तेहने बिसबासू मलकार कहियौ आकि मालिक गिरिजानाथ।

कहलो जाइ छै-

‘गाए-गोड़क मिलान तँ ठेहुनो पानि दूहान... ।’

जहिना गिरिजानाथ चारि बजेक समए बान्हि सहीसकेँ कहने रहथिन, तहिना अपनो जिम्माक काजक जोड़-घटाउ कऽ नेने रहैथ। आन दिन आठ बजेमे उठनिहार आइ चारिये बजे घरसँ निकैल जेता, तँए हिसाबमे जोड़-घटाउ करए पड़लैन। जहिना चलैले सवारी टंच चाही, तहिना ने काज केनिहार सवारोकेँ टंच रहऽ पड़तैन। माने ई जे घरसँ निकलैसँ पहिने अपन जे बेकतीगत दैनंदिनक क्रिया अछि, ओइसँ निवृत्ति होइत अपनाकेँ रणक सिपाही जकाँ तैयार करि कऽ निकलए पड़त।

तैयारी करए गिरिजानाथ तीन बजे भोरे उठि गेला। उठिते लगले पत्नियोँ उठि कऽ पतिक तैयारीमे जुटि गेली, तहिना सवारीक तैयारीमे सहीसो तीन बजे भोरे घोड़सार खड़ैर-बड़ैर चिक्कन-चुनमुन ओइ रूपे केलक जे मालिकक पहिल सगुनियाँ जगह तँ यएह भेल। घरक भीतर घरे भेल, मुदा बहराक मुँह तँ यएह भेल।

सहीसक चहल-पहल आ पैरक आहैटसँ घोड़ोक नीन टुटि गेल। टुटिते बुझि गेल जे केतौ रणक्षेत्रमे जाए पड़त। ताबे सहीस घोड़ा आगू अँकुराएल बदाम आनि ओगारि देलक। घोड़ाक टीप-टापसँ माने पैरक दमससँ मुसरियो सभ तूर जैग गेल। कले-कुशल ओछाइनपर रहत केना। बिना उरखुरेने-तुरखुरेने दुनू परानी बुढ़िया-बुढ़बा रहि सकैए मुदा धिया-पुता, टेल-टेल्हुक केना रहत। मुदा अखन घरसँ निकलबो

केना करत। तोहूमे घोड़ाक घर छी, गाइक रहैत तँ एकटा बातो, ओकर खूर फाटल रहै छै, बीच फाटोमे जान बँचि सकै छै मुदा घोड़ाकेँ तँ टाप होइ छइ। सौंसे सरदर रहै छइ। पीचरा-पीचरा भऽ जाएब। लहासक चिन्हो-पहचीन मेटा जाएत। कोन हड्डी मरदनमा छी आ कोन मौगियाही, से तेना भऽ कऽ फेंट-फाँट भऽ जाएत जे परेखोमे नै आएत। तँए अखन घरेमे रहब नीक। मुदा खुरलुच्ची धिया-पुता मानबे ने करइ। अन्तमे तामसे पिता-मुसरी धिया-पुताकेँ कहलकै-

"अखुनका समए की अछि से बुझहै छीही?"

सभसँ छोटका जे रहै, ओ बाजल-

"हँ।"

"की बुझहै छीही?"

"अखन उत्तमचन नाचक ओ समए छी जखन थानामे केस लिखबए गेल आ बाजल- क्या कहू दरोगाजी अकिल ने देता काम, यह औरत भी लेत है उस औरत का नाम।"

मुदा ओइसँ नमहरका मुसरी जे रहै ओकरा नीक नइ लगलै। छोटकाकेँ फटकारैत बाजल-

"अखनुक बेर छी अल्हा-रूदलक ओ गीतक जइमे कहै छै- रनमे मरे दोख नइ लागे।"

धिया-पुताक घघौंज देख पिता-मुसरी बाजल-

"अनेरे तूँ सभ नाच-तमाशा ठाढ़ केने घघौंज करै छेँ, अखुनका बेर छी प्रभातीक।"

तैपर छोटकी बेटी पुछलकैन-

"प्रभाती क्या हुआ, पापा?"

पिता उत्तर देलखिन-

"मॉरनिंग साँग।"

चारि बैजते गिरिजानाथ आँगनसँ निकैल घोड़सार दिस बढ़ला। बैढ़ते देखलैन जे सहीस घोड़ाक पीठपर रंगर चद्दरिक गद्दा लगौने अछि, मुँहमे लगाम लगौने अछि। पहुँचते लगाम पकड़ा देत। मुदा बिच्चेमे गिरिजानाथक मनमे उठलैन, लोहाक बनल गाड़ी-सवारी तेज होइतो लोकेक बनौल छी, तँए लोकक काबूमे बेसी रहैए। ओना केतौ-केतौ हूसितो अछि। मुदा घोड़ा तँ से नइ छी। जीव छी, अपन सभ किछु छइ। माने आँखि छै, मुँह छै, कान छै, बुधि छइ। असथिरो रहि सकैए आ बदमाशियो कऽ सकैए। मुदा छी तँ ओहो सवारीए। लगाम पकड़ैसँ पहिने गिरिजानाथ घोड़ाकेँ प्रणाम करैत बजला-

"चलह हे संगी, कर्मभूमिमे।"

जहिना विचारक घोड़ाक संग देह दौड़ए लगैए तहिना दौड़ैले गिरिजानाथ घरसँ निकलला। घोड़ाकेँ घरसँ निकैलते घर खाली भेल। खाली होइते पाँचो तूर मुसरी अपना घरसँ निकलल। निकैलते बुढ़बा-बुढ़िया आँखि उठा बाल-बच्चा लेल भोजन ताकए लगल तँ देखलक आने दिन जकाँ बदाम छिड़ियाएल अछि। तहूमे दिन भरिक फुला कऽ अँकुराएल, पेटमे पड़िते ओंकरी दिअ लगत, माने अँकुराए लगत!

पछाइत दुनू परानी धिया-पुता दिस नजैर देलक। तीनू बच्चा तीनू दिस चौकन्ना होइत रहए। ने माइक मुँह दिस एकोटा तकैत रहए आ ने बापक मुँह दिस, जेना पेटक कोनो फिकिरे ने रहइ। हरदरे बुढ़बा मुसरी बाजल-

"बाउ, अहाँ सभ की देखै छी?"

सभसँ छोटकी बेटी कहलकैन-

"पापा, टी.भी.मे क्रिकेट देख रहा हूँ।"

छोटकी बेटीक बात सुनि, ने बाप किछु बाजल आ ने माए।

मनमे नाचए लगलै अपन कुल-खनदानक पुरुखाक इतिहास जानियेँ नइ रहल अछि आ अनका पाछू बेहाल अछि। ओकरे बाप-दादाक नामक माला बना जपैत रहह...।

पत्नी दिस ताकि नजैर निच्चाँ करैत मुसरी दोसरकेँ पुछलक-

"बाउ, अहाँ की देखै छी?"

गम्भीर होइत दोसर बच्चा मुसरीकेँ कहलकैन-

"बाबूजी, अपने जनम देने छी तँए संग मिलि दुख-सुख कटैत मृत्युक पछाइत श्रद्धापूर्वक बिसरजन केला पछाइते ने अपनाकेँ उद्धार बुझब, आकि स्वतंत्र बुझब। ई तँ नइ जे माए-बाप जनम देनिहार पालनकर्ता छैथे, तँए हमरा खगते की अछि आकि हमर खगते की छइ।"

बच्चाक बात सुनि पिताक मन जेना थीर भेलैन। थीर होइते पत्नीकेँ कहलखिन-

"माए गुन धी..?"

पतिक बात सुनिते बुढ़िया-मुसरी बजली-

"कोन पुरना-धुरना गपक खोर-चाल करै छी। अनेरे खोड़नीसँ खोंचारै छी।"

आगू बढ़ि पाँचो गोरे थैरक पाँचू भागसँ बैस बदाम बीछि-बीछि खेलक। पानि पीब बुढ़बा-मुसरी तीनू बच्चाकेँ कहलक-

"बौआ, खेला-पीला पछाइत जे कनी अराम नइ कऽ लेब, तखन पार लागत। दिनुका खेलहा राति आ रौतुके खेलहा ने दिनमे खाइ छी।"

तीनू 'बड़बढ़ियाँ' कहि आगू बढ़ि गेल। दुनू बुढ़बा-बुढ़िया घोड़ाक थैरेमे अराम करए लगल। मुदा मन चहाएले रहइ। चहाएल ई

रहै जे भरल पेटक नीन छी, जँ कहीं मोटगर होइत गेल आ तइ बिच्चेमे जँ घोड़ा आबि गेल तखन तँ अनेरे जान चलि जाएत। मुदा लगले मनमे उठलै- अपने दुनू परानी ने आँखि मूनि अराम करब, बच्चा सभ तँ जगले रहत, ओकरे किए ने चेतौनी भार दऽ दिऐ। एक तँ अराम करब भेल, तहूमे जँ छगाएले मन रहत तखन, नीने केना हएत। मीठगर नीन तँ तखन ने अबै छै, जखन मीठगर मन मीठगर भोजन केने रहल, जँ से नइ रहल तँ मीठगर नीन कहियौ आकि गढ़गर नीन, से थोड़े हएत। मुदा गाढ़ो जँ गाढ़े रहि जाए, आ प्रगाढ़ नै हुअए तखन ओइ गाढ़क महत्ते की? पति पत्नीसँ पुछलक-

"गाढ़ नीनमे नैन केना रहैए?"

पतिक बात सुनि पत्नीक मनमे भेल, जखन समिलात धियो-पुतो अछि, सामिल परिवारो अछि, तखन तँ समिलात विचारो ने हेबा चाही? तँए जँ पति आदेश केलैन जे 'गाढ़ नीनमे नैन केना रहैए।' तँ बड़बढ़ियाँ केलैन। अपन हक-हिस्साक उपयोग केलैन। मुदा हमहूँ किछु निवेदित नइ करयैन, तखन दुनूक बीच मन-मिलन केना हएत? जँ मन-बुधिसँ भेँट नै हएत तखन बुधि-मनक मिलाने केना हएत? आ जखन बुधिये-मनक मिलान नइ हएत तखन दुनूक बीच मेल-मिलाप केना हएत? जखन दुनूमे मेले-मिलाप नइ हएत तखन एक-दोसरक बीच विलाप केना हएत? आ जँ विलापे नइ तँ संगे चलबे ने करब आ जखन संगे चलबे ने करब, तखन दुनू संगबे केना हएब? सीता जकाँ एक गोरे रावणक पुष्प वाटिकामे रहब आ दोसर बोने-बोन वौआइत-वौड़ाइत केतौ रत्नाकर सन मुनि आश्रम पहुँचत तँ केतौ सबरीक आश्रम, तैसंग केतौ तीर-धनुषक संग शिकारी बनत तँ केतौ मेघनादक गर्जन-मर्जनक शिकार सेहो बनबे करत किने?

ओना एक-दोसरक प्रश्न सुनि दुनू परानी मुसरी मने-मन तेना

उत्तर ताकऽ लगल जे चेतसँ चेतन बनए लगल मुदा चिन्तनक क्षण जहिना आँखिक दुनू पट-पटा आँखिकेँ बन्न कऽ दैत अछि, तहिना दुनूक आँखिक पीपनी एक-दोसरमे सटि कऽ ओझरा गेल, जइसँ बाहरी दुनियाँक रस्ते भीतरी दुनियासँ कटि गेल।

एक-दोसराक पीपनी सटिते नीनक आशंका दुनूक मनमे भेल; आशंका होइते एक-दोसरकेँ चैन रूप देख बाजब बन्न कऽ लेलक। एम्हर तीनू बच्चा बाहरी दुनियाँक खेलमे लगल रहबे करइ।

तीन बजैक समए, टहटहौआ रौद। घोड़सार लग आबि गिरिजानाथ सहीसकेँ घोड़ाक लगाम पकड़ा अपने आँगन गेला।

रौदाएल घोड़ाक दशा देख सहीस घरेमे घोड़ाकेँ बान्हब नीक बुझलक। बाहरक थैरमे नै बान्हि सहीस घोड़सारेमे घोड़ाकेँ लगाम खोलि, पैरमे घोड़छान लगा खुट्टामे बान्हि देलक। तैबीच घोड़ाक आहैट देख पाँचू मुसरी अपन घरक बाट पकैड़ भीतर चलि गेल, मुदा सभकेँ अगुअबैत बुढ़बा-मुसरी पाछूसँ अपना घरक मुँहपर पाछू मुहेँ घुमि रौदाएल घोड़ाक दशा देखए लगल।

पियासल घोड़ाकेँ बुझि सहीस पहिने पानिक बरतन आगूमे देलक। मुदा घोड़ा पानि देखते मुँह छीपि लेकक। मुँह ई सोचि छीपलक जे सरद-गरम एहने समैमे होइ छइ।

पानिक बरतन हटा नोकर खाइले आगूमे देलक, ठेह उतरल घोड़ा खेनाइकेँ सुँघबोने केलक। नोकर बुझि गेल जे पहिने ई अराम चाहैए। अखन नहेबो केना करबै। रोदाएल अछि। झूसियाइत नोकर घोड़सारसँ निकैल अपन बास दिस बढ़ि गेल।

अपना घरक मुहथैरपर सँ बुढ़बा-मुसरी देखलक जे वेचारा घोड़ा दरदे ने खेलक आ ने पीलक, ओ ते सभटा अपने बेसाहलक। मुदा हमरा तँ केता दिन केता रातिक खेनाइक जोगाड़ एके बेर भऽ गेल।

मुदा लगले मनमे भेलै, एते लऽ कऽ राखब केतए? बड़ करब तँ पेटेमे ने खा कऽ राखब। अपना तँ ओहन घर नइ अछि जे कोशल करि कौशलिया करब? दोसर, पानि तँ सहजे पानियेँ छी, जे अकाससँ पताल धरि पसरल अछि।

मुसरीक मन घुमलै, घुमि कऽ ओतै चलि गेले- जखन पेट छोड़ि अपन कोनो पथार-खेत ऐछे नइ, रखनहि ने छी आ पेटो भरले अछि, तखन अनेरे मनकेँ कोन अर्थहीन काजमे वोआबै छी।

मुसरीकेँ जेना एक प्रकरणक पूर्ण भाव भेट गेल होइ तहिना भावपूर्ण विचार मनमे नाचि गेलइ। नचिते नजैर घोड़ाक छानक दुनू ऐगला पैरपर पड़लै।

नोकरकेँ घरसँ निकैलते थाकल घोड़ा बैसैत असुआ कऽ मसुआ गेल।

घोड़ाक मुहसँ खसैत लाड़-झागकेँ देख मुसरीक मन सिहैर गेलइ। सिहैरते घोड़ाक आँखिपर नजैर बढ़ौलक तँ पल खसल दुनू आँखि, मुहसँ खसैत बाटक पीड़ाकेँ देखलक। मनमे एलै- वेचारा कहबो केकरा करत? ऐठाम के अछि? आ जँ रहबो करैत तँ की ओकर वेदनाक पीड़ाकेँ थोड़े पीब लइत। मुदा एकठाम संग रहने एते तँ हेबे करैए जे जेतइ समूह तेतइ समाज बनैए।

मनमे उठलै, कहू जे वेचाराकेँ साढ़े तीन देवालक बीचक खुट्टामे बान्हि, दुनू पएर लोहाक कड़ीसँ छाइन देने अछि आ अपने सभ अपन-अपन खोबहार पकैड़ नेने अछि। के वेचाराक वेदना सुनत!

अपना दिस मुसरी हिया कऽ देखलक तँ बुझि पड़लै जे वेचाराक पएरो बरबैर आकि ओकर नाको-कान बरबैर ने छी, तखन हम काइए की सकै छी। मन ठमैक गेलइ। ठमैकते लगले मन ठनकलै, ठनैकते जगलै, हमरा बुते ओकर राशन-पानि जुटौल थोड़े हएत। घरो बनबैक

लूरि अछि तँ अपने सनककेँ बास भरिक; तैठाम ओकर रहैक घरो नइ बना सकै छी। किछु कहौ चाहबै तँ ओकर कान तेते ऊपर छै जे सुनबे ने करत। तखन हम काइए की सकै छिऐ। अपना भागे वेचाराक जे दशा लिखल छै से तँ भोगइ पड़तै...।

मुदा लगले मुसरीकेँ अपनापर ग्लानि जगलै। जगलै ई जे ई तँ केकरो भलाइ करबसँ अपन देह छीपब भेल! जखन अनकर दुख-पीड़ा अपना मनमे नइ बाँटि लेब, ताबे ओकर दुख घटतै केना?

बदलल विचारे जखन मुसरी आँखि उठा कऽ देखलक तँ बुझि पड़लै जे बैसल घोड़ा मुड़ी खसौने एकटा कान धरतीपर देने अछि आ दोसर मुँहक ऊपरमे छइ। देखते सवुर भेलै, सवुर ई भैलै जे ऊपरका कान ने ऊपरमे छै, मुदा माटि परहक कान तँ निच्चेँमे छै, ओइ बरबैर तँ छीहे। मुँह जँ ऊपरो छै तँ कनी जोरसँ बजबे करत; अवाज ऊपर जाइ कि नइ, मुदा निच्चाँ तँ खसबे करत, तँए सुनैमे कोनो असोकर्ज नहियेँ हएत; निच्चासँ सुनियेँ लेब। अपन बात तँ लगेसँ कहबै, ओहो सुनबे करत।

अपन घरक मुहथैरसँ निकैल बुढ़बा-मुसरी घोड़ाक थैरमे पहुँचल। हिया कऽ देखलक तँ बुझि पड़लै जे वेचारा घोड़ाक जान सदिकाल फाँसेमे फँसल रहै छै! पैरक छुटल तँ मुँहक लागल आ मुँहक छुटल तँ पैरक लागल! अवग्रहमे वेचारा पड़ल रहैए।

अपना दिस हिया कऽ मुसरी देखलक जे हमरा बुते कोन भलाइ वेचाराक भऽ सकै छइ।

चारूकात नजैर दौड़बैत जखन पैरक छानकेँ देखलक तँ बुझि पड़लै खुट्टामे बान्हल जौरकेँ जँ दुनू दिस माने खुट्टो दिस आ पएरो दिससँ काटि देल जाए तँ वेचाराक जान हल्लुक भऽ जेतइ! फेर जँ सहीस आबि दोसरछान लगा दइ, ई दीगर भेल। मुदा अखन जेतबे

काल तेतबे काल अवग्रह कटि ग्रह तँ बनतै। जखने ग्रह बनतै तखने ने तरेगनक इजोतमे अपनाकेँ भुकभुकौत।

ससैर कऽ मुसरी घोड़ाक कान लग पहुँच गर लगा कऽ बैसल। घोड़ाक आँखि बन्न रहै तँए मुसरीकेँ देखबो ने केलक, तहूमे कुत्ता जकाँ नाको नहियेँ छै जे गन्धोसँ परेख आँखि खोलैत। कानक जड़ि लग बैसल मुसरी जोरसँ बाजल-

"घोड़ा भाय, हम मुसरी छी। जीव-जगतक दुनियाँमे हमहीं-तोहींटा एकठाम छह, तेसर कियो ने अछि जे भगवानक दरबारमे दोखी बनत। लगमे हमहींटा छी। तँए जँ तोहर दुख-पीड़ा हम नइ देखबह तँ के देखतह। कान खोलह, आँखि उठाबह।"

अपना मने मुसरी बाजि कऽ चुप ऐ दुआरे भऽ गेल जे, घोड़ा हँ-हूँ की बजैए से पहिने सुनी।

मुदा घोड़ा तँ घोड़े छी, मुसरीक चुनचुनी केते बुझत। एना जँ माछी-मच्छरक घनघनैनी हाथी-घोड़ा बुझए लगल तखन तँ भेल! किए घोड़ा कान पटपटाएत आकि आँखि खोलत। मुसरीक मनमे भेल, एक डाकैनसँ नइ सुनलक; दोसर डाकैन दिऐ। अपन परिचए दैत मुसरी फेर बाजल-

"भाय घोड़ा, हमर गिनती ने मनुखमे अछि आ ने जानवरमे आ ने जड़िये-जगतमे, तँए तोरासँ कोनो दुश्मनी साधैक अछि से नइ बुझह। तोहर दीन-दशा देख दया लैग गेल। ओना तोहर नोर पोछल तँ हमरा बुते नहियेँ हएत, मुदा संग मिलि नोर बहौल तँ हएत। आँखि खोलह, कान उठाबह।"

मुसरीक बात जेना घोड़ा सुनलक। सुनिते आँखि खोललक। आँखि खुजिते मनमे उठलै, बाजल-

"मुसरी भाय, पहिने ई कहह जे नीके-ना जीबै छह किने?"

घोड़ाक बात सुनि मुसरीक मन घोराए लगल। घोराए ई लगल जे हम नीके नै छी तँ अधला कहिया भेलौं जे नीके नइ जीब। मुदा लगले मनमे उठलै जे जँ वेचाराकेँ खाइयोक लूरि रहितै तँ हमर पाँच परानीक गुजर चलैत। ओना दुनियाँ बड़ीटा छै तहूमे मूस-मुसरीक। अन्नक घर, मनक घर, कागजक घर, खेतक घर, पथारक घर, हाथीक घर आ सद्य: घोड़ाक घर सेहो...। जेतए मन फुरत तेतए रहब। मुदा ऐ वेचाराकेँ तँ से नइ छै, जँ से रहितै तँ अहिना एजेन्सीक एजेन्ट जकाँ चारि बजे भोरसँ दस बजे राति धरि सड़कपर सवारी-गाड़ी जकाँ दौड़ैत रहैत! एक तँ पड़ोसीपनक धर्म दोसर एकरे हिस्सा अन्नो खाइ छी, एकरे घरे कोठाक घरोमे रहै छी। तँए अपन बिसवास जगबैत मुसरी बाजल-

"भाय घोड़ा, अपन कण्ठी छूबि कहै छिअ जे आइ धरि कहियो अन्न छोड़ि कोनो अघट भोजन कण्ठसँ निच्चाँ उतरल हुअए...।"

मुसरीक बात समाप्तो ने भेल छल कि बिच्चेमे घोड़ा बाजल-

"हमरा बुझबैले तूँ किए अनेरे कण्ठी छूबि कऽ सप्पत खाइ छह।"

घोड़ाक बात सुनिते मुसरीक मनमे बिसवास जगल जे भरिसक घोड़ा अपनो बात किछु कहए चाहैए। पहिने मुँह खोलि कऽ बाजह, तखन ने सुनला पछाइत किछु कहबै।

तैबीच बुढ़िया-मुसरी, जे घरमुहाँ भऽ गेल छल- पाछू उनैट तकलक तँ घोड़ाक कान लग अपना पतिकेँ बैसल देखलक। ओना पतिक सतीत्वपर मिसियो भरि शंका नै जगलै जे घोड़ा फुसिया लेत, मुदा एते तँ मनमे जगबे केलै जे घोड़े छी जँ कहीं कान उठा कऽ पटपटौत तँ वेचाराक जान बँचब कठिन भऽ जेतइ, आ जखन

परिवारमे सृजन नइ रहत, सृजके खतम भऽ जाएत तखन कोनो उपैत[3] केना हएत! जइ परिवारमे उपैत नै रहत तइमे बिपैत नै औत तँ औत केतए? आगि तँ ओतै ने पजरत जेतए सुखल जारन रहत; आकि पनियाएल पानिक जारनमे पजरत। से नइ तँ हमहूँ किए ने पतिक नाँगैर पकैड़ लगमे बैस दुनूक देह-दशा देखी...।

अपना घरसँ- माने देवालक बोहैरसँ- निकैल बुढ़िया-मुसरी घोड़ाक थैर दिस बढ़ल। माएकेँ दू डेग आगू बढ़ैत देख तीनू बच्चो-मुसरी पाछू-पाछू विदा भेल।

आँखि तकैत बुढ़बो-मुसरी आ घोड़ो चारू मुसरीकेँ देखलक। देखते घोड़ाक मनमे भेल जे हमरासँ बेसी समंगर मुसरी अछि। घोड़ा अपन देह-दशा बिसैर गेल।

हिसावोक तँ केतेक नजैर अछि। जइ नजरिये घोड़ा बुझलक, ओहो अकाट्य रहइ। लोकतंत्रमे गिनतीए महत रखै छइ। मुदा ई बुझबे ने केलक जे तंत्रक पाछू मंत्र चलै छै आ ओ मंत्र एक तंत्रसँ दस तंत्र धरि अछि जे लोकतंत्रक संगी छी। समंगर मुसरीकेँ देख घोड़ा बाजल-

"मुसरी भाय, ई सभ तोरे टुसरी छिअ?"

घोड़ाक बातसँ मुसरीकेँ मिसियो भरि मनमे दुख नइ भेल, जे हमरे सोझामे हमर वंशजकेँ 'टुसरी' कहलक। मनमे एलै- जे एकसिरा गाछ जखन कनियेँ ऊपर उठैए आकि टुस्सा रूपमे दोसर-तेसर चारिम निकलए लगैए, जइसँ डारि-पातक संग शीलोक शोभा बढ़बैए। तँए जँ 'टुसरीए' कहलक तँ कहलक। मुस्की दैत मुसरी बाजल-

"भाय घोड़ा, एते तँ अछि जे तोरा घरमे घर बना रहै छी, आ

[3] उपार्जन

तोरे छिड़ियौलहा बदाम खा कऽ मस्तीसँ जीवन-गुदस करै छी। मुदा पैछला जेते परिवार बढ़ल ओ तँ देश-विदेश चलि गेल। कहियोकाल मोबाइलसँ समाद सुनबैत रहैए जे विदेशमे अपन रहैक मकान बना लेलौं, आ एहेन कारोबार ठाढ़ कऽ लेलौं जे आब कहियो अपन बाप-दादाक दुखबास देखैक अवसरो ने भेटत।"

कहि मुसरीक बोलती बन्न भऽ गेल। बन्न होइक कारण मनमे ई उठि गेलै जे 'ओ सभ' कोन जनमभूमि आ मतरभूमिक गीत गौत? आ कोन देवी-दुर्गाक गीत गाबि केकरा सुनौत?

मुसरीक बोलती बन्न देख घोड़ा चरियबैत पुछलकै-

"मुसरी भाय, जखन तोहर बात सुनैले कान खोलि ठाढ़ केने छी तखन तूँ बिच्चेमे किए अँटैक गेलह?"

घोड़ाक बात सुनि मुसरीक असिआस बढ़ि मन अलिसए लगलै। हाफी करैत बाजल-

"भाय घोड़ा, तोरा सभले ई दुनियाँ बाँटल छह, ई जलवायु- उ वातावरण, ई मौसम- उ मौसममे। सौंसे दुनियाँ हमराले एके रंग अछि आ समाङ्गो आ जातियो-वेरादर तेते अछि, जे सगतैर बसल छी। अपन जाति-वेरादरक हाल-चाल कहह?"

मुसरीक बात सुनि घोड़ा ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे महजाल जकाँ तेहेन जाल मुसरी फेकलक जे हमरा ओते बुझलो ने अछि। मुदा दरबज्जापर आएल अतिथिकेँ जँ नइ भरि पेट तँ अदहो पेट भोजन नइ करबयैन तँ ओ दरबज्जे की...।

मने-मन विचारैत घोड़ा बाजल-

"मुसरी भाय, दुनियाँक पाछू जे अनेरे माथ लगाएब से कथीले। हमरासँ नमहर हाथीक माथ छै, पहिने ओ ने लगाबह। मुसरी भाय, आइ पहिले दिन तोरा मुहेँ अपन जाति-वेरादरक चाल-चुलक बात

सुनलौं।"

बजैत-बजैत घोड़ा ठमैक गेल। कनीकाल ठमकल आ आँखि पोछैत फेर बाजल-

"भाय जेहने जातिक गति अछि तेहने वेरादरीक सेहो अछि। तखन तँ गाए नइ छी जे पोसिन्दारकेँ अमृत पीएबै। बड़ बेसी करबै तँ केकरो मकै-गहुमक वेपार पाँच कोस-दस कोसक बीच सवारी बनि उपकार करबै, चाहे अन-पानिक बदला सवारी गाड़ी जकाँ सवारीक उपकार करबै, सएह ने?"

अपन बात जेना घोड़ा छाती खोलि मुसरीकेँ कहि ठोरे-ठोरे चुचुआएल। घोड़ाक चुचुआएब सुनि मुसरी बाजल-

"भाय घोड़ा, मनसँ सोग-पीड़ा हटाबह, जेतऽ रही मस्तान बनि मस्ताना गीत गबैत रही, रस्ता बढ़ैत चली।"

❍

शब्द संख्या- 3625, 17 अगस्त 2015

फलहार

चारि बजेक समए। सुर्ज अपन प्रखर प्रतिभा समटैक ओरियानमे लैग गेला। जइसँ कटुतामे कनी-मनी कमी आबि रहल छेलैन आ मधुताक सिरजन हुअ लगल छेलैन। उष्णता सहिष्णुता दिस बढ़ए लगल छेलैन। जहिना कोनो फल फूलसँ निकैल कलीसँ कलियाइत अपन पूर्ण जुआनीक बाट पकैड़ अन्तिम सीढ़ीपर पएर रखिते मधु-मधु मधुर बनि जाइए तहिना बाल सुर्ज डेगे-डेग बढ़ैत ओइ सीढ़ीपर पहुँच गेल छैथ जेतए उष्णसँ सहिष्णुक ढलान ढुलकैत शीतपनमे प्रवेश पबैए।

दिन भरिक उपासल रूक्मिणी अपन पूर्ण होइत उपास देख फलहार-ले माएकेँ कहलक-

"माए, फलहारक बेर लैगचाएल अबैए...?"

ओना रूक्मिणीक मनमे संगी-साथीक मुँहक सुनल अनेको रंगक फलहार-वस्तुक बात छल जे मनो छेलइ। माने ई जे टोलक आठ बर्खसँ ऊपर आ चौदह-पनरह बर्खक बीचक जे बारहो-चौदहो विवाहित-अ-विवाहित बाल कन्यासँ चिष्टाएल कन्या धरि संगे-संग काजो-उदेम, मेलो-ठेला देखब-सुनब आ धारो-पोखैर नहाइले जाइ-अबै छल। तैसंग अपन-अपन खिस्सो-पिहानी सुनबो-सुनैबितो छल। जइसँ समयानुसार किछु विचार जगबो करै छल आ मेटबो करै छल।

सुगीताक मुहेँ पैछला मासक उपासक फलहार सुनि चुकल छल जे भरि दिनक उपासक पछाइत साँझमे गाइक दूध आ केदली वनक फलसँ फलहार केने रही। पछुलका मासक उपास। नइ हमर तँ ऐ मासक पहिल उपास औझुका छी। दस बर्खक रूक्मिणीक मनमे उपैक गेल।

जिनगीक पहिल उपास रूक्मिणीक छल। ऐसँ पहिने संगी सबहक मुँहक बात रूक्मिणी शास्त्र–पुराणक कथा जकाँ बुझै छल। मुदा आइ तँ रूक्मिणी अपना आसे-आस चाहि रहल अछि। लगले रूक्मिणीक मनमे दोसर संगीक उपासक फलहार जैग गेलइ। जगलै ई जे कलिया बहिन सेव-अंगुरसँ फलहार केने रहैथ। बजारसँ सत्तैर रूपैए किलो अनने रहैथ, जेकर फलहार केने रहैथ।

फेर लगले रूक्मिणीक मनमे उठल जे ओहो फलहारकेँ तँ आइ छह माससँ ऊपर कलिया बहिनकेँ केला भऽ गेलैन।

फलहारक अपन-अपन विहीत अछि। से खाली उपासेक नै माँ दुर्गाक चारू पूजा- माने आसिनक, माघक, चैतक आ अखाढ़क- एक रहितो विहीतमे भेद अछिए।

रूक्मिणीक मनमे भेल। हमर उपास तँ औझुका छी, ने पैछला छी आ ने अगुलका हएत। आगूले आगू हएत आ पाछू तँ सहजे तर पड़ि गेल।

बेटीक बात सुनि अनुराधा विस्मित भऽ गेली। जिनगीक पहिल उपास बेटीकेँ करैत देख मने-मन मन-मन्दिरमे विचड़ए लगली। किए ने जिनगीक आराधनाकेँ उपाससँ अराधि-अराधि लेत आ दिनक विसरजनक पछाइत फलहार करत...।

परिवारमे एक नव शक्ति अबैत देख अनुराधा रूक्मिणीकेँ अपन परदादीक कहल बात सुनबए लगली-

"बुच्ची, उपासक फल दुखहाल नइ सुखहाल भेल, तैबीच विश्राम भेल फलहार। तेकर पछातिक समए जिनगीक समान्य भेल जे अनवरत चलैए। चलैत आबि रहल अछि आ चलैत रहत।"

जहिना रूक्मिणीक विचार सोझ-साझ नै तहिना अनुराधाकेँ सेहो भऽ गेल रहैन। मुदा तैयो जेना रूक्मिणीक मन मानि गेल जे फलहारक बेरमे ने फलहार करब। अखन तँ महादेव बाबाक पूजाक बेर अछि, संगी सभ संग करैले अबैत हएत। अनेरे हमहूँ नहा-फुलडालीमे फूल लऽ पहिने फलहारेक बात माएकेँ कहलयैन। ओ की कोनो बाल-बोध छैथ जे भरि दिनक अन-पानिक तियाग नइ देखलैन। किछु भेली तँ माए भेली। माए कखनो बेजाए थोड़े करती। तैबीच अँगनाक पछुआरक बाटपर सँ सुनन्दा जोरसँ हाक दैत बाजल-

"केते सिंगार-पेटारमे रूक्मिणी लगल छेँ, आकि जल्दी बाबा दरबार चलमेँ।"

अपन लाड़-झाड़ बढ़बैत रूक्मिणी अँगनासँ निकलैत बाजल-

"केते कालसँ तोहर बाटा-बाटी तकैत अँगनामे ठाढ़ छेलौं, तोहीं सभ पछुआएल छेलेँ।"

कहैत-कहैत सखी-बहिनपाक बीच रूक्मिणी मिझिरा गेल। बाबा दरबारक सेन बनि बोल-बम, बोल-बम करैत विदा भेल।

सखी-सहेलीक बीच रूक्मिणी फलहारक बात बिसैर शिवदानक कथा बहिन- सुफली-क मुहेँ सुनए लागल।

जहिना भगवान रामक दरबारमे हनुमान सन वीर आ जामबन्त सन प्रेरक छला तहिना तँ दूध-मुँह, बाल-मुँह बानरोक समूह तँ छेलैहे। जहिना शिवसेनाक बीच आठ बर्खक अबोध-बोध कन्या रमणी-रैमणी छल आ तहिना साढ़े चौदह बर्खक सुफली सेहो छेलीहे आ रूक्मिणी दस बर्खक। ओना रूक्मिणी सेहो अपन आने-आने संगी जकाँ मुँह

बन्न केने सुफली बहिनक बात- शिवदानक कथा- सुनि रहल छल। बीच-बीचमे कखनो-कखनो मनमे आनो-आनो बात उपैक जाइते रहइ। मुदा तेकरा रूक्मिणी समैट-समैट पँजिया-पँजिया अगहन मासक धानक पाँज जकाँ बगलमे रखि-रखि सुफली बहिनक बात सुनए लगैत रहए।

सुफली बहिनक बिआह पैछला सालक अही मासमे भेल रहैन। साल लैग दोसर सालक पहिल मास छी, मुदा तैबीच एक पनरैहिया सासुरोसँ भऽ आएल अछि। माता-पिताक परिवारसँ सासु-ससुर-पतिक परिवार सेहो देख चुकल अछि। ओना उमेरोक हिसाबे आ विचारोक हिसाबे सुफली सभसँ ऊपर अछिए। तहूमे अपनो किछु खास गुण देहमे झलैकते छइ। एक तँ विधाता अपन सोल्होकलाक उपयोग सुफलीकेँ सिरजैमे लगा देने छैथ, जइसँ जेहने देहक गढ़ैन माने सुचिन्त शरीर, तेहने चेहराक शकल-सूरत आ जेहने शकल-सूरत तेहने बोली-वाणी आ तेहने विचारो। तहूमे शिवपथक यात्रीक बीच शिव दर्शनक दर्पण सभकेँ वाणीक ऐनामे देखा रहल अछि। सभ, माने बारहो-चौदहो देव कन्या बताहि जकाँ विभोर भेल, रमैत शिव-दरबारक सीमान लग पहुँच महादेव बाबाक त्रिशुलकेँ प्रणाम केलकैन। तखने शिव कथामे विश्राम दैत सुफली बाजल-

"जेतए जइ कामनासँ चलल छेलौं, तेतऽ पहुँच गेलौं। आब अपन-अपन सभ पूजक ओरियान करै जाउ।"

रूक्मिणीकेँ सखी-सहेलीक बीच प्रवेश करैत देख अनुराधा आँगनक मुहथैरपर सँ ताधैर देखैत रहली जाधैर ओ सभ आँखिक परोछ नइ भेलैन। परोछ होइते अनुराधा आँगन घुमि ऐबे केली आकि ओसारक ओछाइनपर पड़ल रोगग्रस्त पति-दीनानाथ कहलकैन-

"बच्चीक पहिल उपास छी किने?"

पतिक बात अनुराधाक करेजमे तेना लगलैन, जे कटि-कटि निच्चाँ खसऽ लगलैन। मुदा अखन तँ दुनू भारक बीच छैथ। एक दिस पति ओछाइन पकड़ने छह माससँ रोगाएल ओहन किसान जकाँ छैथ जिनकर छह मासक उपजा या तँ रौदी खा गेल होइ चाहे बाढ़ि आबि चाटि गेल होइ...। आ दोसर दिस सुकुमारि सुशील रूक्मिणी भरि दिनक उपासल बाल कन्या...।

अनुराधाक मन तिलमिला गेलैन। जेना देहसँ शक्ति पड़ा गेलैन, हूब-टूटू जकाँ देह भारी बुझि पड़ए लगलैन। भेलैन जे खसि पड़ब। एको क्षण ठाढ़ रहब भारी...।

दीनानाथक ओछानिक बगलेक खुट्टामे ओङैठ बैस अनुराधा पतिक मुँहक बातकेँ तहियबैत बजली-

"दवाइक बेर भऽ गेल, पानि लगमे अछि आकि आनि देब।"

पत्नीक बात सुनिते दीनानाथ उठि कऽ बैसैत, सिरमा तरक गोटी निकालि बगलक लोटा उठा पानिक संग खेलैन।

पतिकेँ दवाइ खाइत देख अनुराधाक मनमे औझुका एक प्रकरण काज भेल देख खुशी उपकलैन। खुशी अबिते जेना देहक शक्तियो सबल भेलैन। ओछाइनपर बैसल दीनानाथ अनुराधाक ओइ जवाबक ताक-हेर करए लगला जे पहिने पुछने छेलखिन। प्रश्न-पर-प्रश्न उठबैत चलू, ने केकरो जड़ि भेटत आ ने छीप, से दीनानाथ बुझै छैथ, तँए आगू बजैसँ परहेज केने छला।

पतिक प्रश्न आँखिक सोझमे अनुराधाकेँ नचै छेलैन। एक दिस पतिक उचिती-विनती बाल कन्या-रूक्मिणीक पहिल उपासक, तेकर फलहारक ओरियानक बेर आबि रहल छेलैन। आ दोसर, बेटी शिवघाटसँ औतैन, ताबे मेघमे तरेगनो अपन मुँह उठा लेत। मुदा लगले मनकेँ आरो नचा देलकैन- फलहार की? फलहार केहेन?

नचैत मन अनुराधाक असथिर भेलैन- जँ मैट्रिक-कुलेशनक विद्यार्थी हरिवासय सन महान उपास काइए किए ने लिअए, तँए कि ओकरा एम.बी.बी.एस.क; इंजिनियरिंगक आकि एम.ए.क उपाधि तँ नहियेँ भेट सकै छइ। भेटतै तँ ओतबे जेतेमे ठाढ़ अछि।

अनुराधाक मातृत्व-मन माए-दादी होइत परदादीपर पहुँचलैन। जइ समए कनी-मनी चेष्टगर भेल रहैथ, तहियाक तहियाएल बात मन पड़लैन। पड़िते मन जेना फुरफुरेलैन। मनमे फुरफुराइत परदादीक ओ आसिरवचन उड़ि कऽ एलैन जेकरा देखते अनुराधाक मन बिहुँसि गेलैन।

दीनानाथक टकटकी-नजैर अनुराधाक बिहुँसैत-नजैर देख मधुएलैन। मधुआइते मनमे भेलैन जे भरिसक हमरे उचिती पुरबैले बोने-बोन ओ ओइ खोजी जकाँ खोजैले चलि गेल गेली! लगैए भरिसक केतौ भेटलैन अछि। ओतएसँ अबैमे जेते समए लगतैन तेते समए तँ रस्ता निङ्घहारए पड़त।

अनुराधाक मनमे एलैन- जखन दस-बारह बर्खक रही तखन परदादी अस्सी बर्ख टपि चुकल छेली। गामक उपास केनिहारिमे हुनको गिनती छेलैन। पुछने रहिऐन-

"दादी, एते जे उपास करै छिऐ से फलहार केना पुरबै छिऐ?"

हमर बात सुनि परदादी पहिने तँ दिल खोलि कऽ हँसल छेली। ओहिना मन पड़ैए- सभटा दाँत झलकैत रहैन। ओहनो अवस्थामे एकोटा दाँत नै टुटल छेलैन जे कनी शंको होइत। शास्त्रीय संगीतक धुनक धुन जकाँ जखन उड़ैत अकास गेली तखन ताल टुटलैन। ताल टुटिते कहने रहैथ-

"दाय, हमरा बापकेँ बेसी खेत-पथार नइ रहैन, मुदा ई बुझल रहैन जे खेतमे केते उपजा होइ छइ। तइ हिसाबक फसिल उपजा

अपन साल-माल लगबै छला। तही दिनक बात छी।"

हम धियानसँ सुनि रहल छेलौं। हमर जिज्ञासा देख झमैर कऽ परदादी कहलैन-

"अहिना धियानसँ सुनिले। धड़फड़ेने सभ बात नै बुझबीही। संच-मंचसँ बैस। केकरा-ले राखब तोरे सभकेँ ने देने जेबो।"

संच-मंच भऽ बैसते दादी पुन: बजली-

"बुच्ची, सासुर अबैसँ सात-आठ बर्ख पहिने नैहरेमे उपास करैक आदैत पकैड़ लेलक। ता नइ बुझिऐ। बाबूकेँ पुछलयैन जे फलहार की करब? ओ कहलैन जहिना अपन उपास छी तहिना ने खेतोक उपज फलहार छी, तइले चिन्ता किए करै छह।"

मुदा खुजला नइ जे कथीक फलहार करब। दोहरा कऽ जखन पुछलयैन तँ कहलैन-

"बुच्ची तीन कट्ठा अल्हुआ-सुथनीक खेती कऽ लइ छी, जइसँ सालक छह मास परिवारक खोरिस पुरि जाइए। माटिक उपज छी, मीठपन छइहे तखन ओहो ने फले भेल। सएह करब शुरू केलौं।"

अनुराधाक मनमे पतालक पानिक स्वच्छतापर बिसवास जगलैन। केना ने जैगतैन मेघमे केतबो शुद्ध पानि किए ने हौउ मुदा अकासक बाट गुजरने दूषित भाइये जाइए, मुदा पतालक पानि धरती सन छन्नासँ छानलो रहैए आ समुद्री लहैरसँ फरिछाइतो रहैए।

जहिना कोनो नटुआ नचैत-नचैत केकरो कोरामे बैस लाड़-झाड़ करए लगैए तहिना अनुराधोक मनमे एलैन। मनमे अबिते चारीमपनक परदादी जेना आगूमे आबि ठाढ़ भऽ नाचए लगलैन। चाकर-चौरस देह, हाथ-पैरमे ओहिना फुनफुनी जेना बाल-बोधक हाथ-पएर होइए। ने एकोटा दाँत टुटल आ ने देहक कोनो अंग भंग भेल। जेहने देहक पानि, तेहने आँखिक संग नजैरो पनियाएल। मुदा लगले दादीक बात

मनमे तहे-तहे तहियाइत तहिया गेलैन। आ नजैर सोझमे बैसल पतिपर आबि गेलैन। अबिते बजली-

"आब केहेन मन लगैए?"

ओना अखन धरि दीनानाथ, रूक्मिणीक उपासक जवाब पबैक रस्ता-बाट तकै छला मुदा अनुराधाक प्रश्न पाबि बजला-

"आब बुझि पड़ैए जे रोग दबि गेल। भुखोक तृष्णा बेसियाएल बुझि पड़ैए आ हाथो-पएर लाड़ै-चाड़ैक मन होइए।"

पतिक आस भरल बात सुनि अनुराधाक मनमे खुशीक लहैर लहैर गेलैन। आगूक कोनो बात नै पुछि अनुराधा पैरसँ चाइन धरि पतिकेँ निहारए लगली। जाड़-पालासँ दबल जहिना बोन-झाड़ आकि जंगल-झाड़ सुर्जक उष्मा पैबतो तिरपीत हुअ लगैत तहिना अनुराधोक मन फुरफुरेलैन-

"बेटीक पहिल उपास छी, अपने तँ जिनगीमे कहियो जानि कऽ उपास नहियेँ केलौं मुदा..?"

'उपास नहियेँ केलौं' मुहसँ निकैलते अनुराधोक नजैर निच्चाँ उतैर गेलैन आ दीनानाथोक।

नजैर निच्चाँ उतैरते अनुराधाक मनमे उठलैन- की एहेन हमहींटा छी आकि हमरा सन औरो सभ छैथ जे जानि कऽ उपास नै केने हेती। ई दीगर भेल जे गाम-समाजमे महिलासँ बेसी बुझनिहार पुरुख, उपासक बेर कम पड़ि जाइ छैथ। जइसँ महिले बेसी हिस्सा नेने अछि। कहाँ कहियो मन गवाही देलक जे केकरोसँ कम उपास केने छी। सालक साए दिन ओहन बीतबे करैए जइ दिन पानि छोड़ि अन्नाहारो भेल हुअए। मुदा तेकर फल की भेटल?

जहिना पत्नी अनुराधा अपन विचारक दुनियाँमे निच्चाँ मुहेँ विचरण करै छल तहिना दीनानाथक मन छह मासक रोगसँ दबाएल

निकैल ऊपर मुहेँ उधिआइ छल। आइ छह माससँ जइ परिवारक बोझ बनल छेलिऐ, काल्हिसँ अपन बोझ अपने उठबैक शक्ति शरीरमे आबि गेल। आब रूक्मिणियोँ दिन भरि सहि कऽ दीनानाथक आराधना करै-जोकर भऽ गेल। अखन ओकर भविसक कोन भरोस छइ। मुदा वर्तमान तँ आगूएमे छइ।

परिवारक भरण-पूरनक बाट देखते जहिना परिवारक सिरजनक आशा-बाट मनमे दौगए लगै छै, तहिना दीनानाथोकेँ मनमे भेलैन। बिहुँसैत पत्नीकेँ कहलखिन-

“बेर लहैस गेल! बैसने काज चलत?”

पतिक बात सुनिते अनुराधा चौंक गेली। चौंकते मनमे उठलैन, केतेक जतनसँ बेटी उपास केलक अछि। की सभ मनमे उपकल छै से तँ भोला बाबा जनता मुदा हमहूँ तँ ओकर माइए छिऐ। भरि दिनक भूखल-पियासल दस बर्खक बेटी लहालोट भेल औत, तखन जँ ओकरा फलहार नइ हेतै से केहेन हएत?

ओना अनुराधाक मनमे बिसवास जमले रहैन। बिसवास ई जमल रहैन जे दादी बच्चासँ बुढ़ धरि अल्हुआ-सुथनीक फलहार कऽ उपास निमाहि लेलैन तखन रूक्मिणी ने किए निमाहत।

मुदा समाजक रंग-रंगक फलहार देख एते तँ मनमे उठिते रहैन जे हमरो बेटीकेँ नीक फलहार हुअए। छिड़ियाइत मने अनुराधा पतिकेँ पुछलखिन-

“बुच्ची-ले फलहारक ओरियान की करब?”

एक तँ छह मासक रोगाएल दीनानाथक मन, जे जिनगीक आसक कलशसँ कनखियाएले रहैन, तैपर सँ तेहेन बोझ माथपर पड़ि गेलैन जे दरदे माथ दुखाए लगलैन। माथमे दर्द उठैक कारण भेलैन, अनुराधाक संग अपनो ने कहियो उपासक भीड़ गेल रही आ ने

फलहारक बात बुझने छी...।

झखैत पतिक नजैर देख अनुराधा बुझि गेली। बुझिते मनमे झमार उठलैन। झमार ई जे दर्दपर जेते दर्द देल जाएत ओ अपना अकारे पैघ होइत जाएत...। ई तँ अनेरे पतिकेँ कष्ट देब हएत! बिहुँसैत बजली-

“एके दहारमे जे परान बहार भऽ जाएत तखन सालक साल दहार केना बुझबै?”

ओना कोनो एहेन स्पष्ट विचार स्पष्ट भाषामे अनुराधाक नै रहैन, मुदा कोन काग-भाषासँ दीनानाथ की बुझि गेला से तँ ओ जानैथ। मुदा मन बिहुँसैत-बिहुँसैत कलशए लगलैन। कलशैत फूलक मुँह देख मालिनि जहिना मने-मन माला बनबैत कलशए लगैए, तहिना अनुराधो कलशैत बजली-

“अपन नैहरक समाद कहै छी।”

‘नैहरक समाद’ सुनि दीनानाथक मनमे भेलैन जे, मर्र ई की भेल! अखन फलहारक ओरियानक काज अछि, तखन ई की बीचमे सुनबै छैथ!

दीनानाथक मनमे किछु फुरबे ने केलैन जे किछु बैजतैथ। बकर-बकर पत्नीक मुँह दिस ताकए लगला।

मुदा अनुराधाकेँ अपन परदीदीक समाद मनकेँ तेहेन समदिया बना देलकैन जे हुअ लगलैन कखन एहेन झमटगर समाद सुना दिऐन।

जहिना शिक्षक आँखिक इशारासँ ऐगला पन्नाक प्रश्न चटियासँ पुछै छथिन तहिना अनुराधा आँखिक टुस्कीसँ दीनानाथकेँ टुस्कियाबए लगली। जहिना लहनाक लहनदार आगूमे ठाढ़ भऽ तगेदा करए चाहैत तहिना अनुराधा, दीनानाथकेँ बुझि पड़ए लगलैन। मुदा दीनानाथक मनमे ईहो एलैन- तगेदाक उत्तर तगदार किछु-ने-किछु देबे करैए। चाहे

‘हँ’ कहह कि ‘नइ’ आकि ‘अखन नै आगू।’ किछु-ने-किछु तँ कहिते अछि मुदा ओहन तगेदा केनिहारि पत्नी तँ नै हेती। बड़ बेसी हेती तँ परिवारक कोनो तगेदा करती जे सझिये छी। तइले मत्था-पच्ची करैक जरूरते की। दुनू गोरे मिलि विचारि आगि-पानिमे जाइले तैयार भऽ जाएब।

दीनानाथक मनक गाछमे जेना फुनगीपर पोनगी देलकैन तहिना डम्हाएल फूलक कली जकाँ बिहुँसैत बजला-

“किदैन जे कहने छेलिऐ, ‘नैहरक समाद..’ से अधेपर छोड़ि देलिऐ?”

पतिक बात सुनि जिज्ञासु अनुराधाकेँ आरो जिज्ञासुपन बढ़लैन। मने-मन अख्हिासए लगली। माइयो दादियेक उतारा छेली, दादियो परदादियेक उतारा छेली। जेना-जेना हुनको अवस्था चढ़ैत गेलैन तेना-तेना अपनो सियान होइत सासुर एलौं। एला पछाइत ओ मुइली...।

परदादीक मृत्यु मनमे अबिते अनुराधाक नजैर बाड़ीक सुथनीपर गेलैन। बजली-

“ताबे शिवधामसँ बुच्चियो अबैए। अदहा घन्टा समैयो बँचल अछि, तैबीच सुथनी उखारि अनै छी, संगे-संग रातिमे सुथनियेँ खेबो करब।”

पत्नीक बात सुनि दीनानाथक मन खटाइन-खटाइन भऽ गेलैन, मुदा लगले मन आगू बढ़ैसँ रोकि देलकैन। अखन फलहारक शुभ घड़ी अछि, तैबीच किछु बात बाजि बाधक नै बनब। की बेटी नै देख रहल अछि जे पिता ओछाइनपर अपने दिन गनि रहल छैथ। तहूमे बेटीक दुख जेते माइक हिस्सामे अछि तेते बापक हिस्सामे थोड़े अछि। मनकेँ आगूसँ घेरि दीनानाथ थीर केलैन।

अस्ताचलगामी सुर्ज अपन पतालक घाटपर पएर दऽ देने छला

मुदा बोन-झाड़ आ पहाड़पर ओहिना झलकै छला।

संगीक संग रूक्मिणी अपना घर लग अबिते फुटि कऽ आँगन पहुँचलि। आँगन पहुँचते पहिने हिया कऽ ओसार दिस तकलक। मुदा केतौ किछु ने देख रूक्मिणीक नजैर ओछाइनपर बैसल पितापर गेल। दीनानाथो ओहिना रूक्मिणी बेटीपर आँखि गड़ौने देखै छला जेना किछु सनेस लऽ कऽ बेटी आएल होइन। तैबीच अनुराधा वाड़ीसँ सुथनी उखारि कलपर चिक्कनसँ धो-धा खुरपीक संग आँगन पहुँचली। रूक्मिणीकेँ देखते कहलखिन-

“बेटी, अहींक फलहारक ओरियानमे लागल छी। मनमे भेल जे बेटिये संग किए ने सभ परानी फलहारे करब।”

मिथिलांगना होइक नाते रूक्मिणी बाजल किछु ने मुदा मन झुझुआइत रहलैन।

❍

शब्द संख्या- 2350, 25 अगस्त 2015

भोरक झगड़ा

सौन मासक भोर। पाँच बजै छल। चाह पीब पान खा दरबज्जापर सँ निकलैएपर रही कि लाल कक्काक अँगनामे हल्ला जकाँ बुझि पड़ल। ठमैक कऽ अकानए लगलौं- की बात छिऐ?

जहिना लाल काका जोर-जोरसँ बजैथ तहिना करिया काकी सेहो ललैक-ललैक बजैत रहथिन। अकानैकाल अकानमे नीक जकाँ एबे ने करए। कखनो एक पक्षक गोटे शब्द अबै तँ कखनो दोसर पक्षक। तैसंग कखनो दुनू पक्षक संगे अबइ। माने एकटा बात लाल कक्काक आबए कि बिच्चेमे करिया काकीक सेहो आबि जाए। ने बैसैक मन हुअए आ ने आगूए डेग उठए।

ओना दुनू परानीक भिनसुरका झगड़ा कोनो एकदिना नै, सबदिना छिऐन। जे सोभाविको अछिए। दुनियाँक भोर छी किने। जिनगीक सभ कथुक भोर।

ओना आन दिनक हल्ला लगले बर्खाक बुलबुला जकाँ फुटि कऽ पानिमे मिलि शान्त भऽ जाइन। मुदा आइ से नै, किछु बेसी बुझि पड़ए। मनमे हुअए जे बिनु किछु बुझने जाइ आ चामेक मुँह छी, जँ किछु केम्हरोसँ बजा जाएत तँ अनेरे लब्बर भऽ जाएब किने। तैसंग मनमे आरो केते रंगक बातक संग विचारो उठैत रहए, मुदा बिच्चेमे करिया काकीक अवाज आएल-

"अहाँ भोर-भोर रट लगौने छी!"

करिया काकीक सुपुट शब्द कानमे पड़ल। ओना बीचमे एकटा आरो बात अछि, बात ई अछि जे लाल कक्काक पत्नी लाल काकी हेती किने, तैठाम करिया काकी केना भेली? एक चलैन ईहो अछि जे कक्काक नाओंपर काकीक नाओं पड़ितैन, मुदा से नइ भेल। ओना एके रंगक काज-ले चालैन, गुड़चल्ला आ चिक्कस चालैक चालैन सेहो होइते अछि। दोसर, चलैनक अनुसार माने देहक रंगक अनुसार सेहो नामकरण होइए। तइ अनुसार भेल अछि। लाल काका लाल भुभुका गोर छैथ जखन कि करिया काकी कारी खटखट, कारी झामर छैथ। मुदा तइ बिच्चेमे पिण्डश्याम माने पिरसियाम सेहो तँ अछिए। तहूमे पिरसियामक सेहो आड़ि-धुर नै अछि। ओना ने गोरेक अछि आ ने कारियेक अछि।

करिया काकीक बात सुनि अकानए लगलौं जे लाल कक्काक उत्तर की होइ छैन। मुदा से सुनैमे सुपुट एबे ने करए। मनमे हुअए जे जखन चौरीक माटिक तरक केशौर हुअए आकि पोखैरक सौरखी-करहर, खाली एकटा पन्ना भेटने तँ उखारनिहार भँजिया कऽ ओकरा उखारि लइए तखन हम किए ने दुनूक बीचक बात बुझि सकै छी। जे काकी-मुहेँ सुनलौं सएह बात पुछि कऽ भँजिया सकै छी। ओना दुनू गोरेसँ सेहो पुछल जा सकैए। जहिना लाल काकाकेँ पुछबैन- 'काका, काकी किए भोरे-भोर भोरका पाठ पढ़बै छैथ।'

तहिना काकीसँ सेहो तँ पुछले जा सकैए- 'काकी, भोरे-भोर काकाकेँ कोन पाठ पढ़बै छिऐन।'

गर अँटिते आगू डेग उठेलौं। दू डेग आगू बैढ़ते मनमे उठि गेल जे जखन तेहल्ला बनि जाएब आ जँ दुनू गोरे पंच मानि अपन बात सुमझा दैथ, तखन निर्णए की सुनेबैन? तहूमे जँ दू जातिक आकि दू

परिवारक आकि दू गामक झगड़ा रहैत तँ कनी कम-बेसी करि मुँह-मिलानी करौलो जा सकैए, मुदा ऐठाम तँ से बात नै अछि, दू परानीक बीचक बात अछि। जँ कनिको काका दिससँ बजा जाएत तँ काकी कहती जे जैठाम बजौआ पंचक मोजरे ने अछि तैठाम बिनु बजौआक केते मोजर। मुहेँ छी, तहूमे तेतबे पर चुप भऽ जाथि तखन ने, आ जँ तइ लागल ईहो कहि दैथ जे कियो बजा कऽ अनेने अछि जे कोनो बात मानब। अपना मने जहिना अहाँ बजलौं तहिना अपना मने हमहूँ सुनि लेलौं...।

मनमे भेल हाइ-रे-बा, तखन पहुँचला फल की भेटत? डेग रूकि गेल। ओसारक निच्चाँ आ अँगनाक ओल्तीमे अँटकल रही। ने आगू बढ़ैक साहस हुअए आ ने नइ जाएब उचित बुझी। आँखि तँ टकटक आगू तकैत रहए मुदा कानमे धानक झड़ जकाँ पड़ैत रहए। ओल्तीमे ठाढ़ मन असोथकित जकाँ हुअ लगल। मुदा लगले जैग गेल- 'भोर' ले झगड़ा होइए, काकीक बात तेहने बुझि पड़ल। मुदा 'भोर' की?

चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे 'भोर' ताकए लगलौं। भोरका स्नान नीक होइए तँए नहाइबेर 'भोर' भेल। नहेले-धोला पछाइत ने कियो जिनगीक लीलामे डेग उठबै छैथ तँए ओ डेग भोरक भेल। मुदा लगले फेर मनमे उठि गेल, आत्माराम बजनिहार सुग्गो-तोता ने मुनि-महात्माक संग तीन बजे भोरक नहान नहाइते अछि, यएह भेल 'भोर'।

भोर तँ भेट गेल, मुदा भोरक जड़िक पन्ना भेटबे ने कएल। ओना जड़ि भेटने मनमे कनी खुशी उपकल, मुदा पन्ना...। पन्ना ई जे तीन बजेकेँ 'भोर' जँ मानि लइ छी, तखन तीन बजे राति की भेल? आ तीन-बजिया गाड़ीकेँ की कहबै?

आत्माराम तोता-सुग्गाक संग मुनि-महात्माक घाट दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे घटवारि-ले जनु घेरा-घेरी होइए। हम पहिने स्नान

करब तँ हम पहिने करब। जे पहिने करत तेकर ने घाट भेल। बुधियार ने घेरा-घेरी छोड़ि अपन घाट अपना सनक बना लेत मुदा बुधियार घेँट-कटो तँ होइते अछि, जँ ओकरा घाट नइ रहतै तँ घेँटि काटि घटवारि केतए लेत।

ओना लाल कक्काक अँगनामे बोल-चाल बन्न भाइये गेल रहैन, मुदा तैयो मनमे भेल भोरका पहिल डेग जखन लाल कक्काक आँगन दिस उठल तखन पहिने हुनकेसँ भेँट करबैन। बड़ हएत तँ यएह ने हएत जे झगड़ा बेरक किछु उपराग देता जे बेर परक नै छह। मुदा भिनसुरका समए छी, कियो निन्द्रासलमे धियान लगौने रहैए तँ कियो नीनवासलमे धियान लगौने रहैए आ कियो अपन सिद्धान्तक अनुसार भोरका सभ किछु नीक हुअए, तइ अनुसारे दुनियाँ-दारीसँ राग-विराग छोड़ि धरतीसँ सुतले-सुतल उठि जाइ छैथ...।

किछु फुरबे ने करए। जेना बस-ट्रकक ड्राइवर भोरेसँ गारि-गरौवैल करैत जिनगीक लीला शुरू करैत तहिना लालो काका अँगनासँ खुरपी नेने बहरा गेल छला। हमहूँ ससैर कऽ आगू बढ़ि गेल छेलौं। देखते कहलयैन-

"काका, भोरे-भोर हाथमे खुरपी देखै छी?"

कहैक बेगमे तँ कहि देलिऐन मुदा धोखा ई भेल जे हुनकर ई सबदिना रूटिंगक अनुसार काज छिऐन, तइ दिस अखन धरि हुनकापर नजैर नइ पड़ल छल। मुदा हमरा बातकेँ जेना लाल काका अनसुनी कऽ देलैन तहिना बुझि पड़ल।

पुछलैन-

"केम्हर-केम्हर चललह अछि?"

लाल कक्काक प्रश्नक जवाबे ने फुरए। ई तँ केकरदिनक पइर भऽ गेल। 'हहाएल-फुहाएल सासुर गेलौं आ कनियाँ माए पुछलैन केतए

एलौं।'

कहू जे भोरसँ दुनू परानी झगड़ा करै छला, लोकक सुतब पहाड़ बना देने छेलखिन, आ बजै बेर जेना सभटा बिसैर गेला।

मुदा फेर भेल जे जखन उदेस बना चलल छी तखन रस्तोसँ घुमि जाएब केहेन हएत। मुदा जेहेन शान्त-चित् लाल काकाकेँ देखै छिऐन तइसँ अकासक उड़ैत चिड़ैयोकेँ भँजियाएब तँ कठिन अछिए।

ओना लाल कक्काक मन ऐ दुआरे असथिर भऽ गेल रहैन जे ओ अपन सबदिना वृति बुझि अपन एक खल काज सम्पन होइत देखलैन।

एक खल काज भेला पछाइत जहिना सबहक मन दोसर खलक काजक गरकेँ अँटकाएए लगैए। तहिना लालो कक्काकेँ भऽ गेल रहैन। ओना पैछला काजक समीक्षा सेहो मने-मन कऽ नेने रहैथ, जइमे केतौ केनो आँकर-पाथर नइ भेटल रहैन, तइसँ मनमे आरो बेसी परपन भऽ गेल रहैन। समीक्षामे मन मानि गेल रहैन जे कोनो नमहर काज किए ने हौउ, ओ तँ खले-खल ने हएत। खले-खल काज करैबला सेहो होइए। जे गर चढ़ा-चढ़ा करैए। परिवारोमे अहिना होइ छइ। कियो बाहरसँ उपैत करि कऽ अनलैन तँ कियो ओकरा जीवनोपयोगी बनबैले घरमे खले-खल तोड़ि खिलखिलबै छैथ। जखने खिल-खिल खिलखिला जाइए तखने ने काजक खिलखिलीसँ मनो खिलखिलाइ छइ। से अपन खलक काजसँ लाल कक्काक मन खिलखिलाइत रहैन। माने ई जे परिवारक श्रेष्ठजनक वृति यएह ने हएत जे अपन लुरि-बुधिक विचारसँ सदिकाल परिवारजनकेँ नव काज दिस आगू बढ़बैत चली। जइसँ परिवार गतिशील रहत। से तँ लाल काका सुति-उठि जे शुरू करै छैथ, से भरि दिने नइ, सबदिना सेहो छैन, तँए मनक खुशीमे कनियोँ घटबी किए हेतैन।

जहिना पीछराह रस्ता होइए तहिना ने पीछराह चलैनिहारो होइए। एहेन ठाम पीछराहकेँ पकड़ैमे अपनो पीछरैक तँ डर रहिते छै, से डर मने-मन होइते रहए। मुदा फेर भेल जे एना जँ पीच्छर दुआरे रस्ता छोड़ि देब तखन घरसँ निकैल जाएब केमहर? आ जँ नइ जाएब तँ की घरेमे मड़ुआ ढेरी जकाँ ढेरीएमे गुम्सैर कऽ रंगे बदैल लेब?

एक दिस मन धिकारैत रहए तँ दोसर दिस पीच्छरे-पीच्छर सगरो बुझि पड़ए। मुदा दुनू हाथक मुट्ठी बान्हि बाँहिमे समैट छातीमे सटबैत, छातीकेँ असथिरसँ दबलौं, जे कहीं धड़-धड़ाए ने लगए।

कहलयैन-

"लाल काका, धरमागती पुछी तँ अहींसँ किछु जिगेसा करए चलल छेलौं, मुदा अहाँ तँ खुरपी लऽ निकैल सड़कपर आबि गेल छी...।"

हमर बात लाल काकाकेँ नीक लगलैन। आगूक किछु बात मुहेँमे रहए कि बिच्चेमे हूँहकारी भरैत बजला-

"बौआ सुधीर, अपना-ले ते भरि दिन लगले रहै छी, मुदा दोसरक जिज्ञासाक महत ओइसँ बेसी अछि, तँए चलह दरबज्जेपर चाहो पीब आ गपो-सप्प करब।"

जेना लाल काका पेटक बात छीन अपना पेटक बना बाजला तहिना बुझि पड़ल। दुनू गोरे चोटे आगू बढ़लौं।

दरबज्जापर पएर रखिते करिया काकी देख लेलैन। देखते ठमैक गेली। हुनका मनमे जे भेल होइन मुदा ससैर कऽ आगू बढ़ि लगमे आबि जोरसँ पुतोहुकेँ कहलखिन-

"कनियाँ चाह बनाउ।"

ओना आँगनमे दुनू पुतोहुओ आ धियो-पुतो सभ ओछाइन धेने

अपना-अपनीकेँ सभ बेटो-पुतोहु आ पोते-पोती लाल काका आ करिया काकीक टिप्पणी पसारने। टिप्पणी ई पसारने जे कियो पतिसँ जोरसँ बाजबकेँ अधला बुझैत तँ कियो अपन टुटैत नीनसँ कड़ुआएल।

जेठकी पुतोहु-

"कहू जे निन्द्रासलमे धियान लगौने छेलौं से तेहेन उपए केलैन जे सभटा भगन भऽ गेल। झगड़ा करैत-करैत आब चाहेक तरास लगलैन।"

छोटकी पुतोहु-

"अबेर धरि रातिमे जगलौं, निन्द्रासल छी, तैबीच हिनका चाहे पीबैक बेगरता बेसी भऽ गेल छैन!"

कहि जेठकी बेटीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"बुच्ची, चाहक ओरियान करहक।"

बेटी जवाब देलकैन-

"अखैन तँ केटलियो ने मँजलौं, चुल्हो ने निपल गेल अछि, पहिने ओ धुअब-माँजब, नीपब आकि पहिने चाहे बनाएब!"

दरबज्जापर सँ तीनू गोरे- माने हमहूँ, लालो काका आ करियो काकी- अँगनाक बात सुनैत रही। ओना आनक अँगनाक बात सुनैमे कठाइन लगिते अछि मुदा तैयो चुपे रहब ने नीक हएत। कमसँ कम एते बजैक गर तँ रहबे करत जे सुनबे ने केलौं।

बेटी-पुतोहुक बात सुनि करियो काकीक मनमे दुख भेलैन जे तेहल्लाक आगूमे एना मुँह झाड़ि जँ बेटी-पुतोहु बाजल तँ सासु होथि आकि दादी, जहिना मिथिलाक धरती योद्धा पैदा करैत रहल अछि तहिना मधुमे मिला जीहपर चाटि बिसैर जेबा चाही। जँ से नै जे पालो खेने छी आ बिनु पालोक छी, तखन सम्बन्ध सूत्र कमजोर बनबे

करत।

करिया काकीकेँ पतिक संग भेल भोरक झगड़ाक संग पुतोहु-पोतीक शब्दवाण छातीकेँ डोला देलकैन मुदा...।

ओना करिया काकीक मन ईहो कहैन जे कोन बड़का पहाड़क घेरा लैग गेल जे आगू नै बढ़ि सकै छी, मुदा केकरा संग, केकरा-ले? जँ दुनियाँमे माया-मोह छै तँ ओकरो सीमावन्दी तँ कएले जा सकैए। मुदा से सभ बात धियानमे करिया काकीकेँ नै एलैन, एलैन ई जे समाजक संग पति बैसल छैथ, जँ कनियोँ ऊँच-नीच आकि ले-ऊँचमे पएर पड़त तँ हुनकर पाग सरकतैन। मुदा अँगनाक प्रश्न छी, प्रश्न छी बेटी-पुतोहुक बेवहारक।

लाल कक्काक मुँह दिस करिया काकी मुँह उठा कऽ देलैन, देलैन ऐ दुआरे जे मुँहक बात मुहसँ बाजल जाएत, मुदा जैठाम काजक प्रश्न अछि आकि जैठाम परिवारक गति-विधि प्रभावित हएत, तैठाम तँ परिवारक सिरिसजनकेँ विचारए पड़तैन। आजुक कालखण्डक जवाबदेही तँ हुनके ऊपर छैन।

मुदा करिया काकीक मनक विचार जेना लाल कक्काक मनमे गड़बे ने केलैन। तहिना निरविकार भेल मने-मन लाल काका विचारैथ जे जे बेटा अपन देहक कपड़ा अपने नइ खींच साफ करैए ओ बाप-माइक खींचत, एहेन धोखामे माए-बापकेँ रहबेक नै चाही। जँ रहत तँ अपने भोगत। तइले तँ अपने ने सोचि-विचारि चलए पड़त। से लाल काकामे छैन्हे, अपन देहक वस्त्र अपने हाथे, भोरका घाटपर खींच लइ छैथ, तँए पत्नियोँक खगता नहियेँ बुझि पड़ै छैन। भाय, नारीकेँ घेरा-बन्दीसँ जाबे आगू नइ बढ़ौल जाएत ताबे विचारेक धारमे मात्र बहैत रहत किने। जिनगीक जरूरतक लेल काजोक सीमा तँ बनबए पड़त।

आगूमे करिया काकीकेँ देख लाल कक्काक मन सेहो सियाह

होइत रहैन। होइत ई रहैन जे कहू आइए हमर कोन दोख छल। भोरमे जँ नइ ओछाइनसँ उठौल जाएत तँ ओ समैकेँ केना पकैड़ चलि सकैए। ओना काजक दौड़मे समैयोक रूप बदलत जइसँ जिनगियोक रूप बदैल रहल अछि। माने ई जे जैठाम चौबीस घन्टा चलैबला मशीन अछि, आदमी आठ घन्टा खटत, तइ हिसाबे तीन आदमीक जिनगीक रूटिंग बनत किने, जे तीन रंगक, समयानुसार हेबे करत। जे से एक-दोसराक कार्य-प्रणालीमे अन्तर एबे करत। मुदा से नइ ऐठाम किसानी जिनगीक कथा छी।

करिया काकीक मुँह नै देखैक विचार लाल कक्काक मनमे उठैत रहैन। जहिना केकरो लगक लोक जखन सम्बन्धसँ हटै छै तखन किछु-ने-किछु जिनगीक गति प्रभावित होइते छै, मुदा समटल जिनगीक अपन गति-विधि स्वच्छन्द रूपे अपना गतिये सेहो चलबे करैए। जँ हम अपन गति-विधिकेँ अपना विचारे चलबए चाहै छी तँ अपन रस्ता धड़ैत जिनगीकेँ धड़ाउ जकाँ सजबैत चलबऽ पड़त।

जँ से नहि, तँ गाछक एके फलक ओहन रूप अछि, जे एकटामे अमृत तुल्य बीज अछि तँ दोसर बिच्चेमे फोंक! मुदा तैयो लाल कक्काक मनमे अहौड़ मारैत रहैन जइसँ पत्नीक विचार मनमे अहूरिया कटिते रहैन।

ओना मुहसँ लाल काका किछु ने बाजि रहल छला। मुदा मनक विचार तँ मनमे उठिते रहैन। उठैत ई रहैन जे पत्नीक तँ अनेको रूपो अछि आ रंगो अछिए। जखने रंग रहत तखने ढंग धड़बे करत। मुदा पतिक जिनगीक भोजन बनाएब पत्नीक महतपूर्ण खलक काज भेल, मुदा विचारोक झगड़ा बिना झगड़ने तँ बँचाइयो नै सकै छी।

जैठाम एक विचार जिनगीक लेल श्रमक महत बुझैत तैठाम जँ दोसर विचार बाटक बाधा बनत तखन तँ परिवारोमे रण-भूमि बनबे

करत। ओना दुनियेँ रण-क्षेत्र छी। जैठाम अपना लगसँ दुनियाँक अन्तिम छोर तक काँट-कुश सजले अछि। तँए मने-मन लाल काका ईहो विचारैथ जे मरदक तँ मरदगानी छिऐ अरारि।

जखन जिनगीक आइ धरिक इतिहास चलैत रहल अछि जे एक घन्टा चुल्हि तर बैसैत एलौं, तखन एक घन्टा समए, आजुक विकसित युगमे चौबीस घन्टाक जिनगीक लेल चुल्हिक समए कम नै भेल, तइले जँ भनसिया आँखि देखौत, से मानै-जोकर थोड़े भेल। करिया काकी पतिक किछु विचार नै सुनि अपन विचारकेँ सोझरबै छेली।

जहिना खसैत घरमे सोंगर लगौल जाइए तहिना सोंगर लगबैत पोतीकेँ दोहरबैत आँगन दिस घुमि बजली-

"बुच्ची, बबो छथुन आ सुधीरो बौआ छैथ, एक गोरे हाँइ-हाँइ कऽ चुल्हिक ओरियान करू, दोसर गोरे बरतन-बासन माँजि लिअ, तेसर गोरे अँगना-घर बहारि लिअ। जइसँ एके समए संग सभ काजो हएत।"

करिया काकीकेँ सह लगबैत कहलयैन-

"कहुना छी तँ सौनक भोर छी ने काकी। जहिना जेठुआ पीपरक गाछ तहिना सौनिया भोर।"

सह पाबि करिया काकीक हूबा कनी बढ़लैन। मुदा जहिना पहियाक धुरी टुटने गाड़ीक गति प्रभावित होइत तहिना तँ भाइये गेल रहैन। हेबो केना ने करैत? कोनो गलती बजैमे होइए, ओकर शाब्दिक सुधार भेने कोनो अवघात नै होइए, मुदा जे वाणी काजक गतिये चलत, ओ तँ काजक रूप छी, जइसँ काज प्रभावित हेबे करत किने। जखने काज प्रभावित हएत तखने ओकर दोसर पाशापर बैसल जिनगी प्रभावित हेबे करत। जखने जिनगी प्रभावित हएत तखने गैत-कुगैतक बीच रणभूमि बनबे करत किने।

तीनू गोरे एक-दोसरक मुँह देखैत मुदा बजैत कियो ने किछु। जहिना अखड़ुआ आमक गाछक निच्चाँ लोक पकलाहा आमपर नजैर देने गाछक निच्चासँ ऊपर मुँह तकैत, जे आब खसत, तब खसत। तहिना तीनू गोरे तीनूक मुँहक आशामे बैसल रही। मुदा से भेल नै तइ बीच जसमैत तीन गिलास चाह थारीमे नेने दरबज्जापर पहुँचल। आगूमे चाहक थारी अबिते तीनूक चाह दोसर दिस बढ़ल। हमरो हाथमे आ लालो कक्काक हाथमे जसमैत चाह दैत, तेसर गिलास करिया काकीक हाथमे दइले गिलास उठौलक। मुदा हाय रे मिथिला, पति आगू पत्नी चाह केना पीती!

सत्तैर बर्खक करिया काकीक विचार मनकेँ खोरि देलकैन। ललैक कऽ पोतीकेँ कहलखिन-

"एतबो विचार अखैन तक नइ भेलौ हेन?"

करिया काकीक विचार सुनि लाल काका ओइ गुड़ जकाँ पीघैल गेला जे गरमी मासमे अपने पिघलए लगैए। मुदा पिघलने वेचाराकेँ दुनू गति होइ छइ। कखनो गुड़ोक भाव चलि जाइए आ कखनो छुआ संग बदैल सेहो तँ जाइते अछि।

जसमैतपर करिया काकीकेँ बिगड़ैत देख कहलयैन-

"काकी, कोन जुग-जमानाक गप करै छी। आब समए बहुत आगू बढ़ि गेल, आब तँ अपनो समाजमे बिआहक मण्डपपर, सरियाती-बरियातीक बीच बर-कनियाँ नाचो करैए आ दारूओ पीबैए, तैठाम अहाँ चाहोसँ लजाइ छी।"

पत्नीक पत्नित्वमे करिया काकीकेँ देख लाल कक्काक मन जाड़क सकताएल गुड़ जेना गरमीमे आबि पिघलए लगैए तहिना मन पीघैल गेलैन। पीघैल ई गेलैन जे लाजेक गहनासँ ने विवेककेँ सजौल जाइए किने। मने-मन लाल काका पत्नी-ऊपर सभ तामसकेँ एकेबेर उतारि

करिया काकीकेँ कहलखिन-

"भोरसँ बतकटौवैल कऽ रहलौं अछि मुदा अखनो तक मन थीर नै भेल। ऐठाम बैसू, हम सुधीर गप करै छी। अहाँ चुपचाप सुनि लिअ, आ जखन दुनू गोरे चुप हएब तखन कि सभ बुझलिऐ से अहाँ बाजब।"

लाल कक्काक रूखि करिया काकी बुझि गेली, अपनाकेँ परहेज करैत पाछू घुसकैत बजली-

"लब्बर-पुरुख जकाँ जे भरि दिन लबरपनी करैत रहब, तइसँ हमर दिन-गुदस जाएत; जाइ छी अपन काज करए।"

कहि काकी चलि गेली। लाल काकाकेँ पुछलयैन-

"काका, भोरमे गल्ल-गुल सुनने रही?"

बिसरल बात जेना लाल काकाकेँ मन पड़लैन। जहिना हेराएल वस्तु भेटने खुशीमे लोक कनी जोरसँ बजैए तहिना लाल काका बजला-

"बौआ सुधीर, घरसँ बाहर धरि मकड़ाक जाल जकाँ जालमे ऐठामक विचार ओझरा गेल अछि। जइसँ अर्थक अनर्थ भऽ रहल अछि।"

कहि काका चुप भऽ गेला। मुदा आगूओ तँ किछु एहेन बात ऐछे जइसँ पाछूए लाल काका अपनाकेँ रखि लेलैन।

जहिना नवका पनिवट देने पानि बहबैमे बेर-बेर चिक्कन करए पड़ैए तहिना आगू चिकनबैत पुछलयैन-

"काका, फूले तकक विचार कहलिऐ, फल तँ छुटले अछि?"

लाल काका बिहुँसैत बजला-

"बौआ, भोरेसँ जिनगीक भोरपन उठैए। तैठाम जँ ई नै बुझत जे

भोर ओहन समए छी, जैठाम जिनगीक भोर शुरू होइ छइ। सभकेँ अपन-अपन जिनगीक लकीर बनबैत चलऽ पड़तै, जँ से नइ चलत तँ आरो बद-सँ-बदतर लोको आ समाजो बनबे करत किने।”

लाल कक्काक बात सुनि मनक बखार भरि गेल।

कहलयैन-

“काका, अखन छुट्टी दिअ, केते काज अछि। आगू दिन ऐगला गप हेतइ।”

❍

शब्द संख्या- 2701, 31 अगस्त 2015

कथा लेखन क्रम

1. भैंटक लावा- शब्द संख्या : 3100, 2. बिसाँढ़- शब्द संख्या : 2516, 3. पीरारक फड़- शब्द संख्या : 2064, 4. अनेरुआ बेटा- शब्द संख्या : 3369, 5. दूटा पाइ- शब्द संख्या : 3294, 6. बोनिहारिन मरनी- शब्द संख्या : 3412, 7. हारि-जीत- शब्द संख्या : 2373, 8. ठेलाबला- शब्द संख्या : 2572, 9. जीविका- शब्द संख्या : 3655, 10. रिक्साबला- शब्द संख्या : 3963, 11. चुनवाली- शब्द संख्या : 2452, 12. डीहक बटबारा- शब्द संख्या : 4789, 13. भैयारी- शब्द संख्या : 4026, 14. बहिन- शब्द संख्या : 2688,15. घरदेखिया- शब्द संख्या : 4021, 16. पछताबा- शब्द संख्या : 2663, 17. डाक्टर हेमन्त- शब्द संख्या : 4407, 18. बाबी- शब्द संख्या : 2167 19. कामिनी- शब्द संख्या : 2289, 20. स्रष्टाक समग्र रचना- शब्द संख्या : 137, 21. प्रतिभा- शब्द संख्या : 154, 22. मर्म- शब्द संख्या : 142, 23. अधखरूआ- शब्द संख्या : 255, 24. समैयक बेरबादी- शब्द संख्या : 213, 25. पहिने तप तखनि ढलिहेँ- शब्द संख्या : 084, 26. खलीफा उमरक सिनेह- शब्द संख्या : 165, 27. जखने जागी तखने परात- शब्द संख्या : 103, 28. अस्तित्वक समाप्ति- शब्द संख्या : 218, 29. खजाना- शब्द संख्या : 388, 30. उग्रधारा- शब्द संख्या : 328, 31 बेवहारिक- शब्द संख्या : 218, 32. समर्पण- शब्द संख्या : 149, 33 उत्थान-पतन- शब्द संख्या : 138, 34. देवता- शब्द संख्या : 232, 35. पाप आ पुण्य- शब्द संख्या : 218, 36. परख- शब्द संख्या : 129, 37. आलसी- शब्द संख्या : 136, 38. प्रेम- शब्द संख्या : 293, 39. हैरियट स्टो- शब्द संख्या : 137, 40. बुझैक ढंग- शब्द संख्या : 142, 41. श्रमिकक इज्जत- शब्द संख्या : 093, 42. वंश- शब्द संख्या : 074, 43. तियाग- शब्द संख्या : 145, 44. सद्विचार- शब्द संख्या : 184, 45. साहस- शब्द संख्या : 103, 46. बरदास- शब्द संख्या : 133,

47. भूल- शब्द संख्या : 139, 48. धैर्य- शब्द संख्या : 099, 49. मनुखक मूल्य- शब्द संख्या : 099, 50. मदति नै चाही- शब्द संख्या : 209, 51. मेहनतिक दरद- शब्द संख्या : 281, 52. मैक्सिम गोर्की- शब्द संख्या : 146, 53. मूलधन- शब्द संख्या : 174, 54. कपटी मित- शब्द संख्या : 281, 55. भीख- शब्द संख्या : 118, 56. भगवान- शब्द संख्या : 098, 57. एकाग्रचित- शब्द संख्या : 261, 58. सीखैक जिज्ञासा- शब्द संख्या : 101, 59. अनुभव- शब्द संख्या : 092, 60. आसिरवादक विरोध- शब्द संख्या : 088, 61. धर्मक असल रूप- शब्द संख्या : 197, 62. सौन्दर्य- शब्द संख्या : 138, 63. स्तब्ध- शब्द संख्या : 257, 64. एकता- शब्द संख्या : 236, 65. विधवा बिआह- शब्द संख्या : 176, 66. देश सेवाक व्रत- शब्द संख्या : 134, 67. आत्मबल- 1- शब्द संख्या : 110, 68. स्वाभिमान- शब्द संख्या : 121, 69. कलंक- शब्द संख्या : 429, 70. बुलकी- शब्द संख्या : 211, 71. भद्रपुरुष- शब्द संख्या : 173, 72. झूठ नै बाजब- शब्द संख्या : 103, 73. आर्दश माए- शब्द संख्या : 097, 74. नारी सम्मान- शब्द संख्या : 100, 75. अनुशासन- शब्द संख्या : 190, 76. सादा जिनगी- शब्द संख्या : 127, 77. विचारक उदय- शब्द संख्या : 072, 78. पुष्ट इकाइसँ समर्थराष्ट बनैत- शब्द संख्या : 102, 79. डर नै करी- शब्द संख्या : 119, 80. आसिरवाद उलैट गेल- शब्द संख्या : 223, 81. रत्न गमेवाक दुख- शब्द संख्या : 226, 82. निशाँ- शब्द संख्या : 194, 83. सामना- शब्द संख्या : 124, 84. शिष्टाचार- शब्द संख्या : 171, 85. ठक- शब्द संख्या : 115, 86. पत्नीक अधिकार- शब्द संख्या : 128, 87. शिनीची सिनेह- शब्द संख्या : 211, 88. सिखबैक उपय- शब्द संख्या : 171, 89. कर्तव्यपरायन सुगा- शब्द संख्या : 171 90. तस्वीर- शब्द संख्या : 134, 91. मितक प्रयोजन- शब्द संख्या : 359, 92. स्वार्थपूर्ण विचार- शब्द संख्या : 121, 93. संगीक महत- शब्द संख्या : 130, 94. उपहास- शब्द संख्या : 196, 95. महादान- शब्द संख्या : 176, 96. भाग्यवाद- शब्द संख्या : 171, 97. सद्वृति- शब्द संख्या : 150, 98. आश्रम नहि सोभाव बदली- शब्द संख्या : 281, 99. पुरुषार्थ- शब्द संख्या : 255, 100. नैष्ठिक सुधन्वा- शब्द संख्या : 274, 101. सद्गृहस्त- शब्द संख्या : 195, 102. सद्भाव- शब्द संख्या : 134, 103. आलस्य वनाम पिशाच- शब्द संख्या : 302, 104. स्वर्ग आ नर्क- शब्द संख्या : 265, 105. यथार्थक बोध- शब्द संख्या : 115, 106. विद्वताक मद- शब्द संख्या : 165, 107. अनन्त- शब्द संख्या : 128, 108. हँसैत लहास- शब्द संख्या :

184, 109. अनगढ़ चेतना- शब्द संख्या : 162, 110. सत्य विद्या- शब्द संख्या : 108, 111. समता- शब्द संख्या : 165, 112. जेते चोट तेते सक्कत- शब्द संख्या : 116, 113. परिष्कार- शब्द संख्या : 198, 114. कथनी नै करनी- शब्द संख्या : 176, 115. शालीनता- शब्द संख्या : 157, 116. मजूरी- शब्द संख्या : 140, 117. जीवन यात्रा- शब्द संख्या : 145, 118. ज्योति- शब्द संख्या : 081, 119. पवनक विवेक- शब्द संख्या : 180, 120. आत्मबल-2- शब्द संख्या : 105, 121. खुदीराम बोस- शब्द संख्या : 172, 122. शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो- शब्द संख्या : 187, 123. लौह पुरुष- शब्द संख्या : 124, 124. जंग लगल- शब्द संख्या : 150, 125. जीवकक परीछा- शब्द संख्या : 117, 126. तप- शब्द संख्या : 162, 127. उल्टा अर्थ- शब्द संख्या : 203, 128. जाति नहि पानि- शब्द संख्या : 142, 129. ऊँच-नीच- शब्द संख्या : 206, 130. पागलखाना- शब्द संख्या : 223, 131. दोहरी मारि- शब्द संख्या : 1357, 132. केना जीब? - शब्द संख्या : 1031, 133. नवान- शब्द संख्या : 2282, 134. तिलासंक्रान्तिक लाइ- शब्द संख्या : 2034, 135. भाइक सिनेह- शब्द संख्या : 1166, 136. प्रेमी- शब्द संख्या : 2520, 137. बपौती सम्पति- शब्द संख्या : 2352, 138. डंका- शब्द संख्या : 2422, 139. संगी- शब्द संख्या : 1858, 140. ठकहरबा- शब्द संख्या : 2351, 141. अतहतह- शब्द संख्या : 2477, 142. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या : 3045, 143. ऑपरेशन- शब्द संख्या : 1605, 144. धर्मनाथ- शब्द संख्या : 1983, 145. सरोजनी- शब्द संख्या : 1816, 146. सुभद्रा- शब्द संख्या : 1910, 147. सोनमाकाका- शब्द संख्या : 1537, 148. दोती बिआह- शब्द संख्या : 1816, 149. पड़ाइन- शब्द संख्या : 1988, 150. केतौ नै- शब्द संख्या : 1211, 151. बिहरन- शब्द संख्या : 3174, 152. मायराम- शब्द संख्या : 2037, 153. गोहिक शिकार- शब्द संख्या : 2113, 154. मातृभूमि- शब्द संख्या : 1036, 155. भबडाह- शब्द संख्या : 2053, 156. परिवारक प्रतिष्ठा- शब्द संख्या : 1888, 157. फागु- शब्द संख्या : 2096, 158. लफ साग- शब्द संख्या : 1192, 159. तिलकोरक तरुआ- शब्द संख्या : 1826, 160. एकोटा ने- शब्द संख्या : 1071, 161. धोतीक मान- शब्द संख्या : 472, 162. साझी- शब्द संख्या : 989, 163. सतभैंया पोखरि- शब्द संख्या : 2990, 164. न्याय चाही- शब्द संख्या : 1308, 165. पनियाहा दूध- शब्द संख्या : 2114, 166. कर्ज- शब्द संख्या : 2860, 167. परदेशी बेटी- शब्द संख्या : 2451, 168. मान- शब्द संख्या : 631, 169. मनोरथ- शब्द

संख्या : 1151, 170. कियो ने- शब्द संख्या : 3699, 171. सूदि भरना- शब्द संख्या : 904, 172. जन्मतिथि- शब्द संख्या : 2356, 173. इमानदार घूसखोर- शब्द संख्या : 2204, 174. पटियाबला- शब्द संख्या : 2356, 175. सनेस- शब्द संख्या : 1248, 176. उलबा चाउर- शब्द संख्या : 2588, 177. बलजोर- शब्द संख्या : 2320, 178. बेटी हम अपराधी छी- शब्द संख्या : 3240, 179. बगबारि◌- शब्द संख्या : 1847, 180. मुइलो बिसेबनि- शब्द संख्या : 4244, 181. सड़ल दारीम- शब्द संख्या : 2442, 182. चुप्पा पाल- शब्द संख्या : 2517, 183. एक धाप जमीन- शब्द संख्या : 2522, 184. ओझरी- शब्द संख्या : 1963, 185. मुसहनि- शब्द संख्या : 2277, 186. केलवाड़ी- शब्द संख्या : 2628, 187. स्वरोजगार- शब्द संख्या : 2338, 188. घूर- शब्द संख्या : 2749, 189. कनियाँ-पुतरा- शब्द संख्या : 2340, 190. वारंट- शब्द संख्या : 1601, 191. गामक मुँह फेर देखब- शब्द संख्या : 2897, 192. कचोट- शब्द संख्या : 313, 193. काँच सूत- शब्द संख्या : 390, 194. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 267, 195. खिलतोड़- शब्द संख्या : 396, 196. मुँह-कान- शब्द संख्या : 234, 197. अनदिना- शब्द संख्या : 312, 198. अपन काज- शब्द संख्या : 366, 199. दूरी- शब्द संख्या : 264, 200. पुरनी भौजी- शब्द संख्या : 116, 201. छूटि गेल- शब्द संख्या : 111, 202. काल्हि दिन- शब्द संख्या : 151, 203. अप्पन हारि- शब्द संख्या : 283, 204. कनफुसकी- शब्द संख्या : 137, 205. मुँहक बात मुहेँमे- शब्द संख्या : 135, 206. कनीटा बात- शब्द संख्या : 098, 207. गति◌-गुद्दा- शब्द संख्या : 250, 208. बिसवास- शब्द संख्या : 316, 209. कचहरिया भाय- शब्द संख्या : 270, 210. गुहारि- शब्द संख्या : 432, 211. शिवजीक डाक-बाक्- शब्द संख्या : 089, 212. सोग- शब्द संख्या : 341, 213. पनचैती- शब्द संख्या : 197, 214. कनमन- शब्द संख्या : 313, 215. अजाति- शब्द संख्या : 085, 216. पटोर- शब्द संख्या : 412, 217. फुसियाह- शब्द संख्या : 308, 218. गति◌-मुक्ति- शब्द संख्या : 241, 219. चौकीदारी- शब्द संख्या : 437, 220. झगड़ाउ-झोटैला- शब्द संख्या : 256, 221. घबाह ट्यूशन- शब्द संख्या : 246, 222. दादी-माँ- शब्द संख्या : 408, 223. पटोटन- शब्द संख्या : 349, 224. मुसाइ पण्डित- शब्द संख्या : 567, 225. भरमे-सरम- शब्द संख्या : 231, 226. देखल दिन- शब्द संख्या : 434, 227. फज्झति- शब्द संख्या : 403, 228. अकास दीप- शब्द संख्या : 233, 229. बुधि◌-बधिया- शब्द संख्या : 268, 230. पहाड़क बेथा- शब्द संख्या

: 216, 231. उमकी- शब्द संख्या : 324, 232. बजन्ता-बुझन्ता- शब्द संख्या : 147, 233. चर्मरोग- शब्द संख्या : 578, 234. शंका- शब्द संख्या : 325, 235. ओसार- शब्द संख्या : 213, 236. छोटका काका- शब्द संख्या : 394, 237. सीमा-सरहद- शब्द संख्या : 195, 238. रमैत जोगी बोहैत पानि- शब्द संख्या : 253, 239. गंजन- शब्द संख्या : 172, 240. सजए- शब्द संख्या : 089, 241. घटक बाबा- शब्द संख्या : 335, 242. आने जकाँ- शब्द संख्या : 048, 243. दान-दछिना- शब्द संख्या : 150, 244. उड़हड़ि- शब्द संख्या : 503, 245. मत्हानि- शब्द संख्या : 260, 246. मेकचो- शब्द संख्या : 221, 247. झुटका विदाइ- शब्द संख्या : 350, 248. मुँहक खतियान- शब्द संख्या : 278, 249. कोसलिया- शब्द संख्या : 234, 250. हूसि गेल- शब्द संख्या : 204, 251. पोखला कटहर- शब्द संख्या : 153, 252. सरही सौबजा- शब्द संख्या : 267, 253. तेरहो करम- शब्द संख्या : 322, 254. डुमैत जिनगी- शब्द संख्या : 295, 255. चोर-सिपाही- शब्द संख्या : 197, 256. दूधबला- शब्द संख्या : 271, 257. टाइपिस्ट- शब्द संख्या : 263, 258. समदाही- शब्द संख्या : 300, 259. बुढ़िया दादी- शब्द संख्या : 331,
260. पाइक मोल- शब्द संख्या : 2412, तिथि : 22 दिसम्बर 2013
261. चोरूक्का झगड़ा- शब्द संख्या : 538, तिथि : 24 दिसम्बर 2013
262. अपसोच- शब्द संख्या : 548, तिथि : 26 दिसम्बर 2013
263. पतझाड़- शब्द संख्या : 2587, तिथि : 31 दिसम्बर 2013
264. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014
265. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014
266. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014
267. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014
268. सुमति- शब्द संख्या : 3052, तिथि : 30 जनवरी 2014
269. फेर पुछबनि- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014
270. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014
271. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014
272. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014
273. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014
274. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014

275. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014
276. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014
277. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014
278. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014
279. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014
280. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014
281. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014
282. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014
283. भोँटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014
284. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014
285. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014
286. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014
287. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014
288. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014
289. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014
290. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014
291. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014
292. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014
293. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014
294. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014
295. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014
296. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014
297. गरदनि कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014
298. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014
299. अवाक- शब्द संख्या : 1047, तिथि : 17 मई 2014
300. पोखरिक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014
301. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014
302. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014
303. पलभरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014

304. किरदानी- शब्द संख्या : 5296, तिथि : 14 जुन 2014
305. सगहा- शब्द संख्या : 2867, तिथि : 22 जुन 2014
306. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014
307. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014
308. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014
309. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014
310. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014
311. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014
312. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014
313. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014
314. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014
315. मरूभूमि◌- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014
316. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014
317. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014
318. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014
319. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014
320. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014
321. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014
322. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014
323. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014
324. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014
325. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014
326. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014
327. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014
328. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014
329. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014
330. मनकमना- शब्द संख्या : 6118, तिथि : 19 सितम्बर 2014
331. घरवास- शब्द संख्या : 4884, तिथि : 26 सितम्बर 2014
332. समधीन- शब्द संख्या : 6096, तिथि : 04 अक्टुबर 2014

333. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टुबर 2014
334. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टुबर 2014
335. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टुबर 2014
336. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20अक्टुबर 2014
337. जितिया पावनि- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टुबर 2014
338. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टुबर 2014
339. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014
340. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3356, तिथि : 13 नवम्बर 2014
341. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2894, तिथि : 17 नवम्बर 2014
342. खटहा आम- शब्द संख्या : 3528, तिथि : 22 नवम्बर 2014
343. ढकरपेँच- शब्द संख्या : 3740, तिथि : 30 नवम्बर 2014
344. असहाज- शब्द संख्या : 2853, तिथि : 04 दिसम्बर 2014
345. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3832, तिथि : 07 दिसम्बर 2014
346. विदाइ- शब्द संख्या : 5103, तिथि : 17 दिसम्बर 2014
347. खलओदार- शब्द संख्या : 731, तिथि : 19 दिसम्बर 2014
348. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1016, तिथि : 22 दिसम्बर 2014
349. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014
350. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015
351. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015
352. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015
353. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015
354. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015
355. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015
356. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015
357. उकडू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015
358. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015
359. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015
360. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015
361. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015

362. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015
363. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015
364. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015
365. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015
366. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015
367. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015
368. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015
369. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015
370. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015
371. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015
372. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015
373. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015
374. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015
375. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015
376. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015
377. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015
378. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015
379. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015
380. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015
381. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015
382. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015
383. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015
384. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015
385. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015
386. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015
387. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015
388. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015
389. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015
390. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015

391. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015
392. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015
393. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015
394. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015
395. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015
396. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015
397. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015
398. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015
399. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015
400. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015
401. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015
402. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015
403. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015
404. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015
405. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015
406. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015
407. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015
408. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015
409. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015
410. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्बर 2015
411. ठूठ गाछ- शब्द संख्या : 23,174, तिथि : 25 अक्टूबरसँ 16 दिसम्बर 2015
412. प्रिगर शत्रु- शब्द संख्या : 1080, तिथि : 26 दिसम्बर 2015
413. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1167, तिथि : 31 दिसम्बर 2015
414. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2623, तिथि : 4 जनवरी 2016
415. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2522, तिथि : 10 जनवरी 2016
416. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3407, तिथि : 16 जनवरी 2016
417. माइक वचन- शब्द संख्या : 3009, तिथि : 21 जनवरी 2016
418. पान- शब्द संख्या : 3120, तिथि : 26 जनवरी 2016
419. आजुक जिनगीक आइ परीछा- शब्द : 1684, तिथि : 01 फरवरी 2016

420. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016
421. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016
422. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016
423. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016
424. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016
425. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016
426. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016
427. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016
428. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016
429. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016
430. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016
431. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016
432. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016
433. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016
434. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016
435. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016
436. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016
437. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016
438. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016
439. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016
440. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016
441. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016
442. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016
443. आब नइ आगि लगैए?- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016
444. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016
445. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016
446. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016
447. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016
448. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016

449. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016
449. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016
449. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016
449. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016
449. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016
449. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016
449. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016
450. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016
451. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016
452. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016
453. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016
454. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016
455. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016
456. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016
457. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016
458. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016
459. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016
460. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016
461. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016
462. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016
463. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016
464. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016
465. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016
466. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016
467. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016
468. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016
469. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016
470. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017
471. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017

472. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017
473. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017
474. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017
475. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017
476. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017
477. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017
478. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017
479. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017
480. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017
481. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017
482. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017
483. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017
484. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017
485. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017
486. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017
487. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017
488. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017
489. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017
490. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017
491. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017
492. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017
493. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017
495. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017
496. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017
497. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017
498. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017
499. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाइ 2017
500. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाइ 2017
501. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाइ 2017

502. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाइ 2017
503. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाइ 2017
504. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017
505. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017
506. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017
507. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017
508. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017
509. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017
510. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017
511. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017
512. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

○○○
○○
○

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, 28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

`251

ISBN : 978-93-87675-07-0

4th Edition

अप्पन-बीरान

जगदीश प्रसाद मण्डल



अप्पन-बीरान

जगदीश प्रसाद मण्डल



निर्मली

समर्पण भाव

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि
दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...
तैठाम देखनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बनियेँ जाइ छै..!

∴

ISBN : 978-93-87675-13-1

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2014
चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

APPAN-BIRAN
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

हथियाएल खुरपी/8
नीक बोल/12
सुआद/16
गंगा नहेलौं/20
भँसैत नाह/25
पान पराग/28
नौमीक हकार/37
फोंक मकड़/43
केते लग केते दूर/53
अभिनव अनुभव/60
खोंटकर्मा/62
किछु ने/69
अप्पन-बीरान/72
अर्जुन रोग/85
नैहराक धाड़/91
अवाक/96
पोखैरक सैरात/101
दनियाँ डाबा/106
धरम काँट/109

हथियाएल खुरपी

भिनसुरका चाह पीला पछाइत काजक हिसाब जोड़ए लगलौं आकि पत्नी आबि कहलैन–

“लफ साग भँसि गेल, अहाँकेँ कोनो धनियेँ नहि?”

अखन धरिक मन सोलहन्नी शुद्ध छल, मुदा काजेक धनि नै अछि तखन भरि दिन करै की छी..?

मनमे कुवाथ भेल। सागक खेती जाइने कऽ भँसेने छेलौं। जानि कऽ ई जे मरदा-मरदी खेत पथारमे काज कऽ कऽ सीख लइए, मुदा स्त्रीगण तँ अँगना-घरमे रहैवाली, जँ कनियोँ उपारजनक लूरि नै हेतैन तखन चुल्हिपर छन-मन केना हएत। सागक खेती आकि लत्ती-फत्तीक बीजमे ओहन शक्ति छै जे माटिक ऊपरो आ तरोमे अँकुरि जाइए। तँए ओतबो लूरि भेने तँ मनमे बिसवास जगबे करतैन किने जे अपन कएल खाइ छी। बरदाश नै भेल। ललैक गेलौं–

“बड़ जुतिहारिन छी! जँ आइ नै टमाटरमे कमाएब तँ भँसिये जाएत। तेहेन-तेहेन अमेरकन घास आबि गेल अछि जे अढ़ाइ-दिना बोखार जकाँ ओकरो भऽ गेल छइ।”

जुतिक सबाल तँए रक्षा टोकी हेबे करत। से भाइये गेल। भोरे-भोर मन लहैर कऽ पीता गेल। बजलौं किछु ने। मुदा हियबऽ लगलौं

जे रक्का-टोकीक प्रभाव की भेल। अपने तँ निअमित जे काज अछि से करब मुदा जुइत लगौनिहारि छोड़ि कऽ भगती।

डारि पकैड़ कऽ मुड़ी गोंति तजबीज करए लगलौं। खिसियाएल मने पत्नी चारमे खोंसल खुरपी उतारि वाड़ी दिस डेग उठौलैन। मन कहलक जे बैसने पछुआ जाएब।

चारमे खुरपी लिअ गेलौं तँ अपन हथियेलहा खुरपी नै छल। की सोचि ओ उतारि नेने छेली से तँ ओ जानैथ मुदा अपना भेल जे भरिसक पुरुखपनाक परिचय दइ दुआरे खुरपी लऽ कऽ चलि गेली। तखन मनमे कनियोँ शंका नै पनपल। दोसर खुरपी रहबे करए, लऽ कऽ चलि गेलौं।

कमठौन केला पछाइत जखन घरमुहाँ भेलौं आ पाछू उनैट काज देखलौं तँ मन मानि गेल जे काज कम भेल। मुदा कम किए भेल? प्रश्न तँ उठिये गेल।

जेते समय काज करै छी ओते समय तँ आइयो करबे केलौं, आने दिन जकाँ दू बेर पानो खेलौं, तखन एना किए भेल? ने अपन दोख आ ने समैक तखन दोख केकर? हियबऽ लगलौं तँ खुरपीपर नजैर गेल। अनठिया खुरपी हाथ पड़ि गेल। अनठियो केते रंगक होइए। मुदा नै, हथबैसू खुरपी आ हथछूटू खुरपीमे जेना होइ छै, से भेल। हथबैसू भेल जे जहिना कोनो मशीनक पाट-पुरजा कल-कल बैसला पछाइत अपन गतिमे अबैए, तखन ने ओकरा बढ़बैक समय सेहो अबैए। जाबे कल-कल नै बैसल रहैए ताबे तँ ओ अपने गतिहीन रहैए। कखनो आगू घुसैक जाइए तँ कखनो पाछू...।

चोर-मोट पकड़ा गेल। मुदा, से एना भेल किए? जानि कऽ केलैन आकि अनजानमे? आनो केता दिन एहेन होइत आबि रहल अछि। सभ रंगक खुरपीक काज अपनो आ हुनको होइते छैन। केना

गलती बुझब। किछु फुरबे ने करए, गुन-धुन करैत मन गुन-गुना गेल। राज-दरबारमे अहिना होइ छल। दहिना भागक सियाहीक दुआति बामा भाग करैत, तौल कऽ काज दऽ देल जाइ छल जइसँ अक-वक बन्न रहै...।

मुँह बन्न केने रहलौं।

नहा कऽ खाइले गेलौं तँ आने दिन जकाँ बुझि पड़ल। मुदा मन तँ सशंकित रहबे करए जे काजमे पछड़ल छी। ताधैर हुनको माने पत्नियोँकेँ मनमे कोनो हलचल नै, मुदा अपन आन दिनक काजक बरावरीक खुशी भीतरे-भीतर रहबे करैन, तँए सम्मानित भऽ अगुआ कऽ किछु बजऽ नै चाहैथ। बजबो तँ तखन ने उचित हएत जखन दुनू गोरेक काजक नाप-जोख हएत। अखन तँ दुनू गोरेक काज हराएल अछि...।

मुदा भूमि ससैर कऽ कर्मभूमि दिस बढ़ि गेल छल। रंगभूमि बनबे करत।

सुर्यास्त भेला पछाइत जखन सौंझुका गायित्री शुरू भेल तँ तरे-तर पत्नीक खुशी बेसी बुझि पड़ल, मुदा जेते हुनका खुशी तेते अपन मन खसल। जेना दूटा नटुआक रंगमञ्चक बीच कियो पटकनिहार तँ कियो पटकाएल एकठाम बैस चाहो-पान करैत आ बम्बैया कलाकारक चरचो करैत। मुदा सेहो नै भऽ पाबि रहल अछि। समझौताक प्रस्ताव रखलौं–

“दिनक जे दोख छल ओ भेल आब साँझ पड़ल, पाड़नक समय भऽ गेल, आबो मुँह खोलब की नहि?”

पत्नीक गद-गदाएल मन रहबे करैन, जहिना ढोलकक गदपर हाथ घुसकुनियाँ कटैत सूर मिलबैत तहिना बजली–

“दिन दिन छिऐ, राति राइत छिऐ। मुदा आँखिक बीच दुनू

अबैत-जाइत जहिना चलैत अछि तहिना ने जिनगियो भेल।”

पत्नीक विचार तँ सुनि लेलौं मुदा मन हरमाज करए लगल। हरमाज ई जे भरि दिनक जे मुँह-फुलौबैल रहल तेकर जड़ि कारण की छल?

❍

तिथि : 11 मार्च 2014, शब्द संख्या : 645

नीक बोल

कौल्हुका साढ़े चारि बजेक ड्यूटी पुइर पढ़ुआ भाय सेवा मुक्तिक आदेश पत्र नेने भोरे गाम पहुँचला। सिताएल नढ़िया जकाँ पत्नी देख बिनु किछु बजने चाह बनबए गेली। ओना दूटा पुतोहुओ छैन मुदा ओ दुनू बहरबैये छथिन। जहियासँ भौजी एली तहियेसँ नवकी भौजीक नाओंसँ विभूषित रहली जे अखनो छैथे। भातिजो-पोता सभ भौजीए कहै छैन मुदा तइले एको पाइ रोख-मान नै होइ छैन। ओना अपनो मन बुढ़ाड़ी नहियेँ मानै छैन तेकर कारण चुल्हि तरक काज रहलैन। जे मन फुरल, जेना मन फुरल तेना बना कऽ खेलौं।

नवके धेलहा कपमे चाहो आ गिलासमे पानियोँ नेने भौजी पढ़ुआ भाइक आगूमे रखि देलकैन।

चाह-पानिक स्वागत देख भाइक मन खुशी भेलैन। मनमे उठलैन जे पत्नीकेँ कहि दिऐन जे सेवा-निवृत्ति भऽ आबि गेलौं। मुदा लगले भेलैन जे जाबे नै बाजब ताबे भारो तँ नहियेँ बुझती, तइसँ नीक जे चुपे रही। मुदा पति-पत्नीक बीच तँ चुपो-चुपी नहियेँ रहल जा सकैए।

पानि पीब चाहक घोंट लगैबते पढ़ुआ भाय बजला–

“बड़ सुन्नर चाह अछि।”

अपन प्रशंसा सुनि भौजी मने-मन गुर-चाउर फाँकए लगली। मुदा भाइक मन वौआ गेलैन।

जहिना पैंतीस सालक नोकरीक पछाइत पढ़ुआ भाय जगह बदैल रहल छैथ तहिना काजो बदलतैन। ओना अखनो मन छुछुआइते रहै छैन जे जखन स्वस्थ छी, काजो नीक करै छी तखन काज छूटब नीक नहि। मुदा सरकारियो निअम तँ निअम छिऐ, नहियोँ तँ नहियेँ मानल जाएत।

हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास केला पछाइत पढ़ुआ भाय शहर जे धेलैन से नोकरीसँ निवृत्ति भेले पछाइत छोड़लैन। जहिना नीक विद्यार्थीमे गनल जाइ छला तहिना नीक शिक्षकोमे रहला।

प्रशंसाक लहैर जखन भौजीक थीर भेलैन तखन मुँह खोललैन–

"पहिने जे अबै छेलौं तँ साँझू पहरकेँ अबै छेलौं आइ किए भोरे आबि गेलौं।"

भौजीक बात सुनि पढ़ुआ भाइक मन सन्न-दे उड़लैन। मनमे झीक-तीर हुअ लगलैन। हुअ लगलैन जे सोझ मुहेँ कहि दिऐन जे नोकरी समाप्त भऽ गेल आब गामे रहब। फेर लगले भेलैन एते नीक नोकरी करै छेलौं कमा कऽ हाथमे दइ छेलिऐन तँ पत्नियोँ पाहुन जकाँ पुजै छेली। जखने बाजब तखने सुनती। बजैक मन तर-तर करैत रहैन मुदा मुँह बन्ने रखला।

असमंजसमे पतिकेँ पड़ल देख भौजी तारतम करैत मानिनि जकाँ बजली–

"जेतबो समय गाममे बितबै छी तेतबो समय नीक बोल कहियो कहलौं?"

पढ़ुआ भाय–

"पुछबो तँ नहियेँ करै छी।"

"अहूँसँ पुछबे करब। आकि केना नीक जकाँ जिनगी चलत तेकर रस्ता परिवारकेँ धड़ाएब?"

"तइमे कमी भेल?"

"जँ से नै भेल तँ अखनो चुल्हि पजारैकाल आँखिसँ नोर किए खसैए?"

"से तँ अहींकेँ ने बुझए पड़त जे सूखल जरनामे मटिया तेल ढारि सलाइ खड़ैर कऽ लगौलासँ आँखिक नोर नै खसै छइ। कनी-मनी चुट-चुटी लगै छइ। तैठाम जे अहाँ काँच जारैनकेँ फूकि कऽ पजारब तँ नोर खसबे करत किने?"

"ई भेल बात गढ़ब।"

"तखन?"

"तखन ई जे नीक बोलक माने ई नै भेल जे बोले रसगर हुअए, बोल जइ काजक घोल करैए ओ काज रसगर होइ।"

पत्नीक बोल सुनि पढ़ुआ भाय थकथका गेला। थकथका ई गेला जे सचमुच परिवार खण्डित भऽ गेल। बहरबैया कमेनिहार तँ रहलौं मुदा घरक नोन-तेलक भाँज कहियो नै बुझि सकलौं, जे कमेला ओ खर्चक भाँज नै बुझलैन आ जे खर्च केलैन ओ उपैतक भाँज नै बुझलैन। पसीना कमाएल जँ फूसि-फासिमे चलि जाएत, तखन परिवार केना ठाढ़ हएत। मुदा जे समय हाथसँ निकैल गेल, पश्चाताप केला पछाइत भाइये की सकैए। मुदा एहनो तँ भाइये सकैए जे दौग कऽ धारमे कुदी। खाएर जे हौउ, परिवार छी दीके-कि-सीके ठाढ़ तँ ऐछे। जखन जगह बदलत तखन जिनगियो किए ने बदलत...।

पढ़ुआ भाय करेज खोलि बजला–

"आब अहींक राजमे आबि गेलौं।"

"मौगी जानि ठकै छी, दसटा पुरुखमे एकटा मौगी मौगी रहत आकि सासुर-मात्रिकक अणे खेलौना..!"



तिथि : 13 मार्च 2014, शब्द संख्या : 565

सुआद

केते दिनक पछाइत कछुआ हाट गेल छेलौं। ओना गेनेसँ नफे भेल। नफा ई जे मनो ने अछि कहिया कबछुआ सीम खेने छेलौं, से भेट गेल। सेहो कि ओना भेटल, एकटा तरकारीवालीकेँ समैया सीम हता गेलैन। हाट छुटै छेलैन, वेचारी जखन पोखैर नहाइले गेल रहैथ तखन एकटा गाछपर खूब लतरल-चतरल-पसरल फूल-कोढ़ी आ फड़सँ भरल देख नेने छेली।

हाटक बेर जखन कोनो गर नै लगलैन तखन पथिया तराजू-बैटखाड़ा नेने पोखैरे महारक रस्तासँ आबि बाटेमे एक पथिया सीम तोड़ि नेने रहैथ। मुदा वेचारीक जहिना मुफ्तक माल रहैन तहिना लेबालो सुखाएले रहैन।

हिया कऽ देखलौं तँ मन मानि गेल जे सीमे छी। अनभुआर जकाँ लगमे पहुँच पुछलयैन–

"दादी, ई की छी?"

बेथाएल मन दादीक, पुछिते बखार खोलि देलैन–

"बानरक मुँह कहीं नारियल खाए!"

चौंकैत ताल मिलेलौं-

"से की! से की दादी?"

दादी नाचए लगली—

“बौआ, जिनगी भरिक कमाइ छी सीमवाली। बारहो मास सीमक खेती करै छेलौं। किसिम-किसिमक सीम उबजबै छी आ कछुआ हाट धेने छी। अपन मन कहैए जे दू-पाइ कमाइयो लइ छी आ खेबो करै छी, गुजरो चलैए।”

‘बारहो मास’ सुनि पुछलयैन—

“सभ एकसमैया होइए आ अहाँ कहै छी बारहो मास?”

जेना आँखिक देखल चीज आ कानक सुनल दुनूक बीच होइत तहिना बजली—

“बौआ, समाज की समाज छी! सीम-भँट्टाक तत् खिधांश केलक जे सीम-भँट्टाक तरकारी भोजसँ उठा देलक। हमर रोजगारे खा लेलक! चालीस रंगसँ ऊपरे किसिमक सीम अपना मिथिलामे अछि। जे बारहो मास पकड़ने अछि।”

मन मानि गेल जे अखनो दादी कमाइले तन-फन करै छैथ। मुदा पोखैरक करहर उखाड़निहार जकाँ पूजी विहीन छैथ। एहेनकेँ की कहल जाए। मुदा भेल विपरीत।

एक ग्रुपमे एक गामक चारि गोरे परदेशी, फगुआमे सभ एबो कएल रहए, संगमे चारिटा बंगलोरक संगी आबि गेल रहै, ओ हिया कऽ हमरो देखलक, बुढ़ियोकेँ देखलक आ सीमक पथियो देखलक। नव इलाका नव चीज जँ नै खेलौं-पीलौं तँ नव जगहपर जाइक अर्थ की भेल- खाली खीर-पुड़ी? एक किलो लेलौं। मुदा ओ सभ पथियो भरि कीनि लेलक। हँसी-खुशीसँ बुढ़ियो विदा भेली, हमहूँ मगन होइत घरमुहाँ भेलौं।

पत्नी वैष्णव। सीमक सुआद मौससँ मिलैत। वैष्णवक कारण भेलै जे बच्चेमे नैहरक गाममे चेचक भेलैन। मौस खा लेलैन। जोर तँ

खूब भेली मुदा जान बँचबै दुआरे वैष्णव बनि गेली। हुनका कियो कहि देने जे ऐ सीममे मौसक सुआद होइ छै आ तइसँ पहिने माने बीमारीसँ पहिने कहियो खेने नै रहैथ। तहूमे गरम मसाला सबहक पुड़िया देख मन भड़ैक गेलैन। तरकारी दिन दिस धकेल देलखिन।

पोखैर दिससँ घुमैतकाल मन गदगदाएले रहए, घरसँ कनी-फरिके रही, आकि मन मानि गेल जे आब गरम मसालाक सुआद भेटत। साँझक टाँहि[1] देलिऐ, मुदा मसालाक गन्ध हेरा गेल। टाँहि दइते आबि दरबज्जाक चौकीपर बैसलौं। नव तीमन अनने छी, तहूमे मेठनियाँ अछि, कनी देरी हेबे करतै। मुदा से भेल नहि। आने दिन जकाँ बजाहैट भेल।

खाइले गेलौं। थारी देख मन नाचि उठल, नाचि उठल ई जे सीमक तरकारी नै देखलिऐ। कौल्हुका ठेकान कोन, मनमे घुरिहैठ शुरू भेल। सेहन्तासँ सीम अनने छेलौं जे खाएब, निपत्ता केना भऽ गेल? थारीमे हाथ ठमैक गेल। ठमकल हाथ देख घरवाली कहली—

“रूचिगर नै भेल अछि की?”

मन लोहैछ गेल, कहू जे अरूचिगर कहिया भेल जे हएत। मन कड़ुआ गेल। भेल ई जे एक तँ ओहुना चोरक मुँह चाम सन, तैपर चामेक मुँह छी, की बजा जाएत तेकर ठेकाने कोन। जँ कहीं रूखराह बात आबि जाएत तँ रन्दा चलबए पड़त! फेर भेल, मनुख कि कोनो काठ छी जे रन्दा पड़ने चिक्कन हएत, ओ तँ आरो रूखराहे होइत जाएत, तइसँ नीक जे ओरिया कऽ पुछिऐन, सएह केलौं—

“सेहन्ताक सीमकेँ किए सुता देलिऐ?”

पत्नी विह्वल भऽ बजली— “सुतौलिऐ कहाँ, देखते मन पड़ि गेल

[1] सँझा गीत

बच्चाक ओ दिन जइ दिन देहमे गोटी भेल आ मौस खा लेलिऐ। मन भटैक गेल जे ओहन सुआद तँ एकरो होइ छइ।”

हाथ ससरल, ढेकार भेल, बजलौं—

“ओकरा की करबै?”

“दिन-देखार अहाँले बना देब। अपना नै हएत तँ नूनो-मिरचाइक संग खा लेब। इछाइनक गन्ध मछाइन महैकते छै, तँए सूखल नोन-मिरचाइ कि इछानि-मछानि हएत, अपना रंगमे रहत।”

❍

तिथि : 14 मार्च 2014, शब्द संख्या : 624

गंगा नहेलौं

भोरे सुति उठि दिशा-मैदान दिस बिदा भेलौं, थोड़े आगू बढ़लौं कि सुचीता काकी अँगनेमे बजली—

“गंगा नहेलौं!”

काकीक बात सुनि मन ठमकल, भेल ई जे माघी पूर्णिमा काल्हि छिऐ, सौंझुका गाड़ी पकैड़ लोक सिमरिया-गंगामे डूम दिअ जाएत तखन किए काकी एना बाजि रहल छैथ? धरतीकेँ अकास किए कहि रहल छैथ? कोनो अरथे ने लागए। मनमे खुटका उठि गेल। फेर भेल जे अनेरे फिरिशान होइ छी, जखन काकी सोझहेमे छैथ तखन पुछिये किए ने लेब जे नीक हएत। अनेरे हाथक चुड़ीले ऐनाक कोन काज। किए अपन अनभुआर मनकेँ रगड़ब। रस्तापर ठाढ़ भेलौं। दछिनबरिया घरक अढ़मे काकी रहैथ, हुनकर बात सुनलौं मुदा ने मुँह देखलयैन आने देह, अखनो अढ़ेमे छैथ तखन पुछबैन केना? नै पुछबैन तँ अपन मन थीर नै हएत।

ससैर कऽ आगू बढ़ि काकीक दरबज्जापर पहुँचते खखसलौं। खखैसते काकी बुझि गेली जे भरिसक कियो दरबज्जापर छैथ। ओहो आँगनसँ ससैर दरबज्जापर एली। काकीकेँ देखते भेल जे कुशल-समाचारसँ गप शुरू करी, मुदा फेर भेल जे अखन गंगा स्नानक समय अछि जँ कहीं अपन स्नानक वृतान्त उठा देलैन आ सुनैत-सुनैत अपने

बात बिसैर जाए तखन तँ आरो गजपट हएत। केतए गेलौं तँ केतौ ने! से भऽ जाएत। एकटा युक्ति फुरल। फुरल ई जे जँ आगू भऽ कऽ काकीए पुछि देलैन जे केम्हर एलौं। तखन अपने सबाल सुढ़िया कऽ पुछि देबैन। मुदा मनक बात ओहो बुझती तखने ने, जँ कहीं दोसरे दिस भँसिया गेली तखन ओतएसँ पकैड़ अनने बिना पुछबो केना करबैन...।

ततमतमे ततमताइते रही आकि सुचीता काकी बजली–

“बौआ, भोरे-भोर देखै छिअ?”

सुचिता काकी सोझमतिया, सोझका सबाल रखि देलैन। पुछलयैन-

“काकी, सिमरिया जाइले लोक सौंझुका गाड़ी ने पकड़त आ अहाँ कहै छिऐ गंगा नहा लेलौं?”

जहिना गीत गौनिहार नव धुन सीखने, वा नव पाँति सीखने बेर-बेर उनटा-पुनटा गबैत तहिना सुचितो काकीक मनमे बेटीक बिआह नचिते रहैन...।

बजली-

“बौआ, आशा छल जे सुनैनाकेँ जोड़ा लगा कन्यादान करब मुदा से भेल, निष्ठासँ पाबि गेलौं।”

काकीक विचारमे गम्भीरताकेँ देखैत पुछलयैन–

“एना झाँपल-तोपल मटियाएल बात हम थोड़े बुझै छी, कनी फरिछा कऽ कहियौ?”

जेना समझदारी पहिने सुननिहारकेँ सुनै-जोकर बना लैत तहिना काकी आग्रह करैत बजली–

“बौआ, भोरुका पहर छिऐ, पहिने चाह पीब लएह, तखन आरो

गप-सप्प हेतइ।”

अपनासँ उमेरगर पाबि काकीकेँ कहलयैन–

“काकी, अनेरे कोन लाड़-झाड़मे पड़ै छी, हमहूँ अगुताएले छी।”

ऐगला बात सधलो ने छल आकि बिच्चेमे टोनि देलैन–

“बौआ, लोक बुढ़ कहियो ने होइए, तखैन असकताइ कथीक। कोनो कि आइए चाह बनबै छी जे आसकैत लगत, जखन मन होइए तखने बना कऽ पीब लइ छी। तूँ जँ बड़ अगुताएल छह तँ चुल्हिए लग चलह, चाहो बनाएब आ गपो करब।”

सएह भेल। जेना काकीक मन बेसी खुशी तहिना दूधे चाहक अदहन चढ़ौलैन। बिआहक जे उगरलहा चाहपत्ती रहैन, बनेली। नवके कपो रहइ। आगत-भागत देख मन असथिर भऽ गेल।

अपने फुरने काकी बजली–

“बौआ, नै आशा छल जे सुनैनाक बिआह हएत।”

दोहरबैत प्रश्न सुनि भेल जे किछु एहेन बात जरूर छै जे खुट्टा आगू काकी घुमि तँ रहली अछि मुदा किछु खोलि नै रहली अछि।

पुछलयैन–

“कनी फरिछा कऽ बजियौ?”

जेना टहकैत घाक पीज निकलने असि-आस पड़ै छै तहिना काकी बजली–

“बौआ, तीनू बेटीक बिआह सम्पन्न कऽ गंगा नहा लेलौं।”

अपने समस्या अपने काज आ अपने पनचैती जखन कऽ लेलैन तखन बीचमे बाँकीए कथी रहल जे दोसराक जरूरत हएत। मुदा बेथो-कथा तँ किछु छिऐ तँए पुछलयैन–

“से की?”

काकी बजली–

“पहिल बेटीक बिआह सभसँ नीक भेल, जेहने अपन घर-दुआर, बोली-चाली, खेनाइ-पीनाइ, तेहने घरमे बिआह भेल। खरचो कोनो बेसी नहियेँ भेल।”

पुछरी पकैड़ बिच्चेमे बजलौं– “हँ, से तँ नीके भेल।”

दोसर बेटीक चर्च करैत बजली–

“दोसरोक घर तेहने भेल, खाली साइकिल-घड़ी बेसी भेल। अपनो[2] विचार भेलैन जे स्कूलमे शिक्षक छैथ, तहूमे गामसँ हटि कऽ छैथ तँए जरूरियो छैन।”

सपाट शब्दमे काकी बाजि गेली, मुदा तेसरक चर्च उठबैसँ पहिने ठमैक गेली।

ठमकल देख पुछलयैन–

“काकी, चुप किए भेलौं?”

विस्मित होइत काकी बजली–

“बौआ, आब बुझै छी जे बुधिमे आगि लगि गेल। पनरह लाख रूपैआ खरच कऽ बेटीकेँ डॉक्टर बनेलौं। समाजक कहबमे मन वौआ गेल जे डॉक्टरकेँ डॉक्टरसँ कम योग्य बर केना हएत। तकैत-तकैत तीन साल जे भेल से केकरा कहबै, देह लगा कऽ मारि लेलौं। मुदा एते कीमती बेटीक मोल यएह होइ जे पच्चीस लाखक बिआहो होइ!”

बजैत-बजैत काकी आँखिसँ नोर ढबढबए लगलैन। नोर पोछैत बजली–

[2] पति

“परसू बिआहक सभ परकिरिया समपन भऽ गेल। सात गंगा नहेलो-फल पाबि गेलौं।

❍

तिथि : 19 मार्च 2014, शब्द संख्या : 690

भँसैत नाह

बेर-बेर ऐ घाटपर नाह-डुम्मीक घटना होइ छै तैयो आन घाटसँ बेसी चलती ऐ घाटक रहिते छइ। बेसी चलतीक कारण ई अछि जे यात्रीक एहेन धारणा बनले छैन जे छह मासक रस्ता नै चली साल भरिक चली। भलैं कोनो धार किए ने छह-मसुए हुअए।

छह-मसुआ ई भेल जे, जे धार जेठ-अखारमे मोजैर-फुला सौन-भादोमे पूर्ण जुआनी पाबि दुब्बर-दानर सल-सलिआ धारकेँ तेना ने झाँपि दइ छै जे ओ सल-सलिआ धार ऊपरेसँ झँपा जाइत अछि। तेकर कारण ईहो छै जे बादलो बेइमानी करैए, जेना समुद्र ओकरा जल-वायु रूपमे जलधार बनबै छै तेना ओ[3] बेइमानी करै छै जे केतौ फाटि-फाटि बरसै छै तँ केतौ झकसबो नदारथ कऽ दइ छइ। मुदा तैयो अपन दोख कहाँ मानैए। बुर्ड़ाक भऽ छाती खोलि बजैए जे समुचित दिशामे बढ़ए चाहै छी, मुदा हवाक झोंक तेना ने छिड़िया दइए जे राइ-छीती भऽ जाइ छी।

मेघक दमगर विचार सुनि धार पार करब यात्री मानियेँ लइए। ओना घाटक चलतीक दोसरो कारण छै जे दोसर-तेसर घाट पार करैमे कनी समेओ बेसी लगै छै आ रस्तो कनी बलुआह टपऽ पड़ै छइ। तँए

[3] मेघ

ओइ घाट सबहक कम चलती रहै छइ।

ओना तीन बेर नाह-डुम्मी भेल, से सभ यात्रीकेँ बुझल छै मुदा पानिमे कि कोनो गाछक घटना होइ छै जे हाड़-पाँजर टुटत, तँए जिनगीक तँ एते गारंटी भाइये जाइ छै हाड़-पाँजर तोड़ि काहि काटि जे मरब तइसँ नीक ने भेल जे पानियोँ पीब आ डुमकी कटैत प्रवाहो भाइये जाएब।

ओना एहेन घटना पहिनौं भेल मुदा औझुका जकाँ नै भेल छल। जेहने वैतरणी पार करैबला माझी तेहने यात्री। कहू जे कनीए हटि चौरगर धारक पेट छइ। चौरगर भेने ऊपर आबि, गहींरसँ समतल भऽ गेने पार करब अधिक बिसवासू होइ छै, से नै चलि साँकर होइत पार करब उकड़ू होइते अछि। नैयाकेँ ने खेबाक चिन्ता होइ छै आ ने मरैया-जीबैयाक। ओ ने कहियो मरत आ ने घाट छोड़त। तँए जँ गीत गाबि नाह नै चलबए तँ मरदानी की आ बिनु मरदानी जिनगानी की। तहूमे जलतरंगसँ लऽ कऽ कठतरंग धरिक साज-सजल रहत आ बौक भेल देहकेँ कठुऔने रहत तँ कठुआइत-कठुआइत तेना कठुआ जाएत जे बुझबे ने करबै जे कठुआएल छी आकि कठगर। मुदा कठगर बेसी गतिगर होइ छइ।

ओही साँकर पेट देने यात्री सभ ओइ पार जेबाक जोर केलक। ओना नैयाक मन खतरापर जरूर रहै मुदा यात्रीए जुतिसँ चलब अपन कर्तव्य बुझि बेसी जोरो ने केलक। तेतबे नै रहै, मनमे ईहो रहै जे धार पार करब कर्तव्य छी आकि ई घाट-उ घाट करब। अपनाकेँ भीतरे-भीतर नैया अपमानित जकाँ होइत देखलक। से केना मानैत।

बीच धारक पानि ओहने समटा कऽ तेज भऽ गेल छल जेकरा तोड़ि नाह पार करब कठिन बुझि पड़लै। मुदा यात्रीक ढीठपना एहेन जे जल-प्रवाह भऽ जाइ तँ भऽ जाइ मुदा रस्ता नै छोड़ब। बीच धारमे

नाहकेँ पहुँचते नैया बाजल–

“यात्री भाय, समधान भऽ जाउ, भऽ सकैए बीचमे कहीं भकमोड़ ने लऽ लिअए। अपन-अपन भार अपना-अपना ऊपर रहल। हमर केकरो ने।”

यात्रीक बीच कटौझ शुरू भेल। किछु आगूसँ बानर जकाँ काटब शुरू केलक तँ किछु पाछूसँ मूस जकाँ कटनियाँ करए लगल। मुदा तही बीच एकटा यात्री जोरसँ बाजल–

“जखन नाहमे सवार भेलौं तखन ओइ पार गेने बिना नै छोड़ब।”

ओइ यात्रीक गपक अन्तिम विराम भेबो ने कएल छल आकि अपनेमे कुकुड़-कटौझ शुरू भेल। जोर-जोरसँ एक-दोसरकेँ पकड़बो केलक आ चांगुरक संग दाँतोसँ दकड़ब शुरू केलक। नाह हिलडोल करए लगल। नैया बाजल–

“यात्री भाय, जेकरा जेहेन लूरि-बूधि अछि से तेना बँचब, नै तँ नाहक संग बिच्चेमे डुमि जाएब।”

नैयाक बात सुनि पहिलुके यात्री दोहरबैत बाजल–

“कियो करए आपले माएले ने बापले।”

बजैत धारमे कूदि गेल।

भकमोड़क नाह चकभौर काटए लगल। बामी-दहिनी जलधार पाबि एकोशिया भऽ गेल, बानरक तराजू जकाँ यात्री दोसर दिस झूकि गेल। एकोशिया भार पड़ने नाहो एकोशिया होइत-होइत पनिया गेल। नाहक संग यात्री आ पनियाएल पेट, बिच्चे धारमे डुमि गेल।



तिथि : 26 मार्च 2014, शब्द संख्या : 597

पान पराग

छियासैठ बर्ख पुड़ैत-पुड़ैत डॉक्टर सुनीलक पछुलका सभ नाओं या तँ हेरा गेलैन या तर पड़ि गेलैन। गाम अबिते नाओंए पड़ि गेलैन बुढ़बा डॉक्टर। ओना जहिना बजरूआ घरक एकटा कोठलीमे पैसने कोठलीए-कोठली सभ घर टहैल लिअ तहिना बुड़हो डॉक्टरकेँ भेलैन। नीक विद्यार्थी आ नीक लगन रहने डॉक्टर सुनीलक पूछ आनसँ भिन्न। जहिना सीनियरो सभ ‘सुनील बाउ’ कहैन तहिना आन-आन स्टाफ ‘सुनील बाबू’ कहैन। जइसँ डॉक्टर सुनील भोथिया गेला।

दस बर्खक पछाइत जखन विभागाध्यक्ष भेला तखन ‘प्रोफेसर साहैब’ भऽ गेला। पहिलुका नाओं हेरा गेलैन। ओना सोलहन्नी पहिलुका नै हेरेलैन थोड़-थाड़ रहबो केलैन आ थोड़-थाड़ बिसरेबो केला। किछुए दिनक पछाइत ‘डॉक्टर भैया’ आर किछु पछाइत ‘डॉक्टर काका’ आ सेवा निवृत्तिक पछाइत ‘डॉक्टर बाबा’ बनि दरभंगासँ गाम आबि गेला।

पुरनका आदैत सेहो शहरसँ गाम नेने एला। जेकर फल छेलैन चारि बजे भोरसँ पहिने अपन नित्य-क्रियासँ निवृत्त भऽ चाह-पीब पढ़ै-लिखैमे लगि जाइ छैथ। ओ वेचारे अपने रहैक घर बनौता तँए मकान बनबैक सभ काज अपने विचारसँ करता जे विचार बेटो दैत खर्चक चिन्तासँ मुक्त कऽ देलकैन। ओना बेटा मुँह-छोहैने केलकैन, किएक

तँ अपनो कमाएल तेते छैन जे आनक खगते ने छैन, मुदा तैयो बेटाक बोलसँ आरो भरोस बढ़बे केलैन।

पौने छह बजिते बुड़हा डॉक्टरकेँ मनमे उठलैन- आब सबहक उठैक समय भऽ गेल, तहूमे राजमिस्त्रीक संग ने अखन चलब अछि तँए ओकरो सभकेँ उठा दिऐ। टेबुल दिस नजैर उठौलैन। पान परागक अन्तिम पुड़िया पहिने खा गेल छला। बिनु मन बनौने आगू बढ़ब नीक नहि। जगरनाथकेँ सोर पाड़ि कहलखिन–

“जगरनाथ, पान-पराग सठि गेल अछि, दोकानसँ नेने आबह।”

पैसा लऽ जगरनाथ विदा हुअ लगल आकि दोहरबैत कहलखिन–

“अखन दोकान खुजल हएत कि नहि?”

जगरनाथ मुँह खोललक–

“चाहवाली तँ अहूसँ पहिने उठि कऽ दोकान खोलि दइ छइ।”

चाहवाली दोकान खोलि दइ छै तइसँ पान-परागकेँ कोन मतलब छइ। पान-पराग तँ पानक दोकानक वौस भेल! दस-पनरह बर्खक बेदरासँ सबालो-जवाब करब नीक नहियेँ हएत, तखन अपन सबालक जवाब केना भेटत। एक तँ ओहिना पराग दुआरे मन थकिआइ छेलैन तैपर अमतीक ओझरीमे ओझराएब नीक नै बुझलैन, युक्ति फुरलैन बजला–

“दोकानमे पान-पराग कीनि, सैति कऽ जीबीमे रखि लीहऽ आ घुमतीकाल मिस्त्री सभकेँ देखने अबिहऽ जे उठल कि नहि।”

एक तँ ओहिना जगरनाथ नोकर, तहूमे जगरनाथेक सोझहामे पिता स्वयं कहा-बधी बुड़हा डॉक्टरसँ करा नेने छला जे काजक बेरमे जगरनाथ काज करत आ खाली समैमे पढ़बए पड़त। ओना बुड़हा

डॉक्टरक अपने मनक बात चन्दन बाजल। मनक बात ई जे शरीरसँ बुढ़ भेने लोकक देह हहैर जाइ छै, तइसँ मनक शक्ति थोड़े घटै छइ। मुदा जखन परिवारेसँ हटि रहल छी जे कहबो केकरा करबै, तखन तँ यएह ने जे लगमे रहत ओकरेसँ ने गप-सप्प करब...।

गबैयाक लेल जहिना कहबी, वाणी, साखी, झारू, दोहा, चौपाइ, छपाइ इत्यादिमे एके रस भेटै छै तहिना ने आनो-आनकेँ भेटै छइ। तँए चन्दनक करारमे कोनो संशोधन करबे ने केलैन।

दरभंगा रेडियो स्टेशनसँ छ-पाँचक स्वास्थक समाचार प्रसारणमे तमाकुलसँ बनल वस्तुक निन्दा एकटा डॉक्टरक मुहेँ प्रसारित भऽ रहल छेलइ। तीनू राजमिस्त्री नीन तोड़ि पड़ले-पड़ल समाचार सुनि रहल छल। मिस्त्री सभसँ एक लग्गा पाछुए जगरनाथ रहै तखने एकटा मिस्त्री बाजल–

“सभटा झूठ-फूस बजनाहार सभ छी।”

बिच्चेमे दोसर मिस्त्री टपकल–

“भाय, काज तँ सभ करबे करैए कियो मूड़सँ करैए कियो भाँज पुरबैए।”

तेसर मिस्त्री सिरमापर मुड़ी उनटबैत बाजल–

“हौ, केकरो सीमा-नाङैर नै छइ। ने डॉक्टरक कहने हएत आ ने नै हएत, होइ छै अपना किरतबे। जँ ओकरा केने होइतै तँ अपने किए सिगरेट पीब कऽ छातीए जरा लइए?”

डॉक्टरक चर्च सुनि जगरनाथ डेग छोट कऽ लेलक। काजमे हाथ लगैबते डॉक्टर साहैब जगरनाथकेँ कहि देने छेलखिन। कहने ई छेलखिन- ‘जखन-के मिस्त्री सभ आराम करैए तखन-के तोहूँ जा कऽ ओकरे सभ लग बैसिहऽ।’ तेकर कारण मिस्त्री सबहक नीक-बेजए बुझब छेलैन। सोचो साफ छैन, साफ ई छैन जे जखन आँखिक

सोझहामे श्रम करैए तखन जँ मनोनुकूल सुविधा नै भेटै, से अनुचित भेल। जैठाम घटकिनियाकेँ बढ़किनिया कहै छै तैठाम जँ रामनाम करैत जीब लइ छी सएह बहुत। जगरनाथकेँ देख मस्त्री बाजल–

“बौआ, तूँ नोकर छहक, जा कऽ डॉक्टर साहैबकेँ कहियौन जे छहटा पान-परागक खर्च अछि, से अपन रोजमे सँ लगैए।”

मिस्त्रीक समाद सुनि जगरनाथ विदा भऽ डॉक्टर साहैब लग पहुँचल। जगरनाथक जेबीमे पान पराग पुड़िया देख जानमे जान डॉक्टर साहैबकेँ आबि गेल छेलैन। जगरनाथोकेँ बुझल जे मालिक-मलिकानक काज मूड बनला पछाइते होइ छै, तँए पुड़ियाकेँ खोलि मुँहमे झाड़ैक प्रतिक्षा करैत रहए जे कखन दाँतसँ काटि मुँहमे खसौता। सएह केलैन मनमे फुन-फुनी उठिते बुड़हा डॉक्टर बजला–

“मिस्त्री सभ उठल कि नहि?”

उठैक जवाब दइसँ पहिने जगरनाथ बाजल–

“बाबा, मिस्त्री सभ उपराग दइए?”

जगरनाथक उपराग सुनि बुड़हा डॉक्टर ठमैक गेला। ठमैक ई गेला जे नान्हिटा बच्चा केते समतल बाजल। दोहरा कऽ पुछब नादानी हएत। कोनो कि मिस्त्री आन छी, काज दुनू गोरे अपना-अपना लूरिये-बूधिये करै छी, मुदा काज तँ सभ घरेक करै छी...।

पान-परागक एगारहो पुड़ियाकेँ समैट बुशटक जेबीमे रखि आगू बढ़ि मिस्त्री लग पहुँचला। मनमे उठलैन सुति कऽ उठैएकाल जँ अलिसा जाएत, तँ भरि दिनक रौद केना डगडगी आबए देतइ। युक्ति फुरलैन महाजनीक टोनमे मिस्त्रीकेँ कहलखिन–

“अहाँ सबहक चाह सेरा कऽ पानि भऽ गेल आ अहाँ सभ ओछाइनो ने छोड़लौं हेन?”

पान-परागक नाओं पहिने दुनू मिस्त्रियो सुनि नेने छल। बुड़हा डॉक्टरक बात सुनि सुनलाहा मिस्त्री बाजल–

“ऐ कोढ़ियाकेँ देखै छिऐ, एहेन खेबैया अछि तँ रातियेमे ओरिया कऽ किए ने रखि लइए?”

मिस्त्रीक बात सुनि बुड़हा डॉक्टर बजला–

“कथी रखि लइत?”

“अहीले ओछाइन नै छोड़ैए।”

कहि जेबीसँ पान-परागक पुड़ियाक लच्छा आगूमे फेकि देलखिन। मुदा एके गोरे खाइत। हाथमे पुड़ियाक लच्छा पाबि मिस्त्री बाजल–

“डॉक्टर साहैब, भरि दिनमे छहटा पुड़िया खाइ छी।”

“केते दिनसँ खाइ छह?”

आस पाबि मिस्त्री बाजल–

“से कि कोनो दिन-महिनाक लिखा-पढ़ी करै छी, भरि दिनक कमाइसँ भरि दिन जीब लेलौं, तँ ऐसँ बेसीक आशा अनेरे किए करब। पहिने शिखर खाइ छेलौं, रेडियो-अखबार थोड़े पढ़ै छी जे आन ठीनक बात बुझबै, मुदा जइ दिन गामेमे एक गोरे शिखर खाइत-खाइत मरि गेल तइ दिनसँ हमहूँ छोड़ि देलिऐ।”

मिस्त्रीक बात सुनि डॉक्टर साहैबक मन उचटए लगलैन। उचटए ई लगलैन जे अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ए चाहै छी...।

काम-काजी डॉक्टर साहैब जे एको मिनट समय नै छोड़ए चाहैथ। ओना जखन मिस्त्री लग एला तखन मकानक बात करितैथ, से नै भऽ शिखर-परागमे लगि गेला। तैबीच पाछूसँ जगरनाथो चाह नेने आएल। जहिना जेबीमे बेसी पाइ रहने पाँच-दसकेँ हेराइक महत

नै होइ छै तहिना पान-परागक जगह कॉफी देल चाह आबि गेलैन। घूसक रूपैआ देख जहिना घूसखोर दस दिन आगूओ काजकेँ निपटाबए चाहैए तहिना शिखर-परागक गपकेँ बिरमित करैत डॉक्टर साहैब बजला–

"देखियौ, जहिना तमाकुलक रंग-रंगक वस्तु बना ओकर शक्तिकेँ कम-बेसी कऽ लोककेँ पोल्हा-पोल्हा खेबाक चहैट लगबैए तहिना तँ चाहो ऐछे, तहूमे जँ कॉफी फेँटि देलिऐ तँ आरो बेसी रंग चढ़ा दइ छइ। तेतबे किए, एकटा संगी छैथ ओ चाहेमे अफीम फेँटि दइ छैथ। खाएर छोड़ू ऐ बातकेँ।"

बुड़हा डॉक्टर साहैबक बात पतराएलो ने छेलैन आकि बिच्चेमे दोसर मिस्त्री कॉफीक चुस्की लैत टोकलकैन–

"डॉक्टर साहैब, अखने कनी पहिने तमाकुलक खिधांस रेडियोमे सुनलौं..?"

मिस्त्रीक बात सुनि बगलमे ठाढ़ जगरनाथ बाजल–

"अहाँ तँ रेडियोक समाचार कहै छी, सत् बजैए आकि फूसि तइ पाछू अनेरे किए वौआएब। डॉक्टर बाबा पढ़बैकाल तीन दिन कहलैथ।"

कहि डॉक्टर साहैबपर नजैर देलक। सोझमे पड़ल जहिना कोनो वस्तुक विचार लोक सोचै-विचारैले नै रखि, देखते निर्णय कऽ लइए, तहिना डॉक्टर साहैब निर्णय करैत बजला–

"मिस्त्री दुनू गोरे एके रंग भेलौं, जहिना शरीरसँ हम भेलौं तहिना श्रमसँ अहाँ भेलौं, जीबैक दुनू गोरेकेँ अछि, जँ से नै अछि तँ किए ने रौटीए खसा रहितौं, कोन खगता अछि एहेन मजगूत घर बनबैक।"

डॉक्टर साहैबक विचार सुनि मिस्त्री सकपकाएल। मुदा चाहक लहकी मनमे लहैक गेल रहइ। बाजल–

"बाबा, अहाँक पएर छूबि कहै छी- आइ दिनसँ पान-पराग नै खाएब।"

मिस्त्रीक बात सुनि डॉक्टर साहैबकेँ अपन बड़प्पन नै बुझि पड़लैन, तेकर कारण भेलैन जे विवेकी मन धकियबैत कहलकैन हमर पएर छूबि सप्पत खाएब उचिन नै भेल। ओ छहटा पुड़िया भरि दिनमे खाइए, अपने पनरह-बीसटा खाइ छी। पएर छूबि सप्पत खाएब तँ ओ ने भेल जे अहाँक सीखसँ अपन लीख धड़त। आ जँ से धड़त तखन तँ छहटा पुड़ियाकेँ पनरह-बीसटा बनबए पड़त! मुदा ईहो तँ उचित नहियेँ हएत जे मुँह खोलि कहि दिऐ।

ततमत् करैत बुड़हा डॉक्टर साहैबक मनमे एलैन भक्तो ने ओहने भगवानसँ प्रेम करैए जे अपना अनुकूल होइ, मुदा भक्तक रक्षा करब तँ भगवानक कर्तव्य भेलैन! नीक हएत जे अखनसँ हमहूँ पान-पराग छोड़ि दी, खाइ-पीबैले अधले चीज छै आ नीक चीज नै छइ। तइसँ ईहो हएत जे अपनो औरुदा बढ़त। तहूमे मिस्त्री कि कोनो पैछला सप्पत खेलक आकि ऐगला खेलक...। मन फुरफुरेलैन। बजला–

"बौआ जगरनाथ, जखने जागी तखने परात। अखन धरि जे तोहर निश्छल निर्मल जिनगी रहलह, ओहने हमरो भेटए, तँए तोड़े सप्पत खा, आइसँ पान-पराग छोड़ि देब।"

तेसर मिस्त्री जे अखन धरि अपन मन साधि मुँह बन्न केने छल ओ अपन बजैक समैक गर पौलक। गर ई पौलक जे पान पराग-शिखरक कटा-कटी भऽ गेल। बाजल–

"बाबा, अहाँ जे एते कमेलिऐ से अहीले तीनमहला छोड़ि एकमहलमे बुढ़ाड़ी बिताएब?"

मिस्त्रीक बात डॉक्टर साहैबकेँ अधला नै लगलैन। तहूमे चाह-

कॉफीक रंगसँ मनो चढ़ले रहैन। बजला–

"बौआ, अखन तूँ बच्चा छह तँए जिनगीक तीत-मीठ ओते नै बुझै छहक। देखहक आब कि हमरा शहर-बजार दिस तकैक अछि, अपन जे गाड़ी छल सेहो पुतोहुएकेँ दऽ देलिऐन। बेटाकेँ ससुरे देने छथिन। कट्ठा भरि घराड़ीक बीच शेष दिन बितबैक अछि। आने-आन देख कऽ ने लोक अपन जिनगीक ठेकान पबैए। कहाँ किनको देखै छिऐन जे साए बर्ख टपला अछि। तखन तँ भेल पनरह-बीस बर्ख निरोग बनि जीब ली।"

मिस्त्री बाजल–

"तीनियेँटा कोठरीक मकानमे रहब नीक लागत?"

बुड़हा डॉक्टर–

"से ते मनमे हेबे करत, मुदा ओही मनकेँ रेबाड़ि-रेबाड़ि पकैड़ अपन जिनगीक संग ने रगड़बै। तहूमे दुइए परानी भेलौं आ तेसर जगरनाथ भेल। अनेरे कम्पाउण्डर-नर्स इत्यादि रखैक कोन जरूरत अछि। जे रोगी औत ओकरा देख‌ि-सुनि लेबै। तइले बेसी घरक खगते कोन अछि। चारूकात छहरदेबाली जोड़ि घेरि देबै, अपना रहैक, खाइ-पीबैक आ नहाइ-धोइक घर सहिटमे बनल रहत तइसँ किए आसकैत हएत। आसकैत तँ ओइठाम होइ छै जैठाम निच्चाँ-ऊपर सीढ़ी टपए पड़ै छइ।"

मिस्त्री–

"जँ कहियो बेटा-पुतोहु औता, तखन ओ सभ केतए रहता?"

"ऊपरमे तँ खालीए रहत किने, अबैएकाल विचारि लेता जे केते समय रहैक अछि तइ हिसाबसँ अपन ओरियान केने औता।"

डॉक्टर साहैबक बात सुनि दोसर मिस्त्री बाजल–

"मन-तन खराप हएत, तखन की करबै?"

मिस्त्रीक बात सुनि बुड़हा डॉक्टर खिल-खिला कऽ हँसैत बजला–

"अपनो ने डाक्टरो छी। आन रोगीक बात नहियोँ बुझबै किएक तँ बहुत बात बहुत रोगी बजितो ने अछि, मुदा अपन देहक पीड़ाक अनुभव तँ अपने हएत। तइ हिसाबसँ हिफाजत केने तँ काज चलि सकैए। तखन तँ ई देहे काँच-माटिक बनल अछि, एकर केते बिसवास।"

मिस्त्री बाजल–

"बाबा, अपने काजकेँ पछुअबै छिऐ जेतेकाल गप-सप्प करबै तेते देरी हएत।"

❍

तिथि : 29 मार्च 2014, शब्द संख्या : 1692

नौमीक हकार

चारि सालक हराएल संगीक फोन नम्बर देख गुणानन्द रिसिव करैत बाजल–

“के, फलानन्द भाय?”

जवाब भेटल–

“हँ। गामक पहिल चैती नवरात्रा पूजा प्रारम्भ भेल, केना नै ऐबतौं। मुदा अखन पूजाक धुमसाहीमे पड़ल छी तँए आरो गप भेँट भेलापर हएत, अखन एतबे जे काल्हि नौमी छी तँए सवेर-सकाल पहुँच जाइ।”

फलानन्दक फोन सुनि गुणानन्द किछो तर्क-वितर्क नै केलक। अगुरवारे हकार मानि लेलक।

ओना गुणानन्द आ फलानन्दक दू गाम मुदा दूरी कोसे भरिक। दुनू गामक सीमान मिड्ल स्कूल, जइमे बच्चासँ सतमा किलास संगे-संग पढ़लक। मुदा फलानन्द मिड्ल पास केला पछाइत पिताक संग गौहाटी चलि गेल। जेतए आब कौलेजमे नाओं लिखाएत, मैट्रिक पास कऽ नेने आ गुणानन्द गामेक हाइ स्कूलसँ मैट्रिकक परीक्षा देने।

फोन कटला पछाइत नौमीक हकार दुनूक मनमे हुकड़ए लगल। गुणानन्दक मनमे उठल, अनेरे हकार मानि लेलौं। कहू छुच्छे हाथे

जाएब नीक हएत? जेकरा ऐठाम दिन-राति रहि पहुनाइ करब तेकर सोल्हो-अना खाएब उचित हएत? तहूमे दुर्गा अराधनाक समय! ऐ साल रामपुरमे दुर्गा पूजा शुरू भेल, काल्हि हमरो गाममे भऽ सकैए, तखन जँ हकारक बदला हकार देबै तँ की ओ थोड़े गौहाटीसँ औत, जँ कहीं अपने गामक पूजा जानि एबो करत तँ की अपन छोड़ि हमरा ऐठाम औत?

गुणानन्दक मन थकथका गेलइ। तखन? जँ आगू बढ़ि फलानन्द हाथ बढ़ौलक तँ हमरो उचित होइए जे हाथ बढ़ाबी, काल्हि दिन की हएत ओ काल्हिक भेल, मुदा आइकेँ तँ औझुका बुझि रक्षा करए पड़त। मन मानि विचारि लेलक जे गाइक काल्हि भोरुका जेते दूध हएत ओ लऽ लेब। एके काजसँ दुनू काज भऽ जाएत। कहबैन जे फलानन्द भाय, हमहूँ भगवतीएक अराधना लेल दूध अनने छी से..?

एक तँ गामक मेलाक धुमसाही, तहूमे अष्टमीक निशाँ पूजा दिन। थूको फेकैक फुरसैत फलानन्दकेँ नहि। मुदा काजक दौरमे जे समय भेटै तइमे गुणानन्दक हकार मनकेँ हौंर दइ। हौंर ई दइ जे गामोक लोक दुनियाँमे नाओं उजागर कऽ लइए, तहूमे मिथिला तँ मिथिले छी, जैठाम जनक सन राजा एक हाथ हवनमे दोसर छातीपर रखि शिव-शिव करैथ, तेतै ने हमरो जनम भेल अछि..!

मुदा काजक धुमसाही फलानन्दकेँ असथिरे ने हुअ दइ जे आगू-पाछूक विचार करितए। ओना विचार करै-जोकर बुधियो ने भेल छेलै कोइली जकाँ अखन कचेठे छेलइ। मुदा मनमे प्रश्न उठैक कारण भेल छेलै जे गौहाटीए स्कूलमे जनक जीक कथा पढ़ि नेने छल। ओना इतिहास पढ़ब पछुआएल छेलइ। जन, जनक जनकपुरक जानकीक माने नीक जकाँ नै बुझि पाबि सकल अछि।

एक परिवारसँ दोसर परिवारक बीच, तहूमे दोसर गामक,

सम्बन्ध सूत्र बनब तँ उचित छी, से बनैक समय आबि गेल, ओना मिड्ल स्कूलक संगी फलानन्द जरूर छी मुदा चारि सालक बीच कोनो सम्बन्ध नै रहल, ड्राइवरी लाइसेंस जकाँ सम्बन्धक थोड़े साले-साल रेनुअल करबए पड़ै छै, ऐठाम तँ मासे-मास दिने-दिन सम्बन्ध बनबो करैए आ बिगड़बो करैए...।

सम्बन्धक ओझरीमे गुणानन्द ओझरा गेल। स्पष्ट रस्ता नै देख बाबा लग पहुँच बाजल–

“बाबा, चारि साल पुरान एकटा संगी ऐठामसँ हकार आएल।”

कहि चुप भऽ गेल। चुप होइत देख सुखचन्द पुछलखिन–

“हकारक माध्यम की छल?”

गुणानन्द–

“मोबाइल।”

तैबीच सुखचन्दक मनमे विहाड़ि जकाँ झोंक उठि गेलैन, बिनु किछु सोचने कहि देलखिन–

“अखनी तूँ बाल-बोध छह, ने रोकब नीक हएत आ ने नै रोकब, जहिना बाल-बोध तूँ तहिना फलानन्दो अछि। ऐ बातकेँ एतै रहए दहक। मूल बात भेल नौमी पूजाक हकार।”

बाबाक मुहेँ ‘नौमी पूजाक हकार’ सुनि गुणानन्द खिखिरक बच्चा जकाँ आँखि-कान चौकन करैत, आगूक बात सुनैले तैयार होइत बाजल–

“की कहलिऐ नौमी पूजाक हकार?”

सुखचन्द–

“अपना ऐठाम सालमे चारि बेर दुर्गा-पूजा होइए। तीन-तीन मासपर।”

सालमे चारि बेर पूजा गुणानन्द पहिल दिन सुनने छल तँए घोदा-घोदे प्रश्न मनमे उठए लगलै। रंग-रंगक मौसम रंग-रंगक विचार। मुदा गुणानन्दक जिज्ञासा सुखचन्द गुणानन्दक चेहराक सुर्खीसँ अंदाजि लेलैन। बजला–

“जाड़क मौसमक अन्त भेला पछाइत ‘चैती दुर्गा’ होइए, तहिना गरमी मौसमक पछाइत, ‘अखाढ़ी’, तहिना बरसाती मौसमक पछाइत ‘शारदीय’ आसीन मासमे होइए मुदा चारिम गजपट अछि। अखन बेसी बात नै कहबह। छुच्छे हाथे नै जइहऽ, किछु सनेस नेने जइहऽ।”

गुणानन्द–

“अपनो विचार अछि जे खुटापर गाए अछि भिनसुरका दूध नेने जाएब।”

“बड़बढ़ियाँ।”

बड़बढ़ियाँ सुनिते गुणानन्दक मनमे खुशी भेल। मन कौल्हुका काज दिस बढ़लै। बढ़लै ई जे चारि सालक हराएल संगीसँ भेँट हएत। मनुखोक जिनगीक खेल अद्भुत अछि। दुनू गोरेकेँ बेर-बेर, दिनमे पचीसो बेर भेँट भेलो पछाइत सम्बन्धमे मजगूती अबै छै आ सालो-सालक पछाइत भेँट भेलापर जेना बीचला सभ समय सरपट बनि पैछला-ऐगला सपाट बनि गाछक गीरह जकाँ नव कलशक संग कलैश जाइ छै..!

बड़बढ़ियाँ कहला पछाइत सुखचन्दक मन हुमरलैन। मन हुमरलैन ई जे अनेरे दूधक सनेसकेँ ‘बड़बढ़ियाँ’ कहि देलिऐ। चैत मास छी, मौसमक अनुरूप सभ कथुक गुण-धर्म बदलै छइ। जँ से नै बदैलते तँ किए कहियो दूधक प्रसाद तँ कहियो दही-कदवाक प्रसाद बनैए? चारू भगवतीक पूजा रहितो चारू मौसममे चारि रंगक फूल, चारि रंगक फल इत्यादि बदैल जाइए? मुदा कहबो केकरा कहबै।

मैट्रिकक बच्चाकेँ जँ सिलेबससँ बाहरक बात कहबै तखन तँ अपन सिलेबसक बात छूटि जेतै, जँ नहियोँ छूटतै तँ कहैक रस्ता बदैल जेतइ। तखन ओ केना स्कूल-कौलेजक परीक्षा पास कऽ सकैए। वएह ने बुधिक मानदण्ड तैयार करैए। सुरूजक नौमीक पहिल लाली पसैर गेल। फलानन्द अपन औझुका कार्यक्रमक विचार करए पिता लग पहुँच बाजल–

"बाबू, गामक तँ पहिल पूजा छी, आन गामक जँ देखनौं हएब तँ नीक जकाँ नहियेँ देखने हएब, तखन तँ जैठाम[4] रहै छी तैठामक तँ साले-साल देखबो करै छिऐ।"

बेटाक सह पाबि सुशील धमैक बजला–

"देखबे किए करै छी। अपन बाड़ीक[5] जे पूजा होइए ओइ समितिक एकटा काजकर्ता छीहे। ऐ बेर कहि कऽ आएल छी जे जाबे छी तैबीचक जे काज अछि तइमे संग रहब, पछाइत गाम चलि जाएब। मुदा..?"

समैक गतिकेँ देखैत फलानन्द बाजल–

"बाबू, अखन एतए-ओतक[6] विचार करैक समय नै अछि। किछुए-कालक पछाइत पाहुन-परक, दोस-महीम, हित-अपेछितक आगमन हुअ लगतैन। तँए पहिने अखैन तइले विचार करू।"

बेटाक काजक ललक देख सुशीलक छाती चहैक गेलैन। मनमे खुशीक मोती खसलैन। बजला–

"बौआ, एकाधक लेल ने लोक एक-आध ओछाइन-बिछानिक आकि ठहरैक ठौर लगबैए, मुदा गामक पाबैन छी तहूमे उष्ममासी छी,

[4] गौहाटी
[5] महल्लाक
[6] गाम-गौहाटी

जहिना हवा-विहाड़िक कपाट खुजल रहत तहिना पानि-पाथरक, तँए नीक हेतह जे किछु अगुरवारे बैस बेवस्था कऽ लेब।"

फलानन्द कहलकैन–

"जाइ छी, एकटा समेनाक सभ बेवस्था केने अबै छी।"

"तइले जाइक कोन जरूरत, भड़ो बुझले छह फोन कऽ दहक, अपने गाड़ीपर सभ किछु नेने पहुँच जेतह।"

काजक ढंग बदलने समैक बचत सेहो होइते छइ। तत्-खनात आगूमे कोनो काज नै देख फलानन्द बाजल–

"बाबू, ओना तँ मेला छी, हवा-विहाड़िक समय छीहे तेतबे किए, गामक मेला छी, सभकेँ कि एके रंग ओकाइत छै जे भगवतीक दर्शन एके रंग करत। तँए किछु नव वस्त्र सेहो भगवतीकेँ चढ़ैबतिऐन।"

सुशील बजला–

"भगवतीक तँ खोंइछ भरले जेतैन। मुदा एकटा बात जे कहए चाहै छेलियऽ ओहो सुनि लएह। अपना ऐठाम दस दिनक पूजा-प्रक्रिया अछि जखन कि गौहाटीमे तीन दिनक। ओतए बंगाली पद्धैतक अनुरूप पूजा होइए। से गौहाटीए टामे नै, पूर्वांचलक बंगाल, बंगला देश, त्रिपुरा, मेघालय, असाम इत्यादि क्षेत्रमे होइए आ अपन मिथिला जे बिहारक पनरह-बीसटा जिला आ नेपालक किछु जिला अछि...।"

बजैकाल तँ सुशील बाजि गेला मुदा बिच्चेमे मन कहलकैन, अखन फलानन्दक उमेरे की भेल जे ई सभ बूझत।

तही बीच समेनाक गाड़ी आबि गेल।



तिथि : 03 अप्रैल 2014, शब्द संख्या : 1119

फोंक मकड़

किशोर आ किसलय मिथिला युनिवर्सिटीक एम.ए.क छात्र। भूगोलक छात्र किशोर आ संस्कृत साहित्यक किसलय। एके कौलेजक दुनू छात्र। छह सालक बीच दुनूमे एहेन सम्बन्ध बनि गेल जे जाति-पाँजि बुझैक खगते ने रहलै। एक कोठरीक बास, एक वर्तनक बनल भोजन, एक सुराहीक पानि सम्बन्धकेँ आरो गतिगर बना देने। जइसँ आन तँ आने जे अपनो दुनूक बीच गाम-घर हेरा जाइ। ओना दुनूक घर गंगाक दुनू भाग, एक 'मिथिलांचल' दोसर 'मगह' मुदा सम्बन्ध तेहेन बनि गेल जे उत्तर-दच्छिनक बान्ह ढील भऽ गेल। साले-साल दुनू गोरे बेरा-बेरी अपन-अपन इलाकाक दर्शनीय जगह सेहो देखैत आएल, जइसँ देवघरसँ राजगीर आ जनकपुरसँ कोसी-कमला घाट तकक भ्रमण संगे कऽ नेने छल। सैयो छात्रक बीच दुनूक अपन सम्बन्ध बनल छल तँए दोसरकेँ बेसी खोदो-वेद करैक खगता नहियेँ जकाँ रहए। रहबो किए करतै, सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै, जिनगीक लीलसा छै आ लीलसाक काज छइ। जँ से नै रहत तँ खाली टोंटाक छुच्छे अवाजसँ कथी हएत...।

छठम बर्खक अन्तिम समय आबि गेल। किछुए दिनक पछाइत एम.ए.क परीक्षा शुरू हएत जे डेढ़ मास धरि चलत। परीक्षाक पछाइत दुनू अपन-अपन जिनगीक मोड़पर सँ मुड़ि घर-परिवार दिस बढ़त...।

दसम दिनसँ परीक्षा। कोठरीमे किशोर आ किसलय बैस अपन-अपन डायरी उनटबैत रहए। उनटबए ऐ दुआरे लगल रहए जे केकरा ऐठाम किताब अछि वा केकर किताब अनने छिऐ, केकर पैंच-उधार छै सभ फरिया लेब नीक हएत। जाबे धरि ऐठामक दाना-पानी छल, पुड़ेलौं। डायरी उनटबैत किशोरक नजैर चण्देश्वर स्थानक मकड़क मेलापर पड़ल। पड़िते चौंक गेल जे तीन सालसँ नियारैत आएल छी, अखनो पछुआएले अछि। तैबीच केते नव-नव काज आएल-गेल। डायरी उनटा कऽ रखि किशोर बाजल–

"पार्टनर, एकटा काज तीन सालसँ पछुआएल अछि, आब तँ सहजे परीछेक समय आगू अछि तँए..?"

तीन साल पछुआएल सुनि किसलयक मनमे खरोंच जकाँ भेल, खरोंच ई जे जखन सोझहामे अबैत काजकेँ निपटबैत गेलौं तखन तीन साल केना पछुआ गेल। मुदा बिना काजक चर्च भेने किछु विचारलो तँ नहियेँ जा सकैए। पुछलक–

"कोन काज?"

किशोर–

"ओना हमरो नजैरसँ हटिये गेल छल मुदा डायरी उनटैबते धक दे मन पड़ल। चण्देश्वर स्थानक मकड़क मेला।"

किशोरक बातकेँ किसलय काट-खोंट करब नीक नै बुझलक जे तीन सालक काज पछुआएल किए। पहिल साल नियारैत-नियारैत बीति गेल, दोसर साल परीछे आबि गेल, तेसर साल तेहेन शीतलहरी भेल जे घरसँ निकलब कठिन भऽ गेल।

तीनू बर्खक सुढ़िआएल हिसाब देख किसलयक मन आइपर पड़ल। परसू पूस बीति रहल अछि पाँचम दिन रबि छी, मकड़क मेला रबियेकेँ होइ छै, तखन किए ने परीक्षासँ पहिने पुराइए ली। किए ओहू

वेचाराकेँ मनमे टँगल रहत जे मकड़क मेला नै देखलौं। बाजल–

"पार्टनर, संयोग नीक अछि दसम दिनसँ परीक्षा छी, तैबीच मकड़ोक मेला शुरू हएत। दुइए दिनक तँ बरदाहट अछि, शनिकेँ दरभंगासँ चलि गाम जाएब आ दोसर दिन जलधार करैत, मेला मनबैत साँझ धरि घुमि कऽ चलि आएब। बेसी दिन पहुनाइ करैक समेओ ने अछि जे बेसी समय गमाएब।"

जइ दिन किशोरो आ किसलयो कौलेजमे नाओं लिखबए आएल, तही दिन नाओं लिखौला पछाइत कौलेजक गेटपर दुनूक भेँट भेल। दुनू अनभुआर, मुदा इलाकाक रहने किसलय कम अनभुआर आ किशोर बेसी। नाओं लिखौला पछाइत डेराक खगता दुनू गोरेकेँ। मुदा अनभुआर जगहमे पुछबो केकरा करत। पुछबोक तँ जगह होइ छइ। एक-दोसरपर नजैर पड़िते, अपन बेथा-कथा कहैक मन दुनूकेँ भेल। मुदा अगुआ कऽ के बाजत। अपन सभ छान-पगहा तोड़ि किशोर बाजल–

"भाय, अहूँ नाओंए लिखबए आएल छेलौं?"

किसलय–

"हँ।"

किशोर–

"अहाँक घर अही इलाका छी?"

किसलय–

"हँ, मधुबनी जिला।"

किशोर–

"अहाँ तँ ऐ जगहक सरोकारी छी, केते लाट-घाट हएत, केतौ हमरो रहैक ओरियान कऽ दितौं?"

किशोरक प्रश्न सुनि किसलय गुम भऽ गेल। मनमे उठलै, केकरो रहैक ठौर, दरबज्जापर आएल पाहुनकेँ एक लोटा पानिक आग्रह, तहूमे बहरबैयाकेँ। गुमकी तोड़ि किसलय बाजल–

"चाहक दोकानपर चलू, चाहो पीब आ आगूक गपो-सप्प हेतइ।"

दोकानक बीचक बाटक बातमे विराम लगि गेल। चुपा-चुप धुपा-धुप दुनू गोरे चाहक दोकानपर पहुँचल। दोकानदारीक बेर उनैह गेल तँए गहिंकीसँ दोकान खाली। दोकानदार अपन बेरुका दोकान चलबैक गर लगबैत रहए। दोकानसँ कि सभ आनए पड़त, खर्चक हिसाब जोड़ि पुरजियो आ रूपैओक हिसाब बैसा लेलक। दोकानमे किशोर आ किसलयक प्रवेश होइते दोकानदार दोकानक भार सुमझबैत बाजल–

"भैयारी, ताबे अहाँ दुनू गोरे बैसू, घन्टा भरिमे दोकानक काज केने अबै छी, तखन चाहो पीआ देब। तैबीच जँ पिआस लगल हुअए तँ बाल्टीनमे पानि अछि पीबू।"

एक तँ बजरूआ दोकान, केकरा ओते पलखैत छै जे दोकानपर बैस गप करत आकि दोकानदारे बैसए देतइ। मुदा से नै, दोकानदारो एहेन जे अनठियाक हाथमे घन्टा भरिक खातिर दोकाने सुमझा देलक।

किशोर बाजल–

"भाय, हम तँ सभ तरहेँ अनभुआर छी, जेकरो संग कोनो लेन-देनक गप करब, बोलीसँ परेखि अनठिया बूझत। चिन्हार-अनठियामे तँ किछु अन्तर भाइये जाइ छइ।"

मुड़ी डोलबैत किसलय बाजल–

"हेबे करै छइ।"

किशोर–

"अखन अहूँ विद्यार्थी छी हमहूँ छी, विद्याध्ययन ले एलौं अछि, ओना असगरोक डेरा होइ छै, मुदा असगरूआ नै बनए चाहै छी, तँए नीक हएत जे दुनू गोरे एकेठाम रहितौं?"

किशोरक विचारकेँ मानितो किसलयोक संग समस्या रहइ। समस्या ई जे किशोर आन इलाकाक अनभुआर आ अपने इलाकाक अनभुआर छी। जखन गामक लोक गामक बातसँ अनभुआर रहैए तखन आन-गाम तँ सहजे आने गाम भेल। तही बीच चाहक दोकानदार आएल। सभ सामानक खल लगबैत दुनूक बीच आबि बाजल–

"घन्टा भरिसँ ऊपरे दोकानक ओगरवाहि दुनू गोरे केलौं अछि, चाह अपना दिससँ पीआएब।"

चाहक आश जेना दुनूक मनमे आस मारलक। पानि पीलौं, चाह पीब, एतेकाल बैसलौं। किसलय बाजल–

"भैयारी, दुनू गोरे कौलेजमे नाओं लिखेलौं हेन, बाहर रहै छी, एकटा डेराक भाँज केतौ नै अछि?"

'डेरा' सुनि दोकानदार आरो गम्भीर भऽ गेल। बाजल–

"दरभंगामे आएल राही-बटोहीकेँ जँ हम सभ पनाह नै देबै तँ आनठामक देलासँ हेतइ। पहिने चाह पीबू, जहाँ धरि सम्भव हएत, संग पुरब।"

दोकानदारकेँ अपने भाड़ाक दूटा कोठरी, जइमे एकटा खाली। ओना तीन-चारि गोरेक अँटावेश भऽ सकै छै मुदा दू गोरे अलि-फलिसँ रहि सकैए। चाहक गिलास दोकानदार दुनू गोरेकेँ हाथमे धड़बैत, अपनो चाहक चुस्की लैत बाजल–

"भैयारी, जिनगीक कमाइ एकटा घर अछि, तहूमे बजरूआ घर छी, एक तँ चाहक दोकानदारकेँ घर-बाहर चुल्हिए-चुल्हि रहैए तँए ओहू घरक काज ओते नहियेँ रहैए।"

किशोर–

"भैयारी! ने चाहक दोकानदार सभ गहिंकीकेँ एकरंग खुश कऽ सकैए आ ने भाड़ादार। प्रश्न अछि केहेन घरक विद्यार्थी रहत। केहेन घर अछि?"

किशोरक बात सुनि दोकानदारकेँ अपन काजक सिनेह बढ़लै। बाजल–

"भैयारी, ओना छोट-छोट दोकानदार आ उट्ठा करबारी सभ भाड़ामे घर मंगैए, मुदा अपना मनमे परपन नै होइए। जेहने भाड़ादार रहत तेहने ने धियो-पुतो सीखत।"

किसलय–

"देखू, हम सभ पढ़ैले रहब, किछु दिनक पछाइत चलिये जाएब, तँए डेरा नीक हुअए?"

दोकानदार–

"की नीक?"

किसलय–

"एकान्त जगह होइ। एहेन नै होइ जे जैठाम वीणाक तारपर स्वर साधना होइ आ बगलमे लोहाक घन चलैत रहइ।"

अपन एकांत जगह पाबि दोकानदार बाजल–

"एक तँ ओहिना अपना तीनियेँ गोरेक परिवार अछि। दुनू परानी चाहेक दोकानक जोगाड़मे रहै छी, सात-आठ बर्खक बेटा अछि, चाहै छी जे ओकरा कौलेज तक पढ़ाएब। अपने जे करै छी से

करै छी मुदा बेटाकेँ मनुख बना ठाढ़ कऽ दिऐ, बस भऽ गेल अपन जिनगीक खेल।”

किशोर–

“चलू, तखन पहिने डेरे देख लेब। जँ रहैक गर लगि जाएत तँ परसुए किए ने चलि आएब।”

टोलक बीच दोकानदारक घर। गोटि पङ्गरा पक्का घर नै तँ केकरो पजेबाक देबालपर एस्वेस्टस आकि खपड़ा तँ केकरो माटिक देबालपर खढ़क छार। तीन कोठरीक संग नहाइ-धोइक सभ बेवस्था केने।

कोठरी पसिन करैत किसलय बाजल–

“खाइ-पीबैक बेवस्था?”

दोकानदार बाजल–

“जँ अपने गामसँ चाउर-दालि आनि भानस करी सेहो बढ़ियाँ, नै तँ महिनवारी हिसाबसँ बनाइयो दइले कहब सेहो बढ़ियाँ।”

‘चाउर-दालि’ सुनि किशोर बाजल–

“आब ओ जुग-जमाना रहल जे लोक गामसँ चाउर-दालि बजार आनत। गामेमे किए ने बेचि ऐठाम कीनि लेत। एते दिन एहेन छेलै जे लोक बजरूआ चाउर-दालिकेँ दब आ घरैयाकेँ नीक बुझै छल आब से सभ थोड़े रहल। जाँतक तरका तरोटा जकाँ गाम अखनो कीलमे गराएले अछि, खेबा-पीबाक सामानसँ बजार भरि गेल अछि।”

ओही दोकानदारक घरमे दुनू गोरे (किशोर आ किसलय) छठम् बर्खक उतारमे पहुँच गेल।

शुभ काजमे बिलम नीक नै बुझि दुनू गोरे शनि दिन डेरासँ निकैल गाम विदा भेल। रस्तामे किसलय बाजल–

“पार्टनर, माघक सभ रबिकेँ मकड़क मेला होइ छै, एक तँ ओहिना माघ मास तैपर लोक भोरेसँ नहा-नहा भोला बाबाक जलधार करै छैथ। मकड़क सटले पनरह फागुनकेँ शिवरातिक मेला सेहो होइए।”

‘मकड़’ आ ‘शिवराति’ सुनि किशोर पेटक बात पेटेमे रखि चुपे रहल। दसे दिन बीचमे समय अछि तखन अनेरे डेढ़ मासक बात विचारब नीक नहि। जे अछि तहीमे ने अँटावेश करैक अछि। अँटावेश नै देख किशोर बाजल–

“आब आगूक बात छोड़ू। कल्हुका मेला देख, मनकमना पुरा लेब।”

किसलयक गाम। पिता दू भाँइ, एक भाँइ गिरहस्ती करैत दोसर हाइ स्कूलक शिक्षक। आन गामक स्कूल रहने गौरीनाथ बाहरे रहै छैथ, मुदा बाल-बच्चा आ परिवारकेँ गाममे रहने अठवारे शनिकेँ गाम आबि जाइ छैथ। ओना किशोर आ किसलय गौरीनाथसँ पहिने पहुँच गेल छल मुदा साँझ पड़ैत गौरीनाथो पहुँच गेला।

दोसैर साँझमे दरबज्जाक ओसारक चौकीपर तीनू गोरे किशोरो, किसलयो आ गौरीनाथो बैसला। चाह-पान भेल। चाह पानक पछाइत गौरीनाथ किशोरकेँ परिचय पुछलैन–

“बाउ, अहाँक परिचय?”

परिचय सुनि किशोर तारतम्य करए लगल जे परिचय की? ईहो भऽ सकैए जे किसलयक संगी छी। मुदा संगीक की माने? की अपन नाओं, गामक संग पिताक नाओं कहिऐन? सभ अपरिचित, केना बुझता। लगले मनमे उठलै– अपन भाषा अपन सोभाव आ अपन जिनगी। मगहीमे अपन परिचय दैत किशोर बाजल–

“चण्देश्वर स्थानक मकड़क मेला सुनै छी, जखन ऐठाम छीहे

तखन मेला मेलक किए ने देख ली, तँए एलौं।”

गौरीनाथ बुझि गेला, मेलाक मेल सुनि बजला–

“बाउ, मनुखक रूप अनमोल छै, केना सिरजन, पालन आ संहार करैए से जानब असाध अछि, मेला तँ मेला छी पूजो होइए आ ताड़ी-दारूक दोकान सेहो रहैए। नीक आकि अधला बिनु देखने-सुनने बुझ्झो तँ नहियेँ सकै छी। भने समैपर चल एलौं, मकड़क समय आबिये गेल अछि।”

गौरीनाथक बात विरामक सीमानपर पहुँचलो ने छल आकि छोटकी बेटी राधा दोहरौनी चाह नेने पहुँचलै। मकड़क मेला सुनिते राधाक मन लुसफुसाएल। हाँइ-हाँइ चाहक गिलास सभकेँ हाथमे धड़बैत बाजल–

“बाबू, काल्हि मकड़ कहाँ छी?”

राधाक बात सुनि गौरीनाथो आ किसलयो-किशोर हिसाब जोड़ि मिलबए लगल, किए ने काल्हि मकड़क मेला हएत? बाल-बोधक बातकेँ केते बुझल जाए, ईहो तँ प्रश्न ऐछे। मुदा दस बर्खक बच्चा झूठो तँ नहियेँ बाजि सकैए। केकरो मुँहक सुनल बाजल हएत। जँ नै होइक कारण पुछबै, सेहो नीक नहि। जँ एतबे सुनने होइ जे कौल्हुका मकड़ नै हएत। मुदा चुपो-चुप रहब तँ नीक नहियेँ। एते तँ जरूर बाजत जे फल्लाँक मुहेँ सुनलौं...।

गौरीनाथ पुछलखिन–

“बुची, कौल्हुका मकड़ किए ने हएत?”

राधा–

“कौल्हुका फोंक अछि।”

‘फोंक’ सुनि किशोर मने-मन विचारए लगल जे ‘फोंक’ तँ मटर-

बदाम होइ छै, मेला केना ‘फोंक’ हएत! मखान फोंकला होइ छइ। ओना मटरो-बदाम दोहरी फोंक होइए। किछुमे दने ने भरै छै आ किछुकेँ पीलुए खा जाइ छइ। मुदा से तँ किछु ने बाजल..!

गौरीनाथ राधाकेँ कहलखिन–

“आँगन जा माएसँ पुछि आबह जे ठीके कौल्हुका मकड़ फोंक जाएत?”

माइक नाओं सुनि राधा जिद्द करैत बाजल–

“अपना टोलक बहुत गोरे मेला जाइले रहैथ, जखन भाँज लगलैन जे कौल्हुका ‘फोंक’ जाएत, तखन ऐगला मकड़ देखैक विचार केलैन।”

किसलय–

“किशोर भाय, अहिना धोखा-धोखी होइ छइ। एलहाक चिन्ता छोड़ू। जँ जिनगी बँचल रहत तँ केते अवसर भेटत।”

❍

तिथि : 10 अप्रैल 2014, शब्द संख्या : 1744

केते लग केते दूर

पैछला मासक पत्रिकाक अंकमे आभाक कविता 'केते लग केते दूर' छपलैन। ओना किछु पढ़निहार एहनो होइ छैथ जे पत्रिका हौउ आकि पोथी, शुरूसँ शुरू करैत अन्त करै छैथ आ किछु एहनो होइ छैथ जे पढ़ैसँ पहिने पत्रिका-पोथीकेँ उनटा-पुनटा पसिनगरसँ पढ़ब शुरू करै छैथ। रविन्द्रोकेँ सएह भेलैन। पत्रिकाकेँ उनटैबते आभाक कवितापर नजैर गड़ि गेलैन। कविताकेँ पहिने लड़ी-कड़ीक दृष्टिसँ पढ़लैन। पछाइत झड़ीक दृष्टिसँ पढ़ब विचारि लेला। लड़ी-कड़ीमे केतौ कोनो बेवधान नै बुझि पड़लैन, मुदा झड़ीमे वौआ गेला...।

आभा अपन परिवारक वृत्त बनौने छेली जखन कि आभाक संग जे रविन्द्र अपन जिनगी बितौने छला, से भाव पकड़ा गेलैन। कविता पढ़ि रविन्द्रक मुहसँ अनायास निकललैन–

"सचमुच आभा दूर चलि गेल आकि..?"

चालीस बर्ख पूर्व रविन्द्रकेँ आभासँ भेँट भेल। सेहो ओहिना नै, मोटर साइकिलक एक्सिडेन्टक पछाइत। हाइ स्कूलक एगारहम कक्षाक छात्रा आभा, मोटर साइकिलसँ तरकारी बजार जाइ छलि, अनासुरती मोड़पर साइकिल सवार रविन्द्रकेँ गाड़ीक धक्का लगि गेल। जइसँ साइकिल सहित रविन्द्र सिमटीक सड़कपर खसि पड़ल। दहिना

बाँहिक कौहनीक जोड़ छिटैक गेल!

एक्सिडेन्ट भेला पछाइत जहिना लोक हाथ-पएर उठा-उठा देखैए जे टुटो-फाट भेल आकि चोटेटा लागल, तहिना रविन्द्रो पहिने डेन उठा देखैत रहए आकि बिच्चेमे आभा मोटर साइकिल रोकि लग आबि रविन्द्रकेँ पुछलक–

"देहमे दर्द बेसी तँ ने अछि?"

दर्द पुछैक कारण आभाक छल जे जेते बेसी दर्द तेते नमहर चोट। आभाक बाजब सुनि रविन्द्रक मन अपन चोटसँ बहैट आभाक चेहरापर लटैक गेल। शरद ऋृतुक गुलाब जकाँ कण-कण करैत आभाक चेहरा। ओना रविन्द्रक नजैर आभाक रूप-लावण्यपर पड़ल मुदा आभाक नजैर दोसर दिस छल। दोसर दिस ई जे आभा अपनाकेँ अपराधिनी बुझि सेवाक विचारसँ आएल छल। मनमे नचै छेलै जे ओना केहनो अपराधक वा नीच काजक पैतकार हटिये कऽ कएल जाइ छै मुदा जँ अपराधक वा नीच काजक पैतकार सर-जमीनपर केला पछाइत जे दर्द भरै छै ओ बेसी नीक होइ छइ।

बिनु बुधि-विवेकक जहिना मोटर साइकिल तहिना साइकिल। तैबीच जँ भिड़न्त भेल तँ भेल। सम्भवो अछि, जँ चलौनिहारक नजैर केम्हरो दोसर दिस रहल होइ वा ब्रेक ढील पड़ि गेल होइ। चोटसँ जँ शरीरक कोनो अंग-भंग भेल हएत तँ ओकर पैतकार कएल जा सकैए। जइसँ जेतए जेते धरि सम्भव हएत, तेतए तेते धरि पूर्व रूप बनि सकइ। रविन्द्रक हाथ पकैड़ आभा उठौलक। जइ बाँहिक जोड़ छिटकल छल ओकरा उठैबते रविन्द्र किलकारी मारलक। किलकारी सुनि आभा बुझि गेल जे भरिसक बाँहि टुटि गेल छइ। फुलब सेहो शुरू भेल। मने-मन आभा निश्चय केलक जे रविन्द्रकेँ अस्पताल लऽ जाएब नीक हएत। मुदा अपन गाड़ी आ रविन्द्रक साइकिल केना

जाएत। पहिने लगक दोकानदार लग जा आभा बाजल–

"एक्सिडेन्ट भऽ गेल अछि, अस्पताल जाएब जरूरी अछि, तँए अहाँ साइकिलो आ गाड़ियोकेँ देखैत रहब।"

कहि दोकानक आगूमे साइकिलो आ गाड़ियो आनि ठाढ़ कऽ देलक आ रिक्शापर रविन्द्रकेँ अस्पताल लऽ गेल। जाँच-पड़ताल भेला पछाइत कौहनी-जोड़क प्रश्न उठल। सम्पन्न परिवारक आभा, पाइक परवाह नहि। डॉक्टरकेँ कहलक–

"डॉक्टर साहैब, जेते बढ़ियाँ आ जेते जल्दी नीक होइ, से उपय करि दियौ।"

सुइया-दबाइक संग पलश्तर भेल। अस्पतालक चरपाइपर एक भाग रविन्द्र पड़ल आ एक भागमे आभा बैसल। तैबीच आभाक पिता कोर्टमे एक्सिडेन्टक समाचार सुनलैन। नीक ओकील दिवाकर बाबू। एक्सिडेन्ट सुनि बिच्चेमे कचहरीसँ अस्पताल विदा भेला।

ओना दिवाकर बाबूक गिनती नीक ओकीलमे छैन, भलेँ पहिनेसँ आब कमाइयो कमि गेल आ जेहो सभ नीक कहै छेलैन सेहो सभ अधले कहए लगलैन अछि। तेकर कारण भेलैन जे अपन पत्नी मुइने बाल-विधवासँ बिआह कऽ नेने छला। अपन पुश्तैनी सम्पैत सेहो आ कमाइयोसँ दरभंगेमे भारी-भरकम मकान बनौने छैथ। जाति-बेरादरीसँ खान-पान टुटि गेलैन, समाजिक सम्बन्ध ढील भऽ गेलैन। मुदा तेकर मिसियो भरि गम नै छेलैन। आभा पहिलुका पत्नीक सन्तान, मुदा परिवारमे कोनो दूजा-भाव नहि।

अस्पताल पहुँच दिवाकर बाबू रविन्द्रकेँ पुछलखिन–

"बाउ, की नाओं छी आ केतए रहै छी?"

दर्दक पीड़ासँ रविन्द्रक बकार असोथकित छल, तैयो बाजल–

"रविन्द्र नाओं छी, रामपुर रहै छी।"

"ऐठाम की करै छी?"

"आइयेमे पढ़ै छी, होस्टलमे रहै छी।"

दिवाकर बाबूक मन नाचि उठलैन, ऐठाम कियो आन देखैबला नै छइ। नीक हएत जे अपने ऐठाम लऽ जा देख-भाल करब। डॉक्टरक विचारसँ रविन्द्रकेँ अपना ऐठाम लऽ गेला। आभाकेँ देख-भाल करैक भार सुमझा देलखिन।

मास बितैत रविन्द्रक पलश्तर कटल। कौहनी जुटि गेल। अखन धरि सभ दोख आभापर छल, किएक तँ आभाक गाड़ीसँ धक्का लगल छेलइ। मुदा मने-मन रविन्द्र बुझै छल जे गलती हमरे अछि। गलती ई जे कुसाडि चलबै छेलौं। जेकरा प्रकट केने पाशा बदैल जाएत तँए चुपे रहल।

पाँच बजेक बेरुका समय, दिवाकर बाबूकेँ देखते रविन्द्र बाजल–

"चाचाजी, अपने लोकैन बहुत सेवा केलौं, काल्हि चलि जाएब।"

ओना रविन्द्रक प्रश्न दिवाकर बाबूसँ छेलैन तँए आभा बीचमे किछु बाजए नै चाहैत। दिवाकर बाबूकेँ आभा छोड़ि दोसर सन्तान नै, समटल परिवार, तीनियेँ गोरेक। दिवाकर बाबू किछु बजैसँ पहिने आभापर नजैर देलैन। नजैर दइक कारण छेलैन आभाक विचारकेँ पढ़ब। आभासँ एक्सिडेन्ट भेल, इलाज भेल, की आभाक मन मानि रहल अछि जे परतबएक पैतकार भऽ गेल आकि किछु औरो बाँकी अछि। पिताक नजैरसँ नजैर मिलते आभा बाजल–

"बाबूजी, रविन्द्रकेँ अपने ऐठाम रखि लिअ। अखन धरि चोटक इलाज ने भेल, मुदा चोटाएलकेँ उठाएबे ने मनुखता भेल।"

मुस्की दैत दिवाकर बाबू अपन सहमति दऽ देलखिन।

दोसर दिन होस्टलसँ रविन्द्र अपन सभ सामान लऽ आभाक संग चलि आएल।

समय बीतल। छह मासक पछाइत रविन्द्र गाम आएल। परिवारमे केकरो रविन्द्रक दुर्घटनाक जानकारी नहि। ने रविन्द्रे जानकारी देने आ ने कियो आने। जहिना रविन्द्रक जानकारी परिवारकेँ नै तहिना परिवारोक जानकारी रविन्द्रकेँ नहि। ओना रविन्द्रकेँ पढ़ाइक खर्च परिवारसँ आएब बन्न भऽ गेल मुदा दिवाकर बाबूक बेवस्थासँ कोनो अखर नै होइ छेलइ।

गाम अबिते रविन्द्र परिवारक रूप बदलल देखलक। जैठाम सिनेह-सिंधुमे परिवार-जन हरिदम डुमल रहै छल तैठाम अनोन-बिसनोन बुझि पड़लै। जेना केकरोसँ केकरो लागिये नहि। सभ बेलागिक।

रविन्द्रक पिता दू भाँइ, एक भाँइक बेटा रविन्द्र आ दोसर भाँइकेँ तीन बेटा, नगेन्द्र, महेन्द्र आ सत्येन्द्र। नगेन्द्र जेठ, तँए पिताक मृत्युक पछाइत घरक गारजन बनि गेला। दुनू परानी नगेन्द्र विचारलैन जे रविन्द्रकेँ सम्पैतसँ बेदखल कऽ देब। बेदखलो करब बड़ कठिन नहियेँ। ने जमीनक भीर जाए देब आ ने घरक किछु देब, तैपर सँ कोर्टमे दू-चारि कित्ता मोकदमा कऽ देब। बाल-बोध रविन्द्र छोड़ि कऽ पड़ा जाएत। मुदा नगेन्द्रक विचारकेँ महेन्द्र आ सत्येन्द्र मानैले तैयार नहि। ओ दुनू भाँइ रविन्द्रकेँ पैत्रिक सम्पैतक आधा-अधीक हिस्सेदार बुझैत। एक तँ ओहुना केकरो बेइमानी करब नीक नै, तैपर एक बंशक बीच करब तँ आरो नीक नहियेँ...।

आठे दिनक पछाइत रविन्द्रक मन गामसँ उचैट गेल। बिना केकरो किछु कहने दरभंगा चलि आएल।

जहिना रविन्द्र नीक विद्यार्थी तहिना आभो। दुनूक बीच कवि हृदय। ओकील साहैबकेँ अपने तेते काज जे परिवार दिस नीक जकाँ देख नै पबै छला। मुदा एते रविन्द्रकेँ कहि देलखिन–

"रविन्द्र, आभोकेँ पढ़ा देबइ।"

साल भरिक पछाइत आभो मैट्रिक पास केलक आ रविन्द्रो आइ.ए. पास केलक। कविता लीखब दुनूक पढ़ाइसँ जुड़ि गेल। दुनूक चिन्तनधारा एक रहने भावधारक लड़ी-कड़ी मिलैत-जुलैत। सोझे मिलबे नै करैत, शब्दक गढ़ैन आ भावक गढ़ैन सेहो मिलैत-जुलैत।

एम.ए. पास केला पछाइत रविन्द्र परिवारक उलझनसँ हटि हाइ स्कूलमे नोकरी शुरू केलैन। दू सालक पछाइत आभा सेहो एम.ए. पास कऽ महिला कौलेजमे शिक्षिका बनली। ओना दिवाकर बाबूक इच्छा जे रविन्द्रकेँ अपने ऐठाम रखि आभाक संग बिआह करा देब। मुदा जातिक दूरी बीचमे टाट लगौने छल। तहूमे जाति-समाजक ओझरी सेहो लगले छेलैन।

किछु दिनक पछाइत रविन्द्रो आ आभोक बिआह अपन-अपन बेरादरीमे भेल। दरभंगासँ हटला पछाइत रविन्द्र दोहरा कऽ घुमि आभा ऐठाम नै आएल।

समय बीतल। आभा शिक्षिकासँ प्राचार्य बनि सेवा निवृत्ति भेली, रविन्द्र सेहो भेला।

परिवारक उलझन तेना उलैझ गेल जे रविन्द्र अपन दरमाहापर अपन परिवार ठाढ़ केलैन। गामसँ हटि, दोसर गाममे। अपन घराड़ी कीनि घर बना रहए लगला। ओना वृत्तिये रविन्द्र शिक्षासँ जुड़ल रहला, मुदा सृजनक काज ढील पड़ि गेलैन। हृदैमे संवेदना रहितो किछु रचि नै पबैथ, मुदा आभाक सृजन क्रिया आगू बढ़ल, बहुत आगू बढ़ल। अनेको कविता संग्रहक संग महाकाव्य सेहो रचली।

पत्रिकाक कविता- 'केते लग केते दूर' पढ़ि रविन्द्र मने-मन विस्मित होइत आभाक जिनगी देखए लगला। बेर-बेर मनमे उठैत रहैन जे जइ आभाकेँ हाथ पकैड़ कहियो पढ़बै-लिखबै छेलौं, आइ ओ केते दूर चलि गेल!!

○

तिथि : 14 अप्रैल 2014, शब्द संख्या : 1252

अभिनव अनुभव

अनचोकेमे लाल बाबाक प्राण छूटि गेलैन, मरि गेला। अपनो अनचोकेमे रहला आ परिवारोक सभ सएह रहल। बाधमे रही, गहुमक जजात देख मन झुझुआ गेल रहए। झुझुआ ऐ दुआरे गेल रहए जे पौरु साल अगते नवम्बरमे हाइब्रिड बीआ, नीक खाद भेट गेने, गहुम उपजबैक पुरस्कार अनुमण्डलमे भेटल रहए मुदा ऐबेर बितैत कातिक तेहेन बर्खा भेल जे पैछला हालकेँ तीन मास आरो बढ़ा देलक। किसान छी गहुमक खेती नै करब तँ अपने की खाएब आ गाए-बरद लेल भुसी केतएसँ औत। अचताइत-पचताइत पूसमे गहुम बागु केलौं, शीश निकैलते तेहेन पछिया रमकल जे दूधे सुखि गेल, दाना भरबे ने कएल।

अपने अनचोकेमे लाल बाबा ऐ दुआरे रहला जे गंगाकातक नवका परोड़ कीनि आँगन पठा कहने छेलखिन–

"नव बर्खक नव तरकारी छी तँए थोड़े तड़ि लेब आ थोड़केँ रसदार तरकारी बना लेब, तहूमे अखन नवका संगी अल्लू आबि गेल अछि, अँचार तँ चटपटमे नै बनि सकत, मुदा पका कऽ आकि उसैन कऽ सन्ना-चटनी तँ बनि सकैए। सन्ना चटनी ऐ दुआरे जे बिना लोढ़ी सिलौटसँ नै बनत। सन्ना तँ सानि कऽ, गुड़ि कऽ हाथसँ बनौल जाइ छइ।"

कहि माल-जालक नेकरममे लगि गेला। खेबाक समय भऽ गेल, अपनो नहाइक विचार करिते रहैथ आकि बिच्चेमे प्राण छूटि गेलैन, मरि गेला। आगू अबैबला थाड़ीए उनैट गेलैन।

ओना बाधेमे उड़न्ती सुनलौं, मुदा सभ उड़न्ती ने उड़न्तीए होइए आ ने सचे। अपनो मन अदहा-छिदहा भऽ गेल। घर दिस विदा भेलौं। रस्तामे हुअए जे झूठे कियो बाजल जे लाल बाबा मरि गेला। मुदा बिना अपना चश्मे देखने झूठ-सच केना मानब। फेर मनमे भेल जे जँ मरिये गेल हेता तँ कइए कि सकै छी। फेर भेल जे आन दस-दस साल ओछाइन धेने मरै छैथ, से कहाँ भेलैन! तखन जरूर नै मरल हेता।

घरपर अबिते देखलौं जे लोकक करमान लगल अछि, अवाजसँ मृत्यु घोषित भऽ गेला, जइसँ लोक अपन-अपन बेथा-कथा कानि-कानि प्रकट कऽ रहल छैथ। दादी सेहो लगमे बैस कानि-कानि बाजि रहल छेली–

“मरै बेर किछु कहलैन नै..!”

दादीकेँ पुछलयैन–

“दादी, बाबा किए एना अनचोकेमे मरि गेला?”

बजली–

“यएह नै बुझै छी जे एहनो मरब होइ।”

❍

तिथि : 16 अप्रैल 2014, शब्द संख्या : 326

खोंटकर्मा

करिया कक्काक देहमे जेते रुइयाँ नै, तइसँ बेसी नाओं छैन। रंग-रंगक नाओं। कियो ‘करिया काका’ तँ कियो ‘करिया भैया’, कियो ‘करिया घोड़ा’ तँ कियो ‘करिया हाथी’, कियो ‘करिया गाए’, कियो ‘करिया बाघ’ तँ कियो ‘करिया बिलाइ’ कहै छैन...।

एते रंगक नाओं ओहिना थोड़े छैन आकि तइ पाछू कारणो छैन। कारण छैन जे काजकेँ तेना उतारि जिनगी बनौने छैथ जे काजे सोझ कऽ देने छैन। काज सोझ भेने चालियो-ढालि आ बोलियो-वाणी सोझ भऽ गेल छैन जइसँ ने केकरो दोस बुझै छथिन आ ने दुश्मन। सभ सेर बरबैर।

जहिना छिड़ियाएल फुलवाड़ीक दुनियाँमे छिड़ियाएल फुलो आ फूलसँ फड़ैत फड़ो लुधकल रहैए, आ जे तकनिहार अछि ओ अपन फूल-फड़ ताकि रसो पीबैए आ सुगन्धो लइए, मुदा दुसनिहारो तँ दुसिते अछि। ओना अपन-अपन मरजी तँ सभकेँ अपन-अपन छइहे। जँ कियो अड़हुलकेँ सुगन्धित आ बेली-चमेली, जुहीकेँ ललगर-रंगगर कहत तँ कहत! तेकरा आन की करतै। परखनिहार ने परखत जे सुगन्धित बेली, चमेली, जुही होइए आ रंगगर अड़हुल...।

घरसँ निकैलते जखन कियो करिया कक्काक सोझ पड़ै छैन तँ बुझले काज-बात जकाँ पुछि दइ छथिन–

“तोहर गाए पाल खेलकह की नहि?”

कक्काक अमृत बोल किए ने मलकारकेँ नीक लगतै। अपन बिवसता देखबैत कहबे करै छैन–

“खोराकी तिरोटक दुआरे गाए ठाँठ भेल जाइए, की करबै?”

“हाय रे पुरुख! गाए ठाँठ भेल जाइए आकि जिनगी ठाँठ भेल जाइए?”

मुदा निर्णायक दौड़ अबिते कक्काक विचार चढ़ि जाइ छैन। तहिना गामक आनो-आन अंगीतक संग होइ छैन। डेढ़-बर्खक बच्चा जहिना खसबो करैए, कनबो करैए आ चुप भऽ उठि कऽ ठाढ़ो होइए, जइसँ माए-बाप, दादा-दादी, भाए-बहिन रंग-रंगक नाओं रखि बच्चाक आनन्द उठबैए तहिना करिया कक्काक सोभावसँ गामक लोक अपन-अपन नाओं टेब रखि देने छैन। अपनो मन कहै छैन जे हजार नाओं, हजार हाथ आ हजार आँखि शुभ छी, अशुभ केना हएत।

फागुनक उतारक समय, परसुए फगुआ हएत। दरबज्जापर बैसल करिया कक्काक मन तेना फुला गेलैन जे हँसी उफैन गेलैन। ठहाका मारि हँसिते रहैथ, तखने पत्नीक नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते पत्नी पुछलकैन–

“कथीक ठीठीयैनी छी, केतौ किछु पेलौंहेँ की?”

पत्नीक प्रश्न करिया कक्काक हँसीक हँसेरीकेँ रोकए चाहलक, मुदा फुलाएल मन करिया कक्काक! बजला–

“फागुन कि कोनो दरिद्राहा मास छी जे किछु ने भेटत। रजमास छी, रजमास। एक तँ ओहिना जाड़ जड़ाइत जरि गेल, उनीक उलौल चद्दैर बिछा एअर कंडीशन समय बना देलक, तैपर तीसी फूलक माछी आम-जामुनक गाछ पकैड़ घरैयासँ बनरमाछी बनि जान बकैस देलक..?”

‘जान बकसब’ सुनि काकी बिच्चेमे टीपलकैन–

“असल मछिहारा समय आब औत कि चलि गेल!”

“नवका औत पुरना चलि गेल। अच्छा छोड़ू गाछ-बिरीछक गप ओ अकासमे अछि तँए अकासी भेल। माटिक तँ झूठ नै हएत?”

“नहि।”

“अच्छा अहीं कहू जे खरिहाँनमे जे केराउ-बदामक कौंटका ढेरियाएल अछि ओइसँ कोठी नै भरत?”

“हँ से तँ भरबे करत।”

“मकुआ जकाँ जे खेतक गहुम बनि गेल अछि, ओकर दुख किए ने बुझै छिऐ। वेचारा कानि-कानि कहैए जे अहाँक सेवा कएल छी तँए अहींक शरण धड़ब। तेहेन चण्डाल रौद-बसात आबि रहल अछि जे गरदैन पकैड़-पकैड़ छिड़िया देत। सेवाक फल मेवा होइते छै किने, एक पनरहिया ओरहा खुएलक, आब भुज्जा खुआएत। सुड़-सुड़, मुड़-मुड़ दुनू। कोनो कि चुड़ा छी जे एकभग्गु अछि। अखरा भूजि फकड़ा भुज्जा खाउ आकि पानिमे फुला भुजफुल्ला खाउ। तेतबे किए! गहुमक रोटी बदामक दालि खाउ आ हरीक गुण गाउ! ऐसँ बेसी वसन्ते की आ वसन्तीक धुनियेँ की।”

करिया काका परिवारक बाबा छैथ। चारि बेटा चारि पुतोहुक संग पोता-पोतीक सोरहा छैन्हे। जमगर परिवार। जेठुआ गरे जकाँ कक्काक उमड़ैत मेघ देख काकीक मनमे भेलैन जे अन्हर उठत आकि झाँट-पानि हएत आकि ठनका खसत से के कहलक। तँए नीक हएत जे पत्नी जकाँ सञ्च-मञ्च भऽ बैसबे नीक। किछु बरसता तखने ने कथुक जरूरत हएत। बिना बरखे छत्ते की आ बिना ठनके गोबरक ढेरीए की।

काकीक जमल आसन देख करिया कक्काक मन उमड़ैत

हुमड़लैन–

"परसुए ने फगुआ छी?"

एक तँ ओहिना कोनो पाबैनक नाओं सुनि काकीक मनमे समुद्री जुआरि आबि जाइ छैन तैपर फगुआक नाओं सुनि सुनामी उठि गेलैन। जेना बिनु बुधिक आदेशे हाथ-पएर उठि जाइ छै तहिना देहसँ बुधि धरि, काकीक मन फलैक गेलैन। मकै-लाबाक फूल जकाँ मुहसँ भड़भड़ेलैन–

"ऐँह, ओइ सालक फगुआ जे मचल रहए! मन अछि किने?"

पत्नीक बात सुनि करिया काका गुम भऽ विचारए लगला, ओइ साल-ऐ साल की? फगुआ तँ फगुआ छी। वसन्त रितुक मध्य मासक पुरणिमा दिन। ओना जाड़क भीजल-तीतल जड़ाएल सुरूजोक दिनक कूह फटि गेलैन। प्रकृतक संग तँ समैयेक धुनि ने धुधुआएत। रंग-रभससँ भरल फागु चैत चैताबरक आगवानी तँ करबे करत...।

बजला–

"बेरुका उतार आबिये गेल, जँ पाँचो दिन भाँग नै पीलौं तँ फगुआ पाबैनक मस्तीए की? कनी भाँगक जोगार करू।"

करिया काका ऊपरे-घारे रहैथ तँए अँगनाक भाँज नै बुझलैन, मुदा अँगनाक बहुसंख्यक भाँग पीब नेने आ धिया-पुता दिस बँटवारा होइत रहए। काकी उठि आँगन पहुँचते देखली जे धिया-पुता भँग-भोजमे लगल अछि। किए कोनो चेतनपर शंका करितैथ आकि चेतने मुँह फोड़ि कहितैन जे अँगनामे भँग-भोज भऽ गेल। मरदा-मरदी पछुआएल छैथ। मुदा काकीएकेँ कोन समुद्र उपछैक छेलैन जे हीरा-मोती तैकतैथ। लऽ दऽ कऽ एक गिलास भाँग पति लग पहुँचाएब छेलैन। मुदा सोझे गिलासमे लऽ गेने घटैक सम्भावना, एक तँ ओहिना जहर-माहुर भेल सेहो जँ अधपेट्टाक अजश हुअए से नीक नै बुझि

लोटामे दू गिलास भाँग आ गिलास नेने काका लग काकी पहुँचली। अँगनाक चुगली घरक गारजन लग करब काकी नीक नै बुझलैन। मुदा शिकारी जकाँ काका पुछलखिन–

"सभ कथुक ओरियान कएले छेलए?"

अनेरे 'हँ'केँ 'नै' आ 'नै'केँ 'हँ' बनबैमे लोक तीस-तीस बरिस, चालिस-चालिस बरिस कोट-कचहरी रेडैत रहैए से नीक नै...।

बजली–

"पाबैनक दिन छिऐ, पाबैनक सभ कथुक ओरियान तँ घरनी सभकेँ करैये पड़तैन किने?"

काकीक जवाबकेँ करिया काका काट-खोंट केने बिना मानि एक गिलास भाँग पीब काकीकेँ कहलखिन–

"शिवजीक परसाद छी।"

पान-जर्दा खाइते-खाइते जेना करिया कक्काक मन हुमड़लैन। बजला–

"अहाँ केहेन खोंटकर्मा छी से बुझै छिऐ?"

ओना खोंटकर्मा रहितो काकी शब्दक माने नै बुझलैन। जहिना बिनु बुझल शब्द अपन भाव बदैलो लइए तहिना काकियोकेँ भेलैन। मुदा शब्दक छीलैन करैत बजली–

"की खोंटकर्मा छी?"

काकीक जिज्ञासा जेना करिया काकाकेँ आगू बजैक अनुकूल अवसर देलकैन। बजला–

"अहीं डरे तीन साल पहिने झूठ बाजल रही।"

'अहीं डरे तीन साल पहिने झूठ बाजल रही!' काकी विस्मित हुअ लगली। मुदा झूठ बातपर बेसी रग्गड़ भेल नै रहैन तँए बिसैर गेल

छेली तँए अकचकेली नै, बजली–

"अनेरे झूठ-फूस बना दोख लगबै छी?"

"झूठ-फूस बना किए दोख लगाएब। कहिये दइ छी।"

करिया कक्काक बात सुनि जेना काकी सहमए लगली। मुदा जैठाम दुइए परानीक बीचक गप अछि तैठाम सहमैक जरूरते की? नीक-बेजए, सभ रंगक गप तँ दुनू गोरेक बीच होइते अछि। तखन अनेरे माथमे उरकुस्सी लगाएब नीक नहि। बजली–

"की डरे झूठ बाजल रही?"

भाँगक लहकीमे गंगाक सिहकी करिया कक्काक मनमे एलैन। चितवन नाचि उठलैन। बजला–

"तेसर साल जे मुंगेर गेल रही आ घुमि कऽ जखन एलौं तँ पुछने रही ने गंगेजलटा अनलौं आकि गंगामे डुमो देलौं।"

'गंगा'क नाओं सुनि काकीक जिज्ञासा बढ़लैन। बजली–

"कोनो कि अधला पुछने रही?"

मुस्की दैत करिया काका बजला–

"हम अधला कहाँ कहलौं, झूठ कहलौं। भेल कि रहए से आइ कहै छी...।"

बिच्चेमे काकी टोकलकैन–

"एते दिन किए ने कहने छेलौं?"

"अहाँक डरे नै बजलौं।"

"की डर?"

"यएह जे गंगाक दछिनबरिये घाटमे नहेबो केने रही आ गंगाजलो भरने रही। मुदा...।"

काकीक मनमे उत्तर-दच्छिन गंगा नचलैन। तखन तँ मग्गहेक गंगा जल अनेने छला! बजली–

"दछिनबरिये भाग नहेनौं रही आ शीशीमे गंगाजलो भरने रही?"

सिनेह सिक्त हृदए खोलि करिया काका बजला–

"ओही घाटक जल बाबाकेँ सेहो चढ़ै छैन। जँ कनीए झूठ बजने उत्तर-दच्छिन एकघट्टा बनि जाए, तँ अधले की भेल?"

"हँ से तँ नहियेँ भेल।"

❍

तिथि : 19 अप्रैल 2014, शब्द संख्या : 1184

किछु ने

सेवा निवृत्तिक दू सालक पछाइत रवि शंकर गाम आबि दोसरे दिन घुमि कऽ पुन: बेटाक डेरापर बंगलोर पहुँचला। किरण कुमार ड्यूटी गेल, मुदा पत्नी डेरापर, तँए रवि शंकर तँ ओसारक कुरसीपर असगरे बैसला मुदा पत्नीक पूछ पुतोहु नीक जकाँ पकड़लैन। ओना जलखै, पानि, चाह रवि शंकरोकेँ पहुँचलैन, मुदा भोजनक मरजाद तँ ओ ने भेल जे जेहने भोज्य आँखिक आगू तेहने जँ कानोक हुअए, मुदा से तँ बिआहे आ घर देखीये-टा मे होइए, बाँकी तँ बँकियौता होइत राज-रजबारमे नीलाम होइए।

गामेक स्कूलसँ रवि शंकरक पढ़ाइक जिनगी शुरू भेल। बच्चेसँ ठरकन्हक तँए अपन संगी-साथीमे सभसँ अँखिगर-कन्हगर। ओना गामक बुड़हा गुरुजी अखनो रवि शंकरकेँ मने छैन। केना गुरुजी बिसरल जेता, विद्यालयक प्रमुख काजमे फुलवाड़ी सेहो छल, सभ विद्यार्थी करै छल। मुदा तइमे रवि शंकर एते जरूर केने छला जे जहिना विद्यालयक फुलवाड़ी तहिना अपना घरोपर दरबज्जाक आगू लगौने छला। मुदा संस्कारो तँ संस्कार छी तहूमे रवि शंकर सन संस्कारी।

एक दिन बजार गेल। आम आ बेल देख मन हलसलै, कीनि लेलक। गामपर गुद्दो खेलक आ आँठीकेँ रोपि नीक फलो भेल। तँए

आम-बेल पकै दिनमे पनरह दिनक छुट्टीमे रवि शंकर गाम अबैत रहला। अपन इच्छा ओही दिनसँ गाममे रहब छेलैन जइ दिन नोकरी करए डेग उठौलैन। कोनो गामक तँ हिसाब शौर्ट-कटमे यएह ने हएत जे मरैसँ केते दिन पहिनेसँ गाममे छी आ जनमला पछाइत केते दिन धरि रहलौं। जिनगीक ओ अमूल बीस बर्ख, जइमे कियो भिक्षु बनि भिक्षाटन करए देश निकैल जाइए, तँ कियो...।

रवि शंकर सूर्यपुरेक नै मिथिलांचलक ओइ माटि-पानिक उपज छैथ जे अनेक चिन्तकक अनमोल विचारसँ मिथिलाक घरती सींचलैन। ओहन रवि शंकर। औझुका जिनगीक चोटीक शिखरपर पहुँचल रवि शंकर। अपने सन बेटा पुन: समरपित कऽ गामेमे रहबाक विचार केलैन। गाम आ शहर ओइ विचारक उपज छी जे बजारू लहैरमे भँसियाइत अछि, मुदा मनुख तँ ओ ने जे दुनियाँक कोनो कोण, कोनो जगह रहि रसपान करए।

सायंकाल। भरि दिनक काजक निवृत्तिक पछाइत चैन-बेचैनक हिसाब फड़िया, दिन-रातिक सीमापर बैस रवि शंकर आ किरण कुमारक बीच गप-सप्प होइ छैन।

किरण कुमार–

“बाबू, कहलिऐ जे गामे रहब से..?”

किरण कुमारक प्रश्न सुनि रवि शंकर धकमकेला नै मुदा अपन केलहा नष्ट भेल देखलैन...।

बजला–

“आइए नै, अखनो मन अछि जे जइ दिन नोकरी करए विदा भेल रही नोकरीकेँ नापि-जोखि नेने रही, बाँकी जिनगीक लेल गाम ओहिना मनमे गड़ल रहल। अखनो टहैक रहल अछि मुदा छूटि नै पाबि रहल अछि।”

बजैत-बजैत आँखि भड़भड़ा गेलैन। जेना एक्केबेर सौनक उमड़ैत मेघ पसैर गेल होइ तहिना भेलैन। किरण कुमार आँकि तँ नै सकल मुदा अँकैक कोशिश करैत पुछलकैन–

“बाबू, बेसी फिरीशान बुझि पड़ै छी?”

बेटाक बँटैत दुख पबिते रवि शंकर बजला–

“बौआ, कोसी धार गामक पेटकेँ चीर नासी बनि नाश कऽ देलक। अपन जे गोरहा खेत छल, जइमे धान रोपबो करै छेलौं आ नवानमे काटि कऽ चुड़ो खाइ छेलौं ओ बाउलसँ बुर्जा बनि गेल अछि! केतए गेल द्वार-दरबज्जा आ केतए गेल वाड़ी-फुलवाड़ी..!”

किरण कुमार–

“आगूक की विचार करै छिऐ?”

बेटाक मुहेँ ‘आगूक विचार’ सुनि रवि शंकरक मनमे जेना सौंसे जिनगीक शक्ति चमैक उठलैन। फाटक बान्हल पानि जकाँ आस्तेसँ रवि शंकर बजला–

“बौआ, जहिना वौआएल जिनगी सभ दिन रहल तहिना वौएबे करबह, तखन तँ आगूक दिन-राति ऐछे केतेटा जे तइले चिन्ता करब।”

❍

तिथि : 22 अप्रैल 2014, शब्द संख्या : 503

अप्पन-बीरान

आने गाम जकाँ हरिहरपुरो। स्वतंत्रता आन्दोलन जहिना सभ गाममे तहिना हरिहरपुरोमे। ओना पाँच साए परिवारक गाम मुदा गामक जमीन, गाछी-कलम आ पोखैरक चौथाइयो हिस्सापर गौंआँक अधिकार नहि। बारह-अनासँ ऊपरे सम्पैतपर अनगौंआँ जमीनदारक लड़ो-जड़ आ माशोक अधिकार तँ ऐछे।

आजादीक पछाइत लगानक वसूली जमीन्दारक हाथसँ निकैल गेल मुदा जमीनपर अधिकार तँ रहबे कएल। गौंआँक घर-घराड़ीक संग किछु गोरेक हाथमे किछु जमीनो, वेलगानक चलैत घराड़ियो आ मालगुजारी देने खेतो रहल, मुदा बारहसँ चौदह-अना परिवारकेँ मात्र घराड़ियेटा। तँए कि गामक जमीन गौंआँक कहियो नै रहल, से बात नहि। मालगुजारीक चलैत साले-साल नीलाम होइत गेल आ गौंआँक जमीन छिनाइत गेल। जइसँ गामक बारह-अनासँ ऊपरे जमीन अनगौंआँक हाथमे चलि गेल! गौंआँ खेतिहर किसान नै बटेदार किसानो आ बटेदार बोनिहारो बनि रहि गेल, अधिकांश बोनिहार।

मुदा जेना-तेना आ कमा-खटा कऽ गौंआँ बहरबैयाक सभ जमीन हथियौलक। जेना-तेना ई जे किछु जमीनपर वकास्तक झंझट तँ किछुपर सिकमी बटाइक, तँ किछु जमीन कीनियोँ कऽ गौंआँ अनगौंआँ सभकेँ गामसँ हटौलक।

बहरबैयाकेँ हटिते गौंआँ नमहर साँस छोड़लक। गौंआँक हाथसँ जमीन ससरैक अनेको कारण भेल। तइमे किछु मालगुजारी आ किछु समाजक जाल-फाँस मुख्य रहल। समाजिक जालो-फाँस अनेक रंगक रहल मुदा मुख्य रहल मरला पछातिक काल्पनिक दुनियाँक बेवहार। काल्पनिक बेवहार ई जे मुइला पछाइतक खर्चक जे विधि-विधान रहल ओ समाजक रीढ़केँ तोड़ि देलक! समाजक एहेन दबाब रहल जे खेतो-पथार खुशीसँ बेचबैत रहए। एक तँ गामक लोकक हाथमे गामक सम्पैत नै, तैपर प्राकृतिक प्रकोप सेहो! ओना तीन रंगक समय मुख्य रूपसँ छल मुदा तीनूमे सेहो तीन-तीन-चरि-चरि रंगक समय भेल। एक भेल जे अनुकूल मौसम, अनुकूल मौसमक अर्थ भेल जे गोटे साल एहेन होइ छल, अखनो होइए, जे बारहो मास अनुकूल समय बनै छल। कोन समय केहेन हवा चलत, कोन समय केहेन गरमी पड़त आ बरसातक केहेन रूप-रंग रहतै। दोसर तरहक समय बनैए, रौदियाह। जइ साल प्रतिकूल प्रकृति रूप पकड़लक तइ सालक सुसमय-कुसमय बनए लगै छल, एक रौदी दोसर दाही! ने रौदियाहक कोनो ठेकान आ ने दाहीक कोनो ठेकान। गोटे साल शुरुहेसँ समय बगदल जे अन्त धरि, रौदियो आ बरसातो लधनहि रहि गेल! जइसँ मनुखसँ लऽ कऽ मालो-जाल आ गाछो-बिरीछकेँ तबाह कऽ दइए। जे मेहनती किसानकेँ मन तोड़ि दइए। दोसर समय भेल जे अगतामे बिगैड़ कम-बेसी मध्यसँ सुधैर जाइए आ तेसर भेल जे शुरू-मध्य बिगड़ल रहल आ अन्तमे सुभितगर भेल...।

प्रकृतिक ई खेल सभ दिनसँ रहल, अखनो अछि।

ओना स्वतंत्रता आन्दोलनमे 1934 इस्वीक पछाइत जे गामक लोकक मनसूबा जगल ओ धीरे-धीरे पश्त होइत गेल। पश्त ई जे स्वतंत्रता संग्रामक मञ्चपर अवाज उठल जे गामक जमीन गौंआँकेँ हेतै, ओकरो खेती लेल साधनक ओरियान हएत आ नीक जकाँ उपजौल

जाएत। जहिना मनुख लेल पानिक जरूरत अछि तहिना मालो-जाल आ गाछो-बिरीछ लेल। ओना अपन इलाका पहाड़ी नदीसँ छारल अछि, जे किछु एहेन अछि जइमे बारहो मास पानि चलैए, किछु एहेन अछि जे छह-मसिया छी आ किछु तीन-मसिया छी।

मुदा अबैत गेल बहैत गेल, अँटकबैक कोनो जोगाड़ नै भेल!

देशेक भीतर पंजाबो कृषि प्रधान राज्य छी। जेतेक इञ्च बरखा अपना सबहक हिस्सामे अछि ओते पंजाबक हिस्सामे नै छै, मुदा खेतीक मूल साधन पानिकेँ ओ कृत्रिम रूपे बनौलक। हम सभ ढोलके-हरिमुनियाँपर अपन सम्पन्नता गबैत रहलौं, अखनो गबै छी। जँ से नै रहल तँ दुनियाँक केहनो भू-मध्य सागरीय जलवायु किए ने हौउ मुदा जेते रंगक खेतीक उपज, चाहे अन्न हुअए आकि तीमन-तरकारी, फल-फूल हुअए आकि गाए-महींस, उपजैक अपना इलाकामे शक्ति छै, ओ दुनियाँमे केतौ ने अछि। तँए, मिथिलांचलक धरती शक्ति स्वरूपिणी धरती अछि। मुदा...। जँ अपन बात अपने नै बुझब तँ ऐ दौड़ा-दौड़ीक दुनियाँमे केकरा ओते पलखैत छै जे अहाँक बात बुझि तलपट मिला देत? लोक सिनेमा स्टारक पञ्जी, खेलवाड़िक पञ्जी बनौता आकि अपन बाप दादाक आकि अपना गाम-घरक..?

हरिहरपुरेक दू भाए-भैयारीक परिवारमे सुपतलाल आ कुपतलाल। ओना अखन ओ परिवार सभसँ नीक गाममे मानल जाइए मुदा छेहा बोनिहार परिवारमे दुनू भाँइक जनम भेल। बोनिहार परिवार रहितो माए-बाप सुतिहार, तँए आने गरीब परिवारक बच्चा जकाँ रहितो, केना बच्चा सियान चेतन बनि जिनगी बितौत, यएह सुतिहारी दुनू परानीक।

बच्चेसँ दुनू भाँइ–सुपतलाल आ कुपतलाल–मेहनती जे पिताक देखा-देखीसँ सीखने। बहरबैयाक धिया-पुता जकाँ प्लाष्टिकक खेलौना

नै जे खलिये फटक्का फोड़त, घरक वस्तुक खेलौना! ओना बहरबैयाक हाथसँ गौंआँक बीच आएल सम्पैतसँ नमहर निसाँस छूटल मुदा तेकर बादो रंग-रंगक बिहंगरा ऐछे। एक तँ अहुना घटबी होइत-होइत जमीन करमघट्टू बनि गेल, तैपर घटबी रोकैक उपय नै भेने लोकक मनो घटए लगल! केना ने घटत? अहीं कहू जे धान रोपैक अछि, खादक पाइ नै अछि, रोपैक ताक सम्हारब आकि खादक प्रतिक्षामे...। कारण खाली विचारे नै अर्थक अभाव सेहो एकर सहयोगी बनल। तेतबे नै, खेतक संग मौसमी पानि आ उर्वरा-शक्ति बढ़बैले छाउर-गोबरक संग अपन पुरान पद्धैतक बीज सेहो।

अदौसँ अपना ऐठामक गृहपति जहिना घरक सभ कलासँ सम्पन्न छला तहिना दुनियाँक बीच अपन कलाकारी रखितो छला। खेतीक पूर्णताक बोध छेलैन। जे केना अन्न उपजबै छला, आकि तीमन-तरकारी, फल-फलहरी। सबहक बीजसँ फल धरिक बोध छेलैन। ओना एक रसाह लूरिकेँ जँ समैनुकूल लोहाक ओजार जकाँ पनियौल नै जाएत तँ ओहो भोथियए लगत। भोथियाइत-भोथियाइत एते भोथिया जाएत जे अपन चीने-पहचीन समाप्त कऽ लेत।

मात्र घर-घराड़ीबला सुपतलाल पिताक बतौल बाट पकैड़ पोसियाँ गाए बच्चेसँ पोसब शुरू केलक। परिवारक खर्चक भार पितापर। जहिना विद्याध्ययन लेल माता-पिता बच्चाकेँ अपना लेल समय दइ छथिन तहिना सुपतलालो- दुनू भाँइ-केँ पिता देलखिन। जहिना पाँच बर्ख चढ़िते गारजनोक नजैर आ आरो अभिभावकक नजैर विद्यालय दिस बढ़ैए तहिना सुपतलालोक पिताक नजैर गेलैन। आइक समय जकाँ तँ नै जे आन-आन देशक बोली-चाली नै सीखब तँ कमा कऽ खाएब केतए! ओना दुनू भाँइमे उमेरे तीन बर्खक अन्तर, मुदा संगी लेल उमेर ओते महत नै रखैत जेते संगी बनि काजकेँ सङौइर कऽ चलैक लूरि रखैए...।

पनरह बर्ख पुड़ैत-पुड़ैत सुपतलाल अपन पोसल गाइक सेवासँ पाँच कट्ठा जमीन कीनलक। सभ वस्तुक दाम कम तँए तीनियेँ साए रूपैए कट्ठा पाँच कट्ठा जमीन कीनलक। जइ दिन पिता पाँच कट्ठा जमीन बेटाकेँ देखलैन तही दिन परिवारक मन भरैत देख भगवानकेँ प्रणाम केलखिन। आइक महगीक दौड़मे कोन वस्तुक मूल्य आगू मुहेँ दौग रहल अछि आ कोन पाछू पड़ि रहल अछि, ई तँ बुझए पड़त। ओना मोटा-मोटी सभ वस्तुक मूल्य -पाइक रूपमे- बढ़ि रहल अछि। तँए अपन उपारजित पूजीकेँ धरगर नै बनाएब तँ चिल्होरिया ऊपरेसँ झपैट लेत। झपैट कि लेत जे अपनो दिल खोलि झपटबऽ चाहै छी। आन गाम जकाँ ने हरिहरपुर अट्ठारह गण्डा पोखैरबला आ ने कोसी-कमलाक भरैन कएल गाम जकाँ, जे एकोटा पोखैर कुम्हरबैयोले नहि। तइ दुनूसँ हटि हरिहरपुरमे तीन भागक पोखैर कमलाक भरैन भऽ गेल आ एक भाग तीनू पोखैर बँचल अछि। ओना पहिने हरिहरोपुरबलाक विचार रहैन जे गाम चपगर अछि तँए जँ गामक चौथाइ पोखैर खुना जाए तँ गामक मुँह-कान नीक भऽ जाएत। गामक मुँह-कान की? यएह ने जे वासभूमिमे पानिक जमाव नै हुअए, बरसाती मासक तरकारी लेल चौमास हुअए, फल-फलहरीक औसतन उपजैक जमीन होइ, तहिना आरो-आर। मुदा गामक पञ्जी बनबैत-बनबैत एतए आबि अँटैक जाइ छेलैन जे जखन अठारह गण्डा पोखैरे तखन केते रकबाक गाम? तैसंग दोसर प्रश्न उठि जान्हि जे सौंसे गाममे जेते पानिक जरूरत अछि ओतेकेँ पहुँचाएब। मुदा गाममे बेसी मुँहगर-कन्हगर नै, तँए दसे-बारहटा पोखैर खुनौलैन।

पनरह बर्ख पुड़िते सुपतलाल हरवाहि सीखलक। हरवाहि सीखैक विद्यालय गामे-गाम, बाधे-बाध। जइ हरवाह लग जाउ, स्वेच्छासँ हरवाहि सीखा देता। अपन गाइक बच्चासँ बरद बनौने छल। खेतीक भार सुपतलाल अपना ऊपर लेलक आ कुपतलालकेँ गाइक

भार सुमझा देलक। एकर माने ई नै जे काजमे कटा-कटी भेल। हर काजमे जिम्मेदारक खगता होइ छै, तइ हिसाबे। ओना दुनू काज परिवारेक भेल तँए परिवारक सभ काजपर सभकेँ नजैर रखए पड़त, नै तँ कमी अबैक सम्भावना बढ़ैक शंका रहिते अछि।

हरवाहि सीखते सुपतलालक परिवारमे आमदनीक तीनटा बाट खुजल। पहिल हरवाहिसँ बाहरक आमदनी, बरद आ खेतिहरकेँ संगी बनने खेतीक सम्भावना बढ़िते अछि। तहूमे खेतक मालिक बहरबैया। ओ सभ कि ओहन भठियाह थोड़े छैथ जे एतबो ने बुझता जे बटाइ खेत ओकरे ने देब नीक जेकरा समांगक संग हरो-बरद छइ। ई तँ नै जे कन्याकुमारीसँ कश्मीर आ कश्मीरसँ अरूणाचल धरि सड़क बनाएब आ माटिक काज छिट्टा-पथियासँ होइ! भाय, छिट्टा-पथियाक काज तँ गामे-घरमे तेते अछि जे पार नै लगि रहल अछि आ.., टिटही जकाँ मेघ टेकब! गाम-घरमे अखनो ओहन आँगन-घरक कमी नै अछि, जे आँगनसँ दरबज्जा आ दरबज्जासँ आँगन जाइ-अबैमे नाहक जरूरत पड़ैए। कन्याकुमारीसँ कश्मीर-अरूणाचल तक सड़कक जरूरत अछि, मुदा गाम-घरक बाघक खेतीक जमीन ओहन अछि जे दसो-बीस बीघा जमीन समतल नै अछि जे भारी मशीनक उपयोग हएत।

गाममे दाही भेल। तेहेन दाही भेल जे गामक उपजावाड़ी तँ गेबे कएल जे बाधक घासो-पात सड़ि-गलि कऽ पचि गेल। अदहासँ बेसी गामक गाए-महींस आ बरद मरि गेल। ओना सुपतलालोक मरल मुदा खुटापर सातटा माल रहने पाँचटा बँचल। अगिलग्गीक पछाइत, भुमकमक पछाइत, रौदी-दाहीक पछाइत जहिना पशुपतिनाथक दर्शन आ अपन बेपार दुनू संगे होइत तहिना बहरबैया खेतबला सभ एक्के-दुइए गाम पहुँचल। सुपतलालकेँ सुतरल। सुतरल ई जे ने स्थायी मनखप लेब आ ने उपजा देब। सालक मनखप लेलौं, समय खराप भऽ गेल, रौदी-दाही भेने अहाँक पूजी -खेत- तँ धोखैर कऽ समुद्रमे नै

चलि गेल, मुदा हमर लगता तँ चलि गेल। विचारि कऽ सुपतलाल पाँच बीघा जमीन एकटा माशसँ लेलक। अपन खेत, अपना जुतिये उपजाएब जे मन मानत सएह उपजाएब, उपजला पछाइत अनुमानित कण निर्धारित हएत, सबहक अपन-अपन नजैर रहत।

पाँचो बीघा गोरहा खेतमे कमो पानि भेने गामक चारू भागक पानि बोहि कऽ चलि अबैत, जइसँ बाधक जमीनसँ बेसी सुविधा भऽ जाइत। सुपतलालक भाग जागल। मनखप बटाइसँ पहिने सुपतलालकेँ अपन कीनल पाँचे कट्ठा जमीन मुदा ओ पाँचो कट्ठाकेँ बरह-मसिया खेती-जोकर बनौने। बरह-मसिया ई जे तीनू मौसमक तीन फसल उपजैत। ओना हरि अनन्त हरि कथा जकाँ तर्को-वितर्कक अनन्त उत्तर छइ। ईहो तँ भऽ सकैए जे बरह-मसिया गाछीए लगौल जाए। मुदा प्रश्न तँ ईहो उठैए जे बरह-मसिया ओकरा तँ नै कहबै जे सालमे एकबेर उपजा देत। मुदा तेकरा मानब उचित हएत? उचित तँ यएह ने जे बारहो मास ओइमे श्रम लगौल जाए आ बारहो मास उपज आबए। जँ से नै औत तँ खाली समैमे, जइ समय उत्पादन नै हएत, उपजौनिहार जीवित केना रहत? तेकरो तँ उपयक जरूरत ऐछे। खाएर जे हौउ, सुपतलाल अपन पाँचो कट्ठा जमीनकेँ धरोहर बुझि उपजाबऽ लगल। मध्यम किसिमक जमीन। पाँचो कट्ठामे तरकारी उपजाबऽ लगल। एतेक उपजा होइ जे अप्पन परिवारक भोजनक अदहाक संग नगदो-नारायण भऽ जाइ।

एक दिन दुनू भाँइ, सुपतलाल-कुपतलाल, घरक काज सम्हारि गाम घुमैक विचार केलक। तेहेन रौदियाह समय जे दस बजेक पछाइत बाधमे लू चलए लगैत। ओ गामो-घर दिस एबे करैत। गाछ सबहक पत्ता झड़ैक-झड़ैक अधसुखू भऽ गेल। सौंसे बाधमे केतौ हरियरीक दरस नहि। टोलसँ निकैलते दुनू भाँइ गामक बाध-बोन देख सिहैर गेल। आगू बढ़ैक साहस नै भेलइ।

कुपतलाल सुपतलालकेँ कहलक–

"भैया, गाम बीरान भऽ गेल। जइ गामक माटि-पानि मरि जाएत तइ गामक गाछ-बिरीछ आकि जीवे-जन्तु केना ठाढ़ रहत?"

कुपतलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल बाँहि पकैड़ बाजल–

"बौआ, से केना बुझै छहक?"

सुपतलालक प्रश्नक उत्तर दइले जेना कुपतलालक मन तर-ऊपर करइ, तहिना जेठ भाइक पुछब सुनि कुपतलाल बाजल–

"भैया, जखन खेतमे अन्न आकि आने कोनो उपजा नै हएत तखन लोक केना जीवित रहत? बिना कोयला-पानीसँ तँ लोहा चलबे ने करैए आ मनुख तँ सहजे मनुख छी। लाखो रंगक परसाद पबैबला!"

कुपतलालक ओजाएल जिज्ञासा देख सुपतलाल बाजल–

"बौआ, अपने दुनू भाँइ छी आ दू दियादिनी आँगनमे छैथ। जहिना चारू गोरेकेँ अपन-अपन जिनगी आ जिनगीक काज अछि तहिना ने सबहक छइ। एककेँ नष्ट भेने तँ पर्यावरण बिगड़ए लगै छै आ जखन एक भागेक सभ किछ नष्ट भऽ जाएत तखन की हेतै?"

"हँ से तँ हेबे...।"

"अपना दुनू भाँइकेँ एतबे ने बुझैक काज छह। जँ अपन काजपर ठाढ़ हेबह तँ अदहा भक्त कमाल जकाँ हेबह, नै जँ बाँकियोहो अदहा पुरा लेबह तँ सोलहन्नी हेबह। जइसँ भेद-अभेद मेटा जाइ छइ।"

"हँ, से तँ ठीके भैया!"

"बौआ सुनह, जे बात हम बुझै छिऐ ओ तोरा कहला पछाइते ने तहूँ बुझबहक, तहिना ने तोरो बात आ घरो लोकक बात सुनला पछाइते ने अपनो बुझब?"

"हँ से तँ ठीके।"

"बौआ, आब तँ सहजे केते दिनसँ खेती करै छी, मुदा जहिया नहियोँ करैत रही तहियेसँ कोसी नहैर सुनै छी जे गामे-गाम बनत, डैमसँ बिजली बनतै आ ऐठामक किसानकेँ करखन्ना जकाँ चौबिसो घन्टा खेतीक काज चलतै।"

"भैया, ई बहुत भेल। छोड़ह ऐगला गप। कान भरैत-भरैत तेना भरि गेल जे काने बन्न भऽ गेल। दिन-राति जे काजे करत आ खा-पी कऽ सुतत नै, तखन भगवानसँ एकाकार केना हएत?"

"धुर बुड़िबक! अहिना बुझै छीही, जहिना कारखानामे चौबिसो घन्टा काज छै तहिना खेतियोमे अछि। खेतेक उपजासँ चौबिसो घन्टा कारखाना चलैए। जँ पचपन खान चलबैए तँ पैंतालीस खेतो चलबैए।"

कुपतलाल जेना अकैछ गेल। अकछबो केना ने करैत। ने ओते ओकरा समय छै आ ने समैट कऽ रखैक कोठी...।

बाजल–

"भैया, जाबे अपन घड़ी-घण्टा बजा अपना मन्दिरमे पूजा नै करबह ताबे तक तेहेन-तेहेन घड़ी-घण्टाक अवाज सुनैत रहबहक जे अनेरे कानमे तेते झड़ परतह जे काने झड़ा जेतह। काननी कामनी बनि अनेरे औनाए लगबह।"

कुपतलालकेँ अकछाइत देख सुपतलालक मन खुशी भेल। खुशी ई भेल जे भने समटल मन आ समटल बुधि छै, नै तँ अनेरे भरि दिन तासपर बैस पाइकेँ कागत बना देत। जखने पाइ कागत भेल तखने अन-पानि, गाछ-बिरीछ, सोना-चानी सभटा पाइए बनि जाएत। तखन कोन खगता छै जे खेतसँ धान उपजौल जाए? ओ तँ रस्तो-पेरा भऽ सकै छइ।

गामक ओहन परिवार सुपतलाल-कुपतलालक बनि कऽ ठाढ़ भेल जे ओहन स्थान जकाँ अद्भुत बनि गेल, जैठाम हजारो मन्दिरक बीच गोटे कोनो अद्भुत रहैए! छेहा किसान परिवार। दुनू भाँइ सुपतलालो मानैत जे अनेरे गामक चक्कर-भक्करमे पड़ि नीककेँ अधला किए बनाएब। ने दरबार धरब आ ने दरबारीलाल बनब...।

मुदा तँए कि सुपतलाल गामकेँ छोड़ि देलक? नै छोड़लक, गामक किसान अखनो ठेकनगर किसान बुझि पूसा-ढोली, सबौरक किसान-मेलामे गामक किसानक संग जाइते अछि। सालो भरिक डायरी, खेती-वाड़ी करैक छोट-छोट पुस्तिका, छोट-छोट खेतीक ओजार-पाती अनिते अछि...।

ओना गौआँक संग सुपतलाल पुड़िते अछि मुदा गामक माटि, पोखैर, गामक जमीनक किस्म, जमीनक माटि इत्यादि नै भेने मन झुझुआइते रहै छइ। गामक छक्कर-बक्करकेँ ओ धु-बन्हू छागर जकाँ बुझैत अछि। चाहे देवालयमे चढ़ाउ, चाहे भोजनालयमे! दुनू ठाम लेल तैयार। दुनियाँक विपरीत हवामे देखए पड़ैत जे कोनो देशक लोक चरितवान अछि तँ सरकारी महकमा चरितहीन, आ केतौ सरकारी महकमा चरितवान अछि तँ लोक चरितहीन। तँए कि ओहन नै अछि जैठाम दुनू चरितहीनो अछि आ चरितवानो? अछि! जैठाम अछि तैठामक लोक जिनगीक ऊँचाइ छूबि रहल अछि आ जैठाम नै छै, तैठाम धरतीक इर्द-गिर्द कोल्हूक बरद जकाँ घुमि रहल अछि! उपाध्याय आ आचार्यक भेद मेटा गेल अछि! देशक नदीकेँ जोड़ि खेतीक पटौनीक सुविधा बनौल जाए, मुदा लेबड़ाक साए रूपैआ जकाँ, किछु ओइमे गेल, किछु तइमे गेल, रूपैआ भेल गोल, एक्केबेर सभ कहियौ 'हरि बोल'। बिहारक समस्या कहियो नै बुझल गेल जे खाली बिहारेक पनिचलाउ धारकेँ ढंगसँ पूबसँ पच्छिम धरि जोड़ि देल जाए आ समुचित देख-रेख होइ तँ की खेतीक समस्याक समाधानक

एक कड़ी हएत की नहि?

समय बीतल। अधउमेरेमे सुपतलाल बीमार पड़ल। एक तँ गाम-घरक जिनगी तैपर इलाजोक नीक सुविधा नहि। आठे दिनक बीमारीक पछाइत सुपतलालक मन कनी-कनी धोखरए लगल। धोखरैत मनमे भेलै जे ऐ काँच माटिक देहक कोनो ठेकान अछि जे कखन फुटि जाएत। कुपतलालकेँ सोर पाड़ि बाजल–

"बौआ, हमर कोनो ठेकान नै छह, परिवारक सभ एकठाम बैसह, अपन हिसाब तोरा सभकेँ दइए देबह। अनेरे मरैकाल माथपर एकटा बोझ चढ़ल रहत।"

अखन धरि कुपतलाल सुपतलालक ओहन अज्ञापालक रहल जे जे किछु सुपतलाल कहैत ओतबे बुझैत आ ओतबे करितो रहए। जेठ भाइक प्रति जेना पूर्ण समरपित। ओना फल अधला कुपतलालकेँ भेल। भेल ई जे कुपतलालकेँ कहियो कोनो काजकेँ परखैक खगता नै भेल। जइसँ सभ काजक लूरि रहितो उजड़लहा-उपटलहा गामक इतिहास नै बनि सकल। केना बनैत? दुनियाँक इतिहास गढ़निहार व लिखनिहारक मने उचैट गेलैन जे हमरो गाम-घर अही दुनियाँमे अछि।

परिवारक सभ समांग एकठाम भेल। ओना जइ डरे सुपतलाल भीन भेल सएह हिस्सामे आबि गेलइ। मुदा परिवार तँ परिवार छी जाधैर एक-दोसराक दुख-दर्द, नीक-अधला दोसर नै बुझि अपन बनौत ताधैर परिवारक गाड़ी केना ससरत...।

अबिते पत्नी बजली–

"सभ दिन ओछाइने पकड़ने रहब आकि उठबो करब?"

पत्नीक बात सुनि सुपतलाल किछु ने बाजल। जहिना रणभूमि जाइसँ पहिनहि सिपाही बाटेमे घेरा जाइए तहिना सुपतलालक मन घेरा गेलइ। जिनगीक संगी। जँ गाड़ीक एक पहिया टुटने वा जुता-

चप्पलक एक संगी विरहेने केतौ फेका जाइए, तहिना सुपतलालोक मनमे घेरा लगि गेल।

सुपतलालकेँ गुम-सुम देख कुपतलाल बाजल–

"भैया, राजा-दैवक कोनो ठेकान नै छै, जेते दिन दुनू भाँइ संगे परिवारक गाड़ी जोतलह से जोतलह। जँ तूँ मरबह तँ हमरो मरले बुझियहऽ। लूरि ने हमरा देलह मुदा बुधि तँ तोहीं ने नेने जेबह, तखन खाली टीन ढनढ़नौने कथी हएत?"

सुपतोलालक आ कुपतोलालक बेटा बी.ए.क विद्यार्थी। तीन मासक पछाइत परीक्षा हेतै, स्नातक भऽ जिनगी शुरू करत। अपन आभार व्यक्त करैत सुपतलाल बेटो आ भातिजोक- सुगमलाल आ कुगमलाल- बीच बाजल–

"बाउ, अखन धरिक परिवारक गाड़ी खींचलौं। जँ बीमारीसँ छुट्टी भेटत तैयो नीक, जँ नै भेटत तैयो नीक। जे समय बीतल ओ अहाँ दुनूक बीच अनुकूलताक समय भेल। जे आगू अछि ओ प्रतिकूलताक भेल। अपनो मन कहैए जे स्नातक बना परिवारकेँ ठाढ़ करी, अपना जनैत करैत एलौं, एतेक तँ जरूर गारंटी देब जे जहियासँ परिवारक गाड़ी कन्हापर उठा घीचलौं, मनुख बनि जे आएल ओकरा मरए नै देलिऐ। मुदा दुनू भाँइकेँ देख एते तँ मन खनहन ऐछे जे ऐगला गाड़ी खींचिनिहार परिवारमे भाइये गेल। केते परिवार गाममे अछि जे अहाँ सभ जकाँ कौलेजमे पढ़लक। मुदा अपन विचार, अपन काज अनकापर लादैक नै अछि, देखबैक अछि, कहैक अछि। बस एतबे कहब।"

सुगमलाल बाजल–

"बाबू, अहाँ विचारे की होय?"

सुगमलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल जिज्ञासाक नजैरसँ कुगमलाल

दिस तकलक, ओहो तँ कौलेजेमे पढ़ैए। किछु तँ अपनो बात जोड़त मुदा अदौसँ अबैत परिवारक जेठ-छोटक विचारक संग विचार नै मिलेबाक चलैन रहल। अपन अलग प्रश्नक रूप मानल गेल। मुदा से नै बापेक बेटा कुगमलालक मनमे उठलै, दुनू भाँइ विचारि कऽ करब। तँए कोनो विकार मनमे नहि। सुपतलाल बाजल–

"बौआ, समैक संग चलैक अछि। बहुत आशासँ दुनू भाँइ तोरे सभले खेत कीनलौं, सम्पैत अरजलौं। जँ एकरा छोड़ि चलि जेबह तँ अनका आड़ि-धुरमे चलि जेबह। बेसी अखन नै कहबह अखन तोरा अपन परीक्षाक तैयारी करैक छह। मुदा एते जरूर कहबह जे तोरे सभ दुआरे अपन खेत बनेलौं, नै तँ ओही समैमे बँटैत ऐबतौं तँ जम्मे ने होइत। मुदा जे भेल, खेती जे साधनक अभावमे केलौं, ओकरा पुरबैत, गाइक जे पुरना खाँढ़ अछि ओकरा समायानुकूल बनबैत चलबह तँ किसानक खतियान बना किसानक देश कहेबह, नै तँ सरकारी खजाना जकाँ तमादी हेतह। सुनि लएह, खेत ओहन विशाल गाछ पैदा करैक शक्ति रखैए, जे जेते ओइमे खाद-पानि देल जाएत ओते विशालसँ विशालतम बनैत जाएत। तँए लक्ष्मण रेखाक बीच रहि जाधैर चलैत रहबह ताधैर लंकाक कोन बात जे लंकापतियो बुते किछु ने बिगाड़ल हएत।"

सुगमलाल–

"तखन?"

"तखन यएह जे समाजेक लत्ती लतरैत अमरलत्ती जकाँ दुनियाँमे लतैर जाइए, मुदा पहिने ओकर जड़ि बिटिया कऽ पकड़बऽ तखने ने?"

❍

तिथि : 01 मई 2014, शब्द संख्या : 2919

अर्जुन रोग

जिनगीक अधडरेरपर पहुँचते सुचित भाइक मनमे ओहन रोगक प्रवेश सहे-सह हुअ लगलैन जेहेन घैलचीक घैल पानिक रस पीबैत-पीबैत रसा जाइए। ओना बीतल चालीस बर्खक जिनगीमे केते रंगक रोग-सोग, वर-वियाधिसँ गुजैर चुकल छला, जे कहियो दवाइक गोली तँ कहियो इन्जेक्शन तँ कहियो सीरपक उपयोगसँ नीक होइत आएल छला, मुदा ऐ बेरक रोग छुटतैन कि नै छुटतैन से मन कबूले ने कऽ रहल छैन। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत डॉक्टर ऐठाम जेबाक विचार केलैन।

ओना रोगीक भीड़ डॉक्टर ऐठाम, मुदा सुचित भायकेँ पहुँचते, एक नजैर डॉक्टर साहैब देख लेलैन। देखते मनमे हिलकोर उठलैन, कियो पानिक रोग पनिदूदूरसँ सहजे ग्रसित भऽ फुइल जाइए, तँ कियो पाण्डु रोगसँ पीड़ित भऽ पीड़ा जाइए, तँ कियो लोहुक रोगसँ लोहित भऽ जाइए, मुदा सुचित भायमे तइ सबहक कोनो लक्षण डॉक्टर नै देखलखिन।

रोगीक भीड़मे सुचित भाइक नम्बर नवम् रहैन। आठो रोगीकेँ निकलला पछाइत सुचित भाय आगूमे रखल स्टुलपर बैसला। ओजारक जाँच-पड़ताल करैसँ पहिने डॉक्टर साहैब रोगक प्रभावक जाँच शुरू करैत पुछलखिन–

"की सभ होइए?"

'की सभ होइए' सुनि सुचित भाय थकमका गेला। थकमकेला ऐ दुआरे जे अखन जे होइए से कहबैन आकि पहिने जे सभ रोग भेल छल सेहो कहैत कहिऐन। दुविधामे पड़ल सुचित भाइक मुँह बन्ने छेलैन। चुप देख डॉक्टर साहैब ससरैत समय देख झटैक बजला–

"किए मुँह बन्न केने छी। स्पष्ट बाजू। डॉक्टरसँ रोगक बात छिपौला आ ओकीलसँ घटनाक बात छिपौलासँ नीक परिणामक आशा क्षीण भऽ जाइ छइ। तँए जे होइए खोलि कऽ बाजू।"

डॉक्टर साहैबक झटकार सुनि सुचित भाय बजला–

"ओना अखन धरि केते बेर बीमारी भेल, मुदा ओइ सभसँ फराक ऐबेर बुझि पड़ैए।"

डॉक्टर–

"जे बुझि पड़ैए सएह ने पुछै छी?"

डॉक्टर साहैबक बात सुनि मनकेँ मोड़ि सुचित भाय बजला–

"कोनो बात विचारए लगै छी आकि बिच्चेमे दोसर आबि ओहिना रस्ता काटि दइए जहिना चौमैतपर लोको, मालो-जाल आ गाड़ियो-सवारी एक दोसरक कटैए।"

अखन धरिक आन रोगीसँ फराक सुचित भाइक जवाब सुनि डॉक्टर साहैब खरियबैत बजला–

"देखू, रोगीक भीड़ अछि, समय निर्धारित अछि तँए जे किछु होइए, निसचित समैक भीतर बाजू। बहुत प्रक्रिया होइ छै, तइ सभमे सेहो समय लगत। जहियासँ रोगक आक्रमण भेल, तहियासँ बाजू।"

डॉक्टर साहैबक बात सुनि सुचित भाय पैछला बातकेँ छोड़ैत बजला–

"जइ दिनसँ परिवार सुचित रस्ता छोड़ि कुचित रस्ता दिस बढ़ल आ अपनो मनमे सुचित विचार कुचित दिस बढ़ल तही दिनसँ रोगक आक्रमण भेल।"

सुचित भाइक बात सुनि डॉक्टर साहैब थकमकेला। केना नै थकमकैतैथ, जहिना कोनो धानक खेत आकि कोनो आन अन्नक खेतमे गोटे बागर भऽ आन सभसँ अपन लक्षण फराक देखबए लगैए तहिना आन रोगीसँ फराक सुचित भाय बुझि पड़लैन। मुदा, डॉक्टर साहैब ने बिगड़ला आ ने अधीर भेला, असथिरसँ पुछलखिन–

"परिवारमे की भेल आ अपने की भेल, दुनू फुटा-फुटा बाजू। पहिने परिवारक बाजू।"

पहिने परिवारक पुछैक कारण भेलैन जे परिवार बेक्तिक समूह छी आ परिवारेक समूह ने टोलो-गाम छी। तँए सोलहन्नी परिवारे भेल।

परिवार सुनि सुचित भाय थकमकेला। थकमकेला ई जे परिवारमे दू-दिसिया मुहोँ आ मुड़ियो होइ छइ। एकटा होइ छै ऊपरसँ बाबा-परबाबा आ दोसर होइ छै पोता-परपोतासँ। केमहरसँ बाजी? एक दिस कलुसैत क्रममे चलि रहल अछि आ दोसर कलशैक क्रममे। मेड़ बनि परिवार मेड़ियाएल अछि। परिवारक भीतर भाव-अभाव तँ ऐछे, तखन..?

मुदा जहिना पेटक आँत मोड़ाएल रहै छै, तहिना मोड़ि बजला–

"परिवारमे भैयारीक बीच फटेदारी हिस्सा-बखराक रोग जोर पकैड़ लेलक, जइसँ जेना चलैक जाँघे-घुट्ठीक जोड़ जकड़ा गेल, तहिना भऽ गेल अछि। केना आगू ससरत?"

सुचित भाइक बात सुनि डॉक्टर साहैब आनक ओझरी बुझि पल्ला झाड़ैत, अपनाकेँ छिपबैत– छिपबैक कारण भेलैन डॉक्टर तँ अपने छी, अपनो परिवारेमे रहै छी, केना परिवारक ओझरीकेँ आन

लग बाजब जे नै बुझै छी आकि नै बुझल अछि। बजला–

"देखू, हम देहक रोगक डॉक्टर छी तँए देहक दर्द बाजू, देहीक नहि।"

डॉक्टर साहैबक पल्ला झाड़ब सुचित भाय नै बुझि पेला, बातपर सोलहन्नी बिसवास करैत बजला–

"डॉक्टर साहैब, सदिकाल मन चिड़ै-टिकुली जकाँ उड़ैत रहैए!"

डॉक्टर साहैब–

"मन तँ ओहिना चञ्चल अछि। तहूमे जखन चुल्हिपर खापैड़मे पड़त, तखन जँ तीसी जकाँ नै चनचनाएत तहन ओकर रसे की भेल। ओहो तँ सिनेह[7]सँ सनाएले अछि...।"

डॉक्टर साहैबकेँ भँसैत देख सुचित भाय बिच्चेमे बजला–

"दोसर बात कहए चाहै छी डॉक्टर साहैब?"

सुचित भाइक बोनाएल बात-दे सुनि डॉक्टर साहैब कहलखिन–

"बाजू।"

सह पाबि सुचित भाय बजला–

"डॉक्टर साहैब, बजैक ठेकान नै रहैए। कखनो किछु बजै छी आ कखनो किछु बजा जाइए। एक्के बातकेँ भरि दिनमे गिरगिट जकाँ कहियौ आकि पेरिसक सड़क जकाँ, क्षणे-क्षण छिनछिनाइत क्षणेमे छीन-अछीन भऽ जाइए!"

बिनु भीड़-भाड़बला चौमैतपर जहिना गाड़ी-सवारीक ड्राइवर जल्दीवाजीमे निकलए चाहैए तहिना निकैल डॉक्टर साहैब कहलखिन–

[7] तेल

"ठीक अछि, आगू बरहू।"

डॉक्टर साहैबक शतरंजक सह पबिते सुचित भाय बिनु देरी केने बजला–

"क्षणे-क्षण जहिना बोली बदलैए तहिना क्षणे-क्षण तामसो दिन-रातिक आँखि मिचौनी जकाँ उठैत-बैसैत रहैए!"

जहिना गडूरकेँ भुजंग छन्द-शास्त्र भुजियबए लगल आ गडूर आँखि मुनि अङ्गेजए लगल तहिना डॉक्टर साहैब, सुचित भाइक बातकेँ अङ्गेजैत बजला–

"ठीक बात, ठीक बात, आगू बरहू।"

मुस्की दैत सुचित भाय आगू बजला–

"डॉक्टर साहैब की कहब मनक मैल आ की कहब बोलीक बाइन, आकि कहब तमाएल प्रीत-रीत, सदिकाल जी भरछैत रहैए। बुझिये ने पबै छिऐ जे खटगर दही सानल चूड़ामे आमक अँचारक केहेन रस अबै छै!"

आमक अँचार सुनिते डॉक्टर साहैबकेँ रौतका खेलहा अँचार मन पड़लैन। जीहसँ ठोर पोछैत बजला–

"बड़ बेस, बड़ बेस। आगू बरहू।"

डॉक्टर साहैबक हाव-भाव देख सुचित भाइक मन आरो गदगदेलैन। गदगदाइत बजला–

"डॉक्टर साहैब, जहियासँ रोगक उपैत भेल, तहियासँ पेटमे खौंत फेकैत रहैए!"

'खौंत' शब्दकेँ अनठिया बुझि डॉक्टर साहैब बिच्चेमे टोकलखिन–

"की खौंत?"

सुचित भाय–

"जेना बुझि पड़ैए जे पेटमे लहास उठैए। सदिकाल होइए जे जेना आगि पजरले रहैए!"

आगि सुनि डॉक्टर साहैब पुछलखिन–

"तइसँ की सभ होइए?"

"डॉक्टर साहैब यएह तँ असल रोग छी, आँखि चोन्हियाइत रहैए, दुनियाँमे भाए-बहिन केतौ देखबे ने करै छी, सभठाम वेश्ये-भरूआ देखै छी। केना रोग बदलत?"

सुचित भाइक प्रश्न सुनि डॉक्टर साहैब अपन पाशा बदलैत बजला–

"जखन हमहूँ कौलेजमे पढ़ैत रही तखन अहिना भऽ गेल रहए।"

"केना छूटल?"

"पहाड़पर पहाड़ी बाबा छैथ, हुनके लग गेलौं ओ कहलैन जे 'अर्जुन रोग' भऽ गेल अछि। अखन महाभारत उनटबैक समय नै अछि। वएह कृष्णोषधिक एकटा जड़ी देलैन। सात दिन पीसि-पीसि पीलौं। साते दिन महिना, साल बुझि पड़ल। नीक भऽ गेलौं। अहूँ ओत्तै चलि जाउ। मधुसूदन धरमशालामे जनारदन रहै छैथ। ओतइ रहि दवाइ पीब, साते दिनमे नीक भऽ कऽ घूमब।"

❍

तिथि : 7 मई 2014, शब्द संख्या : 1003

नैहराक धाड़

चिन्तासँ चिताएल चित्त देख लाल काकीकेँ स्नातक पूर्वाद्धक छात्र-सोहन पुछलकैन–

"लाल काकी, मन किए पीड़ौंछ बुझि पड़ैए?"

भावातीतमे डुमल लाल काकी आरो डुमकी लगबै दुआरे बहाना बनबैत बजली–

"बच्चा, कनी-मनी नोनगर-अनोन तीमन-तरकारी भेने कियो खाएब थोड़े छोड़ैए, तेहने जकाँ भऽ गेल अछि, और नै किछु।"

लाल काकीक बहटारैत उत्तर सुनि सोहन गप करबकेँ तत्काल कम गुणगर बुझि ओतएसँ विदा भऽ गेल। सोचलक, कौलेजसँ एला पछाइत साँझू पहर काकीसँ खरिआइर कऽ पुइछ बुझि लेब।

अट्ठारह बर्खक अवस्थामे लाल काकी कर्णपुरसँ दुरागमन भऽ सोहनपुर आएल छेली। आइसँ चालीस बर्ख पूर्व। सम्पन्न परिवार। सम्पन्न परिवारक अर्थ ई नै जे चौघारा कोठा छेलैन, दुआरपर हाथी आ बखारी छेलैन। सम्पन्नताक अर्थ ई जे जहिना नैहरक पाँच बीघा खेतबला परिवार, दुआरपर जोड़ भरि बरद, दूटा महींस, दस कट्ठाक घराड़ी, जइमे चौघारा खपड़ाक दुआरो आ अँगनोक घर, कट्ठा भरि अगिवास, पान-सात कट्ठाक चौमासक संग घराड़ी जुटल तहिना।

ओना गुनियाँ-परकाल आकि फीता-कड़ीसँ तँ सासुरक घराड़ी नै नापल छेलैन मुदा देखैमे एकरंगाहे बुझि पड़ितए।

समय बीतल। जहिना कोनो परिवारमे सभ कथुक बिलेबाक ढबाहि लगि जाइत तहिना लाल काकीक परिवारमे ढबाहि लगि गेलैन। दियाद-बादसँ हक-हिस्साक तेहेन ओझरी लाल काकाकेँ फँसलैन जे दियादीएसँ लछमी पड़ा गेलखिन। सभ अपन सभ किछु बेचि ओकील-मुंशी, कचहरी, होटल, सवारीक भाड़ा इत्यादिमे फूकि देलैन, भविसक आशा चरमरा गेलैन। पाइक दुआरे लाल काकाकेँ लाल काकी बीमारीक इलाज नै करा सकली। काकाकेँ भगवानक हाथे उसरैग देलखिन। परिवारमे बिलैनीक ढबाहि लगने एक्के उसरनमे काकीक पतियो आ दुनू बच्चो उसैर गेलैन।

तीस बर्खसँ काकी किसकारक मासमे नैहर जाइ छैथ आ चारि मास रहि, भाए-भौजाइकेँ खेती-वाड़ी सम्हारि दइ छथिन। भाइयो-भौजाइ ई सोचि जे एक पेटक रकबे केते, तेना उचित-उपकार करैत रहलैन जे साल-माल लगि जाइ छैन। चारि मास नैहरे बीतै छैन बाँकी आठ मास भेल, तहूमे रवि, मंगलवारीसँ लऽ कऽ रामनमी, कृष्णामुट्ठीक उपास धरि, करीब चालीस दिन अपना हिस्सामे बाँटि लइ छैन। लालो काकी भरि दिन उपास करै छैथ आ साँझू पहरमे दुनू हाथ उठा विसरजन करै छैथ।

ओना लाल काकीक मनमे ओहन विचार बिच्चोमे हुमैड़ जाइत रहैन मुदा मनक ताप संताप बनि आगि जकाँ उठैन मुदा सासुरक सीमा मानि नैहर बितबैत रहली। मुदा चौथापनक सीमापर पहुँचैत-पहुँचैत आइ लाल काकीक मन धधैक-धधैक मनमे उधैक रहल छैन...। चिन्तामे डुमल लाल काकीकेँ देख सोहन कौलेज दिस बढ़ि गेल।

दोसर साँझ, मरियाएल अन्हार पसैर रहल छल, दिनक इजोत अपन समझौताक सीमापर आबि रहल छल। अबैत घटबी देख इजोतो पनचैती मानैले तैयार भेल। लाल काकी लग पहुँच सोहन बाजल–

“लालकाकी, तखन कौलेज जाइ छेलौं तँए दोहरा कऽ किछु ने पुछलौं, मुदा मन नै मानलक तँए दोहरा कऽ पुछए एलौं।”

सोहनक बात सुनि लाल काकी अग-दीगमे पड़ि गेली। अग-दीग ई जे गाममे के केकर सुनलक, जँ सुनबे केलक तँ केलक की? किछु ने! तखन अपन मनक बेथा बजबे किए करब…।

लाल काकीक मनमे तेना हुअ लगलैन जे ने बाजब नीक बुझैथ आ ने नै बाजब। मनमे हुमड़ैत रहैन अपन तीस बर्खक जिनगी। केना समाजक बीच तीस बर्खसँ झूठ बजैत एलौं। झूठ ई जे लाल काकी नैहर जा भाए-भौजाइक काज सम्हारै छेली, जइसँ खेबो करै छेली आ सासुर अबैकाल भाए अपन कमाइल बोइनक संग अन्नक अगोओ फुटा दइ छेलैन। जेते माथपर उठा आनल होइ छेलैन तेते सासुर अनै छेली, बाँकी नैहरेमे रहै छेलैन। सठला पछाइत फेर लऽ अबै छेली। ओही कमाइक माने नैहराक काजक विचार मनकेँ हौंर रहल छेलैन। माए-बापक ऐठाम[8] सभ कन्या-जाति सभ काज करैए मुदा सासुरमे ओही काजसँ वर्जित भऽ जाइए। यएह विचार लाल काकीक मनकेँ ममोड़ि रहल छेलैन…।

अपन प्रश्न दोहरबैत सोहन बाजल–

“लालकाकी, हम तँ बाल-बोध छी अखन धरि स्कूल-कौलेज छोड़ि ने किछु देखलौं आ ने किछु केलौं अछि, मुदा अहाँ तँ करीब साठि बर्खक भऽ गेल छी, साठि बर्खक जिनगीक तीत-मीठसँ परिचित

[8] नैहर

छी तँए पुछि रहल छी।”

अपन जिनगीक बेथा-कथा सुनिनिहार पाबि लालकाकी बजली–

“बौआ, गिरहतक बेटी छी, गिरहस्तीक काजक सभ लूरि सीखने छी, मुदा एक तँ समैक फेरी जे पतियो आ सन्तानोसँ बिछुड़लौं, तैसंग परिवारक बान्ह एहेन छान-वान लगा देलक जे या तँ भीख मांगी वा गाम छोड़ि चलि जाइ।”

लाल काकीक बात सोहन नीक जकाँ नै बुझि पौलक, मुदा एते आभास तँ भाइये गेलै जे ओहन परिवारक मनुखकेँ जेकरा सभ किछु रहितो भीख मंगैक परिस्थिति पैदा कएल जाइए। मुदा कोनो निर्णय तक पहुँचैसँ पहिने ओकर तड़ी-घटी बुझब जरूरी अछि। जँ से नै बुझब तँ खड़हाएल बीरार जकाँ बीआ उखड़ल आकि घास, से बेराएब कठिन भऽ जाएत। लाल काकीकेँ तत्-मत् करैत देख, अपन मनक सभ बात घोंटैत सोहन बाजल–

“लालकाकी, तेना बजलिऐ जे नै बुझलौं। कनी सुतिया कऽ कहियौ?”

सोहनक जिज्ञासा सुनि हृदए खोलि लाल काकी बजली–

“बौआ, तीस बर्खसँ गाम छोड़ि, नैहर जा खटै छेलौं, जे कमाइ छेलौं तइसँ गुजर करैत एलौं।”

लाल काकीक बातक बिच्चेमे सोहन अपन विचार रखलक–

“ई तँ नीक काज भेल, जे भीख नै मांगि कमा कऽ पेट चलेलौं!”

जइ भावमे सोहन बाजल तइसँ भिन्न काकीक भाव जगि गेलैन। बजली–

“बौआ, नैहरक बोइनकेँ भाए-भौजाइक मदैत कहि झूठ बजैत

एलौं, कमाइकेँ भाए-भौजाइक देल उपस्कर कहैत एलौं। मुदा आइ मन धिक्कारि रहल अछि जे झूठ किए बजलौं!”

लाल काकीक विचार सुनि सोहन अपनाकेँ ओइ विचारकेँ बुझै जोग नै बुझि अक्षम पौलक। मुदा अपन जिज्ञासा रखैत पुछलक–

“काकी, नीक जकाँ नै बुझि रहल छी?”

लाल काकी बजली–

“बौआ, जइ परिवारमे छी तइ परिवारमे नारी जातिक हाथक काज छीनि लेल गेल अछि। जँ कियो करौ चाहत तँ जिनगीक बात हल्लुक बनि जाइ छै आ कुटी-चालिक बात पसैर जाइ छइ।”

ओना सोहन लाल काकीक मनक बात नीक जकाँ नै बुझि पाएल, मुदा विचारक रस पाबि मुड़ी डोलबैत बाजल–

“हूँ, से तँ ऐछे!”



तिथि : 14 मई 2014, शब्द संख्या : 885

अवाक

दुनियाँक एक-एक मनुखकेँ जहिना अपन देश-कोस आ अपन भूमि-मातृभूमिक प्रति ममता सिनेह रहै छै तहिना हमरो जगल। कोनो अधला वृत्ति तँ छीहो नहियेँ जे बेसी तर्क-वितर्क आकि विचार-विमर्श करैक परियोजन पड़ितए।

देह-दशासँ दुब्बर रहितो अपन मातृभूमिक गरिमा बढ़बैले समाजसँ अनुचित विचारो आ काजो मेटबैक संकल्प मनमे रोपलौं। अनुचितक विरोधमे बाजब शुरू केलौं, मुदा बाजबे धरि रहलौं। जइसँ कोनो भीड़-भड़क्कासँ कहियो भेँट नै भेल। मनो आ मनक विचारो तइसँ कनी-मनी सकता गेल। मन सकताइते अनुचित काज रोकैक उत्साह जगल। उत्साहक दोसरो कारण भेल, ओ भेल जे हमरा सन-सन बहुत गोरे हमरे संग संकल्प मनमे रोपलक जइसँ एक तरहक विचारक जनम भेल। जहिना आमक आँठीमे पीपही जनैमते दू दलिया बनि आँठीक गुद्दा रगड़ पाबि पीपहीक अवाज दिअ लगै छै तहिना मन पिपिऐ लगल।

गाममे एकटा घटना भेल। घटना कि भेल जे रामलालक बकरी चोरि भऽ गेल। ओना मालो-जाल आ बकरियो-छकरीक चोरियो होइए आ अपनो डोरी टुटने वा खुजने सेहो खुट्टा छोड़ि हटि जाइए। खुट्टा सून देखने ताक-हेर मलकार करिते अछि। मुदा होइ दुनू छइ। चोरियो

होइ छै आ खुजबो करै छइ। खुजलाहा भेट जाइ छै मुदा चोरौलहा चल जाइ छइ।

भोर होइते रामलाल बकरी टोहियबऽ लगल। परिवारक सभ तूर वाड़ी-झाड़ी, अड़ोसी-पड़ोसीक घर आ खेत-खरिहाँनमे ताकए लगल। सौंसे गाम बकरी चोरिक गन्ध पसैर गेल। जेतए-तेतए माने चौक-चौराहासँ लऽ कऽ दुआर-दरबज्जा, इनार-पोखैरक घाट धरिमे एक्के चर्च जे 'रामलालक बकरी चोरि भऽ गेल।'

तही बीच दोसरो गन्ध निकलल। ओ निकलल जे किछु रतिगर दबि कऽ गरम-मसालाक गन्ध पसरल छल। भरिसक केतौ मौस रनहाइए! एती रातिमे! मुदा भाइयो तँ सकिते छै जे कियो दरभंगा-मधुबनीसँ राति दबा मौस-तौंस अनने हेता। पोखैरक पानिक हिलकोर जकाँ गामोमे हिलकोर उठल, मुदा केतौ असथिर तँ केतौ तेज गति आएल। रौतका मौसक सुगन्ध मुदा बकरी चोरिक भाँज खोललक। भाँज खुजिते चोर-मोट धड़ा गेल।

समाज तँ समाज छिऐ, ऐठाम तँ गोली-बन्दूकक ओगरवाहि नै छै, ऐठाम तँ समाजक दसटा लोके अपन उचित-अनुचितक विचार करता। ई तँ नै जे फल्लाँ-गाम चोरक छी आ चिल्लाँ-गाम नीक लोकक। गाममे नीको लोक अछि आ चोरो अछि। सतो बजनिहार अछि झूठो बजनिहार तँ ऐछे, इमानदारो अछि आ बेइमानो अछि तहिना सूदिखोरो अछि आ सूदि देनिहारो तँ ऐछे। मुदा गाम-समाज तँ ओहन जगहक इजोत छी जैठाम ऐनाक जरूरते ने छै, हाथक कंग भूमि जकाँ।

बकरी चोरौनिहार अपन पूर्व संस्कारक परिचय दैत ताल ठोकि अपन पैघ-पैघ वृत्तिक चर्च बखाइन देलक। वातावरण एहेन भऽ गेल जे बकरियेक तराजूपर गाम तौलाइक परिस्थिति बनि गेल। पनचैतीक

समय बनल।

पनचैतीमे समाजक एते लोकक जुटान भरिसक कोनो पनचैतीमे कहियो नै भेल छल। कोनो काजक एकमुहरी विचार काजकेँ हल्लुक बनबै छै, से नै भेल। विचारधाराक धारमे चोरि फँसि गेल। गाम दू फाँक भऽ गेल! मारि-पीट भऽ गेल! मारि-पीट भेने मोकदमाक आगमन भेल। लोअर प्राइमरीक चटिया जकाँ काँखमे झोरा टाँगि मधुबनी कचहरीक स्कूलमे पचीस-तीस गोरे नाओं लिखौलक।

बीस बर्खक पछाइत जखन मोकदमा मरान दिस बढ़ल तइ समय एकटा अनुकूलतो भेल। भेल ई जे केसक संख्या बेसी भेने केसेक समय निर्धारित भेल जे 'अमुक केस जँ दस बर्खसँ न्यायालयमे अछि तँ ओकरा खारिज कएल जाए।'

मनुखे जकाँ मरानपर बेसी तरद्दूतक जरूरी होइते छै, बीमारीसँ सराध धरि। जेते गोरे मोकदमाक मुद्दालह रही अपनामे विचार केलौं जे बीस बर्खसँ गाम-सँ-मधुबनी आ मधुबनी-सँ-गाम रेङ्बे केलौं, समाज होइक नाते कम तँ नहियेँ भेल। तँए जेकर बकरी चोरि भेल ओकरो खर्चमे मदैत करैले एकबेर कहियौ। संयोग एहेन जे एकतरफा केस भेल रहै तँए बकरीबला नै फँसल छल। जहिना पहिने अवाद छल तहिना घटनाक पछाइतो रहल। बिनु पानिक मनुख पीछड़ाह तँ होइते अछि। रामलालो ओहने पीछड़ाह। जेते जगह, जेते लोक, तेते रंगक चालि आ तेते रंगक बोल तँ सभ दिनका रहबे करए, आरो बेसी चलती आबि गेलइ। चलतीक कारण दू-दिसिया भेल। दू-दिसिया ई जे जेकर बकरी नै रहै तेकरे मधुबनीक दौड़ो-बरहा, होटलोक खर्च आ गाड़ियो भाड़ासँ लऽ कऽ समय तकक खर्च हुअ लगलै। जइसँ मनमे दिल्लीक लड्डू जकाँ हेबे करै जे जेहने खेने तेहने बिनु खेने। तँए अपन

नोकसानीपर सोच-अपसोच हेबे करइ। मनमे बोझ सेहो बनियेँ गेल रहइ। बोझ बनैक कारण ईहो भेल जे जँ बकरीबला कमसँ कम पीठपोहुओ रहैत तँ किछु असो रहितए, मुदा सेहो नै! गाममे सभठाम बैसै-उठैक चलतियो बेसी ओकरे भऽ गेल अछि। तैसंग दोसरो कारण भेल, ओ ई भेल जे एहेन लोकक ठेकाने कोन? हो-न-हो कहीं गोटे विरोधी एहेन संग देनिहार भऽ गेल जे अपने पूजी लगा तमाशा ने ठाढ़ कऽ दिअए। तमाशा ई जे कोट-कचहरीक कारोबार सेहो ठिकौतीएपर चलए लगल अछि। सभ काजक ठिकौती! एते तक कि जजमेंटो ठिकौतीए होइए। तँए शंका हएब सोभाविके। भरि दिन आँखियो आ कानो, देखो कऽ आ सुनियोँ कऽ तोपाएले रहैए जे फल्लाँ पोखैरमे माछक जोती भेल अछि, केदैन दबाइ रातिमे धऽ देलकै। कियो देखलकै कहाँ! तहिना फल्लाँ गाछमे आम तोड़ि लेलकै, फल्लाँक सजमनिक लत्तीए काटि देलकै जे विकसित खेतीक प्रक्रियाक अंग छी, अंग ई जे जइ खेतमे अन्नक खेती होइए ओइमे जँ तरकारी खेती हुअए तँ अन्नसँ चारि गुणा उपज जरूर बढ़त! गामक उत्पादन- उपजा-वाड़ी- गामकेँ आगू आ पाछू घुसकैक मिथिलाक चिन्तनधाराक प्रमुख थर्मामीटर छी। जे धरती अन्न, फल, फूल, भोजन, जीवनकेँ एक सूत्रमे बान्हि देव तुल्य जिनगीक अनुसन्धान कऽ चुकल अछि!

पाँच गोरे जे सभ केसक मुद्दालह रही, रामलाल ऐठाम गेलौं। रामलालक चलती खाली भाषणेटा मे नै खेत-बोनिहारसँ छोटका वेपारी बनि गेल। गामो आ गामक चारू भाग छोटका-बड़का हाट लगिते छइ। एम्हुरका ओमहर लऽ जा बेचि लइए आ ओमहर जे सस्ता रहै छै ओ कीनि लइए। साइकिल रखने अछि एक मनक बोझाक कारोबारी बनि गेल अछि। पहुँचते देखलिऐ जे करीब प्रतिदिन तीन साए लाभक कारोबार करैए। तँए मुँहक मुस्की दैत कहलिऐ–

"रामलाल, गाममे केकरो चलती आएल तँ तोरा सभसँ बेसी

एलह, एकेटा बकरी गेने जिनगी बदैल गेलह।"

जहिना हमर मुस्की रहए तइसँ डेढ़िया-दोबर मुस्कान भरैत रामलाल बाजल–

"चलती तँ सौंसे गामेकेँ एलै आकि हमरेटा आएल। हमरे पाबि केते लोक मधुबनी देखलक। नै तँ, बाप-दादा देखबे ने केलकै आ बेटा-पोता ओकील जकाँ कानून झाड़ैए!"

ओही दिन मुस्की आ मुस्कानकेँ देखलौं। रामलालक मुस्कान अपन जिनगीक लाली परहक, मुदा ओ लालीक जड़ि की? से के देखत जेकरा ले चोरि करी सएह कहए चोरा!

कहलिऐ–

"रामलाल, तोहरबला केस आब मरानपर आबि गेल अछि। बीस बर्खसँ तँ केसमे फँसल सोल्हो गोरे मधुबनी रेङ्बे केलौं आ खरचो केलौं। अन्तिम तोर केसक छी, विधि-बेवहारमे खर्च होइते छै, किछु उचितो किछु अनुचितो। तँए ऐगला खर्च तूँ दऽ दहक।"

मुस्कान भरल मुहसँ रामलाल बाजल–

"हमहीं तोरा सभकेँ पनचैतीमे मारि करए कहने रहियऽ जे केसक खर्चा मंगै छह?"

रामलालक गप सुनि अवाक भऽ गेलौं।

ओना मरैसँ पहिने लोक अङ्गेज नेने रहैए जे मुइलोपर अस्सी मनक भार पड़बे करत तइले चिन्ता केने चीता मानत। जे बीस बर्ख लड़ल ओकरा बुते फरिछौल नै हेतइ। मुदा..?

❍

तिथि : 17 मई 2014, शब्द संख्या : 1047

पोखैरक सैरात

मार्च मासक तेसर सप्ताह। अनुमण्डल कार्यालयक ऑफिस जा गामक पोखैरक सैरातक सम्बन्धमे रमानन्द आवेदन दैत बाजल–

“एते दिन जइ ढंगे भेल, भेल। मुदा आगूक बिनु विचार केने नै होइ?”

एक तँ ओहिना सरकारियो कार्यालय आ बैंको अदहा मार्चक पछाइत बेसी व्यस्त भाइये जाइए। व्यस्ततो केना नै हएत, सरकारी मासक आखिरी मास छी, साल भरिक काजक लेखो-जोखा होइए आ ऐगला सालक काजोमे हाथ लगबे करैए। ऑफिसक भीड़ दुआरे आलमारीमे आवेदन रखि, ऑफिससँ आश्वासन भेटल–

“देखल जेतइ।”

ऑफिससँ निकैल रमानन्द अपन संगी सबहक संग आगूक परतीपर बैस विचार-विमर्श करैक बैसार केलक। ओना मार्च रहने गामो-गामक आ सरकारियो काजसँ जुड़ल लोकक भीड़ रहबे करइ। बैसार केकरो हौइ मुदा सार्वजनिक जगहक तँ अपन महत छै, तैसंग ईहो छै जे केकरो बजैक आकि सुनैक अधिकार तँ भाइये जाइ छइ। आनक ओइ बैसारमे, सभकेँ सुनै आकि बजैक अधिकार नै होइ छै जे तरपेसकी रहल। मुदा ई तँ सार्वजनिक जगहक बैसार छी तँए सभकेँ अधिकार छइ। ओना गामसँ रमानन्द पाँचे गोरे, पाँचो शिक्षित

बेरोजगार विचारि कऽ पोखैरक सैरातक विरोध करैले पहुँचल छल मुदा एक्के-दुइए आनो-आन ब्लौकक आ आनो-आन गामक एक-डेढ़ साए लोक बैसारमे बैस गेल।

अदौसँ मिथिलांचलमे पोखैर-इनार जनमैत रहल आ कोसी, कमलाक बाढ़िक कटनियाँमे मरितो रहले अछि। शुरुहेसँ लोकक बीच ई धारना बनले अछि जे पोखैर-इनार धर्मकृत भेने दसनामा होइ छइ। भलेँ बेक्तिगते किए ने होइ, मुदा तइमे बेवधानो कम नै भेल। पोखैर-इनार धर्मकृत होइतो अधर्मक रूपमे उपयोग सेहो होइते आएल अछि। अधर्म ई जे मुँह-दुब्बर सभकेँ पानिक उपयोगसँ रोकल गेल। मुदा मनुखो तँ मनुख छी। कठजीव तँ होइते अछि। केतबो छीना-झपटी हौउ आकि महामारी, तैयो मरलो-हरला पछाइत पोनैगिये जाइए। दुनियाँ रहत तँ मनुखो रहबे करत आ मनुख रहत तँ देवा-देवीसँ भूतो-प्रेत रहबे करत।

पैछला सात दिनसँ, जहियासँ सैरातक सूचना भेल, गहमा-गहमी हुअ लगल। अनुमण्डलक जेते पोखैर अछि ओकर बन्दोवस्ती हएत। ओना सभ पोखैर सार्वजनिक नहियेँ अछि मुदा किछु तँ ऐछे। तेकर कारण अछि जे जमीन्दारी टुटला पछाइत जे पोखैर नीलाम भेल सेहो आ जे जमीन्दारक माध्यमसँ वा राजक आदेशसँ खुनौल गेल सेहो, सोलहन्नी तँ नहियेँ मुदा अदहा-छिदहा तँ सरकारी सैरात भेबे कएल। तँए अनुमण्डलक सभ पोखैरक बन्दोबस्त नहियेँ होइ छल मुदा जे सरकारी अधिकारमे अछि ओ तँ होइते आबि रहल अछि। एक तँ ओहुना रौदी-दाहीक प्रभाव पोखैर-इनारमे बेसी होइते अछि, तँए बिसवासू उपजा होइ से तँ नहियेँ छल मुदा तैयो थोड़-थाड़ तँ ऐछे।

जखन पोखैरक दुरबेवहार हुअ लगल तखन आम-जनक बीच

आक्रोश बढ़ल, जइसँ गामे-गाम विवाद ठाढ़ भेल, जेकर परिणाम भेल जे किछु विवादित पोखैर सरकारी भेल। ओना गाम-गामक सभ पोखैर सरकारी नहियेँ भेल मुदा पोखैरबला जे दुरबेवहार करै छल से कमल। कमल ई जे अकसरहाँ परिवार अपन पानिक ओरियान कल गड़ा कऽ लेलक। मुदा समस्या तैयो रहबे कएल। जखन कि चारि-सँ-आठअना परिवारमे पानिक ओरियान अपनो कल गड़ौने आ किछु सरकारियो माध्यमसँ भेल तथापि समस्या तँ ऐछे।

ओना अनुमण्डलक अदहासँ बेसी गामक पोखैर मरने भऽ गेल। मरना ई भेल जे जहिना कोसीक तहिना कमला धारक कटनियासँ भोथाएल। गामसँ पोखैर हेरा गेल। पोखैरे नै, इनारो हेरा गेल। ओना इनार हराइक दोसरो कारण भेल। भेल ई जे इनारसँ पानि तँ दुनू हाथे खींच कऽ ऊपर अनैए पड़ै छै जइमे बेसी भीड़ो होइ छै आ डोल-उगहैनक खगता सेहो पड़ै छै, जेकरा कलक हेण्डिल असान बना देलक। मुदा पानि ऊपर अनैमे जहिना असान भेल तहिना कुम्हारक रोजगार सेहो खेलक। ओना कुम्हारो सभ चैलक बदला डाबा-डुबी बनैबते अछि। नै बनौत तँ जुड़शीतलमे दान कथी लोक करत। अशुद्ध प्लाष्टिकक बाल्टी करत केना, आ स्टीलक महगे छइ। ताम-पीत्तैरक जे करत से ओ आब गाममे अछि आकि पड़ा कऽ बजार चलि गेल।

गाम-गाममे कोसी-कमलाक बाउलक भरैन भेने पोखैर-इनार गेल। तेतबे नै! ओना पोखैरक बदला धार आएल, मुदा गामक माटि तोपेने, उपजाउ भूमि बाउलसँ भरने, गामक सेखीए बदैल देलक। सोलहन्नी तँ नै कहल जा सकैए मुदा चौअन्नी, अठन्नी केतौ-केतौ सोलहन्नियोँ अन-पानि विहीन गाम भऽ गेल। एक गामक कोन बात जे धारक पेटमे पड़ि हजारो गाम बाउल-पानिक तरमे दबा गेल।

उपजाक माटि बलुआएल, पानिक पोखैर-इनार गेल आ गाछी-

बिरछी, खढ़-खरहोरि सेहो सभ चलि गेल। मुदा जाइक माने ई नै जे उड़ि कऽ मेघमे चलि गेल आकि समुद्रमे डुमि गेल, से नै भेल। जहिना दिन घटलापर मुँह-दुबरा बहु मुँह-गरहाक भौजाइ बनि घरसँ पड़ा जाइ छै तहिना मिथिलांचलक किछु माटियोक संग भेल। तैसंग गाम-गाममे रहनिहारक जमीन आ बहरबैया जमीनबलाक बीच हिस्सा–बखराक झंझट सेहो लधाइत रहल। सिकमी, बकास्त, मनखप इत्यादि ढेर रंगक ओझरी गाममे पसरल। पसरबो केना नै करैत एकठाम जँ दू बीघा जमीनक अड़ियाएल टुकड़ी अछि, तँ ओइमे एक बीघाक टुकड़ीक मालगुजारी बीस रूपैआ अछि तहीठाम दोसर टुकड़ी-शिवोत्तर, ब्रह्मोत्तर इत्यादि- मालगुजारी विहीन अछि। माने ओकरा चारि-आठअना रसीदक छपाइ भरि मात्र लगै छइ। जेकरा शेष कहल जाइ छइ।

गामक माटिक ओझरी बढ़ैत-बढ़ैत पानियोँ दिस बढ़ल। धार-धुरक घटवारि बढ़ल, मुदा एके धारक घटवारि एक रंग नै रहल। खुशीक बात ईहो रहल जे धार-धुरक घटवारि बहरबैयाकेँ सेहो हाथ लगल। मन माफित लूट मचौलक। इज्जत-आबरू बेठेकान भऽ गेल। संग-संग काछु-माछक ओझरी सेहो लगल। जइसँ पानिक ओझरी बढ़ल। किछु घाटक सरकारीकरण भेल आ किछु रहिये गेल। माने ई जे एके गामक पानि बँटा गेल। किछु दसनामा भेल किछु खुदनामा। खुदनामा ई जे पोखैर खुनैमे जे खर्च देलिऐ...। खाएर! जे भेल। फेर दोसर मोड़ लेलक, मोड़ ई लेलक जे गाम-गामक दसनामा पोखैरक सोसाइटी बनि गेल जे मछुआ सोसाइटी कहबैए। जे खास जातिक हाथ चलि गेल मुदा ओझरियो बढ़िते गेल। सोसाइटी भेने गामक पानिक हकदार अनगौआँ भऽ गेल।

गामक पढ़ल-लिखल बेरोजगार दूधक संग दारूक कारोबार कऽ अपन बेरोजगारी भगबए चाहैए। गामक पानिक सदुपयोगक कोनो

बेवस्था नहि। पानिक की मोल जिनगीक लेल अछि ओ ढोलक-हरिमुनियाँक सुरे-तान धरि अछि। गाम-गामक चर-चाँचर आ मुइल धार सौंसे इलाका पसरल अछि मुदा उपजा लेल पानि नै! यएह सोचि रमानन्द शारदानन्द, राम विलास, सिंहेश्वर आ जगरनाथ कार्यालयमे आवेदन देबए आएल। ओइमे एकेटा मांग छै–

"गामक पानि किसान हाथ आ गामक रोजगार बेरोजगार हाथ।"

❍

तिथि : 20 मई 2014, शब्द संख्या : 923

दनियाँ डाबा

जुड़शीतलक सात दिनक पछाइत पण्डिताइन काकी भोरे-भोर जोर-जोरसँ बाजए लगली। बजैक कारण छेलैन पैछला समुद्री लहैरक झटकमे मालो घर आ एकटा आश्चर्मियों खसि पड़लैन। छोट परिवार, बेटा-पुतोहु दिल्लीएमे घर बना रहै छैन, अनठा देलकैन। मालक घरेटा, माल-जाल नै, पोसबो के करतैन, आब कि ओ जमाना रहल, आब तँ सभ अपन-अपन जातिक पुरहिताइ करिते अछि। एहेन लहकी छोड़ि अनेरे गाइक गोबरसँ हाथ महकाएब! आब कि ओ सतयुग रहल जे सत्यक युग रहितो भुत-प्रेत आ अप्सरा-परीक नाच हएत।

पण्डित काकाकेँ से सुतरलैन, सात गामक बीच दुइए गोरेकेँ टोटा कऽ संस्कृत पढ़ल अबैत तँए दुनूक बहाली गामक पुरहिताइमे भऽ गेलैन। मुदा खेलो बढ़बे कएल। खेल ई बढ़ल जे सात गाममे सत्तैरटा बिआह हएत, बिआह करौनिहार दू गोरे भेला। सत्तयुगिया मनुख बनैक लूरि नहि। लूरि ई नै जे जहिना घोड़ो अपना पाँखिये उड़ै छल तहिना मनुखो उड़ै छल। खाएर! जे भेल आकि होइए से सभ जानए।

गाम-गाममे परदेशियाक बाढ़ि, तँए सभ सालसँ बेसी जुड़शीतलमे डाबा दान भेल। रंग-रंगक, केते गोरे शहरेसँ अनने। लिखल-पढ़ल, रंगल-ढौरल। एकेटा घर पण्डित काकाकेँ, अँगनामे

दनियाँ डाबाकेँ केना कुम्हारक आवा जकाँ लगौता। तँए सभटा घरेमे तरे-ऊपरे ढेरियाएल। पण्डिताइन काकीक चोरबत्ती रातिमे बड़बे ने केलैन, भकुआएल रहबे करैथ, माथमे ऊपरका डाबा ठेक गेलैन। जाबे काकी बुझती-बुझती ताबे ढेरीए ढनमना गेलैन। ई तँ गुण रहलैन जे खापड़िक ढेरी नै छल ने तँ चानि बिना टुटने नै रहितैन। ओना डबोक चोटसँ चानि दगाइए गेलैन।

वएह भोरुका चानिक चोट पण्डिताइन काकीकेँ छेलैन तँए जोर-जोरसँ पण्डित काकापर बजै छेली।

एक तोर पण्डिताइन काकीकेँ काका बाजए देलखिन। दालिक आकि भातक उघियाएल फेनकेँ फेकबे नीक, बजैत-बजैत काकीक जखन दम खड़ेलैन तखन थोड़े स्पीड कमलैन। धियान लगौने पण्डित काका काग-भुसुण्डीक जप करैत रहैथ। दम खड़खड़ेने धियान टुटलैन। छन्दक मात्रा गड़बड़ाइत देख पुछलखिन–

"अनेरे भोरसँ आफन तोड़ने छी, बाजू मुदा असथिरसँ बाजू! भगवान केकरो अधला ने सोचै छथिन आ ने अधला करै छथिन। जँ केतौ अधला देखब आकि सुनब तँ जा कऽ कहबैन।"

कक्काक मधु-कैटब बोल सुनि काकी दुनू हाथसँ छातीकेँ दाबि असथिर केलैन। छातीक धुक-धुकी जहाँ असथिर भेलैन आकि बजली–

"देखू, जजमानकेँ कहि दियौ जे जँ दान करैए तँ ओहन दान करह जे दानीकेँ दाताक फल भेटइ। मुदा ई! जे माटिक डाबासँ चाइन तोड़ाएब! एहेन दान नै लेब।"

काकीक अल्लुक चोखा जकाँ चोखाएल बात सुनि पण्डित काका बजला–

"अहाँक कहब नीक अछि मुदा निर्णय तँ वएह तीनू- ब्रह्मा,

विष्णु, महेश- ने करता। हुनका तक सबाल पठा दइ छिऐन।"

कक्काक मौध-अमृत पीब पण्डिताइन काकी काकाकेँ पठबैक तैयारीमे जुटि गेली। आब हुनकर दोख थोड़े हेतैन, जेते जल्दी तैयार करि विदा करबैन तेते जल्दी ने घरसँ निकलता।

❍

तिथि : 22 मई 2014, शब्द संख्या : 409

धरम काँट

बेर-बेर जिनगीमे केते बेर सोन भाय पैंच-पालटक संकल्प लेलैन मुदा नै पार लगलैन। पार पेबाक रस्ते ने भेटैन, जँ केतौ अपने भेटबो करैन तँ संगी भोथिया दैन। ओना भोथियबैमे परिवारोक हाथ रहबे करैन। मुदा जिनगीक साठिम बर्खक अवस्थामे संकल्पकेँ मजगूतीसँ पकैड़ आगू डेग बढ़बैक विचार उठौलैन–

“समाजक बड़ पैघ काज पैंच-पालट छी। जँ से नै हएत तँ नव-नौतुक केना अपन परिचय दऽ लालकाकीक मुहेँ चाबस्सियो लेती आ सीखबो करती।”

मनक विचार सोन भायकेँ मना लेलकैन जे पैंच-पालटक रक्षा हेबा चाही। मुदा दुनियाँमे केकर के बात सुनलक जे हमर सुनत, सुनै तँ तखन लोक छै जखन केकरो सोर पाड़लापर टुटैत नीन अपन सोन सन सुनैए। मुदा सोन सन सुन्नर बनाएब तँ सोनारेसँ सम्भव अछि, सभ बुते हएत केना? मने-मन सोन भाय गर लगबए लगला जे पैंच-पालटक दू रूप अछि। दुनूक अथाह रूप छइ। रौदक छाँह जकाँ जेते नव शक्ल तेते नमहर छाँह। सेहो एक रंग कहाँ होइए। उगैत रौदमे पीठिया छाँह तेते नमहर भऽ जाइ छै जे थाहबे कठिन भऽ जाइए जे सचमुच साढ़े तीन हाथक मनुख छी आकि कोनो मनुखदेवा। मुदा जेना-जेना रौद प्रखर होइए तेना-तेना आकारो समटाए लगै छै,

समटाइत-समटाइत ओते समटा जाइए जे बारह बजे मध्य अबैत-अबैत रौद-छाँहक खेल खिल जाइए। मुदा फेर दिन घटिते पीठिआइत ओहिना माया जकाँ छाँह तेना पसरए लगैए जे चिन्हारो अनचिन्हार जकाँ हुअ लगै छइ। यएह तँ छी जिनगीक खेल। खाएर! दुनियाँक खेल जे हौउ, अपन खेल खेलाएब...। लोकक उपयोगी वस्तुक उपजबैक विचार करैत सोन भाय डेग उठेलैथ। पाँच साए रूपैआ एक गोरेसँ पैंच लेलैन। अखन धरि सोन भाय अपना निर्णयपर ठाढ़ नै भेल छला, पहिल संकल्प छेलैन तँए मजगूतीसँ पकड़ए चाहलैन। आमदनीक योग नीक बुझि पड़लैन...। मन मानि गेलैन जे आब ऐ संकल्पकेँ माने पैंच-पालटकेँ दू खण्ड कऽ मजगूतीसँ पकड़ब। दू खण्ड ई जे एक लेनिहार दोसर देनिहार। अपन पक्षक कियो मालिक होइए, अनकर पक्षक भाइयो केना सकैए, ई तँ ओकर जिनगीक योग छिऐ...। जेकरासँ पैंच नेने छला से तकेदा केलकैन। अढ़ाइ साए तत्काल दैत तेसर दिनक समय बनबैत कहलखिन–

“परसू बैंकयौता दऽ देबह।”

दोसर दिन एक गोरेक बेटी बिआह। ‘यज्ञक दौड़’ एहने काजमे लोक उपकैर-उपकैर यज्ञक योगमे योगदान करैत योगक्रिया सम्पन्न करैए। सोनो भाय केलैन। तकेदा भरि वस्तुक सहयोग कऽ देलखिन। मुदा यज्ञक बीच तकेदा करब अनुचित। काजक दौड़। यज्ञ केनिहारकेँ काजक खाँच भऽ गेलै जइसँ समैपर काज नै चलि सकल। धरम काँटमे ओझराएल सोन भाय अपन संकल्पक आगू ठाढ़ भऽ बजला–

“धरम काँटमे पड़ि गेलौं, अहींक सूत्रसँ सूत्रात्मक हएब से जानी अहाँ।”

❍

तिथि : 23 मई 2014, शब्द संख्या : 395

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’, ‘वैदेह सम्मान’, ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह बाल साहित्य पुरस्कार’ तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-13-1